प्रकाशक —शाह रतनचंद चमनलाल,
मा. मंत्री-श्री मुक्ताबाई ज्ञानमंदिर,
डीसावाडी पळा मु. डभोई

—: सिरीमा प्रकाशनमां द्रव्य सहायकोमां मुबारक नामो :—

२०१) अमदावादनिवासी धर्मप्रेमी शाह मनालाल हकमचंदना धर्मपत्नी धीरजबेन; परम पूजनीय परम कारुणिक गुरुदेव महामहोपाध्याय श्रीमद् भक्तिविजयजी गणिवरनी शुभ निश्रामां श्री विजयदानसूरीश्वरजी ज्ञानमंदिर अने पौषध शालाना सुंदर अने मनोहर व्याख्यान हॉलमां सं. १९९८ ना अषाड सु. ६ थी करावेला महिमा श्री भगवती महासूत्रना श्रवणनी पुण्यस्मृति निमित्ते।

२००) मांगरोळनिवासी धर्मप्रेमी शाह जगमोहनदास वेलजीभाई

२००) अमदावाद निवासी धर्मप्रेमी शाह चीमनलाल कालीदास

मुद्रक —शा गुलाबचंद लल्लुभाई
श्री महोदय प्रिन्टिंग प्रेस
दाणापीठ—भावनगर.

विषयानुक्रमणिका



	विषय	पत्र
१	प्रकाशकनु निवेदन ।	४
२	प्रस्तावना ।	५–११
३	शुद्धिपत्रक ।	१२
४	ग्रन्थसमर्पण ।	
५	ताडपत्रीय बे प्रतिकृतिओ ।	
गाथा		
१	मंगलाचरण अने अभिधेयनिर्देश ।	१–२
	बन्ध, उदय, सत्ता, उदीरणा, क्षपणा तथा उपशमनानु सामान्य स्वरूप ।	२
२	जीव केटली प्रकृतिओने बांधतो केटली वेदे ? अने केटली सत्तामां	

गाथा	विषय	पत्र
	होय ? तेना उत्तरमां अनेक विकल्पो ।	२–३
	मूलप्रकृतिओने आश्री बन्ध, उदय अने सत्तानां प्रकृतिस्थानवर्णनादि ।	३
३	मूलप्रकृतिने आश्री बन्ध-उदय-सत्तास्थानविषयक परस्पर संवेधना सात विकल्पो ।	३–४
४	मूलप्रकृति विषयक संवेधना सात विकल्पोनो जीवस्थानोने आश्री विचार ।	४
५	मूलप्रकृति विषयक संवेधना सात विकल्पोनो गुणस्थानोने आश्री विचार ।	४–५
	उत्तरप्रकृतिओनी प्रकृतिसमुत्कीर्तना ।	५
६	ज्ञानावरणीयकर्म अने अंतरायकर्मनी	

गाथा	विषय	पत्र
	उत्तरप्रकृतिओने आश्री बन्धादिस्थानोनुं विवरण अने तेमनो परस्पर संवेध ।	५-६
७-९	दर्शनावरणीयकर्मनी उत्तरप्रकृतिओने आश्री बन्धादिस्थानोनुं कथन ।	६
	दर्शनावरणीयकर्मनी उत्तरप्रकृतिओने आश्री बन्धादिस्थानोनो संवेध ।	६-७
९	व० वेदनीय आयुःकर्म अने गोत्रकर्मने आश्री बन्धादिस्थानोनुं विवरण अने तेमनो संवेध ।	८-९
१०	मोहनीयकर्मनी उत्तरप्रकृतिओने आश्री बन्धस्थानो ।	९
११	मोहनीयकर्मनी उत्तरप्रकृतिओने आश्री उदयस्थानो ।	९
१२-१३	मोहनीयकर्मनी उत्तरप्रकृतिओने आश्री सत्तास्थानो ।	९-१०
१४	मोहनीयकर्मनी उत्तरप्रकृतिओना बन्धस्थानोने समका भांगा ।	१०
१५-२०	उत्तरप्रकृतिने आश्री मोहनीयकर्मना बन्धस्थानोनो उदयस्थानो साथे संवेध, तेने भांगा भांगाओ, भांगाओमां सर्व संख्यानुं प्रमाण अने पदवृन्दोनी संख्या ।	१०-१४
२१-२३	उत्तरप्रकृतिओने आश्री मोहनीयकर्मना बन्धस्थानोनो सत्तास्थानो साथे संवेध ।	१४-१७
२४	नामकर्मनी उत्तरप्रकृतिओने आश्री बन्धस्थानो ।	१७-२०
	नामकर्मना बन्धस्थानोना विकल्पो ।	२०

गाथा	विषय	पत्र
२५–२७	नामकर्मनां उत्तरप्रकृतिओने आश्री उदयस्थानो तथा तेने थता भांगा।	२०–२६
२८	नामकर्मनां उत्तरप्रकृतिओने आश्री सत्तास्थानो।	२६–२७
२९–३१	नामकर्मनां बन्ध–उदय–सत्तास्थानोनो परस्पर संवेध।	२७–३१
३२–३७	आठे कर्मनी उत्तरप्रकृतिओनां बन्ध उदय-सत्तास्थानो अने तेना संवेधना जीवस्थानोने आश्री स्वामीओ।	३१–३९
३८–४९	आठे कर्मनी उत्तरप्रकृतिओनां बन्ध उदय-सत्तास्थानो अने तेना संवेधना गुणस्थानोने आश्री स्वामीओ।	३९–५०
५०–५२	आठे कर्मनी उत्तरप्रकृतिओनां बन्ध उदय-सत्तास्थानो अने संवेधनो गत्यादिमार्गणास्थानोने आश्री विचार।	५०–५४
५३	आठे कर्मनां उदीरणास्थानोने उदयस्थाननी माफक समजी लेवानी भलामण।	५५
५४	उदीरणा सिवाय उदयमां आवती एकताळीस प्रकृतिओनां नामो।	५५–५६
५५–५९	क्या गुणस्थानमां कई प्रकृतिओ बंधाय ? तेनु निरूपण।	५६–५८
६०	कई गतिओमां कई प्रकृतिओ प्राप्य छे ? ए प्रश्ननुं निराकरण।	५८–५९
६१	उपशमश्रेणिनु स्वरूप।	५९–६२
	अनन्तानुबन्धीनी उपशमना।	५९–६१
	यथाप्रवृत्तकरणनु स्वरूप।	५९

गाथा	विषय	पत्र
	अपूर्वकरणनुं स्वरूप।	५९-६
	स्थितिघातनुं स्वरूप।	६०
	अनुभागघातनुं स्वरूप।	६
	गुणश्रेणिनुं स्वरूप।	६०
	गुणसंक्रमणनुं स्वरूप।	६०
	अनिवृत्तिकरणनुं स्वरूप।	६ -६१
	मतांतरे अनन्तानुबन्धीनी विसंयोजनानुं स्वरूप।	६०-६१
	दर्शनत्रिकनी उपशमना।	६१-६२
	मोहनीयकर्मनी सर्व प्रकृतिओनी उपशमना।	६२-६२
	उपशमश्रेणिथी प्रतिपातनो क्रम।	६२
६२-६६	क्षपकश्रेणिनुं स्वरूप।	६२-६८
६७-६८	क्षपकश्रेणिमां प्राथमिक कर्मप्रकृतिने स्वविषयक मतान्तर।	६८
६९	क्षपकश्रेणि आरोहणनुं अंतिम फल।	६८-६९
७०	विशेष ज्ञान माटे भलामण।	६९
७१	सिद्धर्षिप्रकरणनी रचनामां रही गयेली ऊणप पूरी करवा माटे बहुश्रुतोने विज्ञप्ति अने दोषोनी क्षमापना।	६९
	परिशिष्टानि।	१-३

प्रकाशकनुं निवेदन।

आजे सित्तरी ग्रन्थ तेना भाष्य अने चूर्णि सहित प्रसिद्ध थाय छे तेथी अमोने अनिर्वचनीय आनन्द थाय छे श्रीयुत्भाई मानमंदिरनुं आ नवमुं प्रकाशन बाहेर थाय छे अमारी आ ऊगती संस्था टूंक वखतमां आटलां सुंदर अने सर्वोपकारी प्रकाशनोनो समग्र मुमुक्षु जिज्ञासु अमोने सादर आपी शकी छे, ते पू. आगमप्रज्ञ प्रवचनप्रभावक प्रकरणका सुविहितागमी गुरुवर्य श्री उपाध्यायजी महाराज श्री मंपूर्णविजयजी गणिवरना महान् उपकारने आभारी छे

आ ग्रन्थ कर्म विषयनो छे अने प्राकृत भाषामां छे अत्यार सुधी ए अप्रगट रहेलो प्रथम वार प्रकाशित कराय छे तेनुं संपादनकार्य आ संस्थाना एक प्राण समा विद्वान् कार्यकर पंडित अमृतलाल मोहनलाले कर्युं छे तेओ पाटणना वतनी छे केवल वैमाविक गणाती सेवक धार्मिना छे, छतां तेओ केवल विद्वान् छे अने प्रभुश्री वीरशासनना केवा अडग श्रद्धालु तथा सत्यना खरा सेवक छे ए तेओए आ अदित ग्रंथना करेल समर्थ संपादनथी वाचकोने स्वयमेव सुविदित थशे तेमना आ यशस्वी कार्यथी मोजक प्राप्ति तो छे परंतु जैन कोम पण गौरव लेशे एवी अमोने खात्री छे तेओनो आ प्रथम उत्साह छे पूज्य श्री गुरुदेवना शुभ आशीर्वाद अने टेकाथी ते सफळताथी पार पड्यो छे एमां शकाने स्थान नथी

आ ग्रन्थना विद्वान् संपादके ग्रन्थ अने ग्रन्थकर्त्ता आदि उपयोगी विषया उपर प्रकाश पाडती एक ऐतिहासिक महत्त्व धरावती प्रस्तावना लखेली छे जे आ साथे सामेल ज छे एटले तत्संबंधि अमारे कांई कहेवानुं नथी

तीथि आदि अनेक विषयोमां आज नविन कपोल कल्पित प्ररूपणाओ करनार आचार्य श्री सागरानन्दसूरिनी वस्तुस्थिति जगजाहेर छे जेमके आठ वर्षनी अंदर पण दीक्षा अपाय, अनादि मिथ्यात्वी प्रथम सम्यक्त्व पामे त्यारे सर्वविरती करतां पण बहु निर्जरा करे छे अनादि मिथ्यात्वी पोतानी घातक सम्यक्त्व उपार्जन करे छे ' इत्यादि केइ कुमतो जैन समाजमां प्रगट कर्या छे. आ ग्रन्थना स्वाध्याय करनाराओने ते अमत होवानुं तेना विषयानुसार अपूर्व पूरवार थशे मौलिक जैन शास्त्रोरूपी सूर्य ज्यां सुधी श्री जैन शासनमां तपे छे त्यांसुधी तेमना एके कुमत टकी शके तेवा नथी ते निर्विवाद छे

कर्मसाहित्यमां आ अति उपयोगी ग्रन्थ छे. अभ्यासीओ, साहित्यप्रेमीओ अने ज्ञानसमाजको आ महामूल्य प्रकाशनने शीघ्र अपनावी लेशे ए स्पष्ट सुनिश्चित वात छे

पूज्य श्री गुरुवर्ये आ ग्रन्थमां प्रुफो विगेरे तपासी अमारी मोटी कृपा करी छे ते साथ आ संपादनमां विद्वद्वर्य मुनिराज श्री पुण्यविजयजीए पण मुख्य मदद करेली छे ते उपरांत पाटण वडोदरा आदि भंडारोना कार्यवाहकोए प्रतिओ पूरी पाडवानुं सुंदर सौजन्य बताव्युं छे तेओ सघळो तेमज पूज्य श्री गुरुदेवना सदुपदेशथी आ ग्रन्थ प्रकाशनमां द्रव्यसहाय करी ज्ञानभक्तिथी पुण्योपार्जन करनारा पुण्यशाळीओनो पण आ स्थळे अमो आभार मानीए छीए. ॐ शांतिः—

शाह खुबचंद पानाचंद

प्रस्तावना ।

विक्रम संवत् १९९६ मां पूज्यपाद परम शासन प्रभावक व्याख्यान चूडामणि परम गुरुदेव उपाध्यायजी श्रीमद् अमृतविजयजी महाराज साहेबने में प्रस्तुत ग्रन्थना सम्पादन माटे इच्छा दर्शावी तेओश्रीए सम्मति आपी मारा जीवनमां कोई पण पुस्तकनु सम्पादनकार्य नहि करेल होवाथी मन सहज आनाकानी पण करवा लाग्युं पण प्रवर्तक श्री १००८ श्रीकान्तिविजयजी महाराजना शिष्य प्रशिष्य पं० श्रीचतुरविजयजी तथा साक्षरवर्य मुनि श्रीपुण्यविजयजी पासे आठ वर्षथी संशोधनपद्धतिनु निरीक्षण करेल होवाथी आ ग्रन्थना सम्पादन माटे मने हाम थई। बेशक ते हाममां पूज्य श्री उपाध्यायजी महाराजना आशीर्वाद साथे उपर्युक्त मुनियुगलनी हुंफ पण पायारूप हती।

सित्तरी—प्रस्तुत प्रकरणनां सित्तरी सत्तरी सयरी सत्तरी सत्तरिया सयरिया तथा सप्ततिका ए प्रमाणे एकार्थिक नामो मळे छे। आ प्रकरण सीत्तर गाथाओथी सूचित होवाथी तेनो सित्तरी एवो नामनिर्देश प्राचीनकाळथी थतो आव्यो छे। आज रीते बीजा केटलाक ग्रन्थो तेमनी पद्यसंख्या उपरथी नामांकित थयेला छे[1]। एक समय एवो पण हतो के ज्यारे ते ते ग्रन्थोना पद्यसंख्या

---

१ " आना उदाहरण तरीके आचार्य शिवशर्मकृत शतक, आचार्य सिद्धसेनकृत द्वात्रिंशिकाप्रकरण, आचार्य हरिभद्रकृत पञ्चाशक प्रकरण विंशतिविंशतिकाप्रकरण षोडशकप्रकरण अष्टकप्रकरण आचार्य जिनवल्लभकृत षडशीतिप्रकरण आदि अनेकानेक प्राचीनतम जैनाचार्यकृत ग्रन्थोनां नामोनो निर्देश करी शकाय तेम छे। " (कर्मग्रन्थद्वितीयविभागनी प्रस्तावनामांथी)

सूचक नामनी आगळ छे ते ग्रन्थोनो विषय दर्शावी ग्रन्थनुं नाम स्थापित थयुं। दाखला तरीके दंसणसत्तरी कालसत्तरी यात्रा-सप्ततिका विचारषट्त्रिंशिका गुरुगुणषट्त्रिंशिका परमसुखपञ्चविंशतिका विगेरे विगेरे। आ सर्वमां पण कल्पना करी प्रकार के सप्ततिका षट्त्रिंशिका पंचविंशतिका आदि ग्रन्थो तेटली ज पद्यसंख्याप्रमाण अन्य ग्रन्थोना अस्तित्वमां तेना विशेष ज्ञान माटे एकबे तेमनेम बनाना मथथी मिश्रधारक बोधभाव माटे पोताना अभीष्ट नामनिर्देश मागी छे। अने तेथी ज पाछळथी रचा-येल सित्तेर पद्यमय आदि ग्रन्थोने पूर्वाचार्योए विशेष नामथी विभूषित कर्यां छे। आ उपरथी पण कहेवामां जरा य हरकत नथी जणाती के प्रस्तुत प्रकरणना रचनाकाळ समये तेनुं एक ज सित्तेर पद्यमय प्रकरण नहिं होय तेथी आ प्रकरणनुं सित्तरी एवुं सामान्य नाम प्रसिद्ध थयुं हशे।

गाथासंख्या—आ प्रकरणनी गाथासंख्याना निर्णयमां आजसुधी बहु ज विसंवाद रह्यो छे। प्राचीनमां प्राचीन ताडपत्रीय प्रतिओमां पण गाथाओनी संख्या एक बीजीथी विषम ज मळी आवे छे। आ वस्तुनुं स्पष्टीकरण पू. पा. मुनिमहाराज श्रीचतुरविजयजीसंपादित कर्मग्रन्थ द्वितीय विभागनी प्रस्तावनामां पू. पा. विद्वर्य मुनि श्रीपुण्यविजयजीए कर्युं छे एटले अमने अमारा प्रस्तुत प्रकाशनमां ए वस्तुने वधारे विशद करवानी आवश्यकता जणाती छे। कर्मग्रन्थ द्वितीय विभागमां सित्तरि प्रकरणनी ७२ गाथाओ मूळगाथा तरीके स्वीकारी छे अने तेने अंगेनी विस्तृत छणावट प्रस्तावनामां करी छे, परंतु अमोए आ प्रकाशनमां सित्तरीनी ७१ गाथाओ ज मूळ गाथा तरीके मानी छे। तेनुं कारण ए छे के—उपर्युक्त कर्मग्रन्थ द्वितीय विभागमां चउ पणुवीसा सोलस (गा. २५) ए गाथाने तेमा सम्पादकश्रीए मूळगाथा तरीके मानी लीधी छे परन्तु ए गाथाने चूर्णिकारे

" पाठांतर " तरीके पाठान्तर गाथा तरीके निर्देशी छे एटले घट पञ्चीसा सोलस० गाथा मूळमां नथी ए माटे चूर्णिकारनो सन्मोड पुरावो होवाथी सित्तरीप्रकरणनी ७१ गाथाओ घटित थाय छे। आप गाथाने मंगळगाथा तरीके समजवाथी सित्तरीनी सित्तेर गाथाओ बराबर थई जाय छे।

विषय—प्रस्तुत प्रकरण खास अभ्यासनो ग्रंथ होईने टीका, टबा तथा विवेचन साथे अनेक वार मुद्रित थई चूक्युं छे अने तेथी ज तेने सगतु तथा एक सरल होवाथी अमोए प्रस्तुत विषय माटे विषयानुक्रमणिका जोवाथी भ्रमण सिवाय[1] कर्युं व जरूर नथी।

सित्तरीकार—पू. पा मुनिश्री पुण्यविजयजीए कर्मग्रंथ द्वितीयविभागनी प्रस्तावनामां सित्तरीना कर्ता संबंधी विस्तृत विवेचन कर्युं छे जे अमोए आवश्यक समजी अक्षरशः नीचे आप्युं छे—

" सप्ततिकाप्रकरणकारने लगतो प्रश्न विवादग्रस्त छे। सामान्य प्रचलित मान्यता एवी छे के एना प्रणेता श्री चन्द्रर्षिमहत्तर छे, अने आ रूढ मान्यताने अनुसरता सादर पूज्य गुरुवर श्री चतुरविजयजी महाराजश्रीए पण कर्मग्रन्थना प्रथम विभागनी प्रस्तावनामां अने आ विभागमां सप्ततिकाना शीर्षकमां श्रीचन्द्रर्षिमहत्तरविरचित " एम जणाव्युं छे, परंतु विचार करतां आ रूढ मान्यताना मूळमां कोई पण आधार जडतो नथी।

सप्ततिका प्रकरण मूळनी प्राचीन ताडपत्रीय प्रतोमां चन्द्रर्षिमहत्तरनामगर्भित जे " गाहग्गं सयरीए० " (आ गाथा अमे

१ ढंढोपममां उपर्युक्त का२ प्रतिमां वे गाथा उपर अभ्यर्थनाना येय गाथा एवो पाठ पण छे। (जुओ पत्र २ पृष्ठ १ टिप्पणी ८ मी)

स्पर स्तवी आम्बा कीर) ओघामां आवे छे ए जब आपणने सत्तरिया प्रमेता चन्द्रर्षि महत्तर होवा माटेनी साक्षी आपती नथी। ए गाथा तो वस्तु ज जणावे छे के—" चन्द्रर्षि महत्तरना मतने अनुसरवी ठीकाना आधारे सत्तरिनी गाथा (७० ने बदले नवीने) नम्मासी थई छे । आ प्रसंगमां सित्तरिप्रकरणनी गाथामां वधारो केम थयो एनुं कारण ज मात्र सूचवायो आव्युं छे पण एना कर्ता विषे एवी कशो ज प्रकाश पडतो नथी। आचार्य श्रीमलयगिरि पण टीकानी शरुआतमां के अंतमां ए माटे कशुं ज जणावता नथी। एटले आ रीते सित्तरिना प्रणेता अंगेनो प्रश्न अणउकल्यो ज रहे छे।

सित्तरिप्रकरण चन्द्रर्षिमहत्तरप्रणीत होवानी मान्यता अमने तो भ्रममूलक ज लागे छे अने ए तेमां मोटभी " गाहग्गं सयरीए॰ गाथामां आवता चन्द्रर्षिमहत्तर ए नामनिर्देश मात्रमांथी ज जन्म पामेल छे अने टबाकारे करेला असम्बद्ध अर्थथी ए भ्रममां उमेरो थयो छे।

अत्र श्रीमां चन्द्रर्षि महत्तराचार्ये पंचसंग्रह नामनी रचना करी छे तेमां संग्रह करेला अथवा समावेश सतक, सत्तरिका कषायप्राभृत सत्कर्म अने कर्मप्रकृति ए पांचे ग्रन्थो चन्द्रर्षि महत्तरना पहेलां थई गयेल आचार्योनी कृतिरूप होई प्राचीन ज छे।

1 "गाहग्गं सयरीए " गाथानो अर्थ टबाकारे आ प्रमाणे कर्यो छे—"चन्द्रमहत्तरना मतने अनुसरनारनी विशेष गाथाओ आ ग्रन्थ रचायेल छे। तेमां टीकाकारे रचेली नवी गाथाओ उमेरतां नेव्याशी थाय छे ॥ ११ ॥

2 "सयपाद पंच ...

आचारनी मत मान्यता मुजब नहेरतर जो सप्ततिकाकार अने पंचसंग्रहकार आचार्य एक ज होय तो भाष्यकार चूर्णिकार आदि प्राचीन ग्रन्थकारोना ग्रन्थोमां जेम शतक सप्ततिका कर्मप्रकृति आदि ग्रन्थोना नामनो साक्षी तरीके उल्लेख मळे छे तेम पंचसंग्रह जेवा प्रामाणभूत ग्रन्थना नामनो उल्लेख पण जरूर मळवो जोईतो हतो परंतु एवो उल्लेख क्यांय जोवामां नथी आवतो ए एक सूचक वस्तु छे अने आ उपरथी आपणे ए अनुमान करी शकीए छीए के सप्ततिकाना प्रणेता पंचसंग्रहकार करतां कोई जुदा ज आचार्य छे के जेमनुं नाम आपणे जाणता नथी अने ते प्राचीनतम आचार्य छे ।

सप्ततिकानो रचनाकाळ—भगवान् श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणे तेमना विशेषणवती ग्रन्थमां सित्तरी कर्मग्रन्थमां आवता विरचने अंगे चर्चा करी छे त्यां सित्तरिप्रकरणना नामनो उल्लेख कर्यो छे एटले आ प्रकरण महाभाष्यकार श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणना काळ पहेलां रचाई चूक्युं हतुं ए निर्विवाद हकीकत छे । भगवान् श्रीजिनभद्रगणिनो समय विक्रमनी सातमी सदीनो मध्यभाग छे एटले ए पूर्वे आ प्रकरण रचायुं हतुं एम मानवामां कशी हरकत नथी ।

अहीं साथे साथे ए वात ध्यानमां रहे के मलधार पद अने गर्गर्षि सिद्धर्षि पार्श्वर्षि चन्द्रर्षि आदि जेवा ऋषिपदान्त नामो

शिव-शतकप्राकृत-सप्तक-कर्मप्रकृतिग्रन्थानां ग्रन्थानाम् अथवा सप्ततिकार्थाभिधायकाः योगोपयोगमार्गणा-बन्धक-बन्धस्थान-उदय-बन्धविधिविशिष्टानां संग्रह

१ सयरीए खेत्तसंजुत्ता पंचाइ जो वत्ता एव । अनियट्टिम्मि एकवा सत्तमओदीरणयणाए ॥ १ ॥ सयरीए जो विसमा कम्मामिच्छं समोर दसगुरु । (पचसंग्रह गाथा १ मलयगिरिटीका) वेयम्मि । नवका वईरयए, पगति मत्तु होज्जति ! ॥ २१ ॥ इत्यादिका गाथा ।

सामान्य रीते साम्य समानतानां होई सित्तरि प्रकरणनी रचनानो समय अने चन्द्रर्षिमहत्तर ए नामनो संबंध पण विषमतामय छे । ए कारणसर पण सित्तरिना प्रणेता चन्द्रर्षिमहत्तर ठरता नथी ।

सित्तरिप्रकरणकार विषे आ करतां विशेष अमे अत्यारे कशुं ज कही शकता नथी ।”

आ उपरांत चन्द्रर्षिमहत्तर सित्तरिना प्रणेता नथी ए विषेनो सबळ पुरावो श्रीचन्द्रर्षिमहत्तरना पोताना ज ग्रन्थोमां मळी आवे छे—" एवमेकारस भङ्गाः सप्ततिकाकारमतेन । (जुओ पत्र–७ पृष्ठि २ नी टिप्पणी) । सप्ततिकाना निर्माताना संबंधमां जेम टबाकारे भ्रम पेदा कर्यो छे ते ज रीते अवचूरीकार आदिए पण भ्रमित थईने आ वस्तुमां गुंचवण ऊभी करेली छे ।

ज्यां सुधी विशेष साधनसामग्री प्राप्त न थाय त्यां सुधी सित्तरीप्रकरणना प्रणेता संबंधी विशेष खुलासो थवो मुश्केल छे । अत्यारे तो फक्त एटलुं ज सिद्ध थयुं के चन्द्रर्षिमहत्तर करतां पूर्वकालीन कोई आचार्य सित्तरिप्रकरणना निर्माता छे ।

सित्तरीचूर्णी—चूर्णिग्रन्थोनुं महत्त्व अति घणुं छे । जो ए ग्रन्थो न होत तो टीकाग्रन्थोनी रचना मुश्केलीभरी बनत, अथवा जेवी अने जेटली ए रचना विशद थई शकी छे तेवी ए न बनी शकत ए वस्तु आपणे अनेक टीकाकार आचार्योए पोताना ग्रन्थनी आदिमां अंतमां तेम ज कोई कोई वार मध्यमां नोंधेल चूर्णिग्रन्थोना उपकारित्व अने माहात्म्य उपरथी सहेजे समजी शकीए छीए । आचार्य श्रीमलयगिरिजीए पण सप्ततिकाटीकानी आदि मध्य अने अंतमां चूर्णिनो उपकार अने तेने ज अनुसरीने टीकारचना थई शकी छे तेवुं स्पष्ट जणाव्युं छे । टीकानी आदिमां श्रीमलयगिरिजीए “पूर्वेर नावगम्यन्ते सम्यगेतेऽस्फु

१ “भवनिर्दं चूर्णिविचारलेशात् ग्रन्थोऽपि मध्ये किमपि विवृतम् । सप्ततिकावृत्त्यवी आदिमां । “परं चूर्णिकृता तद् मात्र विवक्षितमिव

लिखि।" एम कहीने चूर्णिग्रन्थो माटे बहुवचननो उपयोग कर्यो छे ते उपरथी सप्ततिकाप्रकरण उपर प्रस्तुत प्रसिद्ध कराता चूर्णिग्रन्थ उपरांत बीजा पण चूर्णिग्रन्थो होवा जोईए एम मानवाने कारण छे परंतु हजु सुधी आ चूर्णिग्रन्थ सिवाय बीजी कोई चूर्णी अमारा जोवामां आवी नथी। आचार्य श्रीमलयगिरिजीए जे चूर्णिना आधारे टीका रची छे ते चूर्णि प्रस्तुत चूर्णि ज छे ए वस्तु टीकामां प्रमाण तरीके नोंधेल चूर्णिना पाठो उपरथी जाणी शकाय छे।

चूर्णिनी भाषा—चूर्णि ए एक प्रकारनो प्राकृत टीकाग्रन्थ छे। प्राचीनकाळमां जैनसंस्कृतिमां प्राकृत भाषाने मौलिकस्थान होई तेनी प्रत्येक कृतिओ—पछी ते सूत्र हो निर्युक्ति हो भाष्य हो के गमे ते हो—प्राकृतभाषामां ज गूंथवामां आवती हती। ए ज नियमने अनुसरी चूर्णिग्रन्थोनी रचना पण प्राकृतभाषामां अथवा प्राकृतबहुलभाषामां करवामां आवती हती। प्रस्तुत सप्ततिका-चूर्णी पण ए नियमना अपवादरूप न होई एनी रचना पण प्राकृतप्रधान भाषामां ज थएली छे।

चूर्णिकार—सप्ततिकाचूर्णिकारे चूर्णिमां पोतानो नामोल्लेख कोई पण स्थळे कर्यो नथी। तेम ज आ विषे आचार्य श्रीमलयगिरिजी पण तेमनी टीकामां "चूर्णिकृत्-चूर्णिकार" सिवाय विशेष कशुं ए जणावता नथी। एटले अमे पण चूर्णिकार कोण? ए विषे कशुं ज कही शकता नथी

आत्मानंदसभा प्रकाशित कर्मग्रन्थ प्रथम विभागना परिशिष्टमां श्वेतांबरीय कर्मसाहित्यविषयक ग्रन्थोनी नोंधमां सप्ततिका उपर चूर्णि

स्वामिरपि न विवक्षितम्, एवमुत्तरत्रापि चूर्णिकारमार्गानुसरणं परिभावनीयम् ।" (गाथा ४७ नी टीकामां)। येनेयं विषमार्था सप्ततिका सुस्फुटीकृता सम्यक्। अनुपकृतपरोपकृतश्चूर्णिकृतस्तान् नमस्कुर्वे ॥ (सप्ततिकाटीकाना अंतमां)।

तथा श्रीचन्द्रर्षिमहत्तरकृत प्राकृतटीका जोयी छे। ते बे ग्रन्थो पैकी आ ग्रन्थ चूर्णि छे चन्द्रर्षिमहत्तरकृत प्राकृतटीका नथी, कारण के एक स्थळे चूर्णिकारे चन्द्रर्षिमहत्तरना मतथी विरुद्ध प्रतिपादन कर्युं छे एटले आ चूर्णिना कर्ता चन्द्रर्षिमहत्तर नथी ए निर्विवाद वात छे।

चूर्णिग्रन्थनो रचनासमय—शतकबृहच्चूर्णि अने शतकलघुचूर्णि पछी सप्ततिकाचूर्णी रचाई हशे ए हकीकत चूर्णिमां आवता निम्न लिखित पाठोथी समजी शकाय तेम छे— 'एयासिं अत्थविवरणा कया सयगे" (पत्र ३ पृष्ठि १) श्रीबद्धाणाण विवरणा कया सयगे" (पत्र ४ पृष्ठि १) एयासिं विवरणं कया सयगे" (पत्र ४ पृष्ठि २) एयासिं भेया सरूवनिरूवणा य कया सयगे" (पत्र ५ पृष्ठि २) " भेओ य अत्थनिरूवणं च कया सयगे" (पत्र ९ पृष्ठि २) 'एयासिं विवरणा भेओ य कया सयगे तहा मग्गियव्वो (पत्र १७ पृष्ठि १)।

शतकबृहच्चूर्णि अमारे जोवामां नथी। जे चूर्णि मुद्रित थई छे ते शतकलघुचूर्णि छे, कारण के शतक गाथा ३५ मीना भाष्य तथा टीकामां लघुचूर्णि तथा बृहच्चूर्णिना मतांतरोनी जे पक्री साथे नोंध भाष्यकार श्रीमान् चक्रेश्वरसूरि तथा टीकाकार मलधारीय श्रीहेमचन्द्रसूरिजीए लीधी छे ते पैकी लघुचूर्णि तरीकेनो अभिप्राय मुद्रित चूर्णिमां मळे छे, तेम ज आचार्य श्रीमलय गिरिजीए पञ्चसंग्रहटीकामां तथा सप्ततिकाटीकामां जे शतकबृहच्चूर्णिना पाठो प्रमाण तरीके नोंध्या छे ते पाठो मुद्रित शतकचूर्णिमां नथी मळता। शतकबृहच्चूर्णि ए कुशो ज ग्रन्थ छे जे अमारा सुधी मळी शक्यो नथी। शतकबृहच्चूर्णिना रचयिता कोण हता ?

१ " एत्थ अवसेसे सम्मत्तिये पर्यंते—'यावत-जीवपरग्गहे विरय-सयकाये समत्ती अत्थि' ति तं न घडइ, ग्रन्थे मुत्ता। " (पत्र ७ पृष्ठि १-२, विशेष स्पष्टता माटे आ पाठ उपर अमारी टिप्पणी जुओ)

तेनी रचना क्यारे थई ? तथा तेनुं ग्रन्थमान केटलुं ? इत्यादि बाबतोनी कशी य माहिती मळती नथी । परंतु शतकलघुचूर्णिना कर्ता श्रीचन्द्रर्षिमहत्तर छे । ए विषेनो उल्लेख खंभात–श्रीशान्तिनाथजी ताडपत्रीय भंडारनी प्रतिना अंतमां मळता नीचेना उल्लेखने आधारे जाणी शकाय छे—" कृतिराचार्य श्रीचंद्रमहत्तरसितांबरस्य । शतकस्य ग्रंथस्य । प्रशस्त... ... । वि ६ शनौ लिखितेति ॥ छ ॥ " आ वस्तु अति अपूर्व होवाथी ते प्रतिना अंतिम पत्रांशनो ब्लोक पण अमे आप्यो छे (जुओ प्रतिकृति–२) । श्रीमत् चन्द्रमहत्तराचार्यना समय विषे माटे अमने साधनो मळ्यां नथी ।

प्रस्तुत चूर्णि शतकलघुचूर्णि पछीना रचाई होय तो श्रीचन्द्रर्षिमहत्तर पछीनो तेनो रचनाकाळ ठरे । सप्ततिकाभाष्यना प्रणेता नवांगीवृत्तिकार श्रीअभयदेवसूरिना पूर्वे प्रस्तुत चूर्णिनुं निर्माण थई चूक्युं हतुं ।

सप्ततिका अन्तर्भाष्य—मूळग्रन्थमां आ भाष्यनी गाथाओ अंतर्गत करवाथी ज मूळग्रन्थनी अभिधेयपरंपरा सचवाती होवाथी आ भाष्यने अन्तर्भाष्य कहेवामां आवतुं हशे । सप्ततिकाप्रकरणनी दरेक गाथानी व्याख्या रूपे आ भाष्य नथी, पण मूळग्रन्थमां जे

१ शतकलघुचूर्णिना कर्ता संबंधी आज पर्यंत क्यारे य कशुं प्रमाण मळेलुं नहतुं । विक्रम संवत् १९९७ मां श्रीमोहनलाल दीपचंद चोकसी-(खंभातनिवासी ए खंभातना भंडारनी केटलीएक प्रतिओनी मो माना यथरनी अस्तव्यस्त सेळभेळ थयेलां पानांओ तथा तूटेलां ताडपत्रोनो जथ्थो आचार्य श्रीपुण्यविजयजी महाराज उपर मोकली आप्यो हतो । तेमांथी अतिपरिश्रम वेठी तथा प्रयत्नो करीने तेओश्रीए पूरा पाडेला शतकलघुचूर्णिना पत्रो मेळवी तथा पानांओ अर्धभाग पण मेळवीने जेथी शतकलघुचूर्णिकारनो निर्णय पुराव तेओश्रीने कर छे ।

२ नमिऊण महावीरं कम्मगुरुरयणं करिस्सामि । संखेव-संवेहिं, सत्तरियाचुण्णिअणुसारा ॥ (सप्ततिकाभाष्यगाथा १)

स्थळे अत्रानुसंधाननी अपूर्णता जणाय ते स्थळे चूर्णिकार तेमज अनुसरता टीकाकार आचार्य श्रीमलयगिरिजीए तेम न मनुतिमप्रकरणनी मूळप्रतिओमां विशाल छेकछोप करतसी आ भाष्यनी गाथाओ दृष्टिगोचर थाय छ। चूर्णि तेम ज सस्तुतिका टीकामां अन्तर्भाष्यगाथा तरीके नोंधेली गाथाओ सिवाय चूर्णिमां आवती गाथाओ अन्तर्भाष्यगाथाओ हशे के केम ? ते माटे निर्णय थई शके तेम नथी। चूर्णिकारे तथा टीकाकारे नोंधेली अन्तर्भाष्यगाथाओ कुल १ छे।

गमे तेम हो, प्रस्तुतग्रन्थना अंतमां भाष्य चूर्णिनी समाप्ति थवाथी छे तेथी अन्तर्भाष्य संपूर्णपणे आ ग्रन्थमां समाविष्ट होवानुं करवी शकाय तेम छ।

संशोधन—(१) मूळ तथा चूर्णिग्रन्थनी प्रतिओमां केटलेक स्थळे अनुस्वारने बदले परसवर्णो होवाथी प्रस्तुत मुद्रणमां तेमने तेमना तेम कायम राख्या छे। (२) माहणम्माकरणना वैकल्पिक नियमवाळा पाठभेदोने मात्र उदाहरण पूरता नोंधी बीजा बधाने छोडी दीधा छे। (३) चूर्णिप्रतिओमां जे जे पाठो खंडित थयेला छे ते पाठो अमे [ ] आवा कोष्ठकमां अंदर उमेरीने मूक्या छ, दाखला तरीके "सम्मामिच्छदिट्ठि-[मिच्छदिट्ठि]णो" पत्र १८ पृष्ठि २। (४) चूर्णिमां जे पाठो अशुद्ध होय ते पाठोने कायम राखी तेनी साथे तेना ते स्थानमां परता शुद्ध पाठोने अमे ( ) आवा कोष्ठकमां वचमां राख्या छे, दाखला तरीके "अनायगा(एज्जा)" पत्र २१ पृष्ठि २ टिप्पणी २।

संशोधनमां उपयुक्त प्रतिओ

प्रस्तुत ग्रन्थना संशोधनमां अमे ६ प्रतिओनो उपयोग कर्यो छे। ते पैकी त्रण प्रतिओ मूळग्रन्थनी छे, अने त्रण चूर्णिग्रन्थनी

छे। खे१, खे२ अने खे३ संज्ञक प्रतिओ मूळग्रन्थनी छे। हं, का१ अने का२ संज्ञक प्रतिओ चूर्णिग्रन्थनी छे। ते प्रतिओनो परिचय आ नीचे आपीए छीए।

१-२-३ खे१ खे२ अने खे३ संज्ञक प्रतिओ—आ त्रणे य प्रतिओ पाटण खेतरवसहिना पाडाना भंडारनी छे ते भंडार हालमां श्रीप्रेसीमलास भगवानभाई झवेरीनी देखरेखमां छे। त्रणे य प्रतिओ नानां नानां प्रकरणोना संग्रहरूपे लखायेली ताडपत्रीय पोथीओनी अंतर्गत रहेली छे। शुद्धि त्रणे य प्रतिओनी ठीक ठीक छे। दरेक प्रतिना प्रत्येक पत्रनी पुंठि पीठ ३ अथवा ४ पंक्तिओ छे। प्रस्तुत खे१ प्रति ११ पत्रोमां लखायेली छे। तेनी गाथासंख्या ९१ छे। प्रतिनी लिपि सारी अने हाल्य मध्यम छे। प्रतिना अंतमां पुष्पमां आ प्रतिने खास बाधक कारण सिवाय मूळमां राखी छे। तेनी लंबाई पहोळाई १५×२ इंच प्रमाण छे। प्रतिना अंतमां कशो य उल्लेख नथी।

खे२ प्रति दस पत्रोमां लखायेली छे। तेनी गाथासंख्या ९२ छे। लिपि सारी, स्थिति मध्यम छे। समस्त पोथीना अंतमां 'संवत् (१२)७८ वर्षे माघ वदि ४ सोमे" आवी टूंकी पुष्पिका मळे छे।

खे३ प्रति ९३ गाथाप्रमाण छे। लिपि सारी अने स्थिति मध्यम छे। पोथीनी लंबाई पहोळाई १४×१½ इंच प्रमाण छे। अंतमां कशो य उल्लेख नथी।

४ थं संज्ञक प्रति—आ प्रति पाटण-श्रीसंघना भंडारनी छे। आ भंडार श्रीहेमचन्द्राचार्य जैन ज्ञानमंदिरमां सुरक्षित छे। तेनी देखरेख पाटण श्रीसंघे नियत करेल ज्ञानमंदिरना वहीवटकर्ताओनी कमीटी राखे छे। आ प्रति अति प्राचीन छे। ताडपत्रीय

प्रतिओमां जे विषमाक्षरी प्रतिओ होय छे तेमां आ प्रतिनी गणना थई शके तेम छे। प्रतिनी लिपिनो ख्याल आवे ते माटे अमे प्रतिना ९१ मा तथा ८२ मा पत्रनी एक एक पृष्ठिनो ब्लॉक आप्यो छे (जुओ प्रतिकृति १)। सामान्य ताडपत्रीय प्रतिओ करतां आ प्रति विषमाक्षरवाळी होवा छतां एनी लिपिनी स्पष्टता तथा शुद्धि अनुत्तम छे। आ ज कारणसर आ प्रतिने अमे अमारा प्रस्तुत संपादनमां मुख्यत्वे करीने खास बाधक कारण सिवाय प्रमाणभूत राखेल छे। आ प्रति विना अमारुं आ संपादन दुष्कर बनत। प्रतिमां शरूआतमां पांच पानाना मध्य मोटा टूकडा मात्र छे अने अंतनां बे त्रण पत्रो नथी, तेथी ग्रन्थसमाप्तिमां लखाती लेखकप्रशस्ति पुष्पिका वगेरे अमे आपी शक्या नथी। आ प्रतिनां ११७ पत्रो छे, दरेक पत्रनी प्रत्येक पृष्ठिमां पांचथी आठ सुधी ओळीओ छे दरेक पंक्तिमां ४५ थी ५१ सुधी अक्षरो छे। प्रतिनी लंबाई-पहोळाई १२×२ इंच प्रमाण छे। लेखन-समय संभवतः विक्रमनो ११ मो शतक होय तेम लागे छे। प्रतिनी स्थिति सामान्य रीते ठीक गणाय।

५-६ खं१ खं२ संज्ञक प्रतिओ—आ बन्ने प्रतिओ पू. पा. प्रवर्तक श्रीमान् कान्तिविजयजी महाराजना वडोदराना ज्ञान-भंडारनी छे। आ भंडार हालमां श्री चंदुलाल पुरुषोत्तमदास झवेरीनी देखरेखमां सुरक्षित छे।

खं१ प्रति—आ प्रति ताडपत्र उपर लखाएली छे। अनुमानथी विक्रमना तेरमा सैकामां लखाएली लागे छे। प्रतिनां पत्र ९१ छे तेमां वचमां अंतरे अंतरे २७ पत्रो नथी तेम अंतमां पण २५ थी २ पत्रोनुं अनुसंधान तूटे छे। एकंदरे आ प्रति खंडित त्रुटित प्रति कहेवाय। संशोधनमां आ प्रति ठीक ठीक मददगार थई छे एकंदरे शुद्धि पण ठीक छे। प्रतिनी दशा जीर्ण छे। तेनी

छबाई-पहोळाई १०×२ इंच प्रमाण छे । दरेक पत्रनी पृष्ठि पीठ कोठामां ओछी ४ अने वधारेमां वधारे ६ पंक्तिओ छे प्रत्येक पंक्तिमां ६५ थी ७० अक्षरो छे ।

खं२ प्रति—आ प्रति पू पा प्रवर्तक श्रीमान् कान्तिविजयजी महाराजश्रीए अमदावाद डहेलाना भंडारनी प्रति उपरथी करावी छे । आ प्रतिना अभावे प्रस्तुत सप्ततिकाचूर्णिनुं संपादन अपूर्ण ज रहेत कारण के अमे खं१ प्रतिओ अंतसुधी पूरी नथी । प्रति अत्यंत अशुद्ध छे । प्रति नवी होवाथी तेनी हालत सारी छे । प्रतिनी छबाई-पहोळाई ११×५ इंच प्रमाण छे । पत्र-संख्या ४९ छे । प्रत्येक पत्रनी एक एक पृष्ठिमां तेर तेर पंक्तिओ छे, दरेक पंक्तिमां ५२ थी ६० अक्षरो छे । प्रतिना अंतमां

" श्री सप्ततिकासूत्रचूर्णिः समाप्तमिदं ॥ ग्रंथाग्रंथ ॥ " आ प्रमाणे उल्लेख छे

आ ग्रन्थमां तथा प्रस्तावनामां उपयुक्त मुद्रित ग्रन्थोनी माहिती

कर्मग्रन्थ प्रथम विभाग=श्री आत्मानन्द सभा (भावनगर) तरफथी प्रकाशित " सटीकाश्चत्वारः कर्मग्रन्थाः " ।

कर्मग्रन्थ द्वितीय विभाग=श्री आत्मानन्द सभा (भावनगर) तरफथी प्रकाशित " शतकनामा पञ्चमकर्मग्रन्थः तथा सप्ततिकाभिधानः षष्ठः कर्मग्रन्थः " ।

सप्ततिका भाष्य=श्रीमन्मेरुतुङ्गाचार्यविरचित वृत्ति साथे श्री जैन धर्म प्रसारक सभा (भावनगर) द्वारा प्रकाशित ।

शतकचूर्णि=श्री रत्नगरस्थ वीरसमाज द्वारा प्रकाशित ' सचूर्णिक शतकप्रकरणम् " ।

बन्ध-शतकप्रकरण=भाष्य तथा वृत्ति सहित श्री रतनगरस्थ वीरसमाज द्वारा प्रकाशित ।

पञ्चसंग्रह=बे टीका सहित (विभाग बीजो) श्री मुक्ताबाई ज्ञानमंदिर (डभोई) द्वारा प्रकाशित ।

कर्मप्रकृति=चूर्णि तथा टीकाद्वययुक्त, श्री मुक्ताबाई ज्ञानमंदिर (डभोई) द्वारा प्रकाशित ।

कर्मग्रन्थ सार्थ द्वितीय विभाग=श्री जीवविजयजीकृत टबा तथा विवेचन सहित श्री मेघराज मत्कत (महेसाणा) तरफथी प्रकाशित (नवी आवृत्ति)

आ ग्रन्थमां अमे जे स्थळे "सप्तक" अथवा 'सप्तकप्रकरण' मूक्युं छे ते आचार्य श्रीशिवशर्मसूरिकृत चन्द्रर्षिसप्ततिकाप्रकरण समजवुं ।

ऋणस्वीकार तथा आभार—प्रस्तुत ग्रन्थना प्रथम फॉर्मे मुद्रितनी कॉपी तथा मुफोनुं निरीक्षण करवा बदल तथा प्रस्तुत ग्रन्थनी घणी ज हस्तलिखित प्रतिओ मेळववामां मदद करवा बदल तेम ज स्थळे स्थळे अनेक वार अनेक पंक्तिओने टाळवा बदल, तेम ज ग्रन्थनो आवता उपशमश्रेणि-क्षपकश्रेणिना स्वरूपने सांगोपांग समजाववा बदल आदरणीय पू. पा. मुनिश्रीपुण्यविजयजीनो, तथा आग्रा य ग्रन्थना मुफसंशोधनमां सहायकर्त्ता, अनेक स्थळे संशोधनने लगतां महत्त्वनां सूचनोना सूचक प्रस्तुत ग्रन्थना सम्पादनमां प्रेरक परमपूजनीय गुरुदेवनामधेय परमगुरुदेव उपाध्यायजी श्रीमद् सगुणविजयजी महाराज साहेबनो, तेम ज जेओए पोताना वडील श्रीवे बाल्या श्रीमुक्ताबाई ज्ञानमंदिरद्वारा आ ग्रन्थ प्रकाशित करी अमे आ क्षेत्रमां प्रथम अनुभव अर्प्यो छे ते श्रीमूळचंदभाईनो पण यथाविधि ऋणस्वीकार करुं छुं ।

जे जे भंडारोना वहीवटकर्त्ता सज्जनोए घाटला लांबा समय सुधी प्रतिओनो उपयोग करवा माटे धीरज राखी छे तेमनो सप्रेम आभार मानुं छुं ।

क्षमायाचन—आ ग्रन्थना संपादनमां विलंब वधारे थयो तेनुं एक कारण तो ए छे के मारो आ क्षेत्रमां प्रथम परिश्रम, अने बीजुं मारी पत्नी कमळा अने पुत्र जयंतनुं अकाळे अवसान थवुं एटले कार्यमां अति शिथिलता आवी, एक तो तेने लीधे तथा अल्पज्ञताने लीधे संशोधनमां रहेली त्रुटीओने क्षम्य गणवा विद्वज्जनोने नम्र विनति करीने प्रस्तावना पूर्ण करुं छुं ।

सम्पादनेन यत् किञ्चित्, लेभे सुकृतमद्भुतः । तेन बोधिमवाप्नोतु, सम्माता हरकुंवरी ॥

विजया दशमी
विक्रम १९९८
नागोरीवाडो–पाटण

अमृतः



शुद्धिपत्रक

पत्र-पृष्ठि-पङ्क्तिः	अशुद्धम्	शुद्धम्	पत्र-पृष्ठि-पङ्क्ति	अशुद्धम्	शुद्धम्
७-१-८	इचर	ह चर	४४-१-१	वावर्ई	वार्पेतई
११ २ १४	दिएवव	बिए व्वं	४४ १ ११	चर	चर०
१२-१-२	दोमंगा	दो मगा	४४-२-९	-विरा-अविरसुमा	-विरा-अविर-सुमा
१२ १ १	१ । अवंचमे	१ अवंमगे	४६ १ १२	पत्तीस ।	पत्तीसा
२ ११	अनुत्तराणि	अनुत्तराणि	४७-१-१	अट्ठवीस-	अट्ठवीस
२१ १ १४	-म पंच	-मपंच	५१ १ ११	तित्थगररहिर्य	तित्थगरसहिर्य
३०-१ १२	करें-ति	करेंति	५४-२-७	बाए	बोए
१ -२-९	पत्ते वस	पत्ते वस (?)	५८-२-४	मणिवविहीणा	मणिवविहिणा
३४-१-७	भयसंताणि	भय-संताणि	५८-२-४	पगइसम्मावो ति गइ	पगइसम्मावो
३६-१-२	सुग्गुरू	सुगाढ			ति बत्थ ति-गाइ
३३ २ १२	मंगोप मय-	मंगो पयय–	६७-२-१	हुचरिमन	हुचरिमसय–
३७-१ १४	उपमयतु	-उपमयंतु	६७-२ १	जवसकिति	जससकिति (भवित सम्भाव्यते)

ग्रन्थ-समर्पण



शासनदिवाकर-सकलागमरहस्यवेदीसर्वस्व-आचार्यदेव श्री १००८ श्री विजयदानसूरि-पट्टप्रभावक-सिद्धान्तमहोदधि-परम पूज्य श्री १००८

श्री गुरुदेव आचार्यश्री विजयप्रेमसूरिश्वर,

वर्तमान जिनशासनमां विचरता मुनिगणमां कर्मसाहित्यना निष्णात तरीके आपनुं स्थान अजोड छे, तथा निस्पृह विद्वानोना सत्यमतनी साथे मळतो थईने हुं आ कर्म विषयक श्री सित्तरी ग्रन्थनुं मारुं प्रथम संपादन आप कृपाळुना करकमलमां सादर समर्पण करी कृतार्थ थाउं छुं

लि० नम्र सेवक अमृतनी आप कृपाळुना चरणारविन्दमां

कोटिशः वंदनावली

सप्ततिकाचूर्णि पत्र ६९ मुद्रितपत्र ३९ पृष्ठि २, तथा पत्र ८२ मुद्रित पत्र ४७ पृष्ठि २ (श्रीसंघ भंडार-पाटन)

शतकचूर्णिकार श्रीचन्द्रर्षि महत्तर छे एम दर्शावतुं शतकचूर्णिनुं अन्त्य पत्र

(श्री शांतिनाथजी भंडार–खंभात)

॥ नमो कम्मातीताणं जिणाणं ।

णमो सयलागमरहस्सवेईणं सिरिजिणयदाणसूरीणं ।

पाइणायरियकयचुण्णिसमेया चिरंतणायरियविरइया

सित्तरी ।



॥ नमः सर्वज्ञाय ॥

सिद्धिपयपयडचउरय-संतसकम्मविहिदेसओ सिद्धो । भयवं महाजणगुरू, विक्खायजसो जयइ वीरो ॥
एक्कारस वि गणहरा, सव्वे वेइगोयरस्स पारगया । सव्वसुयाण पणया, सुयकेवलिणो जयंति सया ॥

सुह-दुक्ख-पयारमसरूवपरिण्णाणाओ सव्वजीवाणं मोक्खकारणाऽऽसेवण दुक्खकारणपरिचागनिमित्तो सव्वदुक्खविमोक्ख-लक्खणो परमसुहलंभो त्ति सुह-दुक्ख-पयारनिद्देसो कायव्वो । दोसोवसमणाओ उपरजाल आरोग्गसुहलंभ इव सो सुहो

---

१ प्रति पी प्र १ । २ पयोगोपरस्स । ३–भागम–

१

सामाचिओ त्ति पढममेव दुक्ख-क्खारणपरूवणं परमरिसओ करेंति त्ति, पच्छा सुहकारण-सुहाण परूवणं ति । तम्हा य कम्मपगडिपाहुडमहाबंधेसु भणियाइं । ते य गया दुरवगाह त्ति काउ कम्मदोसोवहयमेहा-ऽऽउ-बलाणं मंदबुद्धिपाणं साहूणं अणुग्गहत्थं आयरिएण कयं पमाणनिप्फन्ननामयं सत्तरि त्ति पगरणं । तं विवरिस्सामो । तस्स मंगला-ऽभिधेय-विसेस-संबंधत्था पढमगाहा—

सिद्धपएहिं महत्थं, बंधोदय-सन्तपयडिठाणाणं । वोच्छं सुण संखेवं, नीसंदं दिट्ठिवायस्स ॥ १ ॥

सिद्धपएहिं महत्थं गाहा । मंगलपरिग्गहियाइं सत्थाइं निप्फत्तिं गच्छंति, सिस्स-पसिस्सपरंपराए पवड्ढंति चेव त्ति सिद्धसद्दो मंगलत्थो । महत्थं बंधोदय-संताणं संखेवं वोच्छं ति अभिधेयनिद्देसो । दिट्ठिवायस्स निस्संदो त्ति संबंधो । एस पिंडत्थो ।

इयाणिं अवयवत्था विवरिज्जंति—'सिद्धपएहिं' ति सिद्धानि—निष्ठां गतानि न शोधितव्यानि उदाराणि पयाणि जेसु गंथेसु ते सिद्धपया भण्णंति । के ते ? भण्णंति—कम्मपगडिपाहुडा कम्मविपाग्गाइणुओगदारविसेसा । कम्हा ? सव्वण्णुमयपरंपराणु सारियत्ति सिद्धविसेसणमणहरगाहियपपायाणं । तेसिं पयाओ बंधउदयाओ संता संताओ उद्धरिऊण 'महत्थं संखेवं

१ पं । ता सं० २ पवाहिय से० १ मे० २ । ३ मिस्सर्दं मे० १ से० २ । ४ जे०... त्ति पाउणिवा कति नं ।। ५ मलियस्स प्रत्यन्तरे पं० १ टिप्पनी ॥

वोच्छं' ति संबन्धः। सिद्धपएहिं ति पंचमीनिद्देसो, सिद्धपदेहिंतो त्ति वुत्तं भवइ। अहवा ससमयसिद्धाणि पयाणि जीवट्ठाण गुणट्ठाणाणि, तेहिं सिद्धपएहिं ति। आहारस्स करणभावेण विवक्खियत्ताओ तेसु तान्याश्रित्य बंधोदय-संताणि भवंति, भण्णंति त्ति भणियं होति। अहवा संज्ञा-परिभासादिपदेहिं तेसु चेव गंथेसु पसिद्धेहिं वोच्छं ति, करणत्थे चेव तईया। 'महत्थं' ति निउणं गंभीरं दुरवगाहपयत्थवित्थारविसयं सुहगहण-गुणण धारणत्थं संखेवं वोच्छं ति संखेवो चेव विसेसिज्जति। ननु संखेवसद्देण महत्थो त्ति भण्णतीति चेत्, सच्चमेव, संखेवसद्दस्स महागंथविसयपवित्तिवियारामावाओ; किंतु मा होउ अक्खाणा ऽऽगमग-समइमीओ व अप्पत्थो त्ति महत्थग्गहणं। केसिं महत्थं संखेवं? ति, उच्यते—'बंधोदय-संतपगति-ठाणाणं' तत्थ बंधो त्ति—मिच्छत्तादिसामन्न विसेसपच्चयनिमित्तो जीवस्स कम्मपोग्गलाणं च अभेदसंबंधपरिणामो वह्न्यय:पिण्डवत्। तस्सेव विवागपत्तस्स अणुभवणं उदओ। बंधसमयप्पभिति जाव अवण्णहारूव अत्तविलं वा ताव तमेव संतं वुच्चति। तेसिं बंधोदय-संताणं पगतीउ बंधोदय-संतपगतीउ, पगति त्ति—सभावो, तेसिं ठाणाणि बंधोदय-संतपगतिठाणाणि। उदयग्गहणेण उदीरणा खवणा य गहिया। कहं? उदओ दुविहो—ठितिक्खओदओ पओगोदओ य। तत्थ ठितिक्खओदओ उदओ वुच्चइ, पओगोदओ उदीरण त्ति। इदाणीं उदयग्गहणेण खवणा कह गहिया? इति चेत्, उच्यते—खीयमाणं सभावगइत्तणेण अण्णपगइत्तणेण वा वेइज्जइ त्ति काउं नीसेसवेओ खओ त्ति, तम्हा उदयग्गहणेण उदीरणा खवणा य गहिया। संतग्गहणेण

१ आधारस्य ॥ २ "संज्ञा च परिभाषा च विधिर्नियम एव च। अतिदेशोऽधिकारश्च षड्विधं सूत्रलक्षणम्॥" इति सम्पूर्णः ॥ ३ तृतीया ॥ ४ व्यभिचाराभावात् ॥

उवसामणा भणिया। कहं? संजलणेण उवसामणा भणति त्ति काउं। एवमेते छ अत्थाहिगारा एयम्मि सत्थे पण्णिज्जंति। पगयमहणेण ठिति-अणुभाग-पएसाणं गुणासो, अवग्गहमेणं पगेगपमइबंधोदय-संताण गुणासो। पगइट्ठाणबंधोदय-संताण भेण महत्थ एत्थ मूलुत्तरपगइपविभत्ताणं बंधोदय-संतपगतिठाणाणमेव महत्थं संखेवं 'वोच्छं' भणामि त्ति संबज्झति। 'सुण' त्ति सीसस्स चित्तसमाहाणत्थं सोइंदियोवओगजणणत्थं च आयरिओ भणइ सुण त्ति। 'संखेवं' ति संखेवो पिंडो समुदओ त्ति एगट्ठा। निस्संदं 'दिट्ठिवायस्स' त्ति परिकम्म १ सुत्त २ पढमाणुओग ३ पुव्वगय ४ चूलियामय ५ पंचविहमूलभेयस्स दिट्ठिवायस्स, तस्स चोद्दसण्हं पुव्वाणं बीयाओ अग्गेणीयपुव्वाओ, तस्स वि पंचमवत्थुत, तस्स वि वीसपाहुडपरिमाणस्स कम्मपगडिणामधेयं चउत्थं पाहुडं तओ नीणियं, चउवीसाणुओगदारमइयपाहुडस्सेव एसो बिंदू, कओ ति इमे ठिच्चि अत्थाहिगारा नीणिया, तम्हा नीसंदो दिट्ठिवायस्स त्ति भण्णइ। तं नीसंदं दिट्ठिवायस्स बंधोदय संतपगइठाणाणं महत्थं संखेवं वोच्छं सुण त्ति संबंधो ॥ १ ॥

भाइ—भणियं 'बंधुदय-संतपगइठाणाणं संखेवं वोच्छं' ति, किं तं पत्तेममेव तेसिं संखेवो भण्णइ? उयाहु संजोगसंखेवो? त्ति, भण्णइ—न पत्तेयसंखेवो संजोगसंखेवो भणइ त्ति। तदुद्देसत्थ पराइपयसंजोगकमं करेमाणो सयमेवाऽऽयरिओ गाह भणइ—

कइ बंधंतो वेयइ, कइ कइ वा पयडिठाणकम्मंसा। मूलुत्तरपगडीसु, भंगविगप्पा उ बोद्धव्वा ॥ २ ॥

१ वेमर्स ध २। २ वा सप्तपयविकप्पत्ति। पे १। ३ बहिउपसंपसा। पे १। ४ ऊीणे भेग पे १। ५ प्पा ब को पे १।

कइ बंधंतो वेयइ कइ० त्ति । कइसद्दो परिमाणपुच्छायां । कइ कम्मपगडीओ बंधमाणो वेएइ कइ कम्मपगडीओ ? 'कइ वा पगइठाणकम्मंसा' इति तस्सेव कति कम्मपगइठाणाइं संतकम्माइं ? ति; एयम्मि पगरणे एयं वण्णिज्जइ। वासद्दो तेसिं तिण्हं पि विगप्पदंसणत्थो । एस संवेधपरूवणं कासु पगईसु संभवति ? इति चेत्, उच्यते—'मूलुत्तरपगईसु' त्ति मूलपगतीसु अट्ठ नाणावरणाईसु, उत्तरपगईओ अट्ठावण्णं सयं आभिणिबोहियनाणावरणाईं । 'भंगविगप्पा उ बोद्धव' त्ति एयासु मूलुत्तरपगईसु बंधोदय-संते पडुच्च बहू भंगा संभवंति त्ति जाणियव्वा ॥ २ ॥

उद्दिट्ठकमेणं मूलपगतीणं पगइसमुक्कित्तणा, बंधुदय-संताण पगतिठाणा य पुव्व परूविज्जति, पच्छा तेसिं संवेहो । तत्थ मूलपगती अट्ठविहा, तं जहा—णाणावरणिज्जं जाव अंतरायमिति । एयासिं अत्थविवरणा जहा सेयगे ।

मूलपगतीण बंधं पडुच्च पगतिठाणाणि चत्तारि, तं जहा—अट्ठविह सत्तविह छव्विहं एक्कविहं त्ति । सव्वपगईओ जुगवं बंधमाणस्स अट्ठविहं पगइठाणं, तं जहन्नुक्कोसेण अंतोमुहुत्तकालियं । आउगवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ बंधमाणस्स सत्तविहं, तं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं देसूणाइं अंतोमुहुत्तूणपुव्वकोडीतिभागब्भहियाइं लब्भति । आउग मोहणिज्जवज्जाइं बंधमाणस्स छव्विहं, तं जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । सत्तण्हं कम्माणं बंधवोच्छेदे जाते एक्कं वेयणिज्जं बंधमाणस्स एगविहं, तं जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं पुव्वकोडी देसूणा ।

१ वेयति चं १ ॥ २ णाति सं° चं १ चं १ ॥ ३ वति वण्ण चं २ ॥ ४ जाव अंत चं १ चं २ ॥ ५ पञ्चम शतकप्रकरणस्य १८-१९ गाथाचूर्णौ द्रष्टव्यम् ॥ ६ चत्तारि चं २ ॥ ७ वण्णतोवमसित्यर्थ ॥

इयाणिं उदयं पडुच्च तिण्णि ठाणाइं, तं जहा—अट्ठविहं सत्तविहं चउविहं। अट्ठविहकम्मपयडीओ उदयं वेयमाणस्स अट्ठविहं, तं कालओ अणादीयं वा अपज्जवसियं, अणादीयं वा सपज्जवसियं, सादीयं वा सपज्जवसियं उवसम-सेढिं अहिकिच्च। तत्थ जं सादीयं सपज्जवसियं तं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं। मोहवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ वेदेमाणस्स सत्तविहं, तं जहण्णेणं एगसमयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तियं। घातिकम्मवज्जाओ चत्तारि वेयमाणस्स चउविहं, तं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तियं उक्कोसेणं पुव्वकोडी देसूणा।

इयाणि सन्तकम्मं पडुच्च तिण्णि पगइठाणाइं, तं जहा—अट्ठविहं सत्तविहं चउविहं ति। अट्ठकम्मपगडीसमुदओ अट्ठविहं संतं, तं अभवियस्स वा अपज्जवसियं भवियस्स वा सपज्जवसियं अभव भवअहिकिच्च। मोहणिज्जे खीणे सत्तविहं, तं जहण्णमणुक्कोसेणं अंतोमुहुत्तियं। घाइकम्मक्खए चउविहं संतं, तं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तियं उक्कोसेणं पुव्वकोडी देसूणा।

चउत्थ-संताणं पगइट्ठाणसमुक्कित्तणा कया। इयाणिं संवेहपरूवणत्थं भण्णइ—

अट्ठविह-सत्त-छब्बंधगेसु अट्ठेव उदय-संतंसा। एगविहे तिविगप्पो, एगविगप्पो अबंधम्मि ॥ २ ॥

अट्ठविहसत्तछब्बंधएसु० गाहा। 'अट्ठविहसत्तछब्बंधगेसु अट्ठेव उदयसंतंसा' इति जो अट्ठविहं वा सत्तविहं वा छव्विहं वा बंधइ तस्स अट्ठविहो उदओ अट्ठविहं चेव संतं भवति। कम्हा? अट्ठविह-सत्तविह-छव्विहबंधगा नियमा सरागिणो, तं च

१ °बहगो चं १ ॥ २ मतियं चं १ ॥ ३-४ °घातियं चं २ ॥

मरागयं मोहमिओदयाओ हवइ, उदए सति संत नियमादेव सदेव, तम्हा अट्ठविह सत्त-छब्बंधगेसु अट्ठविहा उदय-संता लब्भंति। 'एगविहे तिविगप्पो' त्ति एगविहबंधगम्मि तिण्णि विगप्पा लब्भंति, तं०—एगविहो बंधो सत्तविहो उदओ अट्ठविह संत ति; एय जस्स मोहणिज्जं सव्वं उवसंतं तं पडुच्च, उवसंतत्ताओ उदओ न होइ संतभावेण अत्थि त्ति, एस पढमो वियप्पो। एगविहो बंधो सत्तविहो उदओ सत्तविह संत ति; एसो जस्स सव्वं मोहणिज्जं खीणं तं पडुच्च, एसो बितिओ। एगविहो बंधो चउविहो उदओ चउविहं संत त्ति; एसो जस्स घाइकम्माणि चत्तारि वि खीणाणि जोगपच्चइओ य बंधो तं पडुच्च, एस तइओ वियप्पो। 'एगवियप्पो अबंधम्मि' त्ति जोगाभावाओ बंधो नत्थि, तस्स संसारत्थस्स वि अजोगिणो चत्तारि वि अघाति कम्माइं उदय-संतत्तणेण अत्थि त्ति, एसो एगो चेव वियप्पो पंचरहस्सक्खरउच्चारणकालपरिमाणो, परओ सिद्धो हवइ ॥ ३ ॥ गा० ४ ॥

मूलपगडीओ पडुच्च एए सत्त वियप्पा भणिया। इयाणिं ते चेव विगप्पा जीवट्ठाण-गुणट्ठाणेसु मग्गिज्जंति, केसु ठाणेसु केत्तिया संभवंति? त्ति। पुव्वं ताव जीवट्ठाणेसु भण्णइ। तत्थ इमा गाहा—

सत्त ऽट्ठ बंध अट्ठुदय-सन्त तेरससु जीवठाणेसु। एगम्मि पंच भंगा, दो भंगा होंति केवलिणो ॥ ४ ॥

सत्तट्ठबंध अट्ठुदयसंत तेरससु जीवठाणेसु० त्ति। जीवट्ठाणाण विवरणा जहा सयगे। सत्तविहो बंधो अट्ठविहो उदओ अट्ठविह संत ति, एसो वियप्पो सण्णिपंचिंदियपज्जत्तगवज्जाण तेरसण्ह जीवट्ठाणाणं आउगबंधकालं मोत्तूणं सव्वकालं लब्भइ;

1 मा तदे° थं १ थं २ ॥ २ स धीमो। थं १ थं २ ॥ ३ विगप्पो थं १ थं २ ॥ ४ इयतो मतप्रकरणस्य चतुर्थगाथा तत्पूर्णिम।

एसो विगप्पो चिरं कालं लब्भइ त्ति काउं अट्ठविहबंधविगप्पाओ पुव्वं भणिओ। अट्ठविहो बंधो अट्ठविहो उदओ अट्ठविहं संतं ति, एसो विगप्पो एएसिं चेव तेरसण्ह जीवट्ठाणाणं आउगबंधकाले अंतोमुहुत्तकालं लब्भइ; एसो थोवकालिओ त्ति पच्छा भणिओ। 'एगम्मि पंच भंगा' त्ति सण्णिपंचिंदियपज्जत्तगम्मि मूलिल्ला पंच भंगा भवंति। कहं? सत्त अट्ठबंधगाणं भावना पुव्वत्तु चेव्या। छव्विहो बंधो अट्ठविहो उदओ अट्ठविहं संतं ति, एसो विगप्पो सेढीए सुहुमायस्स छव्विहबंधगस्स मोहणिज्जस्स बंधे वोच्छिण्णे सुहुमसंपरायस्स लब्भति। एगविहो बंधो सत्तविहो उदओ अट्ठविहं संतं ति एसो विगप्पो सण्णिस्स उवसंतस्स लब्भइ। एगविहो बंधो सत्तविहो उदओ सत्तविहं संतं ति, खस्सेव खीणकसायस्स लब्भइ। 'दो भंगा होंति केवलिणो' त्ति अंतिमा दो भंगा केवलीणं जहक्कमेण सजोगि-अजोगीणं भवंति। केवलिभावेणं मणोविण्णाणरहिया सण्णिणो न हुंति त्ति एयपरत्र ॥ ४ ॥

इदाणिं तं चेव छच विगप्पा गुणट्ठाणेसु मग्गिज्जंति त्ति तयत्था इमा गाहा—

अट्ठसु एगविगप्पो, छस्सु वि गुणसण्णिएसु दुविगप्पो। पत्तेय पत्तेयं, बंधोदय-संतकम्माणं ॥ ५ ॥

अट्ठसु० गाहा। 'अट्ठसु' त्ति गुणट्ठाणाणि चोद्दस, तं —मिच्छद्दिट्ठिपभिती जाव अजोगि त्ति, एएसिं विवरणं जहा संग्गहे;

* चिरन्तनं गा० १ । २ चागस्स गा० १ । चागस्स गा० १ । ३ तगस्स गा० १ गा० २ । ४ रस्या शतकप्रकरणस्य नवम गाथा द्रष्टव्या ।

अट्ठसु गुणट्ठाणेसु–सम्मामिच्छदिट्ठी अपुव्वकरणादि जाव अजोगिकेवलि त्ति, एएसु एक्केक्को विगप्पो लब्भइ। तत्थ सम्मामिच्छदिट्ठी अपुव्वकरण अणियट्टीणं सत्तविहो बंधो अट्ठविहो उदओ अट्ठविहं संतं ति एसो एगो भंगो। कहं? आउं बंधज्झवसाणरहिया मोहणिज्जस्स य नियमा बंधगा बायरकसायवेयग त्ति काउं। सुहुमसंपरायस्स छव्विहो बंधो अट्ठविहो उदओ अट्ठविहं संतं ति एसो विगप्पो एगो लब्भइ। कहं? बायरकसायाऽभावाओ आउगं मोहं च न बंधइ, सरागो त्ति काउं सेसाणि सव्वाणि बंधइ त्ति। उवसंतकसायस्स एगविहो बंधो सत्तविहो उदओ अट्ठविहं संतं ति एसो विगप्पो एगो लब्भइ। कहं? रागाभावाओ वेयणिज्जवज्जाणं बंधो नत्थि, उवसंतभावाओ मोहणिज्जस्स उदओ नत्थि, संतभावेण अत्थि त्ति काउं। खीणकसायस्स एगविहो बंधो सत्तविहो उदओ सत्तविहं संतं ति एसो एगविकप्पो लब्भइ। कहं? मोहणिज्ज सव्वहा खीणं ति उदय-संतेहिं नत्थि, सजोगि त्ति वेयणिज्जस्स बंधो अत्थि त्ति काउं। सजोगिकेवलिस्स एगविहो बंधो चउव्विहो उदओ चउव्विहं संतं ति एसो एगो विगप्पो लब्भइ। कहं? चउण्हं घाइकम्माणं उदय-संतक्खएणं केवली भवइ, सरीरसंबंधाओ चत्तारि वि अघाईणि उदय-संतधम्मेण अत्थि, जोगसहियत्ताओ वेयणिज्जस्स बंधो अत्थि त्ति काउं। अजोगिकेवलिस्स बंधो नत्थि, चउव्विहो उदओ चउव्विहं संतं ति एसो एगो विगप्पो लब्भइ, कहं? जोगाभावाओ बंधो नत्थि, सरीरसंबंधाओ उदय-संता अत्थि त्ति।

'छस्सु वि गुणसन्निएसु दुविगप्पो' त्ति मिच्छदिट्ठी सासायणसम्मदिट्ठि अविरयसम्मदिट्ठि-संजयासंजय-पमत्त-अपमत्तसंज-

१ एक्को वि सं २ ॥ २ उस्स सं ४ सं ४ खं १ ॥ ३ काउं। सु° खं १ ॥ ४ जोगिकेव खं १ खं २ ॥

एसु एएसु छसु गुणठाणगेसु दो दो विगप्पा भवंति, तं —अट्ठविहो बंधो अट्ठविहो उदओ अट्ठविहं संतं ति, एसो आउय बंधकाले भवेसिं लब्भइ। कह? आउगबंधऽज्झवसायठाणाणि एएसु लब्भंति त्ति काउं। सत्तविहो बंधो अट्ठविहो उदओ अट्ठविहं संतं ति, एसो बीओ विगप्पो आउगबंधकालं मोत्तूण सेसं सव्व कालं लब्भइ त्ति। कहं? सव्वे पायरमोहस्स उदए बज्झंति त्ति काउं। 'पत्तेयं पत्तेय बंधोदयसंतकम्माण' त्ति एवं पय सव्वेसिं सामण्णं, पत्तेयं पत्तेयं गुणट्ठाणेसु एक्केक्को दो दो वा विगप्पा होंति त्ति वुत्त भवइ ॥ ५ ॥

मूलपगडीणं बंधोदय-संताणं संवेहो सामित्त य भणियाणि। इयाणिं उत्तरपगडीण पगइसमुक्कित्तणा बंधोदय-संताणं ठाणसमुक्कित्तणा संवेहो य अप्पप्पणो ठाणे भण्णिहिति। तत्थ पगइसमुक्कित्तणा नाणावरणाईणं, तं०—

पंच नव दोण्णि अट्ठावीसा चउरो तहेव बायाला। दोण्णि य पंच य भणिया पगडीओ आणुपुव्वीए ॥ (शतकप्रकरणगाथा ३९) इति।

एएसिं भेओ सरूवनिरूवणा य जहा सयगे। पगइसमुक्कित्तणा कया। इयाणिं बंधोदय-संताण ठाणसमुक्कित्तणा, पुव्वं ताव नाणावरणस्स बंधट्ठाणाइं तुल्लपगइत्ताओ अंतराइयस्स य जुगवं भण्णंति। इमा गाहा—

बंधोदय-संतंसा, नाणावरणंतराइए पंच। बंधोवरमे वि तहा, उदय-संता होंति पंचेव ॥ ६ ॥

---

१ ठाणेसु खं १ ॥ २ संतो विहओ खं १ खं २ ॥ ३ अयोगिकर्मस्तवे मार्गणे समाप्ते। तथापि विचरिता अधिकृतेयं गाथा चूर्णिकृता मूलप्रकरणस्येति ॥ ४ ॰भावओ लब्भइ खं १ खं २ ॥ ५ त्ति। तत्थ इमा खं १ खं २ ॥

बंधोदयसंतंसा णाणावरणंतराइए पंच० त्ति । नाणावरणिज्जस्स आभिणि०-सुओहि-मणपज्जव-केवलणाणावरणाणं एयासिं पंचण्हं पगडीण समुदओ एग चेव बंधट्ठाणं । कम्हा ? धुवबंधादित्ताओ । अंतराइयस्स दाण-लाभ भोगोपभोग-वीरियंतराइगाणं पंचण्हं पगडीण समुदओ एगं चेव बंधाइट्ठाण, पंचण्हं पगडीण समुदओ धुवबंधाइत्वादेव । इयाणि संवेहो—णाणावरणस्स पंचविह बंधमाणो पंचविहं एगं चेव बंधाइट्ठाण, पंचण्हं पगडीण समुदओ धुवबंधाइत्वादेव । इयाणि संवेहो—णाणावरणस्स पंचविह बंधमाणो पंचविहं वेदए पंचविह चेव संत । कथम् ? ध्रुवकत्वात् । एवमंतराइयस्स वि । 'बंधोवरमे वि तहा उदसंता होंति पंचेव' त्ति दोण्ह वि जुगव पंचण्ह पगईण बंधवोच्छेए जाए उदय संता पंचेव भवति, ध्रुवकत्वादेव । उदओ संतं च जुगवं फिट्टति त्ति कम्हठं अण्णो विगप्पो नत्थि ॥ ६ ॥ इयाणि दंसणावरणस्स बंधाइट्ठाणा भण्णंति—

बंधस्स य संतस्स य, पगईठाणाणि तिन्नि तुल्लाणि । उदयट्ठाणाणि दुवे, चउ पणगं दंसणावरणे ॥ ७ ॥

बंधस्स य संतस्स य पगइठाणाई तिण्णि तुल्लाइ० त्ति । दंसणावरणस्स तिण्णि बंधट्ठाणाणि, त०—नवविह छव्विह चउ विहं । तत्थ नवविहं—निद्दानिद्दा पयलापयला थीणद्धी निद्दा पयला चक्खुदंसणावरणीय अचक्खुदंसणावरणीय ओहिदंसणावरणीयं केवलदंसणावरणीयमिति, एएसिं नवण्ह कम्माण समुदओ एगं बंधट्ठाणं । कथम् ? ध्रुवबन्धित्वात् । तओ थीणगिद्धितिगस्स जुगव बंधे वोच्छिण्णे सेसाणं छण्ह कम्माण एगं बंधट्ठाण । तओ निद्दा-पयलाण बंधे वोच्छिण्णे सेसाणं चउण्ह कम्माणं एगं बंधट्ठाणं । एए चेव संतस्स वि तिण्णि ठाणा—नवण्ह समुदओ एगं संतट्ठाणं, नवगाओ संताओ थीणगिद्धि

१ 'बन्ध के' बं १ बं २ ।

तिण्हं जुगवं सन्निए छविहं संतं, तओ निद्दा-पयलाणं जुगवं खवियाणं चउविहं संतट्ठाणं। तेण भण्णइ—'बंधस्स य संतस्स य पगइठाणाइं तिण्णि तुल्लाइं'। 'उदयट्ठाणाइं दुवे' त्ति-दंसणावरणे दोण्णि उदयट्ठाणाणि। के ते ? भण्णइ—'चउ पणगं' ति चउण्हं समुदओ पंचण्हं वा। तत्थ चत्तारि चक्खुदंसण-अचक्खुदंसण-ओहि-केवलदंसणावरणाणि, एएसिं चउण्हं पगईणं समुदओ धुवोदएण त्ति काउं एगं उदयट्ठाणं। एएसु निद्दापयलाणं अण्णयरे छूढे पंच भवंति, एयं एक्कं उदयट्ठाणं। अण्णो नत्थि विगप्पो। कम्हा ? निद्दापयलाओ दुण्णि जुगवं न उदेंति त्ति काउं। निद्दादओ अधुवोदया, कम्हा ? कालोविय वेक्खाओ। 'दंसणावरणे' त्ति एयाणि बंधोदय-सन्ताणं ठाणाणि दंसणावरणे नामियव्वाणि ॥ ७ ॥

इयाणि संवेहावसरो सो भण्णइ—

बीयावरणे नवबंधएसु चउ पंच उदय नव संता। छ चउ बंधे चेव, चउ बंधुदए छलंसा य ॥ ८ ॥

बीयावरण नवबंधगेसु गाहा। बीयावरणं-दंसणावरणं, तम्मि बीयावरणे जे नवविहं बंधंति तेसिं चउविहो पंचविहो वा उदओ भवइ, संतं पुण नवविहं चेव। 'छ चउ बंधे चेवं' ति जे छव्विहबंधगा तेसिं पि चउविहो पंचविहो वा उदओ। संतं पुण नवविहं चेव, कम्हा ? छव्विहबंधम्मि थीणगिद्धितिगस्स खओ नत्थि त्ति। चउविहबंधगे वि उवसमसेढिं पडुच्च एवं चेव। खवगसेढीए छविह-चउविहबंधगाणं चउविहो उदओ एगो चेव; पंचोदयस्स संभवो नत्थि, कम्हा ? खवगा अच्चंतविसुद्ध त्ति

१ [illegible]

खाउं, सेम निद्दा-पयलाणं उदओ नत्थि,—"णाइविसुद्धस्स संकिलिट्ठस्स वा निद्दोदओ" (   ) त्ति वयणाओ। चउविहबंधस्स चेव खवगस्स जाव खीणगिद्धितिगं न खीणं ताव चउविहो उदओ, नवविहं संतं। तओ थीणगिद्धितिगे खीण 'चउबंधुदए छलंसा य' त्ति चउविहो बंधो चउविहो उदओ छव्विहं संतं ति ॥ ८॥

उवरयबंधे चउ पण, नवंस चउरुदय छ च्च चउ संता। वेयणिया ऽऽउय-गोए, विभज्ज मोहं परं वोच्छं ॥९॥

उवरयबंधे चउ पण नवंस० त्ति गाहा। 'अंस' इति संतकम्मं भण्णइ। दंसणावरणस्स बंधे वोच्छिण्णे चउ पंचगमुदया नवविहं संतं, एयं उवसंतकसायं पडुच। कहं? उवसामग-उवसंतेसु निद्दा-पयलोदओ संभवइ, सतकम्मे भणियं—'निद्दादुगस्स उदओ खीणग-खवगे परिच्चज्ज" त्ति। नवविहं संतं, उवसमसेढीए थीणगिद्धितिगस्स खओ नत्थि त्ति। 'चउ उदय छच्चउ संताइं' ति चउविहो उदओ छ संतगाइं ति एयं खीणकसायस्स चरिमसमयं मोत्तूण सेसकाले लब्भइ। चउविहो उदओ चउविहं संतं ति एयं तस्सेव दुचरिमसमए निद्दादुगे खविए चरिमसमए लब्भति। एव एगादस विगप्पा दंसणावरणे। एत्थ अण्णे अण्णारिसं पढंति—'खवग-खीणकसायाणं निद्दा-पयलाणं उदओ अत्थि' त्ति

१ छ घ चउ संता। वे १। छ घ चउरंसा। खे १ ह २ वग उदय नवविहं संतं। अंस इ छ। घं १ प्रतिसु लभ्यते ति तत्र पञ्चमपाठ छाद्मस्थिकोऽत्र निर्दिष्टं वसते॥ ३ एवं बंधे घं २ इ ४ 'भण्णे' इति प्राचीनकर्मस्तवकारादय। पञ्चमं प्राचीनकर्मस्तवे— "निद्दा पयला य दुवे खीणदुचरिमम्मि उदयवोच्छेओ। निद्राप्रचलयोः क्षीणकषायस्य द्विचरमसमये उदयव्यवच्छेदः। चरमसमये तु क्षीणकषायस्य
१

तं न भवइ, कारणं पुण्वं।

रज्यमानः। यदि पुनराह—दर्शनमोहे मिथ्यात्वमोहसम्यक्त्वयोः, यथासम्भवमपि हि मिथ्यात्वं क्षेपणपरिणामे भवत्युदय, उपशमं तथैव [illegible] न मिथ्योदयभावः॥ (सर्वविरत्यमात्रमपूर्वार्द्धं वर्त्तते च)।

श्रीमच्चूर्णिकारस्तु अपि प्राचीनकर्मस्तवकारमतानुगः। यथा—"मोत्तूण खीणरागं ईरियावहिया बंधेति। मिच्छत्तस्स सुहमा बीय-राग्रम् [illegible] भवति। [illegible] सुहमा वेदे काले उदयो जीवा इगिदसविहा पत्तेया मिच्छत्तमोहस्सोदयः।" (पञ्चसङ्ग्रहे [illegible] च)। [illegible] कर्मप्रकृतिटीकायां प्रतिपादयन्ति सम—ये तु कर्मस्तवकारादयः [illegible] मिच्छदिट्ठीसम्यक्त्वप्रभृति [illegible] गच्छन्ति [illegible] मनुष्यरूपा भवसम्भवात् क्षीणरागमनस्कानिवृत्तिबादरसूक्ष्म [illegible] इगिदसविहा पत्तेया मिच्छत्तमोहस्सोदय इत्यादि। तथैव तन्मतानुसारेण पञ्चसङ्ग्रहे—मोत्तूण खीणरागं ईरियावहिया बंधे-रेति। मिच्छस्स। इति। (प्रकृत्युदीरणाकरणस्यावचूर्णिवत्)।

तत् पुनः श्रीमच्चूर्णिकाराः पञ्चसङ्ग्रहस्य सप्ततिकासङ्ग्रहे [illegible] च तथाहि सुहुमम्मि [illegible] [illegible]। उक्तं चान्यत्र, [illegible] हि वेद [illegible] ॥ १४ ॥ [illegible] सूक्ष्मसम्पराये चतुर्णां [illegible] च [illegible] षट् प्रकृतयः [illegible] भवन्ति [illegible] एकैकस्य मते सप्ततिकाकारमतेन। कर्मस्तवकारमतेन [illegible] भवति [illegible] प्रकारः। एवं [illegible] [illegible] ॥ १५ ॥" इत्यत्र [illegible] प्रतिपादितं तत् सप्ततिकाप्रकरणस्य [illegible] बोद्धव्यम्, न पुनरेतत् [illegible]॥

'वेयणियाऽऽउगमोए विभज्जं' ति। इयाणिं वेयणियस्स बंधादिट्ठाणा भण्णंति—वेयणियस्स सामण्णेण एगं बंधट्ठाणं गा० ९॥
सायं वा असायं वा, दो वि जुगवं न बज्झंति, विरुद्धत्तात्। उदयट्ठाणं पि एगं चेव दोण्हमण्णयरं, दो वि जुगवं न उदेंति विरुद्धत्तादेव। दो संतट्ठाणाणि—दो वा एगं वा। ताव अण्णयरं न खीणं ताव दो हवंति, एक्कयरे खीणे एगं भवइ। इयाणिं संवेहो—असायं बंधंतस्स असायमुदए साया ऽसायाणि दो वि संतं, अहवा असायं बंधं० सायमुदए दो वि संतं। बंधे उवरए असायमुदयं साया संतं, अहवा सायं बंधं० असायमुदए दो वि संतं, अहवा साय बंधं० सायमुदयं दो वि संतं; अहवा असायमुदयं साए खीणे असाय संतं, एय ऽसायाणि दो वि संतं, अहवा सायमुदए साया ऽसायाणि दो वि संतं; अहवा असायमुदयं साए खीणे असाय संतं, एयं पि एक्कं समयं लब्भइ। वेदिज्जमाणं मोत्तूण इयरं पढमं एगं समयं लब्भइ; अहवा सायमुदए असाए खीणे साय संतं, एयं पि एक्कं समयं लब्भइ। सविकप्पा वि। वेयणिज्जे एए अट्ठ भंगा। इयाणिं आउगस्स बंधादिट्ठाणा भण्णंति—

'आउगं' ति आउगस्स बंधं पडुच्च सामण्णेणं एगं बंधट्ठाणं चउण्हमण्णयरं, विरुद्धत्वात् दुमादि जुगवं न बज्झति। उदयं पडुच्च एगं ठाणं सामण्णेण चउण्हमण्णयरं, विरुद्धत्वात् दुमादियो जुगवं न उदेंति त्ति। दो संतट्ठाणाणि—ठाणं पडुच्च सामण्णेण एगं वा दो वा। एगं ति चउण्हमण्णयरं, ताव आव अण्णं परभवियाउयं न बज्झति, परभवियाउए बद्धे जाव अण्णत्थ न उप्पज्जति ताव दोण्णं संतट्ठाणं। इयाणिं संवेहावसरो—आउगस्स तिण्णि अवत्था—बंधपुव्वकालावत्था बंधकाला

1 वेयणीय-ऽऽउ-गोयाणं भणयबंधादिविभंगा विभासा मूलपयडीसु उवलब्भते—"गोयम्मि सत्त भंगा अट्ठ य भंगा हवंति वेयणिए। पण नव नव पण भंगा, आउचउक्के वि कमसो उ॥" २ सायं बंधं० १ ॥ ३ जाणि म बं० १ ॥ ४ पाठ म बं० १ ॥

बद्धा बंधुदयसंतावत्था इति । बंधपुव्वकालअवत्थाए एका, सेसाणं दोण्हं चत्तारि वा दो वा विगप्पा । नेरइयस्स निरयाउयं उदये निरयाउयं संतं ति बंधपुव्वकाले । तिरियाउयं बंधति निरयाउयं उदय निरय-तिरियाउयं संतं, अहवा मणुयाउय बंधति निरयाउगमुदयं निरय-मणुस्साउमाणि संतं ति; एए दो भंगा बंधकाले । उवरए बंधे निरयाउगं उदयं निरय-तिरियाउयं संतं, अहवा निरयाउगमुदयं निरय-मणुस्साउमाणि दो वि संत; एए दो भंगा बंधुत्तरकाले भवंति । देव निरयाउगाणं बंधकाले बंधुत्तरकाले य परोप्परसंजोगो नत्थि । कम्हा ? भण्णइ—देव-नेरइया देवेसु नेरइएसु य न उववज्जंति त्ति काउं । एवं निरयाउगेण पंच भंगा । एवं देवाउगेण वि पंच भंगा, नवरं देवाउगमुदयं देवाउगं संतं ति भाणियव्वं । तिरिक्खस्स तिरिक्खाउगमुदयं तिरिक्खाउग संतं ति बंधपुव्वकाले । निरयाउगं बंधइ तिरियाउगमुदयं नरय-तिरियाउमाणि संतं, अहवा तिरियाउगं बंधइ तिरियाउगं उदय तिरिय-तिरियाउमाणि संतं, अहवा मणुयाउगं बंधइ तिरियाउग उदय तिरिय-मणुस्साउमाणि संतं, अहवा देवाउगं बंधइ तिरियाउगं उदयं तिरिय-देवाउमाणि संतं ति; एए चत्तारि भंगा बंधकाले । बंधे वोच्छिण्णे तिरियाउगमुदयं तिरिय-निरयाउगाणि दो वि संतं, अहवा तिरियाउगमुदयं तिरिय-तिरियाउगाणि संतं, अहवा तिरियाउगमुदयं तिरिय-मणुयाउगाणि दो वि संतं, अहवा तिरियाउगमुदयं तिरिय-देवाउमाणि संतं; एए चत्तारि भंगा बंधुत्तरकाले । एए तिरियाउगेण णव भंगा लद्धा, तिरिक्खा चउसु वि गईसु उववज्जंति त्ति काउं । एवं मणुयाउगेण वि नव

१ "स्स नेरइयं" पा० २ पाठः पं० । ३ 'पुव्वय' पं० ५ एवं चत्ता पं० । ४ "वि दो वि सं पं० ।
६ आयरं मग पति ॥ ७ गा तिरि पं० ॥

भंगा, नवरि मणुयाउगसुदयं मणुस्साउगं संत त्ति आलावो भाणियव्वो। एवं आउमभंगा सव्वे सहिया अट्ठावीसं ।

इयाणिं गोत्ते बंधपगइट्ठाणा भण्णंति—'गोत्ते' त्ति गोयस्स ठाणं पडुच्च एगं बंधट्ठाणं—उच्चं नीयं वा। दो वि जुगवं न बज्झंति, विरुद्धत्वात्। दो संतट्ठा दो वि जुगवं न उदेंति, विरुद्धत्वात्। ठाणं पडुच्च सामण्णेण एगं उदयट्ठाणं उच्च-नीयाणमण्णयरं। दो संतट्ठाणाणि—दो वा एगं वा। उच्चा-नीयाणं समुदओ दोण्णि। तेउकाय-वाउकाया उच्चागोयं उव्वलेंति, तिरिक्खेसु चेव उववज्जंति त्ति काउं, तिरिक्खेसु चेव उच्चागोयस्स उदओ नत्थि त्ति तम्मि उच्चागोए उव्वलिए नीयागोयमेव एगं संतं। अहवा नीयागोए अजोगिदुचरमसमए खविए उच्चागोए सेसे एगं वा एगं संतट्ठाणं ति। इयाणिं 'कइ बंधंतो वेयइ कइ?' त्ति एयस्स अवसरो—नीयागोयं बंधइ नीयागोयसुदयं नीयागोयं संतं, एसो भंगो तेउकाइग-वाउकाइगे पडुच्च, तओ अपज्जत्तगाइए वा सेसजीवे पडुच्च। अहवा नीयं बंधं नीयसुदयं नीयमुच्चं संतं, अहवा नीयं बंधं उच्चसुदयं नीयमुच्चं संतं, अहवा उच्चं बंधं नीयसुदयं नीउच्चं संतं, अहवा उच्चं बंधं उच्चसुदयं नीउच्चं संतं। बंधे उवरए उच्चसुदयं नीउच्चं संतं, अहवा उच्चसुदयं उच्चं संतं; एए गोयम्मि सव्वे सत्त भंगा। बंधोवरमे दो भंगा। सेसेसु नीयागोयस्स उदओ नत्थि त्ति काउं अण्णो विगप्पो नत्थि त्ति। एवं वेयणिया ऽऽउग-गोए 'विभज्ज' त्ति विभजेत्, विकल्पयेदित्यर्थः। तहा चेव विभत्ता।

'मोहं परं वोच्छं' त्ति अओ परं मोहणिज्जस्स पगइसमुक्कित्तणा बंधाइट्ठाणाणं सामण्णेण परूवणा संवेहो य भण्णइ ॥ ९ ॥

---

१ एवु त्ति वे भ्रं २ ॥ २ सु बधा भ्रं १ ॥ ३ पे । इयाणि भ्रं १ भ्रं २ ॥ ४ क्षपितमित्यर्थं प्रमत्तगुणस्थानाद्योगिगुणस्थानकपर्यन्तमपितिमिति भाव ॥ ५ 'एवु 'वि° वे भ्रं २ ॥

तत्थ पगइसमुक्कित्तणा—मोहणीयं दुविहं—दंसणमोहणीयं चरित्तमोहणीयं च। भेओ य अत्थनिरूवणं च जहा सयगे। तत्थ बंधट्ठाणाणि—

बावीस एक्कवीसा, सत्तरेसा तेरसेव नव पंच। चउ तिग दुग च एक्कं, बंधट्ठाणाणि मोहस्स ॥१०॥

बावीस० गाहा। २२। २१। १७। १३। ९। ५। ४। ३। २। १। एयाणि मोहणिज्जस्स दस बंधट्ठाणाणि॥१०॥

एगं च दो य चउरो, एत्तो एक्काहिया दसुक्कोसा। ओघेण मोहणिज्जे, उदयट्ठाणा नव हवंति ॥११॥

एगं व दो च० गाहा। १। २। ४। ५। ६। ७। ८। ९। १०। एयाणि मोहणिज्जे सामण्णेण सव्वजीवे पडुच्च नव उदयट्ठाणाणि। एयाओ दो वि गाहाओ उवरिं समेयाओ वक्खाणिहिंति॥ ११॥

अट्ठग-सत्तग-छ-च्चउ-तिग-दुग-एगाहिया भवे वीसा। तेरस बारेक्कारा, एत्तो पंचाइ एक्कूणा ॥ १२ ॥

अट्ठ गाहा। २८। २७। २६। २४। २३। २२। २१। १३। १२। ११। ५। ४। ३। २। १। एयाणि मोहणिज्जे पन्नरस संतट्ठाणाणि। तत्थ अट्ठावीसा सव्वमोहपगडिसमुदओ। तओ सम्मत्ते उव्वलिए सत्तावीसा। तओ सम्मा-मिच्छे उव्वलिए छव्वीसा, अणाइमिच्छद्दिट्ठिस्स वा। अट्ठावीसाओ अणंताणुबंधिसु विसंजोइएसु चउवीसा। तओ मिच्छत्ते

१ एसव्वा एतदवतरणस्य १८-२१ पत्रे उपलभ्य॥ २ 'रसे से' चे १॥ ३ एक्को व दो व चउ चे १। एक्को व दो चे १॥ ४ °विसा उ° चे १॥ ५ 'हुवसततमक्काहियासु चे २ चे १॥ ६ 'बारस ए° चे १ चे १ ० ७ वा छव्वीसा। अट्ठ° चं १॥

खविए तेवीसा । तओ सम्मामिच्छत्ते खविए बावीसा । तओ सम्मत्ते खविए एक्कवीसा । तओ अट्ठकसाए खविए तेरस । तओ नपुंसगवेए खविए बारस । तओ इत्थिवेए खविए एक्कारस । तओ छन्नोकसाए खविए पंच । तओ पुरिसवेए खविए चत्तारि । तओ कोहसंजलणे खविए तिण्णि, माणे दोण्णि, मायाए खवियाए एक्को ॥ १२ ॥

सत्तस्स पगइठाणाणि ताणि मोहस्स होंति पन्नरस । बंधोदय-संते पुण, भंगविगप्पे बहू जाण ॥१३॥

सत्तस्स पगइठाणाणि० गाहा । पुव्वद्धं पसिद्धं । मोहणिज्जस्स संतट्ठाणाणं परूवणा कया । 'बंधोदयसंते पुण भंगविगप्पे बहू जाण' त्ति बंधोदय-संताणं पडुच्च भंगा भाणियव्वा ॥ १३ ॥

पुव्वं बंधट्ठाणाणि सामण्णेण उद्दिट्ठाणि ताणि इयाणिं सभेयाणि वक्खाणिज्जंति—

छब्बावीसे चउ इगवीसे सत्तरस तेरसे दो दो । णवबंधए वि दोण्णि उ, एक्केक्कमओ परं भंगा ॥१४॥

छब्बावीसे० गाहा । बावीसबंधगस्स छब्भंगविगप्पा भवंति । का य बावीसा ? के य तस्स भेया ? भण्णति— मिच्छत्तं, सोलस कसाया, तिण्हं वेयाणमेगयरं, हासरइ-अरइसोगाणं दोण्ह जुयलाणमेगयरं, भयं, दुगुंछा चेति । एयासिं बावीसाए पयडीणं एस चेव समुदाओ बंधमाणस्स मिच्छद्दिट्ठिस्स । एयाए बावीसाए छब्भेया, ध०—तिवेद-हासरइ अरइसोगजुयलेहिं हुंति, तिण्णि दुगा छ त्ति । मिच्छत्तेण विणा सा चेव बावीसा एक्कवीसा भवइ । नवरं दोण्हं वेयाण

१ तओ कोहसंजलणाए खवियाए तिण्णि तओ माणसंजलणाए खवियाए दोण्णि तओ मायासंजलणाए खवियाए एक्को चं १ ॥ २ बहु जा चे १ ॥ ३ छ एक्कवीस सं चे २ ॥ ४ यं दुगुं चं १ चं १ ॥ ५ हुंति चं १ चं १ ॥ ६ णा स चेव चं १ चं १ ॥

मेगपरं वि भाणियव्वं । किं कारणं ? नपुंसगवेओ मिच्छत्तपच्चओ त्ति काउं नत्थि । एत्थ चत्तारि भंगा दुवेय हासरइ-अरइसोग जुयलेहिं होंति, दो दुयया चत्तारि । सा चेव एगवीसा अणंताणुबंधिरहिया सत्तरस । नवरं बारस कसाया पुरिसवेओ त्ति भाणियव्वं । किं कारणं ? इत्थिवेयस्स अणंताणुबंधिसहचारिपच्चाओ । एत्थ दो भंगा हासरइ-अरइसोगजुयलेहिं । ते चेव सत्तरस अपच्चक्खाणावरणरहिया तेरस । एत्थ वि अणंतरुत्ता चेव दो भंगा । ते चेव पच्चक्खाणावरणरहिया नव । एत्थ वि ते चेव दो भंगा । ते चेव जुयलम्मइ भय-दुगुंछारहिया पंच । इओ परेण विगप्पो नत्थि । ते चेव पुरिसवेयरहिया चत्तारि । कोहसंजलणेण विणा तिण्णि । माणेण विणा दोण्णि । मायाए विणा एक्को ॥ १४ ॥

बंधट्ठाणाणि भणियाणि इयाणिं 'कइ बंधंतो वेयइ कइ ?' त्ति एयस्स अवसरो । पुव्वुद्दिट्ठाणि उदयट्ठाणाणि एवं चेव पद सवियप्पाणि भण्णंति—

दस बावीसे णव इक्कवीस सत्ताइ उदयठाणाणि । छाई णव सत्तरसे, तेरे पंचाइ अट्ठेव ॥ १५ ॥

दस बावीसे नव एक्कवीस० गाहा । बावीसबंधगस्स मिच्छदिट्ठिस्स सत्ताइ-दसंताणि चत्तारि उदयट्ठाणाणि, तं०—सत्त अट्ठ नव दस त्ति ७।८।९।१०। तत्थ सत्तोदओ—मिच्छत्त अपच्चक्खाण-पच्चक्खाणावरण-संजलणाण य चउण्हं कोहाई णमेगयरं तिण्णि, किं कारणं ? कोहम्मि वेइज्जमाणे सव्वे कोहा वेइज्जंति, सजातीयत्तणाओ, एवं माण-माया-लोमा वि; तिण्ह

१ समवे° मु १ मु २ ॥ २ बारस त्ति मु १ ॥ ३ °रि त्ति । स चेव मु १ मु २ ॥ ४ जुयलगजुयलम्मपयुगं मु १। जुयलजुय मु १ ० ५ व एगवीसे स वे १ ॥ ६ बज्झमाणेसा । सा वे १ ॥

वेयाम एगयरं, तिण्णि वि जुगव न उदेंति, विरुद्धत्वात्; हासरइ अरइसोगाणं दोण्ह जुयलाणमेगयरं, एए विरुद्धेकओ दुगवं न उर्देति। एयासिं सत्तण्हं पगईणं धुवोदओ मिच्छद्दिट्ठिस्स ठाणं पढम। एयम्मि सत्तोदए चउवीसं भंगा, तं०—चत्तारि कोह-माण माया-लोभे तिण्णि वेए हासरइ-अरइसोगे दोण्णि वि जुयले अहिगिच्च उर्वेति परोप्परगुणिया २४। एयम्मि चेव सत्तोदए भएण वा दुगुंछाए वा अणंताणुबंधिए वा छुढे अट्ठ। एत्थ मय दुगुंछा अणंताणुबंधीहिं अट्ठगे तिण्णि चउवीसाओ लब्भंति। अणंताणुबंधिउदयरहिओ मिच्छद्दिट्ठी कम्मि काले भवइ? भण्णइ—सम्मद्दिट्ठी अणंताणुबंधिणो विसंजोएत्तु चउवीससंतकम्मिओ जाओ, पुणो वि मिच्छत्तं गंतूण अणंताणुबंधिणो बंधमाणस्स बंधावलियाए अगयाए अणताणुबंधीणं उदयो नत्थि, तम्मि काले आवलियामेत्तं कालं मिच्छद्दिट्ठी अणंताणुबंधिउदयरहिओ लब्भइ, नान्यत्र। तम्मि चेव सत्तोदए भय-दुगुंछाए वा भय-अणंताणुबंधिए वा दुगुंछ-अणंताणुबंधिए वा छुढे नवोदओ भवइ। तत्थ वि ते चेव तिण्णि विगप्पा। एक्केक्कम्मि य चउवीसं भगा। तम्मि चेव सत्तोदए भय-दुगुंछाए अणंताणुबंधीहिं य छुढेहिं दसोदओ भवइ। तम्मि दसोदए एगा चेव चउवीसा। बावीसबंधगस्स उदयट्ठाणा सविगप्पा भणिया इति।

इदाणिं एक्कवीसबंधगस्स सत्ताइ-नवंताइं तिण्णि उदयट्ठाणाइं, त जहा—७।८।९। तत्थ सत्तोदओ—अणंताणुबंधिअपच्चक्खाण-पच्चक्खाणावरण-संजलणाणं कोहाईण चउण्हं पि एगयरं चउक्कं, तिण्ह वेयाणमेगयरं, दोण्ह जुयलाणमेगयरं।

१ सत्तामो चं १॥ २ जुगवं चं १ चं २॥ ३ भएण्ण चं २॥ ४ भो। त चं १॥ ५ °क्कम-भं° चं १ चं २॥ ६ °ति, तिण्ह से॥ ७ न भयय चं २॥

एएसिं सत्तण्हं कम्माणं सम्मुदओ सासायणस्स धुवोदओ ठाण पढमं । एयम्मि सत्तोदए एगा चउवीसा कोहाइ-वेय-जुयले य मरिहिय । तम्मि चेव सत्तोदए भय वा दुगुञ्छाए वा पक्खए अट्ठोदओ । एत्थ भय-दुगुंछाहिं दो चउवीसाओ अट्ठमाव । तम्मि चेव सत्तोदए भय-दुगुंछाहिं पक्खाहिं नवोदओ भवति तम्मि नवोदए एगा चउवीसा । सव्वाओ चत्तारि । एवं अत्थेणियवं पढम । सेसियवं पढम दुविहो आएसो—जेसिं अणंताणुबंधिसहिओ सेसिं पडिवज्जइ तेसिं आएसेण सेढीओ परिवडमाणो वि सासणो लब्भइ । जेसिं अणंताणुबंधिरहिओ सेढिं पडिवज्जइ तेसिं आएसेण सेढीओ परिवडमाणो सासणो न लब्भइ । कहं ? भण्णति—अणंताणुबंधिरहियस्स सासणभावो न संभवइ त्ति काउं । अह अणंताणुबंधिरहियस्स सासणभावो लभेज्ज तो छाइ-नवताणि चत्तारि उदयट्ठाणाणि लभेज्ज । जम्हा दोण्ह वि मएण चत्तारि न लब्भंति तम्हा अणंताणुबंधिविसंजोइयस्स सासणभावो नत्थि त्ति सद्धेयं ।

'छादी नव सत्तरसे' त्ति सत्तरसबंधगस्स छादी नवंताणि चत्तारि उदयट्ठाणाणि, तं०—छ सत्त अट्ठ नव त्ति । सत्तरस बंधगा दो—सम्मामिच्छद्दिट्ठी असंजयसम्मद्दिट्ठी य । तत्थ सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स सत्तरसबंधगस्स तिण्णि उदयट्ठाणाणि—७ । ८ । ९ । तत्थ सत्तोदओ—सम्मामिच्छत्त, अणंताणुबंधिवज्जाण तिण्हं कसायाणं चउण्हमाराणमेगयरं, तिण्ह वेयाण एग यरं, दोण्हं जुयलाणमेगयरं ति । एयासिं सत्तण्हं पगडीणं सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स धुवोदओ ठाण पढम । एयम्मि सत्तोदये एगा चउवीसा पूर्ववत् । एयम्मि चेव सत्तोदए भएण वा दुगुंछाए वा पक्खाए अट्ठोदओ । एत्थ भय-दुगुंछाहिं दो चउवी

१ पञ्च बा गा २ ॥ २ चित्तप्पहि गा १ गा २ ॥ ३ दिप्पणं ४ ॥

सामो अट्ठमाणं। तम्मि चेव सत्तोदए भय-दुगुंछाहिं छुत्ताहिं नवोदओ होइ। एयम्मि नवोदए एक्का चउवीसा। सव्वाओ चत्तारि चउवीसाओ। इयाणिं असंजयसम्मदिट्ठिस्स सत्तरसबंधगस्स छादि-नववाणि चत्तारि उदयट्ठाणाणि—६।७।८।९। तत्थ छक्कोदओ उवसमसम्मदिट्ठिस्स वा खाइगसम्मदिट्ठिस्स वा—अणताणुबंधिवज्जा तिण्णि कसाया, तिण्ह वेदाणं एगयरं, दोण्हं जुयलाणं एगयरं ति। एए छक्कम्मा अविरयसम्मादिट्ठिस्स धुवोदओ ठाणं पढमं। तत्थ छक्कोदए एगा चउवीसा पुव्ववत्। तम्मि चेव छक्कोदए भएण वा दुगुंछाए वा वेदगसम्मत्तेण वा एगयरेण सत्तोदओ। एत्थ भय दुगुंछा सम्मत्तेहिं सत्तमाए तिण्णि चउवीसाओ भवंति। तम्मि चेव छक्के भय-दुगुंछाए वा भय-सम्मत्तेण वा दुगुंछा-सम्मत्तेण वा एक्केण अट्ठोदओ। एत्थ वि तेहिं चेव तिहिं दुगेहिं अट्ठमाए तिण्णि चउवीसाओ। तम्मि चेव छक्के भय-दुगुंछ-सम्मत्तेहिं छूढेहिं नवोदओ होइ। एत्थ नवोदए एक्का चउवीसा। सव्वाओ अट्ठ। सत्तरसबंधगस्स सव्वाओ बारस चउवीसाओ।

'तेरे चत्तारि अट्ठव' त्ति तेरसबंधगस्स पंचादि अट्ठगंताणि चत्तारि उदयट्ठाणाणि, तं—५।६।७।८। जाणि असंजयसम्मदिट्ठिस्स छक्कोदयादीणि चत्तारि उदयट्ठाणाणि वुत्ताणि ताणि चेव अपच्चक्खाणावरणरहियाणि संजयासंजयस्स पंचादि-अट्ठगंताणि उदयट्ठाणाणि सविकप्पाणि भवंति। सव्वाओ अट्ठ चउवीसाओ ॥ १५ ॥

चत्तारि आइ णवबंधएसु उक्कोस सत्त उदयंसा। पंचविहबंधगे पुण, उदओ दोण्ह मुणेयव्वो ॥१६॥

---

१ कि तिहिं म सं १ । २ चमुसं चे १ ।

चत्तारि आदि नवबंधएसु उक्कोस सत्तमुदयंस० त्ति। नवविहबंधगस्स संजयस्स चउरादि-सत्तमताणि चत्तारि उदयट्ठाणाणि—४।५।६।७। ताणि चेव संजयासंजयस्स पंचादि-अट्ठंताणि उदयट्ठाणाणि ताणि चेव पच्चक्खाणावरणरहियाणि संजयस्स चउरादि-सत्तोदयंताणि चत्तारि उदयट्ठाणाणि सविसम्माणि भवंति। 'पंचविहबंधए पुण उदओ दोण्हं मुणेयव्वो' त्ति पंचविहबंधगस्स दोण्हं कम्माणं समुदओ त्ति एवं उदयट्ठाणं। दोण्हि—चउण्हं संजलणाणं एगयरं, तिण्हं वेयाणमेगयरं। एत्थ तिवेद-संजलणचउक्केहिं बारस भंगा भवंति॥ १६॥

एत्तो चउबंधादी एक्केक्कुदया हवंति सव्वे वि। बंधोवरमे वि तहा, उदयाभावे वि वा होज्जा ॥१७॥

चउविहबंधगस्स वेदोदए पुरिसवेदखये य पुगवं फिट्टे एक्केण उदयट्ठाणं लब्भति, तं०—चउण्हं संजलणाण एगयरं। एत्थ चत्तारि भंगा। कहं? भण्णइ—कोयि कोहेण उवट्ठाइ कोयि माणेण उवट्ठाइ कोइ मायाए कोइ लोभेण। एत्थ अण्णे अण्णारिसं पढंति।[1] तंजहा—

पंचण्हो य चउण्हं, बंधगमाणस्स होंति ते चेव। केइरि परिहीणा चउण्हो परिसेसु बंधेसु॥ ( ) ॥५॥

तं च कसायपाहुडादिसु विरुज्झति त्ति काउं परिसेसियं। तिविहबंधगस्स एक्को उदओ—कोहसंजलणवज्जाण तिण्हं कसा-

---

१ 'त्ति तं०—४। चं १ मं १ n २ 'ति। एत्थ वि भङ्ग। 'पं चं २॥ ३ एतंभा भवंति—एकतपुंसकवेदोदयाभावे चतुष्कत्रयमपी स्त्रीवेद(एक)स्त्रीवेदोदयाभावे पवेद(के) चतुष्क(म्) एवमन्ये प्रागुप्त॥ १६॥ चं १॥ ४ पमेवं चूर्णी नवरत्यो अवायिताऽस्ति॥ ५ त्रासिच्चीभिम्मत्तंव पाठः चंखो नास्ति॥

सामण्णयरं । कहं ? कोहसंजलणाए उदए चउण्हमवि नियमा चउविहबंधगो, बंधोदओवीरणा य समयं फिट्टंति त्ति काउं । एत्थ तिण्णि भंगा । दुविहबंधगस्स एक्को उदओ माया-लोहसंजलणाणं अन्नयरं । माणसंजलणाए माणणा जहा कोहस्स । एत्थ दो भंगा । एगविहबंधगस्स एग उदयट्ठाणं लोहसंजलणा । मायाए माणणा जहा कोहस्स । एत्थ एगो भंगो । इदाणि अबंधगस्स एग उदयट्ठाणं, लोभसंजलणाए एगाए सुहुमकिट्टी वेदेइ त्ति । 'उदयाभावे वि वा होज्ज' त्ति सस्सेव अबंधगस्स उदयाभावे वि संतं लब्भति, उवसंतकसायं पडुच्च ॥ १७ ॥

इदाणि सामण्णेणं सव्वोदएसु सव्वबंधगे पडुच्च सव्वभंगा केत्तिया होज ? त्ति एयस्स अत्थस्स भण्णइ—

एक्कग छक्केक्कारस, दस सत्त चउक्क एक्कग चेव । एए चउवीसगया, चउवीस दुगेक्कमेक्कारा ॥ १८ ॥

एक्कग छक्केक्कारस० गाहा । दसोदए एक्का चउवीसा । नवोदए छ चउवीसाओ । अट्ठोदए एक्कारस । सत्तोदए दस । छओदए सत्त । पंचोदए चत्तारि । चउरोदए एक्का चउवीसा । 'चउवीस दुगे' त्ति दुगोदए पंचविह-चउव्विहबंधगे पडुच्च ४ । ३ । २ । १ । १ । अबंधगे य एक्का चउवीसा । 'एक्कमेक्कारे' त्ति एक्कोदए चउविह-तिविह-दुविह-एक्कविहबंधगे य पडुच्च

यथासङ्ख्यमेकादश भङ्गा भवन्ति सर्वे वि ॥ १८ ॥

इदाणि सव्वोदयपरिमाणनिरूवणत्थं भण्णइ—

१ या बार दुगेक्कम्मि एक्का वे१ वे२ ॥ २ "एतच्च मतान्तरेणोक्तम्, अन्यथा स्वमते द्वादशैव भङ्गा वेदितव्याः" इति श्रीमलय गिरीयटीकायाम् ॥ ३ "इ पक्खेव पडु ५ । ५ य बारस भङ्ग चउसंमो वि एकाए सव वे१ ॥

नेयपचाणउयसए, उदयविगप्पेहिं मोहिया जीवा। अउणत्तरिएगत्तरिपयविंदसएहिं विन्नेया ॥१९॥

नवपंचाणउयसएहिं उदयविगप्पेहिं मोहिया जीवा० गाहा । 'उदयविगप्पेहिं' त्ति उदयभेदेहिं । दसण्हं पगतीणं समुदओ एगं उदयट्ठाणं १०।९।८।७।६।५।४।२।१। एगाए पगडीए एगो उदओ। एवं सव्वे उदयभेदा गुणिया हवंति ९९५। एएहिं मोहिया जीवा। एएसिं उप्पत्ती—सव्वेसिं दसोदयादि-दुगोदयपज्जवसाणाणं मूलभेदा णिद्दिसंति, एत्थ एक्केक्कम्मि चउवीसं भंगा भवंति त्ति काउं चउवीसाए गुणिया एक्कोदयभेदेहिं ति एक्कारसहिं एतेहिं नवसया पंचाणउया हवंति।

'अउणत्तरिएगत्तरिपयविंदसएहिं विन्नेय' त्ति एकूणसत्तरिसएहिं एगत्तरेहिं 'पदवंदेहिं' ति कम्मपयडिसमूहएहिं। तेसु सव्वोदएसु कम्मपगतीओ पगिणाओ हवंति ६९७१। एएहिं मोहिया जीव त्ति संबज्झति। एयस्स उप्पत्ती—दसोदयभंगो दसहिं गुणिज्जइ, एव नवोदयभंगा नवहिं गुणिज्जंति, अट्ठोदय० अट्ठहिं, सत्तोदय० सत्तहिं, छज्जोदय० छहिं, पंचोदय० पंचहिं, चउरोदय० चउहिं, दुगोदय० दुहिं गुणिज्जंति। किं कारणं? तम्मि तम्मि उदये तत्तियाणं कम्माणं समुदओ त्ति काउं। दसोदयादि-दुगोदयपज्जवसाणो अप्पप्पणो कम्मसमुदएणं गुणिया मेलिज्जति। तत्थ एक्केक्कम्मि चउवीसं भंगा भवंति त्ति काउं चउवीसेहिं गुणिज्जति। तम्मि उदयपिंडे एक्कोदए जे एक्कारस भंगा ते छुब्भति। एएहिं अउणत्तरिसयाणि पंचत्त

१ नवपंचाण्ण पंचा० मु० ॥ २ रि सीमाया, प० ० ॥ ३ पगईए पं० ॥ ४ ११ आव पया पं० पं० ॥ ५ ° दसि मो पं० ॥ ९–११ दस पं० ॥ १२ भ उदया भर्म्म पं० ॥ १३ पगत पं० ॥

पराणि पदवन्दानां भवन्ति ॥ १९ ॥

णवतेसीयसएहिं, उदयविगप्पेहिं मोहिया जीवा। अउणत्तरिसीयाला, पयवंदसएहिं विन्नेया ॥२०॥

नवतेसीयसएहिं उदय० गाहा। 'उदयविगप्पेहिं' ति उदयभेदेहिं। दसण्ह पगतीण समुदओ एगो उदओ। १०।९।८।७।६।५।४।२।१[1]। एमाए पगतीए एगो[2] उदओ। एवं सव्वे उदयभेदा पिंडिया नवसया तेसीया। एएहिं मोहिया जीवा। एएसिं उप्पत्ती—सव्वेसिं दसोदयाइ-चउरोदयपज्जवसाणाणं मूलभेदा पिंडिज्जंति। एत्थ एक्केक्कम्मि चउवीसं भंगा भविय त्ति काउं चउवीसाए गुणितु दुगोदय-एगोदयविगप्पेहिं बारस-एक्कारसहिं छुढेहिं नवसया तेसीया भवंति।

'अउणत्तरि सीयाला पयवंदसएहिं विन्नेय' त्ति एगूणसत्तरिसएहिं सीयालअहिएहिं 'पयवंदेहिं' ति कम्मपगतिसमुदएहिं ति। तेसु सव्वोदएसु कम्मपगतीओ एत्तियाओ भवंति। तेहिं मोहिया जीव त्ति संबज्झति। एयस्स उप्पत्ती—दसोदयभंगा दसहिं गुणिज्जंति, एवं नवोदयभंगा नवहिं गुणिज्जंति, अट्ठोदय० अट्ठहिं, सत्तोदय० सत्तहिं, छओदय० छहिं, पंचोदय० पंचहिं, चउरोदय० चउहिं, दुगोदयभंगा दुहिं गुणिज्जंति। किं कारणं? जम्मि जम्मि उदए जत्तियाण कम्माण समुदओ त्ति काउं। दसोदयादी चउक्कउदयपज्जवसाणा उदया अप्पप्पणो कम्मसमुदएण गुणिया मेलिज्जंति २८८। तेसु एक्केक्कम्मि चउवीसं

१ 'एवं चोदसस्स[illegible] ... [illegible](चतुर्विंशतिः) [illegible] ॥ १९ ॥ अथ पुनरेते नामविकल्पे [illegible]—[illegible] " इति श्रीमलयगिरीयटीकायाम् ॥ २ १। आए एमा खं१ खं२ ॥

२ 'मोहओ खं१ खं२ ॥

भंगा अरिथ त्ति काउं पणवीसाए गुणिज्जंति । तम्मि उदयम्मि दुसोदयपणवीसाए एक्कोदयएक्कारसर्हि य छव्वीसं अट्ठचत्तरि मयाणि सीयालाणि पयबंधाण भवंति ॥ २० ॥

इदाणिं 'कइ वा पगडिट्ठाणकम्मंस ?' (गा० २) त्ति एवं भण्णइ । बावीसबंधगमादीणं तम्मि तम्मि उदयट्ठाणे कति संतट्ठाणाणि होज ? त्ति तमिरूवणत्थं भण्णति—

'तिपणेवं उ बावीसे, इगवीसे अट्ठवीस सत्तरसे । छ च्चेव तेर-णवबंधएसु पंचेव ठाणाणि ॥ २१ ॥

बावीसबंधगस्स मिच्छदिट्ठिस्स चउण्हमण्णयरे उदयट्ठाणे वट्टमाणस्स तिण्णि संतट्ठाणाणि, तं०—अट्ठावीसा सत्तावीसा छव्वीस त्ति । एयर्सि अत्थो पुव्वविवरीओ । तत्थ दसोदए तिण्णि वि संतट्ठाणाणि मत्थि । कहं ? अणंताणुबंधीणं उदओ अरिथ त्ति काउं । नवोदए वि एमेव । जत्थ अणंताणुबंधीण उदओ नत्थि तत्थ अट्ठावीसा चेव । कहं ? भण्णइ—पणवीस संतकम्मिओ सम्मद्दिट्ठी मिच्छत्तं गंतूण अणंताणुबंधिणो बंधिउमारद्धो, बंधावलियाए अणयाए उदओ न होइ तम्हा तस्स अट्ठावीसा संतं लब्भइ । एवं अट्ठोदए वि तिण्णि वि माणियव्वाणि । सत्तोदए अट्ठावीसा चेव । कहं ? भण्णइ—पणवीससंत (कम्मंति) त्ति । एत्थ बावीसबंधगस्स चत्तारि उदयट्ठाणाणि पडुच्च दस संतमेदा लब्भंति ।

१ गाथेयं पञ्चसंग्रहेऽप्यस्ति ॥ २ व च मा के० ॥

'इगवीसे अट्ठवीस' त्ति एगवीसबंधगस्स तिसु वि उदयट्ठाणेसु एगं चेव संतं अट्ठावीसा । कहं ? पढमसम्मत्तं उप्पाएउं उवसमसम्मद्दिट्ठिकाले वट्टमाणो सासणभावं गच्छति, तओ सासणभावं गच्छंतस्स सणमोहणपयडीओ अत्थि त्ति काउं अणंताणुबंधिसहिता अट्ठावीसा । उवसमसेढीओ ओयरंतो वि कोइ सासणभावं गच्छति सो एत्थ णाहिक्कओ । एवं एक्कवीसबंधगस्स तीसु वि उदयट्ठाणेसु तिण्णि वि अट्ठावीसाओ लब्भंति ।

'सत्तरसे छ चेव' त्ति सत्तरसबंधगस्स चउसु उदयट्ठाणेसु वट्टमाणस्स सामण्णेण छ संतट्ठाणाणि, तं —अट्ठावीसा २८।२७। २४ । २३ । २२ । २१ । तत्थ नवोदयट्ठाणे एगवीसवज्जाणि पंच संतट्ठाणाणि । कहं ? वेयगसम्मद्दिट्ठि सम्मामिच्छद्दिट्ठि वा पडुच्च अट्ठावीसा चउवीसा य लब्भंति, अट्ठावीससंतकम्मिगो सम्मत्तं सम्मामिच्छत्तं वा गच्छति त्ति काउं। चउगइगो य पज्जत्ता सम्मद्दिट्ठिणो अणंताणुबंधिणो विसंजोयंति त्ति काउ असंजतसम्मद्दिट्ठिस्स चउवीसा लब्भइ। सो चेव कोइ सम्मामिच्छत्तं पि जाइ त्ति सम्मामिच्छाद्दिट्ठिस्स वि चउवीसा लब्भइ । सत्तावीसा सम्मामिच्छद्दिट्ठि पडुच्च, कहं ? मिच्छद्दिट्ठी सम्मत्तं उव्वलेउं सम्मामिच्छत्तसंते वट्टमाणो कोइ सम्मामिच्छत्तं जाइ त्ति काउं। तेवीसा मणुसस्स अट्ठण्हं वरिसाणं उवरिं वट्टमाणस्स वेयगसम्मद्दिट्ठिस्स खवणाए अब्भुट्ठियस्स अणंताणुबंधि-मिच्छत्ते य खविए तेवीसा लब्भइ। तस्सेव सम्मामिच्छत्ते खविए बावीसा । सा य चउसु वि गईसु लब्भइ । किं कारण ? भण्णइ— 'पट्ठवगो पुण मणुओ निट्ठवगो होइ चउसु वि गईसु। ( ) त्ति वयणाओ। मिच्छत्ते सम्मामिच्छत्ते य खविए पच्छा चउसु वि गईसु उववाओ भवाउगं पडुच्च। अट्ठोदए वि एयाणि

१ णिय भट्ठ° चं१ चं२ ॥ २ तं०—२८ । चं१ ॥ ३ गा प सं ॥ ४ सं मुह त्ति चं१ ॥

पुव्वं व चेव वेयगसम्मदिट्ठि-सम्मामिच्छदिट्ठीसु भावेयव्वाणि । तत्थ वेयगसम्मत्त-सम्मामिच्छत्तेण विणा जो अट्ठोदओ सो उवसमसम्मदिट्ठिस्स सासणसम्मदिट्ठिस्स वा भवइ । तत्थ उवसमसम्मदिट्ठिं पडुच्च अट्ठावीसा चउवीसा य लब्भइ । तत्थ अट्ठावीसा पढमसम्मत्तं उप्पाडिंतस्स, उवसमसेढीओ परिवडमाणं वा पडुच्च दो वि लब्भंति । सासणसम्मदिट्ठिस्स एगवीसा लब्भइ । एवं अट्ठोदए छ संतट्ठाणाणि । एयाणि छ वि संतट्ठाणाणि सत्तोदए वि तहा भाणियव्वाणि जहा अट्ठोदए । छत्तोदए वि तिण्णि संतट्ठाणाणि लब्भंति—२८ । २४ । २१ । कहं ? वेयगसम्मत्त-सम्मामिच्छत्तेण विणा छत्तोदओ हवइ । तत्थ उवसमसम्मदिट्ठिं पडुच्च अट्ठावीसा चउवीसा य पुव्वंव भावियव्वा । एगवीसा सासणसम्मदिट्ठिस्स । एवं सव्वसव्वगस्स सामण्णेण चउसु वि उदयट्ठाणेसु वीसं संतट्ठाणाणि ।

'तेरेनवचउपणगेसु पचेव ठाणाणि' त्ति तेरस-नवविहबंधमाण-देसविरय-संजयाणं जहा असंजयसम्मदिट्ठिस्स चउसु वि उदयट्ठाणेसु भावणा भणिया तहा भाणियव्वं । नवरं बावीस-एगवीससंताण पढमओ न भाणियव्वो । तत्थ तेरसबंधगस्स तिरिक्खस्स अट्ठावीसा चउवीसा य, एए दोण्णं सेसा न संभवंति । कहं ? भण्णइ—तेवीसा बावीसा य खाइगसम्मत्तं उप्पाएन्तस्स, सो उप्पायंतो नियमा मणुओ त्ति काउं, तेण नत्थि । एगवीसा तिरिक्खेसु संजयासंजएसु नत्थि । कहं ? भण्णइ—संखेज्जवासाउएसु तिरिक्खेसु खाइगसम्मदिट्ठी न उववज्जइ, असंखेज्जवासाउएसु उववज्जेज्जा, तस्स वि देसविरई

१ गस्स च वं ॥ २ ८ २८ । २४ । २३ । २२ । २१ । वम २८ । २४ । २३ । २२ । २१ । मंच चां० ॥ ३ त्ति २८ । २४ । २२ । २३ । २१ देर चां० ॥ ४ भाविम चां० ॥ ५ 'सा य वं । 'सा व य' चां० ॥

नत्थि। तम्हा तिण्णि वि मणुयदेसविरएसु भावेयव्वाणि। एवं तेरस-नवबंधगाणं अप्पप्पणो उदये पढम सपरस सपरस संतट्ठाणाणि भवंति ॥ २१ ॥

पंचविह-चउविहेसु, छ छक्क सेसेसु जाण पंचेव। पत्तेय पत्तेय, चत्तारि उ बंधवोच्छेए ॥ २२ ॥

पंचविहचउविहेसु छ छक्क० त्ति। पंचविहबंधगस्स दुगोदए वट्टमाणस्स छ संतट्ठाणाणि भवंति, तं०—अट्ठावीसा, २८। २४। २१। १३। १२। ११। अट्ठावीसा चउवीसा य उवसमसेढिं पडुच्च। एक्कवीसा दोसु वि सेढीसु। खवगसेढीए जाव अट्ठ कसाया णं खविज्जंति ताव एगवीसा। अट्ठकसाए खविए तेरस। तओ नपुंसगवेए खविए बारस। तओ इत्थिवेए खविए एक्कारस। जाव पुरिसवेयस्स बंधो ताव छण्णोकसाया धरंति। एवं पंचविहबंधगस्स छ संतट्ठाणाणि।

इयाणिं चउविहबंधगस्स चउण्हं संजलणाणं अण्णयरोदए वट्टमाणस्स छ संतट्ठाणाणि, तं०—२८। २४। २१। ११। ५। ४। एयाणं छण्हं संतट्ठाणाणं आदिल्लाणि तिण्णि संतट्ठाणाणि उवसमसेढीए चेव। चउविहबंधगो एक्कारससंतकम्मिओ कहं? भण्णइ—नपुंसगवेएण उवट्ठियस्स नपुंसग-इत्थिवेयसंतक्खए पुरिसवेयबंधवोच्छेए य जुगवं कए तस्स एक्कारस संतं। सो य चउविहबंधगो अवेयगो सव कम्मंसे जुगवं खवेइ, खविए चत्तारि संतं। एमेव इत्थिवेएण वि उवट्ठियस्स, नवरि नपुंसगवेओ पढमं खिज्जइ त्ति। तओ अंतोमुहुत्तेण इत्थिवेयस्स उदयसंतक्खओ पुरिसवेयबंधवोच्छेओ य जुगवं भवइ। एवं वा एक्कारससंतकम्मिओ। पुरिसवेएण उवट्ठियस्स छण्णोकसायखवणकाले पुरिसवेयस्स बंधोदयवोच्छेए

१ 'रि य बं' बे१ ॥ २ ति—२८। मो१। 'ति—अट्ठ मो२ ॥ ३ य खिज्जंति मो१ ॥ ४ 'मादि तिण्णि बे॥ ५ वगस्स मो१ ॥

सुगवे च्चेव तत्तो पच्चसंतकम्मिओ मणइ समसूनदुआवलियमेत्तं कालं। पुरिसवेए खीणे चउसंतकम्मिओ संतोषदुपकालं।

'सेसेसु चाव पंचेव पत्तेयं पत्तेयं' ति सेसेसु तिविहबंधगामसु एक्केक्कम्मि उदयट्ठाणे पत्तेय पत्तेयं पंच पंच संतट्ठाणाणि। तत्थ तिविहबंधगस्स कोहसरूवाणं तिण्हं संजलणाणं अण्णयरवेयगस्स २८। २४। २१। ४। ३ संतट्ठाणाणि भवंति। अट्ठावीस-चउवीस-एक्कवीसा य उवसमसेढिं पडुच्च लब्भंति। चत्तारि तिण्णि य खवगसेढीए लब्भंति। कहं? कोहसंजलणाए पढमट्ठिईए आवलियासेसे बंधो उदओ उदीरणा य जुगवं फिट्टंति, समऊणदुआवलियबद्ध पढमट्ठिती य धरइ, त पि पदं सचि- एण कालेण सयं पच्चइ, ताव तिविहबंधगस्स चउण्हं एक्कोदए संतं लब्भइ। कोहसंजलणाए खविआए तिण्णि भवंति अंतो मुहुत्तकालं। एव तिविहबंधगस्स पंच संतट्ठाणाणि। एसेव दुविहबंधगस्स वि माणा-लोभाणं अण्णयरं वेयमाणस्स २८। २४। २१। ३। २[1]। तिण्णि पे वि पडुच्च उवसमसेढिं लब्भंति—माणसंजलणाए बंधोदए फिट्टे समऊणदुआवलियबद्धं पढमट्ठिईए लब्भइ, तं खविज्जंतं खविज्जंतं समयऊणाहिं दोहिं आवलियाहिं खीयइ, ताव संत तिण्णि। तत्तो माणसंजलणाए खीणाए दोण्णि लब्भंति। एवं दुविहबंधगस्स एयाणि पंच संतट्ठाणाणि। एगविहबंधगस्स पंच संतट्ठाणाणि—२८। २४। २१। २। १। तत्थ एक्कम्मि लोभोदए वट्टमाणस्स अट्ठावीसाईणं तिण्हं भावणा जहा तिविहबंधगस्स। खवगसेढीए दोण्णि एक्कं च दो

१ इत आरभ्य सर्वेषु चोदर्शितस्थानेषु "समऊणदुआवलिय" इत्येतत्स्थाने श्रीमलयगिरीयटीकायां "समयद्वयोनावलिकाद्विक" इति मतः- भारं समाप्त। २ पढमम्मि पं भो०। ३ एस पेव २८। भा०। ४ सेसं पे पं मो०। ५ सम्मंति पं। ६ २। पूर्ववत्। ति" भो०। ७ य खवगसेढिं पडुच्च स मो०।

संतट्ठाणाणि सम्मति । तत्थ दोण्णि मायासंजलणबंधोदए छिन्ने, समयरूणदुयावलियमावना पूर्ववत् । तओ मायाए खीणाए एवं लोभसंजलणा एव । इयाणिं अबंधयस्स 'चत्तारि उ बंधवोच्छेए' त्ति बायर[लोभ]बंधोदए वोच्छिण्णे सुहुमलोभोदए पढमा यस्स चत्तारि संतट्ठाणाणि सम्मंति, तं जहा—२८ । २४ । २१ । १ । आइल्लाणि तिण्णि उवसामगस्स । एग लोभसंजलणा संत खवगसेढीए लब्भइ, सेसा सव्विय त्ति कयउ लोभं वेएइ, सो चेव संतं ति । एवमबंधगस्स चत्तारि संतट्ठाणाणि ॥ २२ ॥

दस नव पन्नरसाइ, बंधोदय-सन्तपयडिठाणाइं । भणियाइ मोहणिज्जे, एत्तो णाम परं वोच्छं ॥२३॥

दस नव पण्णरसाइं० गाहा । कण्ठ्या । मोहणिज्जस्स बंधोदय-संताण संवेहो भणिओ । 'एत्तो नाम परं वोच्छं' ति इओ परं नामस्स पगइसमुक्कित्तणा बंधोदय-संतट्ठाणनिरूवणा संवेहो य भण्णइ ॥ २३ ॥

तत्थ पगइसमुक्कित्तणा, तं०—नामस्स कम्मस्स बायालीसं पिंडपगईओ गइनामाइ० । एयासिं वित्थरओ भेओ य जहा सयगे तहा भाणियव्वो । तत्थ पुव्वं बंधट्ठाणनिरूवणा—

तेवीस पन्नवीसा, छव्वीसा अट्ठवीसं उगुतीसा । तीसेक्कतीसमेगं, बंधट्ठाणाणि नामस्स ॥ २४ ॥

तेवीस पण्णवीसा० गाहा । २३ । २५ । २६ । २८ । २९ । ३० । ३१ । १ एगमिति, एयाणि सामण्णेण पढमाए अहिगिच्च

---

१ 'सं । ए' वे ॥ २ पयडिठाणाणि । वे१ ॥ ३ याणि मो वे१ ॥ ४ कण्ठ्य । मो का२ ॥ ५ बंधो का२ ॥ ६ पसज्ज यावज्जनयस १०-११ पत्रे तत्पर्वे ॥ ७ ए गुणती' वे१ ॥ ८ भाई मा वे१ ॥

अट्ठ बंधट्ठाणाणि । तत्थ तिरियगइपाओग्गं बंधमाणस्स पंच बंधट्ठाणाणि, तं जहा—२३।२५।२६।२९।३०। तत्थ एगिंदियपाओग्गं बंधमाणस्स तिण्णि बंधट्ठाणाणि, तं०—२३।२५।२६। तत्थ तेवीसा इमा—तिरियगइ एगिंदियजाइ ओरालियं तेयं कम्मयसरीरं हुंडं संठाणं वण्ण गंध रस फास तिरियगइपाओग्गाणुपुव्वी अगुरुलहुअं उवघायं थावरं बायर-सुहुमेगयरं अपज्जत्तयं पत्तेय-साहारणाणमेगयरं अथिरं असुहं दूभगं अणाएज्जं अजसं निमेणं ति २३। एयाए तेवीसाए कम्मपगडीणं एगं चेव बंधट्ठाणं एगिंदियअपज्जत्तगसंजुत्तं बंधमाणस्स मिच्छद्दिट्ठिस्स। एत्थ तेवीसाए चत्तारि भंगा, तं जहा—बायरं अपज्जत्तयं पत्तेयं १ बायरं अपज्जत्तं साहारणं २ सुहुमं अपज्जत्तयं पत्तेयं ३ सुहुमं अपज्जत्तयं साहारणं ४ एवं एते वि चत्तारि। एसा तेवीसा पराघाय-उस्साससहिया पणुवीसा भवइ, सा तिरियगइपाए भाव य थावरं ताव अविकप्प, तओ उवरि एवं भाणियव्वं—थावरं बायर-सुहुमाणमेगयरं पज्जत्तयं पत्तेय-साहारणाणमेगयरं थिरा ऽथिराणमेगयरं सुभा-ऽसुभाणमेगयरं दूभगं अणाएज्जं जसा-ऽजसाणमेगयरं निमेणमिति २५। एयाए पणुवीसाए पगडीणं एगं चेव बंधट्ठाणं एगिंदियपज्जत्तयसहियं बंधमाणस्स मिच्छादिट्ठिस्स । एयम्मि पणुवीसे एगिंदियपज्जत्तयपाओग्गं बंधमाणस्स वीसं भंगा, तं जहा—बायर-पज्जत्त-पत्तेय-थिरा-ऽथिर-सुभा-ऽसुभ-जसा ऽजसेहिं अट्ठ भंगा हवंति, बायरं पज्जत्तं च साहारणं थिरा ऽथिर-सुभा ऽसुभ अजसकित्तीहिं चत्तारि भंगा, सुहुमं पज्जत्तं च पत्तेय-साहारण-थिरा-ऽथिर-सुभा ऽसुभ अजसकित्तीहिं अट्ठ भंगा, एवं सव्वसमासो वीसं । सुहुम साहारणेहिं जसकित्तीए बंधो नत्थि त्ति । एसा चेव पणुवीसा आयाउज्जोयण्णयरसहिया छव्वीसा भवति, नवरि एत्थ भाणि-

१ ण्णाणि—२१ धं० २ । २ मिच्छमिति । प० धं१ धं० २ ॥ ३ [illegible]

गं—परायार्य ऊसासं आयाउज्जोयाण एगयरं बायरं बायरं पञ्जत्तं पत्तेयं थिरा ऽथिराणमेगयरं सुभा ऽसुभाणमेगयरं दूभग अणाएज्जं जसकित्ति-अजसकित्तीणमेगयरं निमेणमिदि २६। एयासिं छवीसाए पयडीणं एग चेव बधट्ठाणं एगिदियपञ्ज दूमग अणाएज्जं आयावुज्जोयएमयरसहियं बंधमाणस्स मिच्छाइट्ठिस्स। एयाए छव्वीसाए सोलस भंगा आयाउज्जोय थिरा ऽथिर एगपाउग्गं आयाउज्जोयएगयरसहियं बंधमाणस्स मिच्छादिट्ठिस्स। एयाए छवीसाए सोलस भंगा आयाउज्जोय थिरा ऽथिर सुभा-ऽसुभ-जसा-ऽजसेहिं उप्पेंति, आयाउज्जोया सुहुम-साहारणेहिं बंधं न एंति त्ति काउं। एगिंदियपाउग्गा पंचा भणिया।

इयाणिं बेइंदियपाउग्गं बंधमाणस्स तिण्णि बंधट्ठाणाणि—२५। २९। ३०। तत्थ पणुवीसा—तिरियगइ बेइंदियजाइ ओरालिय तेयगं कम्मगसरीरं हुंडसंठाणं असंपत्तसेवट्टसंघयण ओरालियंगोवंग वण्ण गंध रस फास तिरियाणुपुव्वी अगरुलहु उवघाय तस बायर अपज्जत्तगं पत्तेयं अथिरं असुभं दूभगं अणाएज्जं अजसकित्ति निमेणमिति। एयासिं पणुवीसाए पयडीण एगं चेव बंधट्ठाणं बेइंदियअपज्जत्तगपाउग्गं बंधमाणस्स मिच्छादिट्ठिस्स। एत्थ अपसत्थपरियत्तमाणीहिं एगो चेव भंगो, अपज्जत्तगेण पसत्थपरियत्तमाणीओ बंधं न एन्ति त्ति काउं। एसा चेव पणुवीसा पराघाय-ऊसास अपसत्थविहायगति-पज्जत्तग-दूसरसहिया अपज्जत्तगरहिया एगूणतीसा भवति। नवरि एवं भाणियव्वं—उवघायं पराघाय ऊसासं अपसत्थविहा यगइ तसं बायरं पज्जत्तगं पत्तेय थिरा ऽथिराणमेगयरं सुभा ऽसुभाणमेगयरं दूभग दूसरं अणाएज्जं जसा ऽजसाणमेगयरं निमेणमिति। एयासिं एगूणतीसाए पयडीणं एगं चेव बंधट्ठाणं तं बंधमाणस्स मिच्छादिट्ठिस्स। एत्थ अट्ठ भंगा थिरा ऽथिर-सुभा ऽसुभ-जसा-ऽजसेहिं। एसा चेव एगूणतीसा उज्जोयसहिया तीसा भवइ। एत्थ वि ते चेव अट्ठ भंगा। एव

१ 'त्ति' नेत्थि खं१। एयम्मन्नाणि॥ २ 'त्ति, ठं अद्दा—२५ खं२॥ ३ सं छेय पे ४ ५ ४ व मंगा खं१॥

बेइंदिय-चउरिंदियपाउग्गं बंधमाणस्स तिण्णि तिण्णि बंधट्ठाणाणि, णवरि अप्पप्पणो जाई भाणियव्वा ।

इयाणि पंचिंदियतिरिक्खपाउग्गं बंधमाणस्स तिण्णि बंधट्ठाणाणि, तं जहा—२५ । २९ । ३० । तत्थ पणुवीसा जहा बेइंदियअपज्जत्तगपाउग्गं बंधमाणस्स तहा चेव, णवरं पंचिंदियजाती भाणियव्वा । एत्थ एक्को चेव भंगो । एगूणतीसा इमा—तिरियगइ पंचिंदियजाइ ओरालियं तेयं कम्मगं छण्हं संठाणं एगं छण्हं संघयणं एगं ओरालियअंगोवंगं वण्णादि ४ तिरियाणुपुव्वी अगरुलहु उवघायं पराघायं उस्सासं पसत्था ऽपसत्थविहायगईणं एगा तसं बायरं पज्जत्तं पत्तेयं थिरा-ऽथिराणमेगयरं सुभा ऽसुभाणमेगयरं सुभग-दूभगाणमेगयरं सुस्सर-दुस्सराणमेगयरं आएज्ज अणाएज्जाणमेगयरं जसकित्ति-अजसकित्तीण मेगयरं निमेणमिति । एयाति एगूणतीसाए एगतीए एगं बंधट्ठाणं तं बंधमाणस्स मिच्छद्दिट्ठिस्स । एसा पढमा एगूणतीसा । हुंडं असंपत्त च सासणो न बंधति त्ति बितिया एगूणतीसा एस चेव, णवरं पंचण्ह संठाणाणं पंचण्हं संघयणाणमेगयरं तु, तं बंधमाणस्स मिच्छद्दिट्ठिस्स वा सासणसम्मद्दिट्ठिस्स व त्ति भाणियव्वं । एत्थ एगूणतीसे छण्हं संठाणाणं अट्ठसयाणि भंगाणं भवंति ४६०८ । छ संठाणाणि छसंघयण पसत्था ऽपसत्थविहायगति थिरा-ऽथिर सुभा-ऽसुभ सुभग-दूभग सुस्सर दूसर आएज्ज-अणाएज्ज जसकित्ति-अजसकित्तीहिं भया कायव्वा ४६०८ । पढमा एगूणतीसा उज्जोयसहिया तीसा भवति, सा मिच्छद्दिट्ठिस्स । बितिया एगूणतीसा उज्जोयसहिया तीसा भवति, सा मिच्छद्दिट्ठिस्स वा सासणसम्मद्दिट्ठिस्स वा । भंगा जत्तिया एगूणतीसे तत्तिया चेव एत्थ वि । तिरियपाउग्गं समत्तं ।

---

१ सं०—२५ पा१ पा२ ॥ २ वेमाणेपराघमिपत्ते ॥ ३ हा ठसं सं ॥ ४ जमेगयरं ठ॰ पा१ ॥ ५ "पत्तेयपाइ" पा२ ॥

तत्थ मणुयगइपाउग्गं बंधमाणस्स तिण्णि बंधट्ठाणाणि, तं०—२५ । २९ । ३० । तत्थ पणुवीसा जहा बेइंदियअप ज्जत्तपाउग्गं बंधमाणस्स तहा चेव । नवरं मणुयगइ पंचिंदियजाइ मणुयगइपाउग्गाणुपुव्वी य भाणियव्वा । एत्थ एगो चेव भंगो । एगूणतीसा तिविहा । तत्थ पढमा जहा पंचिंदियतिरिक्खाणं तहा चेव । बितिया वि एगूणतीसा जहा 'पंचिंदियति रियाणं तहा चेव । नवरं आयन्तघणांनि संघयण-संठाणाणि भाणियव्वाणि । सा मिच्छदिट्ठि-सासणाणं । तत्थ तइया एगूण तीसा मणुस्सगति पंचिंदिय० ओरालिय तेयग कम्मग समचउरंससंठाण ओरालियंगोवंग वज्जरिसभनारायसंघयणं वण्ण गंध रस फास मणुयाणुपुव्वि अगरुलहु उवघाय पराघाय ऊसास पसत्थविहायगइ तसं बायरं पज्जत्तगं पत्तेय थिरा-ऽथिर० सुभा-ऽसुभाण एगयरं सुभग सुस्सरं आदेज्जं जसा-ऽजसाणमेगयरं निमेणमिति । एयासिं एगूणतीसाए पगतीणं एगं चेव बंधट्ठाणं तं बंधमाणस्स मिच्छदिट्ठिस्स वा सासणस्स वा सम्मामिच्छदिट्ठिस्स वा असंजयसम्मदिट्ठिस्स वा । एसा तइया एगूणतीसा । एत्थ एगूणतीसाए सामण्णेण छायालसयाणि अट्ठुत्तराणि भंगाण ४६०८ । छसंठाण६-छसंघयण३६-पसत्था-ऽपसत्थविहायगति७२-थिरा ऽथिर१४४-सुभा-ऽसुभ२८८-सुभग-दूभग५७६-सुस्सर-दूसर११५२-आएज्जा-ऽनाएज्ज २३०४जसा-ऽजसेहिं ४६०८ हवंति । इयाणिं तीसा भण्णइ—जा तइया एगूणतीसा सा तित्थयरसहिया तीसा भवति । एयासिं तीसाए पगईणं एग चेव बंधट्ठाणं, तं तित्थयरसहियं बंधमाणस्स असंजयसम्मदिट्ठिस्स । एयं देव-नेरइया बंधति । एत्थ अट्ठ भंगा थिरा० २ सुभा० २ जसा० २ एएहिं कायव्वा । मणुयगइपाउग्गं सम्मत्तं ।

१ पंचेंदि खं१ ए॰भग्गाणि ॥ २ वक्ष्मिन्नयाकि ॥ ३ स्थिरा-स्थिरयोरेकतरत् ॥ ४ सा तिइया खं१ । तृतीया ॥ ५ समत्तं । खं१ खं२ ॥

४

इयाणिं देवगइपाओग्गं। तस्स चत्तारि बंधट्ठाणाणि—२८। २९। ३०। ३१। तत्थ अट्ठावीसा देवगदि पंचिंदिय० वेउव्विय तेय कम्म समचउरंस वेउव्वियअंगोवंग वण्णादि ४ देवाणुपुव्वि अगरुअलहु उव० परा० उस्सास पसत्थविहा० तस बादर पज्जत्त पत्तेय थिरा०२ सुहा०२ सुभग सुस्सर आएज्ज जसकित्ति-अजसकित्तीणमेगदरं णिमेणमिदि। एदास्स अट्ठावीसाए पयडीणं एक्कं बंधट्ठाणं त बंधमाणस्स मिच्छ० सासण० सम्मामिच्छ० असंजदसम्मादिट्ठि संजदासंजद० संजदस्स वा। एत्थ अट्ठावीसाए अट्ठ भंगा थिरा अथिर-सुहा असुह-जसा उजसेहिं भयवा। एसा चेव अट्ठावीसा तित्थयरसहिया एगूणतीसा भवदि। एत्थ वि ते चेव अट्ठ भंगा। त देवगइपाओग्गं असंजदसम्मादिट्ठिपाओग्गो बंधंति। इदाणिं तीसा—देवगइ पंचिंदिय वेउव्विय आहारगं तेय कम्म समचउरंस वेउव्वियंगोवंगा आहारअंगोवंगा वण्णादि ४ देवाणुपुव्वि अगरुअलहु उवघाय परा उस्सास विहायगई पसत्था तस बादर पज्जत्त पत्तेय थिर सुभ सुभग सुस्सर आएज्ज जसकित्ति णिमेणमिदि। एदासिं तीसाए पयडीणं एक्कं बंधट्ठाणं, आहारगदुगसहियं देवगइपाओग्गं तं बंधमाणस्स अपमत्तसंजदस्स वा अपुव्वकरणस्स वा। एत्थ भेदो णत्थि, विसुद्धो बंधइ त्ति। एसा चेव तीसा तित्थयरसहिया एगतीसा भवदि। एत्थ वि णत्थि भेदो देवगइपाओग्गं सम्मत्त।

इदाणिं णिरयगइपाओग्गं बंधमाणस्स एक्कं चेव बंधट्ठाणं अट्ठावीसा, तं जहा—णिरयगइ० पंचिंदिय० वेउव्विय तेय कम्म हुंड वेउव्वियंगोवंगं वण्णादि ४ णिरयाणुपुव्वि अगरु० उव० परा० उस्सास अपसत्थविहा० तस बादर पज्जत्त पत्तेय अथिर असुह

---

१ *बयाय ५ धं१ ॥ २ थिर अथिर सुहा-ऽसुह सु धं१। थिरा-ऽथिरयोरेकतरं [illegible] ॥ ३ विहायगत्यप्रशस्त त नं ॥ ४ समणं धं१ ॥ ५ वषति प धं१ ॥

दूभग दूसर अणाएज अजस निमेणमिति। एयाणि अट्ठावीसाए पगडीणं एवं बंधट्ठाणं निरयगइपाउग्गं तं बंधमाणस्स मिच्छदिट्ठिस्स। एत्थ नत्थि भंगो अविसुद्धत्वात्। 卐 "एवं" ति देवगइपाओग्गे बंधे समत्ते जसकित्तीए चेव एगाए बंधो। एत्थ एगो भंगो। 卐 "एक" ति देवगइपाउग्गो बंधे वोच्छिण्णे अपुव्वकरणाईणं तिण्हं एक्का जसकित्ती बज्झइ। एत्थ नत्थि विगप्पो॥ २४॥

सबंधाणं भेयनिरूवणा भण्णइ—

चउ[1] पणुवीसा सोलस नव बाणउई सया य अडयाला[2]। इगिणउउत्तर जमकमसो[3] एवेक्कबंधविही[4]॥ पाठंतरं।

इयाणि तेवीसादि बंधट्ठाणेसु भंगसंखा भण्णइ—एगिंदियअपज्जत्तपाउग्गं तेवीसं बंधमाणस्स सव्वे चत्तारि भंगा। एगिंदियपज्जत्तगपाउग्गं पणुवीसं बंधमाणस्स वीसं भंगा, बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियतिरिय मणुयाऽपज्जत्तगपाउग्गं बंधमाणाणं एक्केक्को भंगो, सव्वे पणुवीसं। छव्वीसे आयावेण अट्ठ, उज्जोएण अट्ठ, सव्वे सोलस। अट्ठावीसे देवगईए अट्ठ, निरयगईए एगो, सव्वे नव। एगूणतीसे पंचिंदियतिरियपाउग्गं बंधमाणस्स छायालीसं सयाणि अट्ठसयाणि, मणुस्सगईए वि एत्तिया चेव, बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियपाउग्गे एक्केक्के अट्ठ अट्ठ भंगा, देवगइपाउग्ग तित्थयरसहिय एगूणतीसं बंधमाणस्स

१ °स्स। एत्थ खं१॥ २ स्वस्तिकचिह्नमध्यगतः पाठः खंप्रतौ नास्ति॥ ३ भंगो नत्थि खं१। भंगो नत्थि खं२॥ ४ नास्तीयं गाथा वे१वे२प्रत्योः॥ ५ सया य खं१। सयाइं य पे१॥ ६ सा। एयासु वे१॥ ७ या इक्कि वे२॥ ८ ही॥ भाष्यकर्तृका चेयं गाथा। एवं खं२॥ ९ सु बंधसे के॥

अट्ठ। सते सहस्सा वायट्ठेसयाणि अडयालाणि। तीसबंधे पंचिंदियतिरियपाउग्गा बंधमाणस्स छायालसयाणि अट्ठुत्तराणि, बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियपाउग्गं• अट्ठ अट्ठ भंगा, मणुयगइपाउग्गं तित्थयरसहियं तीसं बंधमाणस्स अट्ठ, देवगइपाउग्गं आहारगसहियं तीसं बंधमाणस्स एक्को भंगो। सव्वसहस्सो छायालसयाणि एमचत्तालाणि। एगतीसं बंधमाणस्स एगो भंगो। एगविहं बंधमाणस्स एगो भंगो। एवं बंधट्ठाणाणि सनिमप्पाणि भणियाणि।

इयाणि उदयट्ठाणाणि भण्णंति—

¹वीसिगवीसा चउवीसगोत्ति एगाहिया उ इगतीसा। उदयट्ठाणाणि भवे, नव अट्ठ य होंति नामस्स॥२५॥

२०। २१। २४। २५। २६। २७। २८। २९। ३०। ३१। ९। ८। एयाणि बारस सामन्नेण संसारत्थाण उदयट्ठाणाणि। तत्थ एगिंदियपाउग्गाणि पंच उदयट्ठाणाणि—२१। २४। २५। २६। २७। संसारत्थाणं सजोगीणं जीवाणं नामकम्मम्मि बारस धुवोदया, तं जहा—तेजइयं कम्मइयं सरीरं वण्णाई ४ अगरुलहु थिरं अथिरं सुभ असुभं निमेयमिति। तत्थ एगवीसा—तिरियगई एगिंदियजाति तिरियाणुपुव्वी बायरं बादर-सुहुमाण एगयरं दूभगं अणाएज्जं जसकित्ति-अजसकित्तीणमेगयरं पज्जत्ता अपज्जत्ताणमेगयरं, एया नव धुवोदयसहिया एगवीसा अंतरगईए वट्टमाणस्स।

१ 'जो स' पा०। 'जं स पा०२ ॥ २ ति—एगवीस चउवीसा० गाहा। एगवीसाद-एगतीसंताणि उदयट्ठाणाणि भवे नव अट्ठ य होंतिनामस्स २१। २४। ... ॥ ३ वीसेगवीसच पा० पा०२ पा०३ ॥ ४ वीसं च पा०१ ॥ ५ आदि एगतीसमं ति एग-हिया। उ पा०१ पा०२ पा०३ ॥ ६ ... ॥ ७ ति पाठस्स ... ॥

एत्थ एक्कवीसाए पंच भंगा, तं जहा—बायरे पज्जत्तगे दूभगे अणाएज्जे अजसकित्ती एक्को भंगो, बादरं पज्जत्तगं दूभगं अणाएज्जं अजसं एक्को, एव बायरेण तिण्णि भंगा। सुहुमे छूढे सुहुम पज्जत्त दूभगं अजसं एक्को, बायरे अपज्जत्तग दूभग अणाएज्जं अजसं एक्को, एवं सुहुमेण तिण्णि २। सुहुमेणं अपज्जत्तगेण य सह अणाएज्जं अजसं एक्को, सुहुम अपज्जत्तं दूभगं अणाएज्जं अजसं एक्को, एवं सुहुमेण तिण्णि २। सुहुमेणं अपज्जत्तगेण य सह जसकित्तीए उदओ नत्थि। सव्वसमासो पंच। तओ सरीरत्थस्स आणुपुव्विं अवणेऊण ओरालियसरीरं हुंडसंठाण उवघाय पत्तेय-साहारणाणमेगयरे छूढे चउवीसोदओ। एत्थ एक्कारस भंगा—बायरे पज्जत्तग पत्तेय साहारण-जसा-ऽजसेहिं चत्तारि ४, बायरा-ऽपज्जत्त-पत्तेय-साहारण-अजसेणं दोण्णि २, एवं बायरे छब्भंगा। सुहुम-पज्जत्ता-ऽपज्जत्तग पत्तेय-साहारण-अजसेण चत्तारि ४, सुहुमेण अपज्जत्तेण य जसकित्तीए उदओ नत्थि त्ति सव्वे दस १०। अण्णो बायरवाउक्कायस्स ओरालिय छेऊण वेउव्वियं करेंतस्स करणअपज्जत्तगकाले चउवीसा लब्भइ। कहं? भण्णइ—पच्चुप्पाओ एक्कवीसाओ आणुपुव्विमवणेऊणं वेउव्वियसरीर-हुंडसंठाण-उवघाय-पत्तेये य छूढे चउवीसा। एत्थ एक्को भंगो। किं कारणं? तेउकाय-वाउकाएसु साहारण जसकित्तीओ नत्थि त्ति काउं। एवं चउवीसोदयभंगा सव्वे एक्कारस ११। तस्सेव सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तगस्स तम्मि चेव पज्जत्तसहियाए चउवीसाए पराघाए छूढे पणुवीसा। एत्थ सत्त भंगा, तं०—बायर-पज्जत्तग-पत्तेय-साहारण-जसा-ऽजसेहिं चत्तारि, सुहुम-पज्जत्त-पत्तेग-साहारण-अजसेणं दोण्णि २, वेउव्वियसरीरस्स सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तगस्स पराघाए छूढे पणुवीसा, एत्थ एगो भंगो। एवं पणुवीसोदए सव्वे सत्त ७। तस्सेव आणापाणुपज्जत्तीए पज्जत्तगस्स ऊसासे छूढे छव्वीस। एत्थ वि

१ °त्थ वेव्वि। सं१। छी मलयगिरिः॥ २ °त्तीउद ॥ ३ रस एक्को(क्के) सा सं२॥

ते चेव सत्त भंगा ७। अहवा एयम्मि चेव उदए ऊसासे अणुदिण्णे आयावुज्जोयाणं एगयरे उइण्णे छव्वीसा। तत्थ आयावेणं पत्तेय-जसा-जसेहिं दो भंगा, उज्जोवेणं पत्तेग-साहारण-जसा-जसेहिं चत्तारि भंगा, तेउकाइय-वाउकाइयाणं आयावुज्जोय-जसकित्तीओ नत्थि। सव्वे छव्वीसोदए तेरस भंगा १३। एत्थ चेव ऊसासछव्वीसे आयावुज्जोयाणं एगयरे छूढे सत्तावीसोदओ हवइ। एत्थ छब्भंगा, तं०—आयावं-पत्तेय-जसा-जसेहिं दोण्णि २, उज्जोय-पत्तेय-साहारण-जसा-जसेहिं चत्तारि ४, एवं एगिंदियाणं सव्वोदया बायालीसं ४२।

इयाणिं बेइंदियपाउग्गाणि छ उदयट्ठाणाणि, तं०—२१। २६। २८। २९। ३०। ३१। एत्थ एक्कवीसा तिरियगइ बेइंदियजाइ तिरियाणुपुव्वी तसे बायरं पज्जत्ता-अपज्जत्ताणमेगयरं दूभग अणाएज्जं जसा-जसाणमेगयरं, एए नव धुवोदयसहिया एक्कवीसा भवइ, बेइंदियस्स पज्जत्तगस्स वा अपज्जत्तगस्स वा अंतरगईए वट्टमाणस्स। एत्थ एक्कवीसे तिण्णि भंगा—पज्जत्तग जसा-जसेहिं दो भंगा, अपज्जत्तगा अजसकित्तीए एगो भंगो, सव्वे तिण्णि। एवं तेइंदिय-चउरिंदियाणं तिण्णि तिण्णि भंगा। तस्सेव बेइंदियस्स सरीरत्थस्स आणुपुव्विमवणेत्ता ओरालियं हुंड ओरालियंगोवंगं छेवट्टसंघयणं उवघाय पत्तेगेसु छूढेसु छव्वीसा। एत्थ वि ते चेव तिण्णि भंगा। तस्सेव सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयस्स पराघाए अपसत्थविहगे य छूढे अट्ठावीसा। एत्थ दो भंगा जसा-जसेहिं, अपज्जत्तगोदओ पसत्थविहायगती य नत्थि त्ति काउं। तस्सेव आणापाणुपज्जत्तीए पज्जत्तस्स ऊसासे छूढे एगूणतीसा। एत्थ वि ते चेव दो भंगा। अहवा एयम्मि चेव अट्ठावीसे ऊसासे अणुदिण्णे उज्जोवे वा उइण्णे

१ 'पज्जत्ता' सं० २ ३१। तस्य सं०१॥ ३ 'ठाण य सं०१॥

पगूणतीसा। एत्थ वि ते चेव दो भंगा। सव्वे वि चत्तारि। तस्सेव उस्सासपज्जत्तीए पज्जत्तगस्स दूसर-सुस्सर-पगूणतीसा। एत्थ वि ते चेव दो भंगा। सव्वे वि चत्तारि। तस्सेव उस्सासपज्जत्तीए भासापज्जत्तीए पज्जत्तगस्स दूसर-सुस्सर-रायमेयपरे छूढे तीसा भवइ। एत्थ चत्तारि भंगा सुस्सर-दूसर-जसा अजसेहिं कायव्वा। अण्णे भणंति—सुस्सरं विगलिं-दियाण नत्थि तम्म, संतकम्मे उक्कत्वात्। अथवा तम्मि चेव उस्सासपज्जत्तीए सरे अणुदिण्णे उज्जोए वा उदिण्णे तीसा। एत्थ दो भंगा उज्जोव-जसा अजसेहिं। सव्वे छब्भंगा। तम्मि चेव सरसहिए तीसे उज्जोवे छूढे एगतीसा भवइ। एत्थ चत्तारि भंगा सुस्सर-दूसर-जसा अजसेहिं कायव्वा। सव्वुदयविगप्पा बेइंदियाणं बावीसा। एवं तेइंदिय चउरिंदियाण वि। सव्वे वि छावट्ठि ६६। वियलिन्दियपाउग्गं सम्मत्तं।

इयाणिं पंचिंदियतिरियपाउग्गाणि अट्ठ उदयट्ठाणाणि, तं०—२१। २५। २६। २७। २८। २९। ३०। ३१। एत्थ एक्कवीसा तिरिक्खगइ पंचेंदियजाइ तिरिक्खाणुपुव्वि तसं बादरं पज्जत्ता असंघयणमेगयरं सुभग-दूभगाणमेगयरं आएज्ज-अणाएज्जाणमेगयरं जसा अजसाणमेगयरं, एए नव धुवोदयसहिया एक्कवीसा, अंतरगतीए वट्टमाणस्स पज्जत्तगस्स वा अप-ज्जत्तगस्स वा। एत्थ नव भंगा, पज्जत्तग-सुभग-दूभग आएज्ज-अणाएज्ज-जसा-अजसेहिं कायव्वा अट्ठ, अपज्जत्तग-दूभग-अणा-एज्ज अजसकित्तीहिं एक्को, सव्वे नव। अण्णे आयरिया भणंति—सुभग-आएज्जा उ जुगवं उदेंति, दूभग-अणाएज्जा जुगवं उदेंति। तम्हा एत्थ चउ भंग त्ति। वेउव्वियस्स तिरिक्खस्स पणुवीसादओ संभवंति। ते पच्छा वक्खाणिज्जंति। सरीरत्थस्स

१ °स्सि तम्मो सें° चू०१। तट्ठम एसव्वे ॥ २ मा सुस्सर-दुस्सर-ज चू०१॥ ३ °पट्ठी। वि चू०१ चू०१॥ ४ °सायमें° सं चू०२॥ ५ कमेगयरं चू०१ चू०२॥ ६ भवइ, ज चू०२॥ ७ सं ति। तम्हा चू०१॥ ८ भा तत्थ चू०२॥ ९ °वीसादया सं सं॥

मणुयगइपाओग्गं ओरालियं छन्नं संठाणाणमेगयरं ओरालियंगोवंगं छन्नं संघयणाणमेगयरं उवघाय पत्तेगे छूढे छव्वीसा । एत्थ वे सयाणि एगूणणउयाणि भंगाण । छ संठाण छ संघयण पसत्थग सुभगदूभग-आएज्जअणाएज्जाणं एगयरं जसाऽजसेहिं वे सयाणि अट्ठासीयाणि लब्भति, हुंडं संठाणं असंपत्त–सेवट्टं अपसत्थ दूभग अणाएज्ज अजसकित्तीहिं एगो भंगो, एवं मणुइया दो सयाणि एगूणणउयाणि २८९ । सुभगा ऽऽएज्जाणं सुभपन्नावना सर्वत्र पूर्ववत् । एवं माणिए सव्वोदएसु भंगविगप्पा जहासंभवं योज्याः । सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तस्स पराघाय पसत्था ऽपसत्थविहायगईणमन्नयरे छूढे अट्ठावीसा । एत्थ भंगाण पंचसयाणि छावत्तराणि लब्भति । जे छव्वीसे पुव्वभणिया भंगा अपसत्थगमणरहियोवि विहायगइदुगलेण गुणियाणि पंचसयाणि छावत्तराणि भवंति ५७६ । तस्स आणापाणुपज्जत्तीए पज्जत्तस्स उस्सासे छूढे एगूणतीसा । अहवा उस्सासे अणुदिन्ने उज्जोए वा उदिन्ने एगूणतीसा । एत्थ एक्कारससयाणि बावण्णाणि भंगाणं । पज्जत्तगस्स उस्सासेणं, उज्जोएण वि लद्धिया पेण, सव्वे वि ११५२ । उस्सासएगूणतीसे भासापज्जत्तीए पज्जत्तगस्स सुस्सर-दूसराणमेगयरे छूढे तीसा भवति । अहवा सरे अणुदिन्ने उज्जोए वा उदिन्ने तीसा भवइ । एत्थ सत्तरससयाणि अट्ठावीसाणि भंगाण । भट्ठावीसाए वुत्तुत्ता छावत्तरा पंचसया भंगाणं उज्जोय-सरदुवेणं तिहिं गुणिया १७२८ भवंति । सरसहियाए तीसाए उज्जोवे छूढे एक्कतीसा भवइ । एत्थ एक्कारससयाणि बावण्णाणि भंगाणं, जे तीसोदए सरसहिया भंगा, उज्जोयभंगसहिया ११५२ भवंति । णाणभविरिक्काणं सम्मुच्छिमपिंडो एगूणपण्णसयाणि छउत्तरियाणि भंगाण ४९०६ ।

---

१ पज्जत्तिए' चं मं० ॥ २ च दूभग अणाएज्ज(पज्ज) भी सुभ' पा० ॥ ३ 'या वि पा० ॥ ४ च तीहिं पा० ॥

इयाणि वेउव्वियस्स तिरिक्खस्स पंच उदयट्ठाणाणि[1], तं जहा—२५ । २७ । २८ । २९ । ३०[2] । एत्थ पणुवीसा ओरालियं विउव्विउं विउव्वियत्तस्स करणअपज्जत्तगस्स । पुव्वुत्तपज्जत्तगतिरिक्खएक्कवीसे आणुपुव्विरहिए वेउव्वियसरीर-समचउरंस-वेउव्वियंगोवंग-उवघायपत्तेगे छूढे पणुवीसा । एत्थ अट्ठ भंगा सुभग-दूभग-आएज्जा ऽणाएज्ज-जसा-ऽजसेहिं कायव्वा । सुभगादि-सप्पभा पूर्ववत् । तस्सेव सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तगस्स पराघाय-पसत्थविहायगईए छूढेहिं सत्तावीसा । एत्थ वि ते चेव अट्ठ भंगा, अपसत्थविहायगती विउव्वियत्तस्स नत्थि त्ति किच्चा । तस्सेव आणापाणुपज्जत्तीए पज्जत्तगस्स ऊसासे छूढे अट्ठावीसा । [एत्थ अट्ठ भंगा ।] अहवा सरीरपज्जत्तगस्स ऊसासे अणुदिण्णे उज्जोए वा उदिण्णे अट्ठावीसा । एत्थ वि अट्ठ भंगा । सव्वसमुदओ सोलसभंगा, ऊसासेण पुव्वुत्ता अट्ठ, उज्जोएणं अट्ठ त्ति । ऊसासअट्ठावीसाए भासापज्जत्तीए पज्जत्तगस्स सुसरे छूढे एगूणतीसा भवइ । अहवा तम्मि चेव ऊसासअट्ठावीसे सरे अणुदिण्णे उज्जोए वा उदिण्णे एगूणतीसा । एत्थ वि पुव्वुत्ता सोलस भंगा । सुस्सरेण अट्ठ, उज्जोएण अट्ठ, दुस्सरं वेउव्वियस्स नत्थि त्ति । सुस्सरसहिए एगूणतीसे उज्जोवे छूढे तीसा भवइ । एत्थ उज्जोवसहिया अट्ठ भंगा । सव्वे वेउव्वियस्स छप्पण्णं भंगा ५६ । पंचिंदियतिरिक्खस्स सव्वोदयवियप्पाणं एगूणसट्ठाणि सयाणि चोवट्ठाणि ४९६२ । पंचिंदियतिरिक्खोदया समत्ता ।

इयाणि मणुस्साणं सामण्णेण एक्कारस उदयट्ठाणाणि चउवीसरहियाणि सव्वोदयट्ठाणाणि, तं जहा—२० । २१ । २५ ।

---

१ चि—२५ ते ॥ २ ३० । तत्थ पा१ पा२ ॥ ३ 'विचिर' पा१ पा२ ॥ ४ इयाणं चि' पा१ ॥ ५ त्य पु र्व ॥ ६ जपवस पा१ ॥ च पंच स पा२ ॥ ७ पाविट्ठ॰ पा१ ॥ ८ इयो समत्तो । पा२ ॥

२६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । ९ । ८ । तत्थ सामण्णमणुस्साणं पंच उदयट्ठाणाणि—२१ । २६ । २८ । २९ । ३० । तत्थ एक्कवीसा छव्वीसा अट्ठावीसा जहा पंचिंदियतिरिक्खाणं तहा चेव वत्तव्वा । एगूणतीसा तीसा य उज्जोवरहिया तहा चेव, वेउव्वियसंजए मोत्तूण उज्जोवो मणुयाणं नत्थि त्ति कउं । एगूणतीसे भंगाणं पंचसयाणि छावत्तराणि । तीसोदए एक्कारस सयाणि बावण्णाणि । सामण्णमणुस्साणं सव्वोदयसमुदओ छव्वीससयाणि दुआहियाणि २६०२ ।

इयाणि वेउव्वियस्स मणुयस्स पंच उदयट्ठाणाणि, तं०—२५ । २७ । २८ । २९ । ३० । एत्थ पणुवीसा मणुयगति पंचिंदियजाई वेउव्विय समचउरंस वेउव्वियंगोवंग उवघाय तस बायर पज्जत्त पत्तेय सुभग-दूभगाणमेगयरं आएज्जा-णाएज्जाणमेगयरं जसाऽजसाणमेगयरं, एए तेरस धुवोदयसहिया पणुवीसा भवइ । सामण्णेणं एव भणिय । एत्थ अट्ठ भंगा सुभग दूभग-आएज्ज-णाएज्ज जसा-ऽजसेहिं कायव्वा । देसविरयसंजयाणं सव्वपसत्थो भंगो । सुभगा ऽऽएज्जा पूर्ववत् । तस्सेव सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तगस्स पराघाय-पसत्थविहाए छूढे सत्तावीसा । एत्थ वि ते चेव अट्ठ भंगा, अपसत्थविहायगती विउव्वयस्स नत्थि त्ति किच्चा । आणापाणुपज्जत्तीए पज्जत्तगस्स ऊसासे छूढे अट्ठावीसा । एत्थ वि ते चेव अट्ठ । अहवा संजयस्स उत्तरविउव्विस्स सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तगस्स ऊसासे अणुदिण्णे उज्जोए वा उदिण्णे अट्ठावीसा एत्थ एक्को भंगो । किं कारणं ? संजयाणं दूभगा-णाएज्ज-अजसकित्तीओ न उदेंति त्ति काउं । सव्वे नव । भासापज्जत्तीए पज्जत्तगस्स ऊसासअट्ठावीसे सूसरे छूढे एगूणतीसा, अहवा सरे अणुदिण्णे संजयस्स उज्जोवे वा उदिण्णे एगूणतीसा, एत्थ वि ते चेव नव भंगा । सरसहियाए एगू

१ 'ण्णाणि । एगू० ४ भा० । एकविंशत्यादिनवकार्पितो च प्रमाण १-२८९-१ । मज्ञा० ॥ २ १ । तस्य भा० भा० २ ॥

पतीसाए संजयस्स उज्जोवे छट्ठे तीसा भवइ । एत्थ एगो भंगो । वेउव्वियस्स मणुसस्स सओदयविभण्णा पणवीसं २५ ।

इयाणिं आहारमसंजयस्स वि ताणि चेव पच उदयट्ठाणाणि । जहा वेउव्वियस्स तहा भाणियव्वं । नवरं आहारग सरीर आहारगअंगोवंगाणि वत्तव्वाणि, अण्ण च दूभग-अणाएज्ज-अजसकित्तीओ न भाणियव्वाओ । पणुवीस-सत्तावीसे एक्केक्को भगो, अट्ठावीस-एगूणतीसे दो दो भंगा—उज्जोएण विणा उज्जोवेण य, तीसोदए एक्को उज्जोयसहिओ भंगो । आहारगसंजयस्स सओदयविभण्णा सत्त ।

इयाणिं केवलीणं दस उदयट्ठाणाणि, त जहा—२० । २१ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । ९ । ८[1] । एत्थ वीसा—मणुयगई पंचिंदियजाइ तस बादर पज्जत्तग सुभग आएज्ज जसकित्ति, एयाणि अट्ठ धुवोदयसहियाणि वीसा । एत्थ एगो भगो । एसा अतित्थयरकेवलिस्स समुग्घायगयस्स कम्मतिगकायजोगे वट्टमाणस्स । स चेव वीसा तित्थगरस्स कम्मति-गकायजोगिस्स तित्थगरनामसहिया एगवीसा । एत्थ एगो भंगो । सा चेव वीसा ओरालियसरीर छण्हं संठाणाणमेगयरं ओरालियगोवंगं वज्जरिसभनारायसंघयणं उवघाय पत्तेयसहिया छव्वीसा भवति, ओरालियमिस्सकायजोगे वट्टमाणस्स भवइ । एत्थ छब्भगा छण्हंति छसंठाणविभण्णेहिं । ते सामण्णमणूसोदए अत्थि चेव 卐 पत्तेय न भणिआति卐 । सा चेव छव्वीसा

१ तीसे उद' चं१ ॥ २ र्ण उद' सं ॥ ३ ८ । तत्थ चं१ चं२ ॥ ४ 'जोग(गि)स्स । सा चेव वीसा तित्थयरणामसहि चं२ ॥ ५ 'पो । सा सं ॥ ६ गो । स चेव चं१ चं२ ॥ ७ 'भंगा य चं१ ॥ ८ स्वस्तिकचिह्नान्तर्गत पाठः संमतौ नास्ति ॥ ९ ति । स चेव चं१ चं२ ॥

तित्थयरसहिया सत्तावीसा भवइ। एत्थ एगो भंगो, सव्वे पसत्थ त्ति कट्टु। अट्ठावीसा–अतित्थयरकेवलिस्स तीसोदए वट्टमाणस्स तओ सरे निरुद्धे एगूणतीसा भवइ, तओ उस्सासे निरुद्धे अट्ठावीसा भवइ। एत्थ छ भंगा संठाणेहिं। ते सामण्णोदयमरणेहिं गहिया। एगूणतीसोदओ भणिओ। अहवा तित्थगरकेवलिस्स एक्कतीसोदए वट्टमाणस्स तओ सरे निरुद्धे तीसा भवइ, तओ उस्सासे निरुद्धे एगूणतीसा भवति। एत्थ अतित्थगरस्स छब्भंगा संठाणेहिं चेव। ते सामण्णग्गहणेण गहिया। तित्थयरस्स एगो। तीसोदए छसंठाण-पसत्था अपसत्थविहायगइ-सुस्सर-दुस्सरेहिं चउवीसं भंगा लब्भंति। ते वि सामण्णगहणेण गहिया। तित्थयरस्स सरसहियस्स एक्को। एक्कतीसोदओ तित्थगरस्स, सामण्णमणुयस्स तीसोदए तित्थयरनामे छूढे एक्कतीसा भवइ। एत्थ एगो भंगो, सव्वे पसत्थ त्ति कट्टु। तत्थ नवोदओ मणुयगइ पंचिंदियजाइ तस बायर पज्जत्त सुभग आएज्ज जसकित्ती तित्थगरमिति। एत्थ अजोगिस्स तित्थयरस्स एयंसि कम्मावं समुदओ एग उदयट्ठाणं, भेओ नत्थि त्ति। तित्थयरनामरहिया ते चेव अट्ठ अतित्थगरस्स अजोगिस्स भवंति। एत्थ वि नत्थि भेओ। एवं केवलीणं दस उदया भणिया। एत्थ वीसाइ २०। २१। २७। २९। ३०। ३१। ९। ८। अट्ठुदयम्मि एक्कम्मि विसेसभंगो वि लब्भइ त्ति अट्ठ हवंति। एत्थ पत्तेयं तित्थयरस्स छब्भंगा, अतित्थगरस्स दो भंगा। सव्वमणुओदयवियप्पाणं छव्वीसं सयाणि बावण्णाणि। मणुओदया समत्ता।

१ चेव प प्र॰ ॥ २ अजोगिस्स पा॰ प्र॰ एयम्मियाति ॥ ३ गो पढमसंठाणे(णं) ति कट्टु। ती प्र॰ ॥ ४ 'सुस्सर' पा॰ प्र॰ ॥ ५ त्ति। तित्थ पा॰ पा॰ ॥ ६ 'या २०। पा॰ति ॥

इयाणिं देवाणं छ उदयट्ठाणाणि, त जहा—२१ । २५ । २७ । २८ । २९ । ३० । एत्थ एक्कवीसा देवगइ पंचिंदिय० देवाणुपुवि तस बादर पज्जत्त सुभग-दूभगाणमेगयरं आएज्जा-ऽणाएज्जाणमेगयरं जसा-ऽजसाणमेगयरं एए नव धुवोदयसहिया एक्कवीसा । तत्थ अट्ठ भंगा सुभग-दूभग आएज्ज-ऽणाएज्ज-जसा-ऽजसेहिं कायव्वा, दूभग-अणाएज्ज-अजसा पिसायाईणं संभवंति । सरीरत्थस्स आणुपुविमवणेऊणं वेउव्वियं समचउरंसं वेउव्वियंगोवंगं उवघाय पत्तेगे छूढे पणुवीसा । एत्थ वि ते चेव अट्ठ, देवाणं एत्थ वि ते चेव अट्ठ । सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयस्स पराघाय पसत्यविहायगइ छूढे सत्तावीसा । एत्थ वि अट्ठ । जम्हा सरीरए अपसत्थविहायगई नत्थि । तस्सेव आणापाणुपज्जत्तीए पज्जत्तयस्स ऊसासे छूढे अट्ठावीसा । एत्थ वि अट्ठ । अहवा सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयस्स ऊसासे अणुदिण्णे उज्जोवे उदिण्णे अट्ठावीसा । तत्थ वि अट्ठ । सव्वे अट्ठावीसे सोलस । ऊसासपज्जत्तीए पज्जत्तयस्स ऊसासे अणुदिण्णे उज्जोवे उदिण्णे अट्ठावीसा । तत्थ वि अट्ठ । सव्वे अट्ठावीसे सोलस । अहवा सरे अणुदिण्णे अट्ठावीसे भासापज्जत्तीए पज्जत्तगस्स सुस्सरे छूढे एगूणतीसा भवइ, दूसरं देवाणं नत्थि । अहवा सरे अणुदिण्णे उज्जोए वा उदिण्णे एगूणतीसा भवइ । एत्थ सरेण अट्ठ, उज्जोवेण अट्ठ, सव्वे सोलस भंगा । उत्तरवेउव्वियं करेंतस्स देवस्स उज्जोवो लब्भइ । सुस्सरसहिए एगूणतीसे उज्जोवे छूढे तीसा भवइ । एत्थ अट्ठ भंगा । सव्वोदयवियप्पे पडुच्च देवाणं चउसट्ठि उदयविगप्पा ६४ ।

इयाणिं नेरइयस्स पंच उदयट्ठाणाणि—२१ । २५ । २७ । २८ । २९ । जहा देवाण तहा नेरइयाणं पि भाणियव्वं । नवरिं दूभगं अणाएज्जं अजसं अपसत्थविहा० दूसरं च अप्पप्पणो उदयट्ठाणे भाणियव्वाणि, उज्जोवो नेरइयाण नत्थि त्ति ।

१ °सरो नत्थि । खं१ ॥ २ नेसु भा खं१ खं२ ॥

एवोद्दया अपमत्त वि एक्को विगप्पो, पंच भंगा ॥ २५ ॥ इयाणिं विसमाइगेसु उदयट्ठाणेसु एक्केकम्मि उदयविगप्पा केत्तिया पिंडिया होज ? त्ति, तन्निरूवणत्थं भण्णति—

पेंगयियेरेक्कारस तेत्तीसा छस्सयाणि तेत्तीसा। बारससत्तरससयाणऽहियाणि बि-पंचसीईहिं ॥२६॥

१ । ४२ । ११ । ३३ । ६० । ३३ । १२०२ । १७८५ ॥ २६ ॥

अउणत्तीसेक्कारससयऽहियसत्तरस-पंचसट्ठीहिं । २९१७ । ११६५ । १ । १ ।

एक्केक्कग च वीसाऽट्ठुदयंतेसु उदयविही ॥ २७ ॥

तेसिं विगप्पनिरूवणा—

[illegible] एगवीसम्मि । [illegible] ॥
[illegible] होंति चउवीसे ॥ ११ ॥
[illegible] ॥ ११ ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥ ११ ॥

१ वि [illegible] ॥ २ [illegible] ॥ ३ [illegible] ॥ ४ [illegible] ॥ ५ [illegible] ॥ ६ [illegible] ॥ ७ [illegible] ॥

[1]ज्ञानावरणसंबद्धा बोद्धव्या इमे इमे नवैन तत्र इमे । तिरिक्ख-नर-सुर-तिरि-नरमिश्रमिथ-मिर-मिश्रकगा-उद्यारे ११ १ ॥
नामकरणसंबद्धा भागे छावट्ठा य नेयव्वा । इमे बोद्धव्या नवभेये इमेयमिति समुक्कीत्तए ॥
नारकीमिश्र विकल-नर-देव-तिरिक्ख-मनुष्यमिश्रमिथ-तिरक्खरे । आहारक-नेरइए, कमेण भंगा मुणेयव्वा १७८५ ॥
कम्मावरणसंबद्धा सत्तरसयसहस्सि अट्टहत्तराणि । इमे अट्ठापडहारस्स एत्तेत्थ चैव नीयाए ॥
नर-तिरिक्ख-देव-तिरि-नरमिश्रमिथ-मिश्रकाय तिरक्ख आहारे ११७ । कमसो इक्किक्किगाए, बारस एत्तो य भंगा य ॥
नामकर्मसंबद्धा मिश्रकार्य तिरक्ख सव्वसीतिकायं ११६१ । कमसो मन उद्धारए, एत्तेत्तो नेयव्वेमिमिम ॥

इयाणिं विगलाईणं उदयपिंड भण्णइ—

उवरी चेवट्टी वत्ताव्व विकल-देव-हवियरवा । मनुष्याण विप्पज्जाहिय छत्तीससया य सत्तुरया ॥
तिरिक्खगुणपण्णत्तया अहिया बावट्ठि चैव निरयाणं । पत्ततिरिय तया एगाणउया य सत्तुरया ७०११ ॥

इयाणिं तिरियाण पयसंतिगोदयनिरूवण—

[2]इति विगल सयकसेसंधिया य बत्तीसाहमो उदया । चउवीसउद्धारस्स विसयअट्ठनवई य य य सेया ॥

एगिंदियसुहुमअपज्जत्तगस्स तिण्णि भंगा, एगिंदियबायरअपज्जत्तगस्स तिण्णि, सुहुमपज्जत्तगस्स ५, बायरपज्जत्तगस्स ८; सव १९ । एए पयसंतिमोदया एगिंदियाणं । सेसा पउसंतिगोदया । विगलिंदियाणं एक्कवीस-छव्वीसोदएसु नव नव भंगा; सवे अट्ठारस १८ । पंचिंदियाण एक्कवीसे नव ९, छव्वीसे दो सया एगूणनउया, सत्वे दो सया अट्ठाणउया । एएसु सवेसु

१ इमे गाथा अशुद्धिस्सपुरस्से ॥ २ मात्रे ये१प्रत्यस्ति ॥

वेउ-वाउओ भववरामए यइव मणुपरी समयर । सेसोदएसु न संभवइ, पक्कमो नियमा मणुपयाइ बंधइ पि भणंउं । सब्ब-वसंतियपिंडो विण्णि सयापि पणुवीसाणि ११५ । ठमङ्गाणाणि भविपाणि । इमाणि संकमठाणनिरूवणा—

तिवुनउई उगुनउई, अट्ठच्छलसी पउसीई उगुसीती ।
अट्ठ च्छ प्पणत्तरि, नव अट्ठ य णामसंताणि ॥ २८ ॥

९३ । ९२ । ८९ । ८८ । ८६ । ८० । ७९ । ७८ । ७६ । ७५ । ९ । ८ । एयाणि बारस नामम्मि संतङ्गणाणि । तत्थ तेणउई—गति ४ जाति ५ सरीरे ५ सरीरसंघाय ५ बंधण ५ सरीरसंठाण ६ सरीरअंगोवंग ३ सरीरसंघयण ६ वण्ण ५ गंध २ रस ५ फास ८ आणुपुव्वि ४ अगरुलहुं सरीरउवघाय पराघाय उस्सास आयव उज्जोव विहायगइ २ तस-थावराइवीसं निमेण तित्थगरमिति सव्वसमो तेणउती । तओ तित्थगरनामेण विणा बाणउई । तेणउईओ आहारगसरीर-संघाय आहारगसरीरबंधणं आहारगअंगोवंगेण विणा ८९ । तओ तित्थगरनामे फेविए अट्ठासीई भवइ । तओ देवगइ देवगइपाउग्गाणुपुव्वी उव्वलिए छासीई भवइ । अहवा असीइसंतकम्मियस्स निरयगइपाउग्गं बंधतस्स निरयगइ निरयाणुपुव्वि वेउव्वियचउक्कं च बंधमाणस्स छासीई, असीइसंतकम्मियस्स देवगइपाउग्गं बंधंतस्स देवगइ देवाणुपुव्वि विउव्वियचउक्कं च बंधमाणस्स वा छासीई भवइ । तओ नरयगइ नरयाणुपुव्वि वेउव्वियसरीर-संघाय-बंधण-अंगोवंगे उव्वलिए असीई भवइ । तओ मणुयगइ मणुयाणुपुव्वीए

१ मलयं पूर्णसारोमत्यादि ॥ २ उ प छा ॥ ३ ॥ ४ एवं ॥ ५ सुमसीई ॥ ६ ॥ ७ सीई ॥ ८ ॥

उवलियाए अट्ठत्तरी भवइ । एए अक्खवगाण संता । इयाणिं खवगाणं भण्णंति—तेणउईओ निरयगयि तिरियगइ एगिंदिय-जाइ बेइंदियजाइ तेइंदियजाइ चउरिंदियजाइ निरयाणुपुव्वि तिरियाणुपुव्वी आयाव उज्जोव थावर सुहुम साहारण, एएहिं एगं-तनिरय-तिरियपाउग्गेहिं तेरसहिं नामेहिं खविएहिं असीती भवइ। बाणउईओ एयम्मि चेव तेरसनामे खविए एगूणासीई भवति। एगूणनउतीओ तेरसनामे खविए छावत्तरी भवइ । अट्ठासीओ तेरसनामे खविए पण्णत्तरी भवइ । तित्थगरकेवलिस्स भवो-चरिमसमए वट्टमाणस्स वेइज्जतीओ मोत्तूण सेसाओ दुचरिमसमए खय गच्छंति । ताओ य इमाओ वेइज्जंति, तं०—मणुस्सगइ पंचिंदियजाइ तस बायर पज्जत्त सुभग आदेज्ज जसकित्ति तित्थगरमिति । एयाओ नव चरमसमए वट्टंति । एवं एयं संतट्ठाणं । तित्थगरनामरहिय अतित्थगरस्स तमेव अट्ठ भवति । एवं संतट्ठाणपरूवणा कया ।

एत्थ अण्णे अण्णारिसाणि संतट्ठाणाणि विगप्पयति ताणि आगमे चुण्णीहिं य न घडंति । कहं ? भण्णइ—सरीरनामसंघायाणि बंधण-संघायनामाणि ताणि सरीरनामेहिं सम बज्झंति वा उव्वलिज्जंति वा खविज्जंति वा वेइज्जंति वा उदीरिज्जंति वा, तम्हा सरीरनामे केवलिज्जते ते वि नियमा चिट्ठंति त्ति काउं । तम्हा न घडंति त्ति काउं परिहरियाणि ॥ २८ ॥

अट्ठ य बारस बारस, बंधोदय-संतपयडिठाणाइ।ओहेणाऽऽएसेण य, जत्थ जहासंभव विभजे ॥२९॥

अट्ठ य बारस० गाहा । अट्ठ य बारस बारस जहक्कमेण बंधोदय-संतट्ठाणाणि । एए ओघेण आएसेण य जे जत्थ जहा

१ अन्ये श्रीशिवशर्मसूरिप्रमुखा । तथा च कर्मप्रकृतौ सत्ताधिकारे नाम्नः सत्तास्थानसंसूचकं गाथासूत्रम्—" ति-दुनउई उ-गुनउई अडसीई असीइ उगसीई य । अड-छप्पण्णत्तरी नव अट्ठ य नामसंताइं ॥ १४ ॥ "

संमवेति व तत्थ तहा भाणियव्वा। 'ओघेणे'ति सामण्णेणं, अमुगं बंधमाणस्स एत्तियाणि उदयट्ठाणाणि, एत्तियाणि संतट्ठाणाणि संभवंति त्ति एसो निद्देसो ओघो। आएसो–मिच्छादिट्ठियाईण गइयाईण य पत्तेयं पत्तेयं बंधोदय-संतट्ठाणाणं संवेहो भण्णइ सो आएसो भण्णइ ॥ २९ ॥

इयाणिं कइ बंधंतो वेयइ कइ? त्ति, कइ वा पगइट्ठाणकम्मंस? त्ति, एयस्स अवसरो। तं भण्णइ—

नव-पंचोदय-सन्ता, तेवीसे पण्णवीस छव्वीसे। अट्ठ चउरऽट्ठवीसे, नव सत्त गुतीस तीसम्मि ॥३०॥
एगेगमेगतीसे, एगे एगुदय अट्ठ सन्तम्मि। उवरयबंधे दस दस, वेयगसंतम्मि ठाणाइं ॥ ३१ ॥

नव पंचोदय० गाहा। एगेगं० गाहा। 'नवपंचोदयसंता तेवीसे पण्णवीसे छव्वीसे' त्ति तेवीस-पणुवीस-छव्वीसबंधमाणं पत्तेयं पत्तेयं नव नव उदयट्ठाणाणि, पंच पंच संतट्ठाणाणि। तत्थ तेवीसबंधमाणं नव उदयट्ठाणाणि—२१। २४। २५। २६। २७। २८। २९। ३०। ३१। एक्कवीसोदओ अंतरगईए वट्टमाणाण एगिंदिय-बे०-ते०-च०-पंचिंदियतिरिक्ख-मणुस्साण तेवीसबंधयाण लब्भइ। कहं? भण्णइ—एगिंदियऽपज्जत्तगेसु तेसिं उववाओ अत्थि त्ति। चउवीसोदओ एगिंदियपज्जत्ता ऽपज्जत्तगे अतिक्खिव। पणुवीसोदओ एगिंदियपज्जत्तगे तिरिय-मणुयवेउव्वियमिच्छादिट्ठिणो य अतिक्खिव। छव्वीसोदओ एगिंदियपज्जत्तग-बे०-ते०-च०-पंचिंदियतिरिय-मणुपज्जत्ता-ऽपज्जत्तए पडुच्च। सत्तावीसोदओ एगिंदियपज्जत्तगे तिरिय मणुयवेउव्विये

१ सो पुच्छइ। चा० चा० प्र २ 'मेयं इमती' वे०।

अतिकिय। अट्ठावीस-एगूणतीस-तीसोदया बेइंदिय-ते०-च०-पंचिंदियतिरिय मणुयपज्जत्तगे य अतिकिय। एक्कवीसोदओ बे०-
म०-च०-पंचिंदियतिरिक्खे य अतिकिय। सेसा सव्वे तेवीसं पि बंधंति। इयाणिं तेरसि येव तेवीसबंधमाण पंच संतट्ठाणाणि—
९२। ८८। ८६। ८०। ७८। एत्थ एक्कवीसोदए पंच वि संभवंति मणुस्सवज्जे सव्वे अतिगिय, मणुस्सेसु अट्ठत्तरी न संभ
वइ त्ति। कहं? अट्ठत्तरीए मणुस्सगई२ उव्वलिय त्ति काउं। चउवीसोदए पंच वि संभवंति, वेउव्वियोदए पज्जत्ते एगिंदिए
मोत्तूण सेसाणं एगिंदियाणं। वेउव्वियस्स असीइ-अट्ठत्तरिवज्जाणि तिण्णि। वेउव्विए मणुयदुगं नियमा अत्थि। कहं?
भण्णइ—वेउव्वियछक्कं उव्वलेउं पच्छा मणुयदुगं उव्वलेइ त्ति काउं। पणुवीसे वि पंच वि। अट्ठत्तरी तेउ-वाउपज्जत्तगे अवेउ
व्विगे पढुप लब्भइ। सेसपज्जत्तगेसु अट्ठत्तरी न लब्भइ, तेउ-वाउवज्जो पज्जत्तगो मणुयगइ२ नियमा बंधइ त्ति काउ। वेउ
विए असी वि न लब्भइ। छव्वीसे वि पंच वि। अट्ठत्तरी तेउ-वाउपज्जत्तगे अवेउव्विए बे०-ते०-च०-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ता
पज्जत्तगे य अतिकिय। ते तेउ-वाउपो अणंतरागया विगलं-सगलतिरिक्खा जाव मणुयगइ न बंधंति तिं ताव अट्ठत्तरी
लब्भइ। सेसेसु अट्ठत्तरी नत्थि। सत्तावीसे अट्ठत्तरिवज्जाणि चत्तारि संतट्ठाणाणि बायरएगिंदिय नर तिरियवेउव्विगे य अति
किय। कहं? सत्तावीसोदओ तेउ-वाऊणं नत्थि, तेसु आयावुज्जोया नत्थि त्ति काउ। अट्ठावीस एगूणतीस-तीस २८। २९।
३०। ३१ एगतीसोदएसु नियमा अट्ठत्तरिवज्जाणि चत्तारि संतट्ठाणाणि विगलिंदिय-तिरिय-मणुए य अतिकिय। नवरं एक्क-
तीसोदओ मणुयाणं तेवीसबंधगाणं नत्थि। एवं तेवीसबंधगस्स नव वि उदयट्ठाणे पडुच चत्तालीसं संतट्ठाणाणि। पणुवीस

---

१ 'चि गा०—१२। चा१ चा२। २ कतिरि त॥ ३ 'चि मट्ठ° त॥

संमर्थति ते तत्थ तहा भाणियव्वा । 'ओघेणं'ति सामण्णेणं, भङ्गगं बंधमाणस्स एत्तियाणि उदयट्ठाणाणि, एत्तियाणि संतट्ठाणाणि संभवंति त्ति एसो निद्देसो ओघो । आएसो–मिच्छादिट्ठियाईणं मग्गणाईण य पत्तेयं पत्तेयं बंधोदय-संतट्ठाणाणं संवेहो भण्णइ सो आएसो भण्णइ ॥ २९ ॥

इयाणिं कइ बंधंतो वेयइ कइ ? त्ति, कइ वा पगइट्ठाणकम्मंसे ? त्ति, एयस्स अवसरो । तं भण्णइ—

नव-पञ्चोदय-सन्ता, तेवीसे पञ्चवीस छव्वीसे । अट्ठ चउरऽट्ठवीसे, नव सत्त गुतीस तीसम्मि ॥३०॥

एगेगमेगतीसे, एगे एगुदय अट्ठ सन्तम्मि । उवरयबंधे दस दस, वेयगसतम्मि ठाणाइं ॥ ३१ ॥

नव पंचोदय० गाहा । एगेगं० गाहा । ' नवपञ्चोदयसंता तेवीसे पण्णवीसे छव्वीसे 'त्ति तेवीस-पणुवीस-छव्वीसबंधगाणं पत्तेयं पत्तेयं नव नव उदयट्ठाणाणि, पंच पंच संतट्ठाणाणि । तत्थ तेवीसबंधगाणं नव उदयट्ठाणाणि—२१ । २४ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । एक्कवीसोदओ अंतरगईए वट्टमाणाणं एगिंदिय-बे०-ते०-च०-पंचिंदियतिरिक्ख मणुस्साण तेवीसबंधगाणं लब्भइ । कहं ? भण्णइ—एगिंदियऽपज्जत्तगेसु तेसिं उववाओ अत्थि त्ति । चउवीसोदओ एगिंदियपज्जत्ता ऽपज्जत्तगे अहिकिच्च । पणुवीसोदओ एगिंदियपज्जत्तगे तिरिय मणुयवेउव्वियमिच्छदिट्ठिणो य अहिकिच्च । छव्वीसोदओ एगिंदियपज्जत्तय-बे०-ते०-च०-पंचिंदियतिरिय-मणुयपज्जत्ता ऽपज्जत्तए पडुच्च । सत्तावीसोदओ एगिंदियपज्जत्तगे तिरिय मणुयवेउव्विये

१ सो तुब्भइ । चं१ चं२ ॥ २ चेति इयती मे२ ॥

अहिकिच । अट्ठावीस-एगूणतीस-तीसोदया बेइंदिय-ते०-च०-पंचिंदियतिरिय-मणुयपज्जत्तगे य अहिकिच । एक्कतीसोदओ बे०-
ते०-च०-पंचिंदियतिरिक्खे य अहिकिच । सेसा सव्वे तेवीसं न बंधंति । इयाणिं तेसिं चेव तेवीसबंधगाणं पंच संतट्ठाणाणि—
९२ । ८८ । ८६ । ८० । ७८ । एत्थ एक्कवीसोदए पंच वि संभवंति मणुस्सवज्जे सव्वे अहिगिच, मणुस्सेसु अट्ठचरी न संभ
वइ त्ति । कहं ? अट्ठचरीए मणुस्सगईर उव्वलिय त्ति काउं । चउवीसोदए पंच वि संभवंति, वेउव्वियोदए वट्टमाणे एगिंदिए
मोत्तूण सेसाणं एगिंदियाणं । वेउव्वियस्स असीइ-अट्ठचरिवज्जाणि तिण्णि । वेउव्विए मणुयदुगं नियमा अत्थि । कहं?
भण्णइ—वेउव्वियछक्कं उव्वलेउं पच्छा मणुयदुगं उव्वलेइ त्ति काउं । पणुवीसे वि पंच वि । अट्ठचरी तेउ-वाउपज्जत्तगे अवेउ
व्विगे पडुच्च लब्भइ । सेसपज्जत्तगेसु अट्ठचरी न लब्भइ, तेउ-वाउवज्जो पज्जत्तगो मणुयगईर नियमा बंधइ त्ति काउं । वेउ
व्विए असी वि न लब्भइ । छव्वीसे वि पंच वि । अट्ठचरी तेउ-वाउपज्जत्तगे अवेउव्विए बे०-ते०-च०-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ता-
पज्जत्तगे य अहिकिच । ते तेउ-वाऊणो अणंतरागया विगलं-सगलतिरिक्खा जाव मणुयगइं न बंधंति ताव अट्ठचरी
लब्भइ । सेसेसु अट्ठचरी नत्थि । सत्तावीस अट्ठचरिवज्जाणि चत्तारि संतट्ठाणाणि बायरएगिंदिय नर तिरियवेउव्विगे य अहि
किच । कहं ? सत्तावीसोदओ तेउ-वाऊणं नत्थि, तेसु आयाउज्जोया नत्थि त्ति काउं । अट्ठावीस एगूणतीस तीस २८ । २९ ।
३० । ३१ एक्कतीसोदएसु नियमा अट्ठचरिवज्जाणि चत्तारि संतट्ठाणाणि विगलिंदिय-तिरिय-मणुए य अहिकिच । नवरं एक्क-
तीसोदओ मणुयाणं तेवीसबंधगाणं नत्थि । एवं तेवीसबंधगस्स नव वि उदयट्ठाणे पडुच्च चत्तालीसं संतट्ठाणाणि । पणुवीस

१ त्ति सं०—९२ । मं१ सं१ । २ छतिरि ९ ॥ ३ °त्ति अट्ठ° ९ ॥

छवीसबंधमाणं पि एवं चेव, णवरं देवे वि पडुच्च २१ । २५ । २७ । २८ । २९ । ३०, एएसु उदयट्ठाणेसु वाणउई अट्ठासीई य दो संतट्ठाणा लब्भंति । दोण्ह वि बंधाणं नवनिउदए पडुच्च बाणउईसं बाणउईसं संतट्ठाणाणि ।

' अह चउरट्ठवीसे 'त्ति अट्ठावीसबंधयस्स अट्ठ उदयट्ठाणाणि, चत्तारि संताणि। तस्स उदयट्ठाणाणि, तं०—२१ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । एत्थ एक्कवीसा तिरिय-मणुए खइय-वेयगसम्मद्दिट्ठिणो पडुच्च लब्भइ । पणुवीसा आहारगसंजए तिरिक्ख-मणुए य वेउव्विगे सम्मद्दिट्ठिणो मिच्छादिट्ठिणो य अहिगिच्च लब्भइ । छव्वीसा जहा एक्कवीसा, तिरिक्ख-मणुए पडुच्च । सत्तावीसा आहारगसंजए तिरिक्ख-मणुयवेउव्विए य पडुच्च । एवं अट्ठावीसा एगूणतीसा वि । तीसा तिरिय-मणुयसम्मद्दिट्ठि-सम्मामिच्छद्दिट्ठि-[मिच्छद्दिट्ठि]णो आहारग-वेउव्वियसंजए य पडुच्च । एक्कतीसा तिरिक्खसम्मद्दिट्ठि सम्मामिच्छद्दिट्ठि मिच्छद्दिट्ठिणो पडुच्च । इयाणिं संतट्ठाणाणि, तं०—९२ । ८९ । ८८ । ८६ । एक्कवीसोदए अट्ठावीसबंधयस्स दो संतट्ठाणाणि—९२ । ८८ । पणुवीसोदए दो चेव होंति । किं कारणं ? आहारसंजओ नियमा आहारसंतकम्मिओ तस्स बाणउई चेव सेसा तिरियमणुया वेउव्विया आहारसंतकम्मिगा वि, विणा वि, एएण होंति । छव्वीस-सत्तावीस अट्ठावीस-एगूणतीसे वि ताइ चेव होंति संतट्ठाणाणि । तीसोदए चत्तारि वि संतट्ठाणाणि—९२ । ८९ । ८८ । ८६ । बाणउई अट्ठासीती य भिन्ना चेव, एगूणणउई कहं ? भण्णइ—मणुस्सो तित्थगरनामसंतकम्मिओ वेयगसम्मद्दिट्ठी पुव्वबद्धनिरयाउगो निरयाभिमुहो मिच्छत्तं गओ तस्स तित्थगरनामबंधाभावाओ निरयपाउग्गं अट्ठावीसं बंधमाणस्स एगूणनउई भवइ । छासी-

---

१ मं छासम्मेय वन वि अवय पडुच्च तीसं संत भा०१ ॥ २ यमिच्छद्दिट्ठिणो सम्मामिच्छद्दिट्ठिणो सम्मद्दिट्ठिणो भाता भा०१ ॥

तीसंतकम्मिमो कहं ? भण्णइ—तित्थयरा ऽऽहारगदुग-देवदुग निरयदुग-वेउव्वियचउक्करहिया तेणउई असी भवति, तस्संतकम्मिगो तिरिक्खो मणुस्सो वा सव्वपज्जत्तीहिं पज्जत्तगो जइ विसुद्धो तो देवपाउग्गं बंधइ, तस्स देवदुगे वेउव्वियचउक्के य छूढे छासीती भवइ; जइ संकिलिट्ठो तो निरयगइपाउग्गं बधइ, तस्स निरयदुग वेउव्वियचउक्के य छूढे वा छासीती । एक्कवीसोदए तिण्णि संतट्ठाणाणि—९२ । ८८ । ८६ । एगूणनउई तिरिक्खेसु नत्थि, तिरिक्खेसु तित्थगरसंतऽभावाओ । छासीइभावणा पूर्ववत् । अट्ठ वि उदयट्ठाणा देवगइपाउग्गं बधमाणस्स, तस्स एगूणनउईवज्जाणि सामण्णेण तिण्णि संतट्ठाणाणि लब्भति । तीसेक्कतीसोदया दोण्णि निरयगइपाउग्गं बधमाणस्स, तस्स चत्तारि वि संतट्ठाणाणि लब्भंति । एवं अट्ठावीसबंधगस्स अट्ठ वि उदयट्ठाणे पडुच्च एगूणवीसं संतट्ठाणा ।

' नव सत्तुगुतीस तीसम्मि 'त्ति एगूणतीस-तीसबंधगाणं नव नव उदयट्ठाणाणि, सत्त सत्त संतट्ठाणाणि । तत्थ उदयट्ठाणाणि एक्कवीसाईणि एक्कतीसंताणि नव । तत्थ एक्कवीसोदओ एगूणतीसं तिरिय-मणुयपाउग्गा बधमाणाणं एगिंदिय विगलिंदिय-तिरिय मणुयपज्जत्ताऽपज्जत्तग देव-नेरइये य अहिगिच्च । चउवीसोदओ एगिंदियपज्जत्ता ऽपज्जत्तगे य अहिगिच्च । पणुवीसोदओ एगिंदियपज्जत्तग-देव-नेरइय-वेउव्वियतिरिय-मणुयमिच्छद्दिट्ठिणो अहिगिच्च । छव्वीसा एगिंदियपज्जत्तग-विगलिंदिय पंचिंदितिरिय-मणुयपज्जत्ता ऽपज्जत्तगे अहिगिच्च । सत्तावीसोदओ एगिंदिय-देव-नेरइय-तिरिय-मणुयवेउव्विय-मिच्छद्दिट्ठिणो अहिगिच्च । अट्ठावीसा अउणतीसा य विगलिंदिय तिरिय-मणुय-देव-नेरइय-वेउव्वियतिरिय मणुए य पडुच्च । तीसा विगलिंदिय पंचिंदियतिरिक्ख-मणुयपज्जत्तगे देवे य उज्जोयवेयगे पडुच्च । एक्कतीसा विगलिंदिय-पंचिंदियतिरिए य पडुच्च । इयाणिं देवग-

इगुतीसं चेव। एवं तिरिक्खगइपाओग्गं उदाणि। एवमाहारसरीरस्स विसेसो णत्थि। तीसं चेव ठाणाणि। उदयद्वाणाणि २१ । २६ । २८ । २९ । ३० उदया

इगाउम्मं तित्थयरसहियं एगूणतीसं बंधमाणस्स मणुसस्स असंजयसम्माइट्ठिस्स २१ । २६ । २८ । २९ । ३० उदया

छम्मेत्ति । २५ । २७ । २८ । २९ । ३ उदया आहारगसंजय वेउव्वियसंजए असंजए संजमासंजए य अहिगिच्च। णवरि तीसो

दयो असंजय-संजमासंजयाणं णत्थि, किं कारणं? वेउव्विए उज्जोवस्स तेसिं उदओ णत्थि त्ति काउ। इयाणि संतट्ठाणाणि, ९०—

९३ । ९२ । ८९ । ८८ । ८६ । ८० । ७८ । तत्थ विगलिंदिय-पंचिंदियतिरिक्खपाओग्गं एगूणतीसं बंधमाणस्स एगिंदिय-

विगलिंदिय-पंचिंदियतिरिक्खपजत्ता अपज्जत्तगं एक्कवीसोदए पंच संतट्ठाणाणि ९२ । ८८ । ८६ । ८० । ७८ । एवं जाव

एगतीसोदओ ताव नेयव्वं जाव तेवीसबंधगस्स नीय। मणुस्सगइपाओग्गं एगूणतीसं बंधमाणाणं एगिंदिय-विगलिंदिय-पंचिं

दियतिरियाणं तिरियगइ मणुयगइपाओग्ग बंधमाणाणं मणुयाणं च अट्ठावीसवज्जेसु ताणि चेव चत्तारि संतट्ठाणाणि अप्प

प्पणो उदयट्ठाणेसु जहासंभवं भाणियव्वाणि। देव-नेरइयाणं पंचिंदियतिरिय मणुयगइपाओग्ग एगूणतीसं बंधमाणाण अप्प

प्पणो उदयट्ठाणेसु दो दो संतट्ठाणाणि—९२ । ८८ । णवरं नेरइयस्स मिच्छद्दिट्ठिस्स तित्थगरसंतकम्मगस्स मणुस्सगइपा

उग्ग बंधमाणस्स अप्पप्पणो पंचसु उदयट्ठाणेसु एगूणनउई सन्तम ८९। इयाणि एगूणतीसं तित्थगरसहियं देवगइपाओग्ग बंध

माणस्स असंजयसम्मदिट्ठिस्स एक्कवीसोदये दो संताणि—९३ । ८९ । एवं पणवीस-छव्वीस-सत्तावीस अट्ठावीस-एगूणतीस

तीसोदएसु वि। णवरि २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० तीसोदएसु असंजय-संजयासंजय संजए वा वेउव्विए पडुच्च दो

दो संताणि ताणि चेव उज्जय-पज्जत्तगाणं, णवरि असंजय-देसविरयाण तीसोदओ नत्थि। आहारयसंजयं पडुच्च एएसु चेव

१ 'चि, अर्स' चे ॥

उवएसु पत्तेयं संतट्ठाण वेयणई, तित्थगरा ऽऽहारगसंतसहिय त्ति काउं। सव्वेसिं सामण्णेण उदयट्ठाणेसु जहक्कमेण संतट्ठाणाणि ७।५।७।७।६।६।६।६।४। एगूणतीसबंधगस्स सवसमुदओ चउप्पण्णं संताणि।

इयाणिं तीसबंधगस्स नव उदयट्ठाणाणि, सत्त संतट्ठाणाणि जहा एगूणतीसं तिरियगइपाउग्ग बंधमाणाणं एगिंदिय-विगलिंदिय-पंचिंदियतिरिय-मणुय-देव-नेरइयाण विही भणिओ तह चेव उज्जोवसहियं तिरियगइपाउग्गं तीसं बंधमाणाणं एगिंदियाईणं उदय-संतट्ठाणाणि। नवरं मणुयगइपाउग्ग तित्थगरसहिय तीसं बंधमाणाणं देव-नेरइयाण विसेसो भण्णइ—देवस्स एक्कवीसोदए बंधमाणस्स दो संतट्ठाणाणि—९३।८९। तम्मि चेव उदए नेरइयस्स एगूणणउई एगा। किं कारणं? भण्णइ—जस्स तित्थगरा ऽऽहारगाणि जुगवं संताणि सो नेरइएसु न उववज्जइ त्ति काउं। एवं २५।२७।२८।२९।३० तीसोदएसु भाणियव्वाणि, नवरि तीसोदओ नेरइयस्स नत्थि। कहं? उज्जोयस्स उदयाभावाओ। जो आहारगसहियं तीसं बंधइ तस्स तीसोदए चेव एगं संतं पाणउई, तित्थगरबंधाभावात्। एवं सामण्णेण तीसबंधगाणं नवसु उदयट्ठाणेसु जहक्कमेण संताणि—७।५।७।५।६।६।६।२।४। सवसमुदओ तीसबंधगस्स बावण्णं॥ ३०॥

'एगेगमेगतीसे' त्ति एगतीसबंधगस्स एगं उदयट्ठाणं तीसा। किं कारणं? देवगइपाउग्गं आहारगतित्थगरसहियं एक्कतीसं बंधमाणो अप्पमत्तसंजओ अपुव्वकरणो वा, ते वेउव्वियं न करेंति त्ति। एगं संतट्ठाणं तेणउई। कहं? तित्थगरा ऽऽहारसहियं बंधइ त्ति काउं। 'एगे एगुदये अट्ठसंतम्मि' त्ति एगविहबंधगस्स एगं उदयट्ठाणं तीसा। कारणं इमं—अपुव्वाइओ चेव

१ 'क्रमेणं सं ' पा१॥

इमाओम्मि तित्थयरसहियं एगूणतीसं बंधमाणस्स मणुसस्स असंजयसम्माइट्ठिस्स २१ । २६ । २८ । २९ । ३० उदया सम्मेति । २५ । २७ । २८ । २९ । ३ उदया आहारगसंजए वेउव्वियसंजए असंजए संजयासंजए य अहिगिच्च । नवरं तीसो-दओ असंजय-संजयासंजयाणं नत्थि, किं कारणं ? वेउव्विए उज्जोवस्स तेसिं उदओ नत्थि त्ति काउं । इयाणि संतट्ठाणाणि, तं०—९३ । ९२ । ८९ । ८८ । ८६ । ८० । ७८ । तत्थ विगलिंदिय-पंचिंदियतिरिक्खपाओग्गं एगूणतीसं बंधमाणाणं एगिंदिय विगलिंदिय-पंचिंदियतिरिक्खमणुयाणं एक्कतीसोदय वज्ज संतट्ठाणाणि ९२ । ८८ । ८६ । ८० । ७८ । एवं जाव एगतीसोदओ ताव नेयव्वं जहा तेवीसबंधगस्स भणियं । मणुस्सगइपाओग्गं एगूणतीसं बंधमाणाणं एगिंदिय-विगलिंदिय-पंचिं-दियतिरियाणं तिरियगइ मणुयगइपाओग्गं बंधमाणाणं मणुयाणं च अट्ठावीसवज्जाणि ताणि चेव चत्तारि संतट्ठाणाणि अप्प-पत्तो उदयट्ठाणेसु भावसंभव भाणियव्वाणि । देव-नेरइयाणं पंचिंदियतिरिय-मणुयगइपाओग्गं एगूणतीसं बंधमाणाणं अप्प-पत्तो उदयट्ठाणेसु दो दो संतट्ठाणाणि—९२ । ८८ । नवरं नेरइयस्स मिच्छादिट्ठिस्स तित्थयरसंतकम्मगस्स मणुस्सगइपा-ओग्गं बंधमाणस्स अप्पप्पणो पंचसु उदयट्ठाणेसु एगूणनउई संतकम्मं ८९ । इयाणि एगूणतीसं तित्थयरसहियं देवगइपाओग्ग बंध-माणस्स असंजयसम्माइट्ठिस्स एक्कतीसोदय दो संताणि—९३ । ८९ । एवं पंचवीस छव्वीस-सत्तावीस अट्ठावीस-एगूणतीस तीसोदएसु वि । नवरि २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० तीसोदएसु असंजय-संजयासंजय संजए वा वेउव्विए पडुच्च दो दो संताणि ताणि चेव तेणउइ-एगूणनउइणामाणि, नवरि असंजय-वेउव्वियाणं तीसोदओ नत्थि । आहारगसंजयं पडुच्च एएसु चेव

१ 'चि' मर्सं च ॥

उदएसु एक्केक्कं संतट्ठाणं वेप्पउई, तित्थगरा ऽऽहारगसंतसहिय त्ति काउ। सव्वेसिं सामण्णेण उदयट्ठाणेसु सव्वक्कमेण संतट्ठाणाणि
७।५।७।७।६।६।६।६।४। एगूणतीसबंधगस्स सव्वसमुदओ चउप्पण्णं संताणि।

इयाणिं तीसबंधगस्स नव उदयट्ठाणाणि, सत्त संतट्ठाणाणि जहा एगूणतीसं तिरियगइपाउग्गं बंधमाणाणं एगिंदिय-विग लिंदिय-पंचिंदियतिरिय-मणुय-देव-नेरइयाणं विही भणिओ तह चेव उज्जोवसहिय तिरियगइपाउग्ग तीसं बंधमाणाण एगिं- दियाईणं उदय-संतट्ठाणाणि। नवरं मणुयगइपाउग्ग तित्थगरसहियं तीसं बंधमाणाण देव-नेरइयाणं विसेसो भण्णइ—देवस्स एक्कवीसोदए वट्टमाणस्स वे संतट्ठाणाणि—९३।८९। तम्मि चेव उदए नेरइयस्स एगूणणउई एगा। किं कारणं ? भण्णइ— जस्स तित्थगरा ऽऽहारगाणि जुगवं संताणि सो नेरइएसु न उववज्जइ त्ति काउ। एवं २५।२७।२८।२९।३० तीसोद एसु भाणियव्वाणि, नवरि तीसोदओ नेरइयस्स नत्थि। कहं ? उज्जोवस्स उदयाभावाओ। जो आहारगसहियं तीसं बंधइ तस्स तीसोदए चेव एक्कं संतं वाणउई, तित्थगरबंधाभावात्। एवं सामण्णेण तीसबंधगाणं नवसु उदयट्ठाणेसु अट्ठक्कमेण संताणि—७। ५।७।५।६।६।६।६।४। सव्वसमुदओ तीसबंधगस्स बावण्णं ॥ ३० ॥

'एगेगमेगतीसे' त्ति एगतीसबंधगस्स एगं उदयट्ठाणं तीसा। किं कारणं ? देवगइपाउग्गं आहारगतित्थगरसहियं एक्क तीसं बंधमाणो अप्पमत्तसंजओ अपुव्वकरणो वा, ते वेउव्वियं न करेंति त्ति। एगं संतट्ठाणं तेणउई। कहं ? तित्थगरा ऽऽहारस हियं बंधइ त्ति काउ। 'एगे एगुदये अट्ठसंतम्मि' त्ति एगविहबंधगस्स एगं उदयट्ठाणं तीसा। कारणं इमं—अपुव्वाइओ वेउ

१ °क्कमेणं सं° खं१॥

खिवं न करेंति, सिद्धत्वात् । अट्ठ संतट्ठाणाणि—९३ । ९२ । ८९ । ८८ । ८० । ७९ । ७६ । ७५ । मुल्लिल्ला चत्तारि वि उवसमसेढीए खवगसेढीए वा अनियट्टिम्मि जाव तेरस णामाणि न खीयंति ताव लब्भंति । तेरस नामे खविए अनियट्टि सुहुमसंपराएसु उवरिल्ला चत्तारि वि लब्भंति ।

[1] उवसमसंते दस दस वेदग संतम्मि ठाणाणि 'त्ति असंजयाणं दस उदयट्ठाणाणि—२० । २१ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । ९ । ८ । वीस-एक्कवीसा समुग्घायगयाणं अतित्थयर-तित्थयराण कम्मतिगकायजोगीण । छव्वीस-सत्तावीसा तेसिं चेव ओरालियमिस्सकायजोगे वट्टमाणाणं । अट्ठावीसा अतित्थगरस्स ऊसासे निरुद्धे । एगूणतीसा तस्सेव सरे निरुद्धे । अहवा अउणतीसा तित्थगरस्स ऊसासे निरुद्धे । तीसा अतित्थगरस्स समावत्थस्स । अहवा तित्थगरस्स सरे निरुद्धे वा ३० । समावत्थस्स तित्थगरस्स एक्कतीसा । तित्थगरस्स अजोगिस्स चरिमसमए वट्टमाणस्स नवोदओ । अतित्थगरस्स अजोगिस्स चरिमसमए वट्टमाणस्स अट्ठुदओ । दस संतट्ठाणाणि असंजयाणि अट्ठ नव अट्ठ य, एते दस । तत्थ वीसोदए दो संतट्ठाणाणि—एगूणासीती पण्णत्तरी य । एवं छव्वीस सत्तावीसोदएसु वि । एक्कवीसोदए दो संतट्ठाणाणि—असीती छावत्तरी य । एवं अट्ठावीसे वि । एगूणतीसे चत्तारि—८० । ७९ । ७६ । ७५, तित्थयर अतित्थयर पडुच्च । तीसोदए अट्ठ, तं०—९३ । ९२ । ८९ । ८८ । ८० । ७९ । ७६ । ७५ । मुल्लिल्ला चत्तारि उवसंतकसाय पडुच्च । उवरिल्ला चत्तारि वि खीणकसाय तित्थगरा-अतित्थगरकेवलिणो पडुच्च । एक्कतीसोदए दो संतट्ठाणाणि—असीई छावत्तरी य, तित्थगरकेवलिं पडुच्च । नवोदए

१ त्ति सं°—२ । धा१ । त्ति स मदा—२० धा१ ॥ २ दस नवो धा१ धा२ ॥ ३ 'दस अट्ठ' धा१ धा२ ॥

अजोगिस्स तिण्णि संताणि—८० । ७६ । ९ । सुत्तिन्हा दो आव दुचरिमसमओ ताव, अंतिमो चरिमसमए भवइ । अहो अजोगिस्स तिण्णि संताणि—८० । ७६ । ९ । मुक्का दो जाव दुचरिमसमओ ताव, अंतिमो चरिमसमए भवइ । अहो दए अतित्थगरस्स अजोगिस्स तिण्णि संताणाणि—७९ । ७५ । ८ । भावना पूर्ववत् । एवमपंचगस्स दससु वि ठवणट्ठाणेसु । सव्वाणि वीस संवट्ठाणाणि ॥ २१ ॥

उत्तरपयडीणं बंधोदय-संतमेया संवेहो य भणियाणि । इयाणिं जहा मणियं तहा परिवाडीए जीवट्ठाण-गुणट्ठाणेसु सामिचं भण्णइ—

तिविगप्पपगइठाणेहिं जीवगुणसन्निएसु ठाणेसु । भंगा पउंजियव्वा, जत्थ जहासंभवो भवइ ॥२२॥

तिविगप्पपगइठाणेहिं० गाहा । तिण्णि विगप्पा बंधोदय-संत त्ति, ते जेसिं नाणावरणाइपगइट्ठाणाणं ते तिविगप्पपगइट्ठाणा, तेहिं तिविगप्पपगइट्ठाणेहिं 'जीवगुणसन्निएसु ठाणेसु' त्ति जीवट्ठाण-गुणट्ठाणनामगेसु ठाणेसु 'भंगा पउंजियव्व' त्ति पूर्वाभिहिता विकल्पाः प्रयोक्तव्याः, 'जत्थ जहा संभवो भवइ' त्ति जत्थ त्ति—जीवट्ठाण-गुणट्ठाणेसु जहासंभव त्ति—जत्थ जो विगप्पो जहा संभवइ तहा भण्णइ ॥ २२ ॥

इयं ताव जीवट्ठाणं पडुच्च सामित्तं भण्णइ—

तेरससु जीवसंखेवएसु नाणंतराय तिविगप्पो । एक्कम्मि ति-दुविगप्पो, करणं पइ एत्थ अविगप्पो ॥२३॥

तेरससु जीवसंखेवएसु० गाहा । 'तेरससु' त्ति सन्निपंचिंदियपज्जत्तगं मोत्तूण सेसेसु तेरससु जीवट्ठाणेसु 'नाणंतराय

1 जो होइ । चे० ॥

तिविगप्पो 'त्ति चायायरसंपरायाण बंधाई तिण्णि विगप्पा भवंति, तं०—पंचविहो बंधो पंचविहो उदओ पंचविहं संतं ति ध्रुवत्वात् त्रयाणामपि। 'एक्कम्मि विदुविगप्पो 'त्ति एक्कम्मि सण्णिपंचिंदियपज्जत्तगम्मि तिविगप्पो वा दुविगप्पो वा। तिविगप्पो भणिओ। दुविगप्पो सुहुमसंपरायपरिसमत्तयम्मि बंधे वोच्छिण्णे पंचविहो उदओ पंचविहं संतं ति, उवसंत-खीण कसाएसु भवइ। एवं दुविगप्पं। अन्नो विगप्पो नत्थि, उदय-संताणि सुगवं सिज्झंति त्ति काउं। 'करणं पडुच्च एत्थ अविगप्पो 'त्ति भवकरणं केवलिणो वि अत्थि तेण सण्णिणो, मणोविण्णाणं पडुच्च ते सण्णिणो न भवंति। एवमिंदियं पि पडुच्च सण्णिणो न भवंति। जे करणं पडुच्च सण्णिणो तेसु 'अविगप्पो 'त्ति विगप्पा तिण्णि वि नत्थि॥ ११॥

इयाणि दंसणावरणे भण्णइ—

तेरे नव चउ पणगं, नव सन्तेगम्मि भंगमेक्कारा। वेयणिया ऽऽउय-गोए, विभज्ज मोहं परं वोच्छं॥२४॥

तेरे नव चउ पणगं गाहा। 'तेरे नव चउ पणगं नव संतं 'ति सण्णिपज्जत्तग मोत्तूण तेरससु जीवठाणेसु नवविहो बंधो, चउ पणगं उदओ, नव संतं ति, एए दोण्णि विगप्पा संभवंति। 'एक्कम्मि भंगमेक्कार 'त्ति सण्णिपज्जत्तयम्मि दंसणा वरणस्स जे एक्कारस भंगा भणिया ते सव्वे संभवंति, मिच्छद्दिट्ठिप्पभिई जाव खीणकसाओ ते सव्वे सण्णिणो त्ति काउं। 'वेय णियाउयगोए विभज्ज ' इति एएसिं तिण्हं कम्माणं भंगा जीवट्ठाणेसु विगप्पेयव्वा, सव्वसंभवं ति भणियं भवइ। तत्थ वेय णिय-गोयाणं भंगनिरूवणत्थमन्नभाष्यगाथा—

१ च। जे करणं पडु॰ चा॰ ॥ २ भणइ इति च। मणइ त्ति पं॰ चा॰ ॥

'पज्जत्तमसण्णियरे, अट्ठ चउक्कं च वेयणियभंगा । सत्तग तिगं च मोए, पत्तेगं आउकम्मेसु ॥ १ ॥

वेयणियस्स पुव्वभणिया अट्ठ भंगा । सण्णिपज्जत्तगस्स ते सव्वे संभवंति । कहं ? केवलिणो वि करणं पडुच्च सण्णिणो त्ति । 'इयर 'त्ति सण्णिपज्जत्तगं मोत्तूण सेसा तेरस तेसु पत्तेगं पत्तेगं मूलिल्ला चत्तारि भंगा भवंति । कहं ? सव्वे वेयणियस्स चउग त्ति । 'सत्तग तिगं च मोए 'त्ति जे गोयस्स सत्त भंगा भणिया ते सव्वे सण्णिपज्जत्तगम्मि संभवंति । पढमभंगो तेउ-वाऊओ उव्वट्टे उववज्जिउ सण्णिम्मि उववज्जमेत्तस्स लब्भइ । एव सेसेसु वि । सण्णिपज्जत्तय मोत्तूण सेसेसु तेरससु तिण्णि तिण्णि भंगा—पढम-बिइय-चउत्था, सेसा न संभवंति, उच्चागोओदओ तिरिएसु नत्थि त्ति काउ ॥ १ ॥

इयाणिं आउयभंगनिरूवणत्थं अन्तर्भाष्यगाथा—

पज्जत्तापज्जत्तग समणे पज्जत्त अमण सेसेसु । अट्ठावीसं दसगं, नवगं पणगं च आउस्स ॥ २ ॥

सण्णिपज्जत्तगस्स आउगस्स पुव्वुत्ता अट्ठावीसं भंगा ते सव्वे संभवंति, चउगतिगा सण्णिणो त्ति काउ । सण्णिअपज्जत्तगस्स दस । कहं ? जे तिरिक्खस्स देवगति-निरयगतिसहिया भंगा ते मोत्तूण सेसा पंच, एवं मणुयस्स वि पंच, ते दो वि सण्णिअपज्जत्तगा लभंति, तम्हा सण्णिअपज्जत्तगस्स ते सव्वे दस । असण्णिपज्जत्तगस्स नव, जे तिरियाउगेण नव भंगा ते सव्वे संभवंति, सो तिरिक्खो त्ति काउं । सेसेसु एक्कारससु पत्तेयं पत्तेयं पंच पंच संभवंति, सण्णिअपज्जत्तगस्स तिरिक्खस्स जे पंच

१ इत आरभ्यामेतना एकाऽपि चूर्णिगता अन्तर्भाष्यगाथा सर्वास्वपि मूलसूत्रादर्शेषु केनचिन्मनीषिणा विशेषप्रतिपत्त्यर्थं न्यस्ता दृश्यते ॥ २ 'स्स पुव्वभणियस्स पुव्व' सं० ॥ ३ 'ति पढे तिरिक्ख त्ति चू० ॥

भंगा ते सव्वे संभवंति, सेसा न संभवंति, एए तिरिक्ख त्ति काउं ॥ २ ॥ इयाणिं मोहणिज्जं भण्णइ ॥ १४ ॥—

अट्ठसु पंचसु एगे, एग दुग दस य मोहबंधगए।
तिग चउ णव उदयगए, तिग तिग पन्नरस सन्तम्मि ॥ १५ ॥

अट्ठसु पंचसु० गाहा। अट्ठसु पंचसु एक्कम्मि य जीवट्ठाणेसु जहक्कमेणं 'एग दुगं दस य मोहबंधगए' त्ति सत्त अपज्जत्तगा सुहुमपज्जत्तगो य एए अट्ठ, एए नियमा मिच्छद्दिट्ठिणो त्ति काउं एएसु अट्ठसु एक्को बंधविगप्पो बावीसा। तस्स छब्भेया पुव्वभणिया। बायरएगिंदिय बे० ते० चउरिंदिय असण्णिपज्जत्तगो य एते पंच, एतेसु पंचसु वि दो दो बंधट्ठाणा वि—बावीसा एक्कवीसा य, जहा पुव्वं सभेदा दो वि भणिया, मिच्छत्तं सासणत्तं च अत्थि त्ति काउं। 'एगे' त्ति सण्णिपज्जत्तगम्मि दस बंधट्ठाणाणि बावीसादि-एक्कवीसादि सभेदाणि पुव्वभणियाणि।

'तिग चउ नव उदयगए' त्ति एएसु जहक्कमेण अट्ठसु तिण्णि तिण्णि उदयट्ठाणाणि—दस नव अट्ठ त्ति। अणंताणुबंधिविरहिया मिच्छद्दिट्ठिस्स उदया। अणंताणुबंधिविरहिया नत्थि। कहं? मिच्छत्तं मोत्तूण अंतोमुहुत्तस्स आरओ तेसु न उववाउ त्ति काउं। एक्केक्कम्मि उदयम्मि नपुंसगवेदेणं चेव अट्ठ अट्ठ भंगा। सेसा न संभवंति। बायरएगिंदियपज्जत्तगादिसु पंचसु चत्तारि चत्तारि उदया, तं जहा—दस नव अट्ठ सत्त त्ति, अणंताणुबंधिसहिया एव। बायरएगिंदिय-विगलिंदियाणं नपुंसगवेदेणेव अट्ठऽट्ठ भंगा उदयावेयव्वा। असण्णिपज्जत्तगस्स तिहिं वि वेदेहिं उदयावेयव्वा। 'नव' त्ति एक्कम्मि सण्णिपज्जत्तगम्मि नव

१ श्रीमलयगिरिपादास्तु बादरैकेन्द्रिय-द्वि-त्रि-चतुरिन्द्रिय-असंज्ञिपञ्चेन्द्रियाणां पर्याप्तानामपि स्त्रीपुंसयोः नपुंसकवेदसंक्लेशपरिणामित्वात् परस्परं कर्म-

उदयट्ठाणाणि, तंजहा—इगवीस-पणवीस-छव्वीस-सत्तावीस-अट्ठावीस-एगूणतीस-तीस-एगतीसाणि समेयाणि । एगूणतीसतीसाणि पुव्वभणियाणि सत्तावीसाणि विगरहियाणि पुव्वभणियाणि समेयाणि ।

' तिग तिग पन्नरस संतम्मि 'त्ति अट्ठसु पंचसु य जीवट्ठाणेसु तिण्णि तिण्णि संतट्ठाणाणि, तं जहा—२८ । २७ । २६ । पुव्वभणियाणि । एगम्मि पन्नरस त्ति संतट्ठाणाणि, तं जहा—अट्ठावीसाइ-एगपढमसाणाणि समेयाणि पुव्वभणियाणि ।

इयाणिं ' कति बंधतो वेदेइ 'त्ति संवेहो भण्णइ—अट्ठसु जीवट्ठाणेसु बावीसं बंधमाणेसु तिण्णि उदयट्ठाणाणि, तं०—दस नव अट्ठ त्ति । एक्केक्के तिण्णि तिण्णि संतट्ठाणाणि, तं०—२८ । २७ । २६ । एव सव्वोदए पडुच्च नव संतट्ठाणाणि । पणगु वि उ बावीसबंधगा तेसिं पि एव चेव । एक्कवीसबंधगस्स तिण्णि उदयट्ठाणाणि, तं०—नव अट्ठ सत्त त्ति । एक्केक्कम्मि एक्कं चेव संत अट्ठावीसा । एवं पुच्छ । एवं एक्कवीसबंधगस्स तिण्णि संताणि बावीसबंधगसंतसहियाणि सव्वाणि बारस । सन्निपज्जत्तगम्मि बावीसादिबंधगाणं अबंधगाणं च ओघुद्देसविहिणा भावेतु भाणियव्व ॥ ३५ ॥

मोहो भणिओ । इयाणिं नाम भण्णइ—

पण दुग पणग पण चउ, पणग पणगा हवंति तिन्नेव ।

पण छ प्पणग छच्छ, प्पणग अट्ठऽट्ठ दसग त्ति ॥ ३६ ॥

सत्तेव अपज्जत्ता, सामी तह सुहुम बायरा चेव । विगलिंदिया य तिन्नि उ, तह य असन्नी य सन्नी य ॥३७॥

 ॥ १ °मी सुहुमा य बा चेर चे॥ ॥

पण दुग पणगं० गाहा । सत्तग अपज्जत्ता० गाहा । एयाओ दो वि गाहाओ जुगवं वक्खाणिज्जंति । 'पण दुग पणगं' ति सण्णि अपज्जत्तगाणं पंच पंच बंधट्ठाणाणि, बे बे उदयट्ठाणाणि, पंच पंच संतट्ठाणाणि । तत्थ बंधट्ठाणाणि, तं०—२३ । २५ । २६ । २९ । ३० । एयाइं तिरिय-मणुयपाउग्गाइं सविगप्पाइं पुव्वभणियाइं । उदयट्ठाणाइं एगिंदियबायर-सुहुम-अपज्जत्तगाणं दोण्णि—एक्कवीसा चउवीसा य । एक्कवीसे सुहुमअपज्जत्तगस्स एगो भंगो, बायरअपज्जत्तगस्स एक्को । चउवीसोदए सुहुमएगिंदियअपज्जत्तगस्स पत्तेय-साहारणेहिं दो भंगा । एवं बायरअपज्जत्तगस्स वि । सव्वसमुदओ छ ५ । पत्तेय पत्तेयं तिण्णि तिण्णि—२१ २४ सु०१-सु०२, बा०१-बा०२ । बियतिंदिय असण्णि सण्णिअपज्जत्तगाणं पत्तेयं पत्तेय दोण्णि दोण्णि उदयट्ठाणाणि—२१ । २६ । एक्कवीसोदए एक्को भंगो, छव्वीसे एक्को, सव्वे दो पत्तेयं पत्तेयं; नवरि सण्णिअपज्जत्तगस्स तिरियस्स दो, मणुयस्स दो, सव्वे चत्तारि । पत्तेयं पत्तेयं पंच पंच संतट्ठाणाणि, तं०—९२ । ८८ । ८६ । ८ । ७८ । एतेसिं विवरणं पूर्ववत् । सत्तण्ह अपज्जत्तगाण सामित्तं भणियं ।

'पण च्छ पणगं' ति सुहुमपज्जत्तगस्स पंच बंधट्ठाणाणि, चत्तारि उदयट्ठाणाणि, पंच संतट्ठाणाणि । बंधट्ठाणाणि जहा अपज्जत्तगाणं । उदयट्ठाणाणि तं०—२१ । २४ । २५ । २६ । सुहुमस्स पज्जत्तगस्स एक्कवीसोदए एगो भंगो, चउवीसोदए बे पत्तेय-साहारणेहिं, पणुवीसोदए दो, छव्वीसोदए दोण्णि; सव्वे सत्त । पणुवीस-छव्वीसोदये जे साहारणेण समं दो भंगा ते अहुवरियव्वा चउसंतकम्मिणा, सेसा पंच वि भंगा पंचसंतकम्मसियोदया । संताणि अपज्जत्तगसंतवत् ।

'पणगा हवंति तिण्णेव' त्ति बादरएगिंदियपज्जत्तगस्स पंच बंधट्ठाणाणि, पंच उदयट्ठाणाणि, पंच संतट्ठाणाणि । बंध-

संतट्ठाणाणि पूर्ववत् । उदयट्ठाणाणि त०—२१ । २४ । २५ । २६ । २७ । तत्थ एक्कवीसोदए दो भंगा जसा ऽजसेहिं । चउवीसोदए पंच भंगा, त०—पत्तेय-साहारण जसा ऽजसेहिं चत्तारि, वेउव्वियस्स एक्को । पणुवीसे वि ते चेव पंच । छव्वीसे वि ऊसासेण ते चेव पंच, ऊसासे अणुदिण्णे आयावुज्जोयाण एगयरे उदिण्णे आयावे जसा ऽजसेहिं दोण्णि, उज्जोवे पत्तेग साहारण जसा ऽजसेहिं चत्तारि, सव्वे एक्कारस । सत्तावीसे छब्भंगा । सव्वे एगूणतीसं । पणुवीस-छव्वीसोदएसु पत्तेग अजसकित्तिसहिओ एक्केक्को भंगो, एक्कवीस-चउवीसोदए सव्व उदयभेदा, चत्तारि चउवीसोदए वेउव्वियोदय मोत्तूण; सव्वे मिलिया अट्ठ, एए पंचसंतकम्मिया । सेसा चउसंतकम्मिया एक्कवीसं ।

'पण छ प्पणगं' ति बेइंदियपज्जत्तस्स पंच बंध० छ उदय० पंच संताणि । बंधसंताणि पूर्ववत् । उदयट्ठाणाणि त०—२१ । २६ । २८ । २९ । ३० । ३१ । अपज्जत्तगोदयरहिया सव्वुदयभेदा वीसं । तेसु पुव्वभणिया एक्कवीस-छव्वीसोदयविगप्पा चत्तारि एए पंचसंतकम्मिया । सेसा सोलस चउसंतकम्मिया । एवं तेइंदिय-चउरिंदियाण वि ।

'छ प्पण पणगं' ति असण्णिपज्जत्तगस्स छ बंधट्ठाणाणि छ उदयट्ठाणाणि पंच संतट्ठाणाणि । बंधट्ठाण-संतट्ठाणाणि जहा बेइंदियपज्जत्तगस्स । नवरं अट्ठावीसा निरयगइ-देवगतिपाउग्गं पि बंधंति त्ति अट्ठावीसा छूढा, तम्हा छब्बंधट्ठाणाणि । उदयट्ठाणा जे सण्णितिरिक्खस्स पज्जत्तगस्स भणिया वेउव्वियरहिया ते चेव, असण्णीसु वेउव्वियं नत्थि । अपज्जत्तगोदयदुगरहिय सव्वुदयाणं पिंडो एगूणपण्णसयाणि चउरऽसीयाणि । एएसिं मज्झे एक्कवीस-छव्वीसोदयविगप्पा २९६ पंचसंतकम्मिया । सेसा सव्वे वि चउसंतकम्मिया ।

'अट्ठन्ह दसण्हं' ति सण्णिपंचिंदियपज्जत्तस्स सव्वाणि बंधट्ठाणाणि। वीस-पणुवीसोदय-नवोदय अट्ठोदयपरिहीणाणि सव्वु दयट्ठाणाणि अट्ठ। एगिंदिय-विगलिंदिय-केवलिउदयवज्जा [१]मणुयपज्जत्तोदयदुगाहियपंचेंदियतिरियाणं सव्वुदयविगप्पा सण्णिपज्जत्तस्स उदयविगप्पा भवंति। एत्थ पंचसंविगोदयाणि असण्णिपज्जत्तगसरिसाणि। नव अट्ठरहियाणि सव्वसंताणि। पुव्वभणियाणि ताणि सण्णिपज्जत्तगस्स सव्वाणि संताणि।

बंधुदय-संताणि भणियाणि। इयाणिं 'कइ बंधंतो वेयइ कइ?' त्ति एयस्स अवसरो, तं भण्णइ—सुहुमएगिंदियअपज्जत्तगाणं तेवीसबंधगाणं एक्कवीसोदए पंच संताणि—९२। ८८। ८६। ८०। ७८। एवं चउवीसोदए वि, सव्वे वि दस। एवं पणुवीस छव्वीस-अट्ठावीस-तीसबंधगाणं पि। सव्वे वि पण्णासं। एवं सव्वत्थ पि अपज्जत्तगाणं, नवरि अप्पप्पणो उदयट्ठाणेसु भाणियव्वं। सुहुमपज्जत्तगाणं तेवीसबंधगाणं एक्कवीसोदए पंच संताणि पुव्वुत्ताणि। एवं २४। २५। २६ उदएसु। सव्वे वीसं। एवं २५। २६। २९। ३० बंधगाणं पि। सव्वसंखओ सयं। बायरएगिंदियपज्जत्तगाणं तेवीसबंधगाणं २१। २४। २५। २६ उदएसु पंच पंच संताणि, सत्तावीसोदए चत्तारि; सव्वे वि चउवीसं। एवं २५। २६। २९। ३० बंधगाणं पि। सव्वुदएसु सयं वीसुत्तरं। बेइंदियपज्जत्तगाणं तेवीसबंधगाणं एक्कवीस-छव्वीसोदएसु पंच पंच संतट्ठाणाणि पुव्वुत्ताणि। २८। २९। ३०। ३१ उदएसु चत्तारि चत्तारि संताणि। सव्वे वि छव्वीसं। एवं २५। २६। २९। ३० बंधगाणं पि। सव्वसंखओ तीसुत्तरं सयं। एवं तेइंदिय-चउरिंदियाण पि। असण्णिपज्जत्तगाणं पि एवं चेव, नवरि अट्ठावीसबंधगाण तीस-एक्कतीसोदएसु तिण्णि

१ त्रसितच्छीअन्तर्गतो पाठः खं१प्रतौ नेव ॥ २ °वि। एवं २८। खं१। °वि। २८। खं२ ॥ ३ एवं चे खं१ खं२ ॥

तिण्णि संताणि ९२ । ८८ । ८६ । सव्वसमुदओ छव्वीसुत्तरं सयं । सम्मिपत्तबंधगाण तेवीसबंधगाणं जहा बेइंदिय-पज्जत्तगाणं, सव्वे छव्वीसं । एवमेव पणुवीसबंधगाणं पि, नवरि देवाणं पणुवीसबंधगाण पणुवीस-सत्तावीसोदएसु दो दो संताणि—९२ । ८८ । सव्वे वि पणुवीसबंधगाणं तीसं । एवं छव्वीसबंधगाण पि तीसं । अट्ठावीसबंधगाणं जहा ओघे तहा भाणियव्वं, सव्वे एगूणतीसं । एगूणतीसबंधगाणं जहा पणुवीसबंधगाणं, सव्वे तीसं । नवरि विसेसो भण्णइ—अविरयसम्मदिट्ठिं पडुच्च २१ । २६ । २८ । २९ । ३० उदएसु दो दो संताणि ९३ । ८९ । एवं संजय-संजयासंजय-असंजयाणं चेव तीस २५ । २७ उदएसु ते चेव दो दो लब्भंति । अहवा आहारगसंजए पडुच्च तेणउती, नेरइए तित्थयर-संतगमिच्छादिट्ठिं पडुच्च एगूणनउती लब्भइ । सव्वे चोद्दस । एगूणतीसबंधगस्स सव्वसमुदओ चोयालीसं भवति । तीसबंधगाणं जहा पणुवीसबंधगाणं, नवरि देवाणं मणुयगइपाउग्गं तित्थयरसहियं बंधमाणाण २१ । २५ । २७ । २८ । २९ । ३० उदएसु दो दो संताणि ९३ । ८९ एते बारस, सव्वे बायालीसं । एक्कतीसबंधगाणं तीसोदए तेणउती एक्क । एगविहबंधगाणं अट्ठ । अबंधगाणं अट्ठ । सव्वसमुदओ सम्मिपत्तबंधगस्स २०८ । करणं पड़ु सन्नीणं केवलीण २० । २१ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । ९ । ८ उदएसु सव्वाणि छव्वीसं संताणि ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

जीवट्ठाणेसु सामित्तं भणियं । इदाणिं गुणट्ठाणेसु सामित्तं भण्णइ—

नाणंतराय तिविहमवि दससु दो होंति दोसु ठाणेसु। मिच्छा-साणे बीए, णव चउ पण णव य संतंसा॥३८

१ 'पि ताणि—९१ । सं ॥ २ 'णं तेणउ सं बं१ ॥

नाणंतराय तिविहमवि० गाहा । नाणावरणंतराइयाणं ' तिविहमवि 'त्ति पंचोदय-संताणि ' दससु 'त्ति मिच्छाइ जाव सुहुमरागो ताव पंचविहो बंधो, पंचविहो उदओ, पंचविहं संतं ति । एवं तिण्णगारे वि अत्थि, कसायाणुदए मइंति त्ति भणितं । ' दो होंति दोसु ठाणेसु ' त्ति उदय-संताणि दोण्णि, एयाणि उवसंत-खीणकसाएसु दोसु भवंति, सुहुमरागचरिमसमए बंधो वोच्छिण्णो, छउमत्थगाओ उदय-संता अत्थि । ते य खीणकसायस्स चरिमसमए दो वि खिज्जंति ।

'मिच्छासाणे बिइए नव चउ पण नव य संतंस' त्ति बितियं ति—दसणावरणं तस्स मिच्छद्दिट्ठि-सासणसम्मद्दिट्ठीसु दो भंगा भवंति, त०—नवविहो बंधो चउ पणगं उदओ नवविहं संतं ति । सेसा भंगा न संभवंति, थीणगिद्धितिगस्स नियमा ते बंधग त्ति काउं ॥ ४८ ॥

मीसाइ नियट्टीओ, छ च्चउ पण णव य संतकम्मंसा ।

चउबंध तिगे चउ पण, णवंस दुसु जुयल छस्संता ॥ ४९ ॥

मिस्साइनियट्टीओ छ चउ पण नव य संतकम्मंस त्ति । मिस्सो त्ति—सम्मामिच्छद्दिट्ठी, नियट्टि त्ति—अपुव्वकरणो, सम्मामिच्छद्दिट्ठीपभिती जाव अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जतिमो भागो ताव छव्विहो बंधो, थीणगिद्धितिगस्स बंधाभावाओ; चउ पणगं वा उदओ, नव संताणि; एए दो वि भंगा सव्वेसु संभवंति । 'चउबंध तिगे चउ पण नवंस' त्ति अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जइमे भागे गए निद्दापयलाणं बंधो वोच्छिज्जइ त्ति, तओ पभिई चउव्विहो बंधो । अपुव्वकरणो अणियट्टी सुहुमरागो

१ सु संभवं पं१ ॥ २ मिस्साइ पे२ ॥ ३ ईमि, च्च च बे१ ॥

य चत्तारि 'बंधति त्ति चउपयगा गुणंति । एएसु तिसु वि चउ पणगं या उदओ, नव संताणि; उवसमसेढिं पडुच । अपुव्व-करण अणियट्टि पर खवगस्स त्ति उवसंति, नवरि चत्तारि चेव उदओ, निद्दादुगोदओ नत्थि । ' दुसु युगुल छस्संत ' त्ति दुसु त्ति—अणियट्टि-सुहुमरागखवगेसु अणियट्टिअद्धाए संखेज्जेसु भागेसु गएसु थीणगिद्धितिगे खविए तओ पभिइ छस्संतकम्मिगो भवइ । अणियट्टी सुहुमरागो य एएसु दुसु चउबंधो भवो, चत्तारि उदंया, छ संताणि । जुगलं ति—बंधोदया चत्तारि चत्तारि । निद्दादुगस्स खवगा अच्चंतविसुद्ध त्ति काउं उदयाभावाओ एगो चेव भंगो ॥ ३९ ॥

उवसंते चउ पण णव, खीणे चउरुदय छच्च चउ संत ।

वेयणियाऽऽउय गोए, विभज्ज मोहं परं वोच्छं ॥ ४० ॥

उवसंते चउ पण नव० त्ति । उवसंतकसायम्मि कसाओदयाभावाओ नत्थि बंधो, चउ पणग वा उदओ, नव संतं । एए दो भंगा भवंति, अच्चंतविसुद्धो न भवति त्ति काउं । 'खीणे चउरुदय छ च चउ संत' ति खीणकसायम्मि चत्तारि उदओ, अत्यन्तविशुद्धत्वात् निद्दा-पयलाणं उदओ नत्थि, छ संतं ताव जाव दुचरिमसमओ, चरिमसमए चत्तारि उदओ, चत्तारि संतं । कहं ? भण्णइ—निद्दा-पयलाओ दुचरिमसमए खीयंति त्ति काउं । ' वेयणिया ऽऽउय-गोएसु विभज्ज 'त्ति वेयणिया ऽऽउ गोयाण भंगा गुणट्ठाणेसु भाणियव्वा त्ति भणियं भवइ । वेयणियस्स वित्थरणानिमित्तं अन्तर्भाष्यगाथा—

चउ छस्सु दोण्णि सत्तसु, एगे चउ गुणिसु वेयणियभंगा । त्ति

१ बंधइ त्ति चं० प्रा० ॥ २ °दओ, छ प्रा० ॥ ३ सत्ता चे१ चे२ ॥ ४ भिय भाउयो चे१ ॥

मिच्छदिट्ठिम्पमिई जाव पमत्तसंजउ त्ति एएसु छसु ठाणेसु वेयणियस्स आइल्ला चत्तारि भंगा पत्तेयं पत्तेयं भवंति, सव्व वि साया-ऽसायं बंधंति त्ति। 'दोण्णि सत्तसु' त्ति अप्पमत्तपभिर्ति जाव सजोगिकेवली एएसु सत्तसु गुणट्ठाणेसु वेय णियस्स तइय-चउत्था भंगा हवंति, एए सव्वे सायं चेव बंधंति त्ति। 'एगे चउ' त्ति अजोगिकेवलिम्मि अंतिल्ला चत्तारि भंगा, साया-ऽसायं सव्वे संसारत्था वेदेंति त्ति। पंचम-छट्ठा भंगा जाव दुचरिमसमओ ताव भवंति। तम्मि समए अवेदिज्ज माणअप्पपरवेयणीए खीणे चरिमसमए सत्तम-अट्ठमा भंगा भवंति। 'गुणिसु' त्ति गुणट्ठाणेसु वेयणियभंगा भणिया। गोयस्स भण्णइ—

मोए पण चउ दो तिसु, एगऽट्ठसु दोण्णि एक्कम्मि ॥ २ ॥ त्ति

'गोए पण चउ' त्ति गोयस्स आइमा पंच वि भंगा मिच्छदिट्ठिस्स, एए चेव पढमवज्जा चत्तारि भंगा सासणस्स, दो वि उच्चा-नीयं बंधंति त्ति। पढमभंगो सासणस्स नत्थि, कहं? तेउ-वाउसु सासणो नत्थि, तओ अणंतरागओ वि सासणो नत्थि त्ति। 'दो तिसु' त्ति सम्मामिच्छदिट्ठि-अविरय-देसविरयाणं चउत्थ-पंचमा दो वि भंगा, एए नीयागोयं न बंधंति त्ति। अण्णे आयरिया भणंति—देसविरयस्स एक्को भंगो पंचमो संभवइ, कहं? भण्णइ—"[1]पञ्चाईस च-चर्उए उच्चागोयस्स उदओ होइ ( ) त्ति वयणाओ। 'एगऽट्ठसु' त्ति गोयस्स पंचमो भंगोप मत्तसंजयपभिइ जाव सुहुमरागो ताव हवइ। कहं? भण्णइ—बंधोदयं पडुच्च देसेसि ठयं चेव त्ति। छट्ठो भंगो उवसंतकसाय खीणकसाय-सजोगिकेवलीणं, कसाओदयअभावाओ

१ सायो ठ° वं ॥ २ पञ्चाईस इत्येतस्थाने मौथवा सामयेर्म इति पाठः ॥

गोगस्स अपपम त्ति काउं । एव अट्ठसु वि एक्को चेव भगो । 'दोण्णि एक्कम्मि' त्ति अजोगिकयलिम्मि अंतिमा दो भगा भवंति । जाव दुचरिमसमओ ताव छट्ठो भगो । दुचरिमसमए नीयागोए खविए चरिमसमए सत्तमो भगो ॥ २ ॥

इदाणिं आउभगनिरूवणस्स अन्तर्भाष्यगाथा—

अट्ठच्छाहिगवीसा सोलस वीसं च बार छ दोसु । दो चउसु तीसु एक्कं मिच्छाइसु आउगे भगा ॥ ४ ॥

मिच्छदिट्ठिस्स आउगस्स अट्ठावीसं पि भंगा संभवंति, चउगइए पडुच्च । सासणसम्मदिट्ठिस्स छव्वीसं भंगा, कहं ? भण्णइ—तिरिय मणुएसु अ निरयाउगबंधभंगा ते सासणस्स नत्थि, जेण निरयाउग न बधइ त्ति चउगइए पडुच्च तेण सेसा छवीसा भवइ । सम्मामिच्छदिट्ठिस्स सोलस, कहं ? नेरइय तिरिय मणुय-देवाणं आउयबंधकाले जे भंगा ते बारस वि न संभवंति, सम्मामिच्छभावे वट्टमाणो आउग न बंधइ त्ति । सेसा चउगइए पडुच्च सोलस संभवंति । असंजयसम्मदिट्ठिस्स वीसं भंगा, कहं ? भण्णइ—तिरिय मणुएसु निरयगइ तिरिय-मणुयपाउग्गा बंधकाले जे छब्भगा, देव-नेरइएसु तिरियपाउग्गा बंधकाले भगा दो, एव अट्ठ, एए असंजयसम्मदिट्ठिस्स न संभवंति, कहं ? भण्णइ—तिरिय मणुया जे असंजयसम्मदिट्ठी ते देवाउगं मोत्तूणं सेसाउगाणि न बंधंति त्ति, देव-नेरइया मणुस्साउयं बंधंति त्ति, सेसा भंगा चउगईए पडुच्च अविरयसम्मदिट्ठी सव्वहिं उववज्जइ त्ति काउं लब्भंति । देसविरयम्मि बारस भंगा, कहं ? भण्णइ—तिरिय मणुयाण बंधपुव्वकाले दोण्णि, बंधकाले देवाउग बधइ त्ति दोण्णि, बंधुत्तरकाले अट्ठ वि भंगा लब्भंति, कहं ? भण्णइ—चत्तारि वि आउगाणि बंधित्तु देसविरइं पडिवज्जइ, परिणामपच्चयं ति काउं । 'छदोसु' त्ति पमत्ता-ऽपमत्तेसु छ छ भगा, कहं ? भण्णइ—मणुयाण बंधपुव्व

बद्धमंगो, देवाउगस्स बंधकालभंगो, बद्धपरकालभंगा य चत्तारि वि लब्भंति सवे छ, परिणामपच्चएणं संजमं लभइ त्ति काउं। निरय-तिरिय मणुयाउसंतकम्मिगो नियमा संजमाओ परिवडइ। 'दो चउसु' त्ति मणुयाण बद्धपुव्वभंगो देवाउयबंधुपरमंगो य एए दो वि अपुव्वकरणाइ जाव उवसंतकसाओ ताव लब्भंति, कहं? भण्णइ—एए देवाउग न बंधति त्ति, देवाउगं बंधित्ता वि उवसमसेढिं पडिवज्जंति त्ति काउं। बद्धाउगो खवगसेढिं न पडिवज्जइ। 'तीसु एक्क' त्ति मणुयाणं बद्धपुव्वभंगा खीणकसाय-सजोगिकेवलि-अजोगिकेवलीण य एक्को चेव सेसा नत्थि ॥ ४ ॥

वेयणिया-ऽऽउग-गोयाणि भणियाणि। 'मोहे परं वोच्छं' इयाणिं मोहणीयं भण्णइ ॥ ४० ॥—

गुणठाणगेसु अट्ठसु, एगेग मोहबंधठाण तु। पंचाऽनियट्टिठाणे, बंधोवरमो परं तत्तो ॥ ४१ ॥

गुणठाणगेसु० गाहा। 'गुणठाणगेसु अट्ठसु' त्ति मिच्छाइ अपुव्वकरणतेसु अट्ठसु गुणट्ठाणेसु एक्केकं मोहणिज्जस्स बंधट्ठाणं। मिच्छद्दिट्ठिस्स बावीसा, सासणस्स एक्कवीसा, सम्मामिच्छद्दिट्ठि अविरयसम्मद्दिट्ठिस्स य सत्तरस, देसविरयस्स तेरस, पमत्त अपमत्त-अपुव्वाणं नव। एए सवे बंधट्ठाणा जहा हेट्ठा सभेया सविगप्पा चेव एत्थ वि तहा चेव, नवरि अपमत्त अपुव्वाण एक्को चेव भंगो, अरतिसोकरहितत्वात्। 'पंचानियट्टिठाणे' त्ति अनियट्टिठाणे पंच बंधट्ठाणाणि, तं —५। ४। ३। २। १। अविगप्पा चेव। 'बंधोवरमो परं तत्तो' त्ति तओ परं बंधो नत्थि, अनियट्टीओ उवरि मोहणिज्जस्स बंधो नत्थि, बायरकसायोदयाभावाओ सुहुमराग-उवसंतेसु ॥ ४१ ॥

भणियाणि बंधट्ठाणाणि। इयाणिं उदओ भण्णइ—

सत्ताइ दस उ मिच्छे, सासायण-मीसए णवुक्कोसा । छाई णव उ अविरए, देसे पचाइ अट्ठेव ॥४२॥

विरए खओवसमिए, चउराई सत्त छ च्चऽपुव्वम्मि । अणियट्टिबायरे पुण, एक्को व दुवे व उदयंसा ॥४३॥

एगं सुहुमसरागो, वेएइ अवेयगा भवे सेसा । भगाण च पमाणं, पुव्वुद्दिट्ठेण नायव्वं ॥ ४४ ॥

सत्ताइ दस उ मिच्छे०तिण्णि गाहाओ । मिच्छद्दिट्ठिस्स सत्ताइ-दसंताणि चत्तारि उदयट्ठाणाणि, जहा बावीसबंधगस्स तहा चेव । 'सासायणमीसए नवुक्कोस' त्ति सासायण-सम्मामिच्छद्दिट्ठीण पत्तेयं पत्तेयं सत्ताइ-नवंताणि तिण्णि तिण्णि उदयट्ठाणाणि, सासयस्स जहा एक्कवीसबंधगस्स, जाणि हेट्ठओ सत्तरसबंधगस्स सम्मामिच्छत्तेण सत्ताइ-नवंताणि ताणि चेव सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स समेयाणि । 'छाई नव उ अविरए' त्ति असंजयसम्मद्दिट्ठिस्स छाई नवंताणि चत्तारि उदयट्ठाणाणि, जहा हेट्ठा वेयग-उवसम-खइगसम्मत्तेण समं सत्तरसबंधगस्स भणियाणि ताणि चेव असंजयसम्मद्दिट्ठिस्स समेयाणि भाणियव्वाणि । 'देसे पंचाइ अट्ठेव' त्ति देसविरयस्स पंचाइ-अट्ठंताणि चत्तारि उदयट्ठाणाणि, जहा हेट्ठा तेरसबंधगस्स उदयट्ठाणाणि ताणि चेव ॥ ४२ ॥

'विरए खओवसमिए चउराई सत्त' त्ति जे समायसंजया सेढीए हेट्ठओ वट्टमाणा ते खओवसमियविरया वुच्चंति । के ते ? भण्णइ—पमत्ताऽपमत्ता य । तेसिं दोण्हं चउराइ-सत्तगंताणि चत्तारि उदयट्ठाणाणि । ते जहा सामण्णेणं नवबंधगस्स भणिया ते चेव दोण्ह वि सरिसा । 'छच्चऽपुव्वम्मि' त्ति अपुव्वकरणस्स चउराइ-छक्कंताणि तिण्णि उदयट्ठाणाणि, उ०—४ ।

५ । ६ । तत्थ चत्तारि चउक्क संजलणाणमेगयरं, तिण्हं वेयाणमेगयरं, दोण्हं जुयलाणमेगयरं ति । एत्थ एका चउवीसा । ते चेव भयेण वा दुगुंछाए वा सह पंच भवति । एत्थ दो चेव चउवीसाओ । तम्मि चेव दोण्ह वि छूढे छक्कोदओ । एत्थ वि एका चउवीसा । ' अणियट्टि बायरे पुण एक्को व दुवे व उदयंस 'त्ति अणियट्टिस्स दुगोदओ एक्कोदओ य त्ति दो उदयट्ठाणाणि । तस्स दुगोदओ जहा हेट्ठा पच्छाणिरंयमयं पडुच्च भणिओ तहा चेव । एत्थ बारस भंगा । एत्थ एक्केक्कोदयमेणा वे चउविह तिविह-दुविह-एगविहबंधगे पडुच्च भणिया एत्थ वि ते चेव, नवरि एक्कोदओ त्ति काउ सामण्णेण चत्तारि भंगा ॥४३॥

' एगं सुहुमसरागो वेदेइ 'त्ति एगं लोभस्स सुहुमकिट्टिं सुहुमसंपरागो वेदेति, तेणेव सुहुमसंपरागो वुच्चइ । एत्थ एक्को चेव भंगो । एवं दसोदयविगप्पा सव्वे पंच । 'अवेयगा भवे' सेस' त्ति उवरिल्ला सव्वे मोहणिज्जस्स अवेयगा । 'भंगाणं च पमाणं पुव्वुद्दिट्ठेण नायव्वं 'ति जे भंगविगप्पा तेसिं पमाणं हेट्ठा भणियविहिणा णायव्वं ॥ ४४ ॥

इदाणिं सामण्णेणं दसोदयाइसु मिच्छाइगे पडुच्च सव्वचउवीसभयणनिरूवणत्थं इमा गाहा—

एक छडेक्कारेक्कारसेव एक्कारसेव णव तिन्नि । एए चउवीसगया, बार दुगे पंच एक्कम्मि ॥ ४५ ॥

एक छडेक्कारे० गाहा । दसोदए मिच्छदिट्ठिं पडुच्च एका चउवीसा, भंगुद्देसणं जहा हेट्ठा । नवोदए मिच्छद्दिट्ठिस्स चउवीसाओ तिण्णि, सासण-सम्मामिच्छ-असंजयसम्मदिट्ठिं पडुच्च एक्केका । सव्वाओ वि नवोदए छ । अट्ठोदए मिच्छद्दिट्ठिस्स तिण्णि, सासण सम्मामिच्छदिट्ठीणं दो दो, असंजयस्स तिण्णि, संजयासंजयं पडुच्च एका चउवीसा । एवमट्ठोदए सव्वाओ वि

१ °ए । ए छं० म० २ °ति । तत्थ ८° °० ॥ ३ °वे °वे° त्ति ॥ ४ °० ॥ ५

एक्कारस । सत्तोदए मिच्छादिट्ठि-सासण-सम्मामिच्छादिट्ठीणं पत्तेयं पत्तेयं एक्केक्का, असंजय-संजयासंजयणं पडुच्च तिण्णि तिण्णि, पमत्ता-अपमत्तसंजयाण एक्केक्का । सव्वाओ वि सत्तोदए एक्कारस । छक्कोदए असंजयसम्मादिट्ठिस्स एक्का, संजयासंजय-पमत्ता अपमत्तसंजयाण पत्तेय पत्तेयं तिण्णि तिण्णि, अपुव्वकरणं पडुच्च एक्का । सव्वाओ वि छक्कोदए एक्कारस । पंचोदए संजयासं पमत्ता[अपमत्ता]ण पत्तेयं पत्तेयं तिण्णि तिण्णि, अपुव्वकरणं पडुच्च दो । सव्वाओ वि पंचोदए नव । चउरो दए पमत्ता-अपमत्त-अपुव्वकरण पडुच्च पत्तेयं पत्तेयं एक्केक्का । सव्वाओ वि चउरोदए तिण्णि । 'बार दुगे' त्ति अनियट्टिं पडुच्च दुगोदए बारस भंगा वेयतिग-संजलणचउक्केहिं उप्पेंति । ' पण एक्कम्मि' त्ति एक्कोदए अनियट्टिं पडुच्च चत्तारि विगप्पा, सुहुम रागे पडुच्च एक्को; सो य सुहुमकिट्टिं वेएइ ॥ ४५ ॥

एएसिं उदयविगप्पपयवन्दनिरूवणस्स अन्तर्भाष्यगाथा—

बारसपणसट्ठसया १२६५ उदयविगप्पेहिं मोहिया जीवा । चुलसीतीसत्तत्तरि ८४७७ पयंदसएहिं विन्नेया ॥ ५ ॥

एएसिं उप्पायणा—सव्वाओ चउवीसाओ एगत्थ मेलेयव्वा एक्केक्कम्मि चउवीसं भगा अत्थि त्ति चउवीसेहिं गुणिज्जंति; दुगोदयविगप्पा बारस, एगोदयविगप्पा पंच, एए वि सव छुब्भति । छूढे उदयविगप्पा भवति । उदयविगप्पो नाम आवइ याओ पयडीओ जुगवं उदयंति तासिं समुदओ उदयविगप्पो भण्णइ । दसोदयादिविगप्पा जाव चउरोदओ ते अप्पप्पणो विगप्पेहिं गुणेउ मेलवियु एक्केक्कम्मि उ चउवीसं भंगा संति त्ति चउवीसेहिं गुणिज्जंति, दुगोदयविगप्पा दोहिं गुणिज्जंति, एक्को

१ त्थतिककुसमयमयण पाठः खं०प्रतावेव ॥ २ वसिंद पं० वे० ॥ ३ छविगु ख०२ ॥

उदयविगप्पा पत्तेयं गुणेसु सो चेव सव्वा पयबंधविगप्पा भवंति। पयबंधविगप्पो नाम उदयमज्झगयाण पगईणं पत्तेयपगइगणणा पयबंधविगप्पो। एवं मिच्छद्दिट्ठियाईणं सामण्णेणं भणियं ॥ ५ ॥

इयाणिं मिच्छद्दिट्ठियाइयाण पत्तेयं पत्तेयं उदयविगप्पनिरूवणत्थं अन्तर्भाष्यगाथा—

चउरो चउ चउ चउरो ठाणा य चउरो य होंति चउवीसा। मिच्छाइ अपुव्वंता बारस पणगं च भणियव्वं ॥ १ ॥

मिच्छस्स अणंताणुबंधिणा सह दसाइ-अट्ठगंतेसु उदएसु चत्तारि चउवीसाओ लब्भंति, अणंताणुबंधिणा विणा नवाइ-सत्तगंतेसु उदएसु चत्तारि चउवीसाओ। सव्वे अट्ठ। सासणस्स चत्तारि। सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स चत्तारि। अविरयसम्मद्दिट्ठिस्स वेयगसम्मत्तेण नवाइ-सत्तगंतेसु चत्तारि चउवीसाओ, वेयगसम्मत्तेण विणा खइगसम्मद्दिट्ठिस्स वा उवसमसम्मद्दिट्ठिस्स वा अट्ठग-छक्कंतेसु उदएसु चत्तारि चउवीसाओ। सव्वाओ वि अट्ठ। एवं संजयासंजयस्स वि अट्ठाइ-पणगंतेसु उदएसु भाणेयव्वं। एवं सव्वाओ वि अट्ठ। पमत्ता अपमत्तसंजयाणं पि वेयगसम्मत्तेण सह विणा य सत्ताइ-चउरंतेसु उदयट्ठाणेसु वि भाणेयव्वं। एक्केक्कस्स अट्ठ। अपुव्वकरणस्स वेयगसम्मत्तेण विणा छक्काइ-चउरंतेसु चत्तारि चउवीसाओ लब्भंति। दुगोदए अणियट्ठिस्स बारस, एकोदए चत्तारि सुहुमरागस्स एक्को ॥ १ ॥

मिच्छाइ अपुव्वंताणं जाओ चउवीसाओ अणण्णाओ पयबंधेहिं गुणिए पत्तेयं पत्तेयं एयाणि आणयणकाणि हवंति—

१ वेयगं। चं॰ ॥ २–३ "भंगा" संशोधनम् ॥ ४ 'भंगो' संशोधनम् ॥

[1]अट्ठी बत्तीसं, बत्तीसं सट्ठिमेव बावण्णा। चोयालं चोयालं, वीसा वि य [2]मिच्छमाईसु ॥ ७ ॥

सामण्ण-विसेसेणं उदयविगप्पा उदयपया य भणिया। इयाणिं जोगाइएहिं ते चेव गुणिज्जंति त्ति—

जोगोवओग-लेसाइएहिं गुणिया हवंति कायव्वा। जे जत्थ गुणट्ठाणेसु होंति ते तत्थ गुणकारा ॥४६॥

जोगोवओगलेसाइएहिं भाष्य। 'जोगोवओगलेसाइएहिं' ति मिच्छदिट्ठीपभिइसु जे जोगादओ तेहिं तेसिं उदयपया उदयपया य गुणेयव्वा, 'जे जत्थ गुणट्ठाणेसु भवंति' त्ति जेसु गुणट्ठाणेसु जत्तिया जोगादओ भवंति 'तत्थ तत्थ गुणकारो' त्ति तम्मि गुणट्ठाणे तत्तिया गुणकारभेया भवति त्ति भणियं। मिच्छाइ-अपुव्वंताणं उदयविगप्पसमासमसामण्णं चउवीसाए तिवे पसंभवाए गुणेऊणं, मणजोगा चत्तारि वइजोगा चत्तारि ओरालियकायजोगो एएहिं नवहिं जोएहिं गुणिज्जंति, सव्वेसिं साम ण्णं ति छउं। जे बारस दुगोदया जे य पंच एक्कोदयविगप्पा एए सव्वे वि सत्तरस, ते नवहिं गुणिउ पुव्वरासिम्मि पक्खिव। वेउव्वियजोगिमिच्छद्दिट्ठिस्स अट्ठ वि उदयविगप्पा। वेउव्वियमीस ओरालियमीस कम्मइगकायजोगीणं पत्तेयं पत्तेयं चत्तारि

---

1 प्रायेण चूर्णिकृताऽस्मात्मोप्य माधास्तेनाऽभीष्टिताऽपि तत्रोत्तपदप्रसम्पर्कमिममन्तर्माप्यगाथा—अट्ठी बत्तीस इति सप्ततिक टीकाकृतमीमसयगिरिभिरेवमस्मात्मन्तर्माप्यगाथात्वेन संस्थापिता ॥ २ [2]मास होसु वीसा मिच्छमाईसु सामण्णं ॥ ७ ॥ खे२ खे३॥ ३ मिच्छदिट्ठिस्स चारि नताइ उदयट्ठाणाणि ७। ८। ९। १० तेसु पत्तेयं पत्तेयं जाओ चउव्वीसाओ ताओ सव्वाओ पत्तेयं पत्तेयं उदयट्ठाणेहिं गुणियाणि। पत्तोदयट्ठाणेण तत्तीहिं गुणिया तत्त चेव ता हुंति। एवं सेसेसु वि। सव्वे मिच्छदिट्ठिस्स ६८। एवं सेसेसु गुणट्ठाणेसु भावेयव्वं।" छेदिताक्षरम् ॥ ४ [4]ते हवंति खे२ खे३ ॥

चत्तारि । एएसु अणंताणुबंधिणा विणा उदया ण लब्भंति, किं कारणं ? वेदगसम्माइट्ठी अणंताणुबंधिणो विसंजोएदूण पुणो जइ मिच्छत्तं पडिवज्जइ, तस्सेव अंतोमुहुत्तावसेसाउगो मिच्छत्तं पडिवज्जइ। मिच्छत्तं पडिवण्णो अणंताणुबंधिणो णियमओ बंधइ बंधावलियाइयं पवेएइ त्ति; तम्हा उप्पण्णस्स वा अंतरगईए वा वट्टमाणस्स अणंताणुबंधिरहिया उदया न लब्भंति । सासणस्स वेउव्वियकायजोगे ओरालियमिस्स-कम्मइयकायजोगीणं पत्तेयं पत्तेयं चत्तारि चत्तारि । सम्मामिच्छाइट्ठिस्स वेउव्वियकायजोगिस्स चत्तारि । असंजयसम्माइट्ठिस्स वेउव्वियकायजोगिस्स अट्ठ । एए सव्वे चोयालं भवइ त्ति । तिवेयएसु एए मे सम्मत्ति त्ति चउवीसाए गुणेसु पुव्वरासिम्मि पक्खिव । सासणस्स वेउव्वियमीसस्स चत्तारि । एत्थ नपुंसगवेओ न लब्भइ, कुदो ? वेउव्वियमिस्सकायजोगिसु नपुंसगवेयगेसु सासणो न उप्पज्जइ त्ति कट्टु । असंजयस्स वेउव्वियमीसस्स कम्मइयकायजोगिस्स य पत्तेयं पत्तेयं अट्ठट्ठ । एत्थ इत्थिवेओ न लब्भइ, कुदो ? इत्थिवेयगेसु न उववज्जइ त्ति कट्टु । सामान्य प्रतीत्येदं, धरामपात् होज्ज इत्थिवेदस्स । वेयगसम्मत्तेण विणा नपुंसगवेदेण जे उदया चत्तारि ते णेरइगे पडुच्च लब्भंति । ते य सह सम्माइट्ठिणो वेयगस्स वा खइयसम्माइट्ठिस्स आहारकायजोगि आहारमिस्सकायजोगिस्स पत्तेयं पत्तेय अट्ठट्ठ । एएसु दो वेया लब्भंति । कुदो ? इत्थी पुरिसवेउव्वियलद्धिरहिया नत्थि त्ति काउं । एए चउप्पगारा वि मेलिया छत्तीसं भवंति । ते दुवेयहय त्ति काउं सोलसेहिं गुणिय पुव्वरासिम्मि पक्खिव । असंजयसम्माइट्ठिस्स ओरालियमिस्सकायजोगिस्स अट्ठ । एत्थ इत्थि-नपुंसगवेया न लब्भंति । कुदो ? मणुस्सेसु सम्माइट्ठी इत्थि-नपुंसगेसु न उववज्जइ त्ति प्राचुर्यवचनम्, कदाचित्का

१ ओएसु चउ ॥ २ [illegible] ॥ ३ [illegible] ॥ ४ हु । इत्थि° चउ१ ॥

त्रुवति। एमवेयजुय सि अट्ठहिं गुणेसु पुव्वासिम्मि पक्खिव। पक्खित्ते आगयं १२०८१।

ऐयाणि जोगपच्चयाणि—मिच्छाइ अपुव्वंताणं उदयपयविगप्पा " मङ्गङीपचीस " (अन्तर्भाष्यगाथा ७)ति गाहाए भणिया। मिच्छाइ-अपुव्वंताणं उदयपयविगप्पाणं ३५२ चउवीसाए गुणिसु, नवहिं जोगेहिं गुणिसु, बारस दोहिं पएहिं गुणे उम, पक्खेरया पंच तेहिं सहिया २९ नवहिं जोएहिं गुणेऊण पुव्वासिम्मि पक्खिव। वेउव्वियकायजोगिस्स मिच्छद्दिट्ठिस्स अट्ठी। वेउव्वियमिस्स ओरालियमिस्स-कम्मइगकायजोगीणं पत्तेय पत्तेय छत्तीसं छत्तीसं अवताणुबंधिणा सह उदया, कारण पुव्वुत्तं। सासणस्स वेउव्वियकायजोगि ओरालियमिस्स-कम्मइगकायजोगीणं पत्तेय पत्तेय बत्तीसं बत्तीसं। सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स वेउव्वियकायजोगिस्स बत्तीसं। असंजयवेउव्वियकायजोगिस्स सट्ठी। एए सव्वे मेलिया २१४ चउवीसेहिं गुणिसु पुव्वासिम्मि पक्खिव। सासणस्स वेउव्वियमिस्सस्स ३२। एत्थ नपुंसगवेओ नत्थि, कारणं पुव्वुत्तं। असंजयस्स वेउव्वियमीसस्स कम्मइगकायजोगिस्स य पत्तेयं पत्तेयं सट्ठि सट्ठि। एत्थ इत्थिवेओ नत्थि, कारणं भणियं। आहारगमिस्स आहारगमिस्सस्स य पत्तेयं पत्तेयं चोयाल चोयालं, एत्थ इत्थिवेओ नत्थि, कारण पूर्ववत्। एए तिण्णसारा वि २४०। एए दुवेयजुयसि काउ दुवेयसमएहिं सोळसहिं गुणिसु पुव्वासिम्मि पक्खिव। असंजयस्स ओरालियकायमीसजोगिस्स सट्ठी। एत्थ इत्थि

१ यैचन्द्र क्षेमकुमारे विवरणावां तथोम्म् १४१६१ बास्ति रसतां धर्मम्न्तद्विशीवविमयनु ११७। भीजीवविजयेस्य स्तबुकार्थे १४११ मत्रा भारता: मनकेमनु धर्मम्न्तचर्तद्वितीयमिमाग्न् २०१ ॥ २ इयाचि एवि पाठ संमती भास्ति ॥ ३ रगकायजोगिस्स मो१ मो१ ॥

चत्तारि । एएसु अणंताणुबंधिणा विणा उदया न सम्भवंति, किं कारणं ? वेदगसम्मद्दिट्ठी अणंताणुबंधिणो विसंजोएतु पुणो वा मिच्छत्तं पडिवज्जइ, तस्सेव अंतोमुहुत्तावसेसाउमो मिच्छत्तं पडिवज्जइ। मिच्छत्तं पडिवन्नो अणंताणुबंधिणो नियमओ बंधइ बंधावलियाईयं वेएइ त्ति; तम्हा उप्पन्नस्स वा अंतरमरणे वा वट्टमाणस्स अणंताणुबंधिरहिया उदया न सम्भवंति । सासणस्स वेउव्वियकायजोगि-ओरालियमिस्स-कम्मइयकायजोगीणं पत्तेयं पत्तेयं चत्तारि चत्तारि । सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स वेउव्वियकायजोगिस्स चत्तारि । असंजयसम्मद्दिट्ठिस्स वेउव्वियकायजोगिस्स अट्ठ । एए सव्वे चोयाल भवइ त्ति । तिवेयगेसु एए सव्वे सम्भवंति त्ति चउवीसाए गुणेउं पुव्वभणियम्मि पक्खिव । सासणस्स वेउव्वियमीसस्स चत्तारि । एत्थ नपुंसगवेओ न सम्भवइ, कहं ? वेउव्वियमिस्सकायजोगिसु नपुंसगवेयएसु सासणो न उप्पज्जइ त्ति काउं । असंजयस्स वेउव्वियमीसस्स कम्मइगकायजोगिस्स य पत्तेयं पत्तेयं अट्ठ । एत्थ इत्थिवेदो न सम्भवइ कहं ? इत्थिवेएण न उववज्जइ त्ति काउं । सामान्यं प्रतीत्योक्तं, पत्यसम्पर्यान् दोस इत्थिवेदस । मेगा......

इयाणिं लेसं पड़—मिच्छाइ जाव असंजयसम्मदिट्ठि त्ति जाव छ ६ लेसाउ। उवरिमतिगाणं तिण्णि लेसाओ। एत्तो परं तु एका चेव सुक्कलेसा। मिच्छाइ-अपुव्वंताणं सगसगउदयपडाणविगप्पा सगसगलेसाहिं गुणेऊणं सव्वं पिंडिय जाउ २२० चउवीसेहिं विसेससंभवेहिं गुणेऊण, दुगोदय एगोदय० सगरस एक्काए लेसाए गुणेसु तेसु चेव पक्खित्तेसु जायं ५२१७ लेसावंद।

तेसिं चेव मिच्छाइ अपुव्वताण सगसगउदयपडाणविगप्पा सगसगउदयपयविगप्पेहिं गुणेऊण सगसगलेसाहिं य गुणऊण संपिंडिए १५१२ चउवीसेहिं विसेससंभवेहिं गुणेऊण, उवरिमएगूणवीसं एक्काए सुक्कलेसाए गुणेसु पुव्वरासिम्मि पक्खित्ते जायं २८२३७ लेसापयं ॥ ४६ ॥

सामण्णेणुदया भणिया। इयाणिं संतं भण्णइ—

तिण्णेगे एगेगं, तिग मीसे पंच चउसु नियट्टिए तिण्णि।

एक्कार बायरम्मी, सुहुमे चउ तिण्णि उवसंते ॥ ४७ ॥

तिण्णेगे एगेग० गाहा। मिच्छद्दिट्ठिस्स तिण्णि संतट्ठाणाणि, तं०—२८। २७। २६। एएसिं भावणा जहा बावीस

५ ११५। सर्व च—पचारं च सहस्सा तिथि सया चेव पणारा ५ ११५ ॥ ( ) इति श्रीमलयगिरिमहर्षयः। एतावत्‌ तत्स्थानविधिविषयाधुर्विभक्तं कर्मप्रकृतिटीकाविभागे ११ तमं पृष्ठम् ॥ १ लेसाउ इति पाठः चमती नास्ति ॥ २ सु तिगऽपुव्वे। ए चे१। नवमेव पाठः शोभनः परं चूर्णिकारैः टीकाकृद्भिश्च नियट्टिए तिण्णि इति पाठो विहितः इति मात्वोऽयं समीचीनोऽपि पाठो मूले ॥ ३ एसिम च, सु चे२ ॥ ४ तं जहा—२८। चे२ ॥

णपुंसगवेया णत्थि, कारणं पुव्वं व। एए पणवेयसहस्स चिकाठ पुरिसवेयसंजोगेहिं अट्ठहिं गुणेसु पुणरासिम्मि पक्खित्ते आगमं ८९३४९ जोगपयं।

इदाणिं उवओगं पडुच्च उवओगवदया उवओगपया य भण्णंति—मिच्छदिट्ठी-सासायणाणं पत्तेयं पत्तेयं पंच पंच उवओगा। सम्मामिच्छदिट्ठीयाइयाणं तिण्हं छ छ उवओगा। पमत्ताइ-सुहुमंताण पंचण्हं सत्त सत्त उवओगा। मिच्छाइ-अपुव्वाणं सेसमउवयणगाणविगप्पा सगसगउवओगेहिं गुणेऊणं, सव्वपिंडं ३२० चउवीसेहिं तिवेयसंजोगेहिं गुणेसु, दुगोदय एगोदयविगप्पा सत्तरस सगुवओगेहिं गुणेऊण तेसु चेव पक्खित्तेसु आगयं" ७७९९।

ईयाणिं उवओगपय—तेसिं चेव मिच्छाइ अपुव्वाणं सगसगउदयपयाणविगप्पा समसमउदयपएहिं गुणेऊण सगसगउवओगेहिं गुणेसु सव्वं संपिंडेसु २१२० चउवीसेहिं तिवेयसंजोगेहिं गुणेऊ। दुगोदय-एगोदयविगप्पा एगूणतीसा सगुवओगेहिं गुणेऊण तेसिं चेव पक्खित्त आगयं ५१०८२ उवओगपया।

---

१ 'च' पुस्तके। एए श्लो १ ॥ २ गोम्मटो योगपदानाम् ९५७१ अस्ति इत्यतो कर्मप्रकृतिवृत्तिविभागम् २११। मीमांसकाः यज्ञोपदुणे १११७७ योगपदानि मिलितानि कर्मप्रकृत्यर्थवृत्तिविभागम् २०४ ॥ ३ "अपूर्व-करणान्ते व उदयविकल्पा वे मिथ्यादृष्ट्यादिषु पत्तेयं पत्तेयं वे उवओगा भणिता तेहिं अपूर्व-करणान्ता उभये वि गुणिताम्हि।" संक्षिप्तम् ॥ ४ "मताम्तरेण समासस्थितानि गुणानि। तर्के च—उवओगुवओगेसु, सगसरीसा वियप्पा होंति ७७ १। ( ) " इति श्रीमलयगिरिपादाः। एतस्मात् विकल्पानां इत्यतो कर्मप्रकृतिवृत्तिविभागम् २१९ ॥ ५ इयाणिं इति पाठ संज्ञी नास्ति ॥ ६ मताम्तरेण पुन: पञ्चाशत् सहस्राणि त्रीणि शतानि सप्तचत्वारिंशत्

इयाणिं लेसं पड़—मिच्छाइ जाव असंजयसम्मदिट्ठि त्ति ताव छ १ लेसाउ । उवरिमतिगाणं तिण्णि लेसाओ । एत्तो परं तु एका चेव सुक्कलेसा । मिच्छाइ अपुव्वंताणं सगसगउदयट्ठाणविगप्पा सगसगलेसाहिं गुणेऊणं सव पिंडियं काउं २२० चउवीसेहिं तिवेयसंभवेहिं गुणेऊण, दुगोदय एगोदय० सचरस एक्काए लेसाए गुणेसु तेसु चेव पक्खित्तेसु आगय ५२९७ लेसादंड ।

तेसिं चेव मिच्छाइ अपुव्वंताण सगसगउदयट्ठाणविगप्पा सगसगउदयपयविगप्पेहिं गुणेऊण सगसगलेसाहिं य गुणेऊण संपिंडिए १५९२ चउवीसहिं तिवेयसंभवेहिं गुणेऊण, उवरिमएगूणतीसं एक्काए सुक्कलेसाए गुणेसु पुव्वरासिम्मि पक्खित्ते आगयं ३८२३७ लेसापय ॥ ४६ ॥

सामण्णेणुदया भणिया । इयाणिं संत भण्णइ—

तिन्नेगे एगेग, तिग मीसे पंच चउसुं नियट्टिए तिन्नि ।
एक्कार बायरम्मी, सुहुमे चउ तिन्नि उवसंते ॥ ४७ ॥

तिण्णेगे एगेगं० गाहा । मिच्छद्दिट्ठिस्स तिण्णि संतट्ठाणाणि, तं०—२८ । २७ । २६ । एएसिं भावणा जहा बावीस

५ ११५ । इत्थे क—पवाई व पइसा तिवि सवा चेव पभारा ५ ११५ ॥ ( ) इति श्रीमलयगिरिमहर्षयः । एतद्गम तत्समानविधिविभाजुर्निर्दम्मं कर्मप्रकृतिदीप्तविभावे ११ उमं ग्रम् ॥ १ लेसाउ इति पाठः तंडरी नास्ति ॥ २ सु तिगडपुव्वे । पं' ये२ । अनमेव पाठः बोधकः परं चूर्णिकारैः नीचाबन्धिम बियट्टीए तिन्नि इति पाठे निहट इति भारतोऽयं समीचीनोऽपि पाठे मूले ॥ ३ 'एम्मि व छं' ये२ ॥ ४ त जहा—२८ । सं१ ॥

चंपगस्स। 'पेसेसं' ति सासणस्स एक संत अट्ठावीसा। एयस्स भावणा जहा एक्कवीसबंधगस्स। 'तिग मिस्से' ति सम्मामिच्छादिट्ठिस्स तिण्णि संतट्ठाणाणि २८। २७। २४। भावणा जहा सम्मामिच्छादिट्ठिस्स सत्तरसबंधगस्स। 'पण चउसु' त्ति असंजयसम्मदिट्ठि-संजयासंजय-पमत्ता अप्पमत्तेसु एएसु चउसु पंच पंच संतट्ठाणाणि, तं०—२८। २४। २३। २२। २१। एएसिं भावणा जहा सत्तरस-तेरस-नवबंधगाणं। 'नियट्टिए तिण्णि' त्ति अपुव्वकरणम्मि तिण्णि संतट्ठाणाणि, तं—२८। २४। २१। अट्ठावीस-चउवीसा उवसमसम्मदिट्ठिं पडुच्च उवसमसेढीए लब्भइ। एक्कवीसा दोसु वि सेढीसु, खइगो खाइयसम्मदिट्ठी उवसमसेढीए लब्भइ त्ति काउं। 'एक्कारस बायरम्मि' त्ति बायरो-अनियट्टी तम्मि एक्कारस संतट्ठाणाणि, तं जहा—२८। २४। २१। १३। १२। ११। ५। ४। ३। २। १। अट्ठावीसा चउवीसा य उवसमसेढीए। एक्कवीसा दोसु वि सेढीसु, खवगसेढीए जाव अट्ठ कसाया न खीणा ताव लब्भइ। खीणेसु तेरस भवंति। तओ नपुंसगवेए खीणे बारस। तओ इत्थिवेए खीणे एक्कारस। छण्णोकसाए खीणे पंच। पुरिसवेए खीणे चत्तारि। कोहसंजलणाए खीणाए तिण्णि माणसंजलणाए खीणाए दो। मायासंजलणाए खीणाए एक्कं। कहं? भण्णइ—मायासंजलणाए खविआए तओ अंतोमुहुत्तेण लोहस्स किट्टीओ काउण पच्छा वियाएसि त्ति काउण। 'सुहुमे चउ' त्ति सुहुमसंपराइयम्मि चत्तारि संतट्ठाणाणि, तं०—२८। २४। २१। १। अट्ठावीस-चउवीस-एक्कवीसाओ उवसमसेढीए उवसम-खाइगसम्मदिट्ठीणं। एक्कं खवगसेढीए

१ पणगं ति मु० म० ॥ २ तं जहा—२८। मु० म० ॥ ३ मरिट्ठि ते ॥ ४-५ ए खविआए मु० ॥ ६ चत्तारि त्ति व मु० ॥

भवइ लोभसंजलणाए । ' तिण्णि उवसंते 'त्ति उवसंतकसायम्मि तिण्णि संतट्ठाणाणि, तं जहा—२८ । २४ । २१ । उवसम सम्मद्दिट्ठि-सासणसम्मद्दिट्ठिणो पडुच्च । सामण्णेणं संताणि भणियाणि । इयाणिं कइ बंधतो वेयए कइ कइ वा पगइसंतट्ठाणाणि [१] मिच्छद्दिट्ठिस्स बावीसं बंधमाणस्स सत्ताइ-अट्ठंतेसु उदएसु तिण्णि तिण्णि संतट्ठाणाणि । सत्तोदए एक्कं । जत्थ जत्थ अणंताणुबंधिणा विणा उदओ तत्थ तत्थ एक्कं संतं अट्ठावीसा, कारणं पुव्वुत्तं । सव्वे संता दस । सासणस्स जहा एक्कवीसबंधगस्स तहा । सव्वाणि तिण्णि संताणि । सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स जहा सत्तरसबंधगस्स सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स भावणा तहा । सव्वाणि नव संताणि । असंजयसम्मद्दिट्ठि-संजयासंजय पमत्त अप्पमत्तसंजयाणं पत्तेयं पत्तेयं सत्तरस सत्तरस संताणि । जहा सत्तरसबंधगस्स असंजयसम्मद्दिट्ठिस्स भावणा तहा भाणियव्वा । अपुव्वकरणस्स तिसु वि उदयट्ठाणेसु पत्तेयं पत्तेयं तिण्णि तिण्णि संतट्ठाणाणि । सव्वाणि नव । अणियट्टिस्स दुगोदए पंचविहबंधगस्स छ संतट्ठाणाणि, तं०—२८ । २४ । २१ । १३ । १२ । ११ । चउविहबंधगस्स एक्कोदए छ संतट्ठाणाणि, तं०—२८ । २४ । २१ । ११ । ५ । ४ । एएसिं भावणा जहा चउविहबंधे । सव्वाणि वि छ संतट्ठाणाणि । तिविह-दुविह-एगविहबंधगाण पत्तेयं पत्तेयं पंच पंच संतट्ठाणाणि । जहा हेट्ठा ओघबंधे भणिय तहा चेव । सव्वसमुदओ सत्तावीसं । ' सुहुमे चउ तिण्णि उवसंते ' त्ति अबंधगस्स सुहुमसंपरागस्स एक्कोदए वट्टमाणस्स ताणि चेव चत्तारि संतट्ठाणाणि । उवसंतकसायस्स अबंधगस्स अवेयगस्स तिण्णि संतट्ठाणाणि—२८ । २४ । २१ । एवं मोहणिज्जस्स संवेहो सम्मत्तो ॥ ४७ ॥

१ 'कं' । ठं अत्थ पां० ।

इयाणिं गुणट्ठाणेसु नामस्स संवेहो भण्णइ—

छ न्नव छक्कं तिग सत्त दुग दुग तिग दुग ति अट्ठ चउ ।
दुग छक्क चऊ दुग पण, चउ चउ दुग चउ पणेग चऊ ॥ ४८ ॥
एगेगमट्ठ एगेगमट्ठ छउमत्थ-केवलिजिणाणं । एग चऊ एग चऊ, अट्ठ चउ दु छक्कमुदयंसा ॥४९॥

छण्णव छ त्ति गाहा । [एगेगमट्ठ॰ गाहा] मिच्छद्दिट्ठिस्स सामण्णेण छब्बंधट्ठाणाणि, तं०—२३ । २५ । २६ । २८ । २९ । ३० । तेवीसा एगिंदियअपज्जत्तगपाउग्गा पढविगप्पं [बंधमाणस्स] तहा हेट्ठओ भणिय तहा णेय । पणुवीसं जहा एगिंदियपज्जत्तग-बे०-ते०-च०-पंचिंदियतिरिय-मणुयअपज्जत्तगाणं पाउग्ग बंधमाणस्स तहा णेय । छव्वीसा जहा एगिं दियपज्जत्तगपाउग्गं आयावुज्जोयएगयरसहियं बंधमाणस्स । अट्ठावीसा देव-नेरइयगपाओग्ग बंधमाणस्स । एए सव्वे सविगप्पा तहा णेय । एगूणतीसा तित्थगरसहियं देवगइपाओग्गं बंधं मोत्तूण सेसा सव्वे, तित्थगरबंधो सम्मद्दिट्ठिस्स चेव, मिच्छद्दिट्ठिस्स नत्थि । सेसा सविगप्पा ९२४० । तीसा वि तित्थगरसहियं मणुयगइपाओग्गं बंधं, आहारगसहियं देवगइपाओग्गं बंधं मोत्तूण; जम्हा एयकम्मं सम्मत्त-संजमपच्चइआओ नत्थि । सेसा सविगप्पा सव्वे ४६४२ ॥

---

१ छ नव छक्कं चे२ ॥ २ पण पण च ठे१ । पणगेग च चे२ ॥ ३ एग चउ एगो चउ, अ चे१ । एगो चउ ए० चे२ ॥ ४ चसहि छ । चे१ प्रतिषु पतितम् ॥ ५ छवे विग सं । चे१ प्रतिः पतितम् ॥

'चउ पणुवीसा सोलस नव बायाला सया य बाणउई'। बत्तीसुत्तरछायालसया मिच्छस्स बंधविही[1] ॥ ८ ॥

मिच्छद्दिट्ठिस्स नव उदयट्ठाणाणि—२१ । २४ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । एत्थ एक्कतीसाई सव्वो वयविगप्पा आहारगसंजय७ वेउव्वियसंजय२ केवलि८ उदए मोत्तूण मिच्छद्दिट्ठिस्स सेसा सव्वे घेत्तव्वा जहा हेट्ठओ । जाया मिच्छद्दिट्ठिस्स सम्मुदया ७७७२ ॥

इयाणिं मिच्छद्दिट्ठिस्स छ संतठाणाणि, तं०—९२ । ८९ । ८८ । ८६ । ८० । ७८ । तत्थ बाणउई चउगइगमिच्छद्दिट्ठिगे पडुच । एगूणनउई वेयगसम्मद्दिट्ठी तित्थगरनामबंधगो मिच्छत्तं गओ नरएसु उववेउकामो य पडुच; नेरइएसु उववण्णस्स अंतोमुहुत्त लब्भइ । अन्नेसु नत्थि । अट्ठासीई चउगइगे मिच्छद्दिट्ठिणो पडुच । छासीई असीई य एगिंदिएसु देवगइ निरय मणुयाउगे य उव्वलिए लब्भइ । तओ उव्वट्टियाणं विगलिंदिएसु उववण्णाणं पि लब्भंति । पंचेंदियतिरिय मणुएसु वि उववण्णाणं जाव सव्वपज्जत्तीभावं न गच्छंति ताव लब्भंति । पज्जत्तिभावे गए वि अंतोमुहुत्तं जाव निरय-देवगइपाउग्गं न बंधंति ताव लब्भंति । अट्ठहत्तरी तेउ-वाउजीवेहिं मणुयगइउव्वलिए पडुच लब्भइ । तओ उव्वट्टियाणं विगलिंदिय-पंचिंदियतिरिक्खेसु उववण्णाणं अंतोमुहुत्तकालं जाव मणुयगई न बंधइ ताव लब्भति ।

१ चूर्णिकृतास्त्वमां प्रगाथात्वेन भेदिविवक्षापीनं गाथा मनोविधस्मादिसु च पञ्चस्वादेषु स्वात्सरूपं मत्तवद्रव्यानिस्वभावंमिवमत्तमां प्यगाथा—चउ "इति श्रीमल्लयगिरीयटीकायामवमानेन प्रविक्षितापास्त्वमां प्यगाथात्वेवेति ॥ २ उया । य भा १ ने१ ॥ ३ "सप्पसमुत्तो ११११६ भविप्पणी ॥ ४ वण्णिउका" भा २ ॥ ५ ६ । तिरि° सं। भा १ प्रतिसु नास्ति ॥

एवं सामन्नेण बंधोदय-संताणि भणियाणि । इयाणि कम्म बंधंतो वेयए कम्म वा से संताइं ? ति एय भन्नइ—मिच्छदिट्ठिस्स तेवीसं बंधमाणस्स नव वि उदयट्ठाणाणि सविगप्पाणि संभवंति, नवरि २१ । २५ । २७ । २८ । २९ । ३० उदएसु से देव-नेरइये पडुच भंगा ते सवे न संभवंति । कहं ? एगिंदियअपज्जत्तगपाओग्गं देवा न बंधंति, एगिंदियपाओग्गं च नेरइया न बंधंति त्ति काउं । पंच संतट्ठाणाणि—९२ । ८८ । ८६ । ८० । ७८ । एत्थ मूलिल्लेसु चउसु उदयट्ठाणेसु पंच पंच संतट्ठाणाणि । पणुवीस-छवीसोदयेसु तेउ-वाउकाइए पडुच अट्ठसयरी लब्भइ; छवीसे विगलिंदिय-पंचिंदियतिरिक्खे वा तेउ-वाउओ भवंतरागए पडुच । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ एएसु पंचसु चत्तारि चत्तारि संतट्ठाणाणि अट्ठसयरिवज्जाणि । कहं ? पज्जत्तगभावे तेउ-वाउजीवे मोत्तूण सेसेसु न भवति त्ति सत्तावीसोदए पडुच तेवीसबंधगस्स संतट्ठाणाणि चत्तालीसं । एवं पणुवीस-छवीसबंधगाणं पि । नवरि देवो वि अप्पणो सत्तावीसाए पज्जत्तगो एगिंदियपज्जत्तगपाओग्गं बंधइ । तत्थ बायर-पज्जत्तय-पत्तेय-थिरा अथिरसुभा असुभ-दूभग अणाएज्ज-जसा अजसेहिं अट्ठ भंगा लब्भंति, सेसा न संभवंति कम्हा ? सुहुम-साहारण-अपज्जत्तगेसु देवो न उववज्जइ त्ति । संतकम्मा तहेव; सवे चत्तालीसं । छवीसे बंधे सव्वबंधविगप्पे देवो बंधइ, संतकम्मा तहेव, सवे ४० । अट्ठावीसबंधगस्स मिच्छदिट्ठिस्स दोण्णि उदया—३० । ३१ । तीसा पंचिंदियतिरिय-मणुए पडुच, एक्कतीसा पंचिंदियतिरिए पडुच । अट्ठावीसबंधगस्स चत्तारि संतट्ठाणाणि—९२ । ८९ । ८८ । ८६ । तत्थ तीसोदए चत्तारि वि । कहं ? एगूणणउती तित्थगरनामबंधगो वेयगसम्मद्दिट्ठी मिच्छत्तं पडिवण्णो निरयाभिमुहो निरयपाउग्गं अट्ठावीसं बंधइ, तं पडुच ।

१ ई । एवं वं । खं१ प्रती पत्रमत्र ॥ २ न संभव खं२ । खं१ प्रती नास्ति ॥ ३ णवीस वं वं खं१ ॥

सेसाणि संताणि तिरिय मणुयाण सामण्णाणि । एक्कतीसोदए एगूणनउतीवज्जाणि तिण्णि संताणि । कहं? तित्थगरसंतं तिरिएसु नत्थि त्ति । सव्वाणि सत्त । एगूणतीसं विगलिंदिय तिरिय-मणुयपाउग्गं बंधमाणस्स नव वि उदयट्ठाणाणि, छ संतट्ठाणाणि जहा छव्वीसबंधगस्स तहा भाणियव्वं । नवरि नेरइगस्स मणुयगइपाउग्गं एगूणतीसं बंधमाणस्स अप्पप्पणएसु पंचसु उदयट्ठाणेसु एगूणनउती लब्भइ, अण्णत्थ न । देव-नेरइगोदएसु ९२ । ८८ । मणुओदएसु ९२ । ८८ । ८६ । ८० । विगलिंदिय-पंचिंदिओदएसु अप्पप्पणो मूलिल्लेसु दुसुं पंच पंच, उवरिल्लेसु अट्ठचरिमाणि चत्तारि । एगिंदिओदएसु य अप्पप्पणो मूलिल्लेसु चउसु पंच, सत्तावीसोदए अट्ठचरिमाणि चत्तारि । सामण्णेणं एक्कवीसाइसु उदएसु संताणि ६ । ५ । ६ । ५ । ५ । ५ । ५ । ४ । ४ । सव्वाणि वि मिच्छद्दिट्ठिस्स संताणि पण्णयाला । तीसं विगलिंदिय-पंचिंदियतिरियपाउग्गं बंधमाणस्स एवं चेव, नवरि एगूणणउती नत्थि । कहं? एगूणनउइसंतकम्मिओ तिरियगइपाओग्गं न बंधइ त्ति । सेसाणं भावणा जहा एगूणतीसबंधे । सामण्णेणं तीसबंधगस्स उदएसु अहक्कमेण संताणि ५ । ५ । ५ । ५ । ४ । ४ । ४ । ४ । ४ । सव्वाणि चत्तालीसं ।

एवं मिच्छद्दिट्ठिस्स बंधोदय-संताणं संवेहो भणिओ । इयाणिं सासणस्स बंधोदय-संताणि भण्णंति—' तिग सत्तग दुग' त्ति तत्थ तिण्णि बंधट्ठाणाणि—२८ । २९ । ३० । अट्ठावीसा पंचिंदियतिरिय-मणुयाणं देवगइपाउग्गं बंधमाणाणं । एत्थ बंधविगप्पा अट्ठ थिरा-ऽथिर-सुभा-ऽसुभ-जसा-ऽजसेहिं कायव्वा । एगूणतीसा एगिंदिय विगलिंदिय-पंचिंदियतिरिय-मणुय-देव

१ सु उग पं° चा ॥

नेरइयाणं मासगाण पंचिंदियतिरिय-मणुयपाउग्गं पगूणतीसं बंधमाणाण। एत्थ भयविगप्पाण ६४०। कहं ? छस्संठाण छस्संघयणाणि पंच संठाण-संघयणाणि पसत्था-ऽपसत्थविहायगइ थिरा२ सुभा२ सुभग२ सुस्सर२ आएज्ज२ जसा-ऽजसेहिं कायव्वा ३२०० तिरियगइपाउग्गेयं। एयाणि चेव मणुयगइपाउग्गेण वि। बिगुणिए सव्वसंखा भवइ ६४००। तीसा नेसिं चेव एगिंदियाईण पंचिंदियतिरियपाओग्गं उज्जोयसहियं तीसं बंधमाणाणं। एत्थ भयविगप्पा ३२००। कहं ? विगलिंदियपाउग्गं सासणो न बंधइ त्ति।

[1]अट्ठ य सय चोवट्ठी, बत्तीस सया य सासणे भेया। अट्ठावीसाईसु सव्वाणऽट्ठहिगछन्नउई ११ ८ ॥ ० ॥

सासणस्स सत्त उदयट्ठाणाणि, तं०—२१। २४। २५। २६। २९। ३०। ३१। तत्थ एक्कवीसा एगिंदिय-विगलिंदिय-पंचिंदियतिरिय-मणुय-देवे पडुच्च। नेरइएसु सासणो न उववज्जइ त्ति न गहिओ। एत्थ विगप्पा एगिंदियबायरप ज्जत्तगेण जे भवंति ते य दोण्णि। सुहुमेसु अपज्जत्तएसु य सासणो न उववज्जइ त्ति तेण न गहिया। विगलिंदिय-पंचिंदिय तिरिय-मणुएसु य पज्जत्तगेण जे विगप्पा ते सव्वे संभवंति। ते य एगिंदिय-विगलाणं पत्तेयं पत्तेयं दो दो, सेसाणं अट्ठऽट्ठ भेया। देवाण वि अट्ठ। सव्वे वि बत्तीसं। चउवीसोदए एगिंदिएसु उववज्जमाणस्स एत्थ विगप्पा बायर-पज्जत्त-पत्तेग जसा ऽजसेहिं दोण्णि, सेसा जत न संभवंति, सासणो साहारण-सुहुम-तेउ-वाउसु न उववज्जइ त्ति। पणुवीसोदओ सासणस्स देवेसु

[1] अट्ठसयं चो थेर। चूर्णिकृन्निर्दिष्टगाथानुसारेणेयं गाथा " उपलब्धादर्शेषु नास्ति ततोऽत्र सम्पादिता—अट्ठ य " इति श्रीमलयगिरिसूरिकृतटीकानुसारेण संपादिताऽस्माभिः। तथा चेयं गाथा चे१ प्रतौ नास्ति ॥

उवसम्मसेणस्स। एत्थ भंगा अट्ठ। छव्वीसोदओ विगलिंदिय-पंचिंदियतिरिय मणुएसु उवसम्मसेणस्स आईए लब्भइ सासणो। एत्थ विगप्पा अपज्जत्तमोदयं मोत्तूण सेसा सव्वे संभवंति। सव्वसंखओ ५८२। सत्तावीस अट्ठावीसोदया न संभवंति। कम्हा? अंतरद्धुवे गए एए दो वि उदया लब्भंति, सासणभावो आईए छआवलियमेत्ते किंचूणे लब्भइ त्ति। एगूणतीसोदओ देव-नेरइयस्स सट्ठाणमयाणं सम्मत्ताओ परिवडमाणाणं। एत्थ नव भंगा—नेरइयस्स एक्को, देवस्स अट्ठ, सव्वे वि नव। तीसोदओ तिरिय-मणुयाणं पढमसम्मत्तं उप्पाएंतु परिवडमाणाणं, देवस्स वा उत्तरवेउव्वियस्स। एत्थ विगप्पा तिरिय मणुयाणं पत्तेयं पत्तेयं ११५२, देवस्स अट्ठ। सव्वाणि २३१२। एक्कतीसोदओ पंचिंदियतिरियाणं सम्मत्ताओ परिवडमाणाणं एत्थ विगप्पा पंचिंदियतिरियाणं जे ते सव्वे संभवंति ११५२।

[1]बत्तीस दोण्णि अट्ठ य, बासीयसया य पंच नव उदया। बारऽहिया तेवीसं, बावण्णेक्कारससया य ॥१०॥ सव्वसमुदओ ४०९७ ॥

सासणस्स दो संतट्ठाणाणि—९२। ८८। कहं? आहारगसरीरनाम बंधिउ उवसमसेढीओ परिवडमाणो सासणभाव कोई गच्छइ त्ति तस्स बाणउई। अट्ठासीती चउगइयाणं सम्मत्ताओ परिवडमाणाणं लब्भइ। अण्णे भणंति—सासणस्स एक्कं संतं ति अट्ठासीई चेव। जे एवं भणंति ते उवसमसेढीओ परिवडमाणं अपाणता मण्णति।

सामण्णेण बंधुदय-संताणि भणियाणि। इदाणिं संवेहो—अट्ठावीसबंधगस्स सासणस्स दो उदया—तीसा य एक्कतीसा।

---

१ क्षिपिते ॥ २ चूर्णिकारेणान्तर्भाष्यगाथातेयमुद्धिपिताऽपीयं गाथा " उवसामग एग सत्तण्णवाम निरयपयर्भंमिसमन्तर्भाष्यगाथा—पतीत " इत्यत्रार्थेमलयगिरीपटीकायामप्रमाणसमुत्पत्तिआऽन्तर्भाष्यगाथात्वमि ॥

प। भवजगणमछे सासणो देवगइपाउग्गं न बंधइ त्ति सेसोदया न संभवंति। तीसोदए दो संताणि—९२। ८८। मणुए पडुच्च। तिरिए पडुच्च अट्ठासीती चेव। एक्कतीसोदए एक्कं संतं अट्ठासीई, उवसमसेढी तिरिक्खस्स नत्थि त्ति काउं। एगू-णतीसं तिरिय-मणुयपाओग्गं बंधमाणस्स सत्त वि उदयट्ठाणाणि। एगिंदिय-विगलिंदिय-पंचिंदियतिरिय-मणुय-देव-नेरइयाणं अप्पप्पणो भणिओदएसु एक्कं चेव संतं अट्ठासीती, नवरि मणुस्सस्स तीसोदए दो संताणि। एवं तीसबंधगस्स वि भावेयव्वं। एक्कतीसोदयाइसु सामण्णेण संताणि १। १। १। १। १। २। १। सव्वाणि अट्ठ।

इयाणिं सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स बंधाइट्ठाणा भण्णंति—' दुग तिग दुगं 'ति। तत्थ दोण्णि बंधट्ठाणाणि—२८। २९। अट्ठावीसा तिरिय-मणुयाणं सम्मामिच्छद्दिट्ठीणं देवगइपाउग्गं बंधमाणाणं। सेसगइपाउग्गाणि मणुय तिरिया सम्मामिच्छद्दि-ट्ठिणो न बंधति त्ति न संभवंति। एत्थ बंधविगप्पा अट्ठ। एगूणतीसा देव-नेरइयाणं मणुयगइपाउग्गं बंधमाणाण, एत्थ वि ते चेव थिरा थिर-सुभा-सुभ-जसा जसेहिं अट्ठ भंगा, सेसाणि दुगलाणि पसत्थाणि त्ति।

सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स तिण्णि उदयट्ठाणाणि—२९। ३०। ३१। एत्थ एगूणतीसा देव-नेरइये पडुच्च; नव भंगा। तीसा पंचिंदियतिरिय मणुये पडुच्च सविभप्पा संभवंति। एक्कतीसा पंचिन्दियतिरियाणं सविभप्पा संभवंति। सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स सव्वोदयविगप्पाणं ३४६५।

दो संतट्ठाणाणि—९२। ८८।

१ मर्षति। नोपलभ्यते। मिन्नुरस्थे मुद्रितः ११ ४॥ २ मर्षति। क्रलीष भवितु। पञ्चमिन्नुरस्थे मिक्का ११५१॥

इयाणिं 'छ बंधंतो वेयई 'त्ति—सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स अट्ठावीसबंधगस्स दो उदयट्ठाणाणि ३० । ३१ । एक्केक्कम्मि दो दो संताणि । एगूणतीसबंधगस्स एवं उदयट्ठाणं एगूणतीसा । तम्मि दो वि संतट्ठाणाणि । सामण्णेणं एगूणतीसादिसु वि उदएसु संताणि जहक्कमेण २ । २ । २ । सव्वाणि छ ।

सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स संवाईवि भणियाणि । इयाणिं असंजयसम्मद्दिट्ठिस्स भण्णइ—' तिगञ्छ पढ 'त्ति । तस्स बंधट्ठाणाणि तिण्णि, तं०—२८ । २९ । ३० । अट्ठावीसा जहा सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स तहेव । एगूणतीसा वि मणुयमरपाओग्गा तहेव । तित्थगरसहिया देवगइपाउग्गा एगूणतीसा मणुयाणं भवइ । विगप्पा ते चेव अट्ठ । तिरिएसु तित्थगरबंधो नत्थि त्ति न संभवइ । तीसा तित्थगरसहिया मणुयगइपाउग्गं बंधमाणाणं देव-नेरइयाणं लब्भइ । विगप्पा ते चेव अट्ठ ।

अट्ठ उदयट्ठाणाणि—२१ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । तत्थ एक्कवीसा नेरइय-तिरिय-मणुय-देवे पडुच । पुव्वाउओ खइग-वेयगसम्मद्दिट्ठी सव्वहिं उववज्जइ त्ति नेरइय तिरिएसु वि लब्भइ । एत्थ विगप्पा अपज्जत्तोदयविसप्पविवज्जिया सव्वे संभवंति । अपज्जत्तगेसु न उववज्जइ त्ति अपज्जत्तोदया न संभवंति । पणुवीस-सत्तावीसोदया देव-नेरइए वेउव्वियतिरिय-मणुए य पडुच, नेरइगो खइग-वेयगसम्मद्दिट्ठी देवो तिविहसम्मद्दिट्ठी वि । उदयविगप्पा सव्वे वि । छव्वीसोदओ तिरिय-मणुयाण । तिरियाणं वेयग-खइगसम्मद्दिट्ठीणं बावीससंतकम्मिगं पडुच । एवं मणुयाण वि । उवसमसम्मद्दिट्ठी मणुएसु न उववज्जइ त्ति न गहिओ । अट्ठावीस-एगूणतीसा नेरइगाईणं सव्वेसिं पि । भावना पूर्ववत् । तीसा तिरिय-मणुय-देवाणं ।

---

१ इ छ' त्ति प्रा० ॥ २ बन्धायाम्नियोनिबम्ने विरुद्धा नास्ति ॥ ३ बन्धाम्यानी मता ॥ ४ °णं खइग-वेयगस्स प्रा० ॥ ५ °ओ । उदय

एक्कवीसा तिरियाणं । उदयविगप्पा सव्वेसिं पि सव्वे संभवंति ।

चत्तारि संतट्ठाणाणि—९३ । ९२ । ८९ । ८८ । तत्थ तेणउदी अप्पमत्तो अपुव्वो वा तित्थगराऽऽहारगसंजुत्तं एक्कतीसं बंधिउं पच्छा असंजओ जाओ देवो वा जाओ त पडुच्च । बाणउदी आहारगं बंधिउं मिच्छत्तं गतूण चउगइगेसु उववण्णो तत्थ तत्थ सम्मत्त पडिवज्जमाणस्स; देव-मणुएसु मिच्छत्तं अपडिवज्जमाणस्स वि लब्भइ । एगूणनउई देव-नेरइय-मणुयाणं असंजयसम्मदिट्ठीणं, ते तिण्णि वि तित्थयरनामं बंधंति त्ति काउं । तिरिएसु तित्थयरसंतकम्मिओ न उववज्जइ त्ति तिरिओ न गहिओ । अट्ठासीती चउगइगाणं सम्मदिट्ठीण लब्भइ ।

इयाणिं 'पण बंधगो वेएइ' त्ति—असंजयसम्मदिट्ठिस्स अट्ठावीसबंधमस्स अट्ठ उदयट्ठाणाणि, तं—२१ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । तिरिय-मणुए पडुच्च । २५ । २७ उदया वेउव्वियं चेव पडुच्च, वेयग-खइगसम्मदिट्ठिणो पडुच्च । एक्केक्कम्मि उदए दो दो संताणि—९२ । ८८ । एगूणतीसं बंधमाणस्स सामण्णेण सत्त उदयट्ठाणाणि एक्कतीसवज्जाणि । कहं ? एगूणतीसबंधो दुविहो—मणुयगइपाउग्गो देवगइपाउग्गो य । तत्थ देवगइपाउग्ग तित्थगरसहियं एगूणतीसं बंधमाणस्स मणुयस्स सत्त वि उदया संभवंति । एक्केक्कम्मि दो दो संताणि—९३ । ८९ । भावना पूर्ववत् । एगूणतीसं मणुयगइपाउग्गं बंधमाणाणं देव-नेरइयाणं पंच उदया, तं जहा—२१।२५।२७।२८।२९। एक्केक्कम्मि दो दो संताणि, तं—९२। ८८ । नवरं देवस्स—उज्जोयवेयगस्स तीसोदयाहियो वि छ; तम्मि वि दो संताणि । तीसा तित्थगरसहियं मणुयगइपाउग्गं

टिप्पणा ५०९। मट्ट बं१ । १ च । पाढे बं१ । च वेउव्वियपवेय बं२ । २ धा छ । बं१ ॥

तीसं बंधमाणाणं देव-नेरइयाणं ताणि चेव अणंतरुत्ताणि एव छ च उदयट्ठाणाणि। तेसु एक्केक्कम्मि उदये दो दो संताणि, तं०—९३। ८९। देवस्स नेरइयस्स एगूणणउती चेव तित्थगरा-ऽऽहारसंतकम्मिगो नेरइगेसु न उववज्जइ त्ति। सामण्णेणं मणोरयसु संताणि—४। ४। ४। ४। ४। ४। ४। २। सव्वाणि तीसं।

इयाणिं देसविरयस्स बंधट्ठाणाई भण्णंति—'दुग छक्क चउ 'त्ति दो बंधा, छ उदया, चत्तारि संताणि। तत्थ बंधट्ठाणाणि दोण्णि, तं०—२८। २९। तत्थ अट्ठावीसा मणुस्सस्स वा कम्मभूमितिरियस्स वा वण्णविभागेतिरियस्स वा। देवगइपाओग्गं अट्ठावीसं बंधमाणस्स एत्थ अट्ठ बंधविगप्पा पूर्ववत्। एगूणतीसा तित्थगरसहियं देवगइपाओग्गं बंधमाणस्स मणुस्सस्स। तिरिक्खेसु न संभवइ तित्थगरनामं। तत्थ वि अट्ठ भंगा॥

छ उदयट्ठाणाणि, तं०—२५। २७। २८। २९। ३०। ३१। मूलिल्ला चत्तारि वि वेउव्वियस्स; एक्केक्कम्मि उदए एक्केक्को भंगो, सव्व पसत्थ त्ति काउं। तीसा तिरिय-मणुयाण। एक्कतीसा तिरियाणं। तिरिय मणुयाण देसविरयाणं केसिंचि वेउव्वियलद्धी संभवइ। एत्थ तीसोदए तिरिय मणुओदयविगप्पाण एक्केक्कस्स चोयालीसं सयं। कहं? छ संठाण-संघयणा सरदुग विहायदुगेण गुणिया चोयालं सयं भवइ। दूभग अणाएज्ज अजसकित्तीओ गुणपच्चयओ न उदेंति तम्हा ताणि दुग ताणि ण संभवंति। एक्कतीसे तिरियाणं एत्तिया चेव विगप्पा।

चत्तारि संतट्ठाणाणि, तं०—९३। ९२। ८९। ८८। तत्थ तेणउई तित्थगरा ऽऽहारगदुग बंधमेत्ता ऽणुवेण वा पढं

१ का भण्णं पा१ पा२॥ २ गस्स मर्त्त्यद्वीपप्रीपवहिर्वर्तिन इति। देव मं२॥ ३ मसेमाऽसु मं२। पा१ प्रति॰ नास्ति॥

पुणो देसविरओ जाओ सं पडुच्च। सेसाणं मणुया जहा अपुव्वसंजयसम्मादिट्ठिस्स।

सामण्णेणं चउरस-संताणि भणियाणि। इयाणिं संवेहो—मणुसस्स अट्ठावीसबंधगस्स पंच उदया एक्कवीसवज्जा। तत्थ एक्केक्कम्मि दो दो संताणि—९२। ८८। एवं तिरिक्खस्स वि, नवरि एक्कवीसोदए वि दोण्णि—९२। ८८। एगूणतीसबंधगस्स मणुसस्स पंच उदया—२५। २७। २८। २९। ३०। एत्थ एक्केक्कम्मि दो दो संताणि—९३। ८९। देसविरयस्स सव्वोदएसु अट्ठ भंगा ४। ४। ४। ४। ४। २। सव्वे बावीसं।

इयाणिं पमत्तसंजयस्स भण्णइ भण्णंति—' दुग पण चउ 'त्ति पमत्तसंजयस्स दोण्णि बंधट्ठाणाणि, पंच उदया, चत्तारि संताणि। तत्थ बंधट्ठाणाणि २८। २९। जहा मणुसस्स देसविरयस्स तहा भाणियव्वं।

तत्थ पंच उदया—२५। २७। २८। २९। ३०। सव्वाणि वि आहारगसंजयस्स विउव्वियस्स वा संभवंति। तीसा समावत्थसंजयस्स वि। विउव्वा ऽऽहारगाणं एक्केक्के भंगो, नवरि अट्ठावीस-एगूणतीसोदएसु दो दो भंगा। तीसोदए जहा देसविरयस्स १४४। सव्वे वि १५८।

चत्तारि संताणि ताणि चेव जाणि देसविरयस्स।

इयाणिं संवेहो—अट्ठावीसबंधयस्स पंच वि उदया। एक्केक्कम्मि दो दो संताणि—९२। ८८। आहारगसंजयस्स ताव उदं चय। कह? आहारगसंतकम्मिओ आहारगसरीरं उप्पाएउ ति काउ। पमत्तो तित्थगरसंतकम्मिओ अट्ठावीसं न बंधइ

१ पा० दं०—२९। भ०१॥

पएक्कम्मि दो दो संताणि—९२। ८९।
पि; तम न तित्थगरसंताणि गहियाणि। एगूणतीसपंधगस्स वि पंच वि उदया। एक्केक्कम्मि दो दो संताणि—९२। ८९।
आहारगसंजयस्स किणउई। कहं? भण्णइ—आहारगसंजओ एगूणतीसपंधगो नियमा आहारग तित्थगरसंतकम्मिगो त्ति।
वेउव्वियस्स वि दो वि। पमत्तसंजयस्स अट्ठकमेण संताणि—४।४।४।४।४। सव्वे वि वीस।

इयाणिं अप्पमत्तस्स भण्णइ भण्णंति—' चउ दुग चउ 'त्ति अप्पमत्तस्स चत्तारि बंधट्ठाणाणि, दो उदया, चत्तारि संताणि। अट्ठा
तस्स बंधट्ठाणाणि, तं०—२८।२९।३०।३१। अट्ठावीसा एगूणतीसा य जहा पमत्तसंजयस्स देवगइपाओग्गं अट्ठा
वीसं बंधमाणस्स। आहारगदुगसहिया तीसा भवइ। एक्को भंगो। एक्कतीसा तित्थगराऽऽहारगदुगेहिं' य सहिय देवगइ
पाओग्गं बंधमाणस्स। चउसु वि बंधेसु विगप्पो नत्थि। कहं? अथिर असुभ-अजसकित्तीओ पमत्तम्मि वोच्छिण्णाओ त्ति।
दो उदयट्ठाणाणि—एगूणतीसा तीसा य। एत्थ एगूणतीसा पमत्तसंजओ आहारगं वेउव्वियं वा उप्पाएउ तस्स अंते
अप्पमत्तभावं गच्छइ त्ति। दो भंगा। एवं तीसाए वि, तीसा समाचरयस्से त्ति। समासतीसोदए विगप्पाणं १४४। सव्वे
वि १४८।

चत्तारि संताणि जहा पमत्तस्स।

इयाणिं संवेहो—अट्ठावीसबंधगस्स दोसु वि उदएसु एक्कं संतं अट्ठासीती। एगूणतीसबंधगस्स वि दोसु वि एक्कं संत
एगूणनउई। तीसबंधगस्स दोसु वि एक्कं संतं बाणउती। एक्कतीसबंधगस्स दोसु वि एक्कं संत तेणउई। तित्थगरं आहारगं वा

१ हिं सहि पा॰ २ स्स। सभा पं॥

नस्स संतकम्मं सो नियमा व बंधइ त्ति । एक्कम्मि बंधे एक्केक्कं संतं । एक्केक्के उदए चत्तारि चत्तारि संताणि । सव्वाणि वि अट्ठ ।

इदाणिं अपुव्वकरणस्स बंधाई भण्णंति—'चदुभेग चउ' त्ति अपुव्वकरणस्स पंच बंधट्ठाणाणि, एक्को उदओ, चत्तारि संताणि । तत्थ बंधट्ठाणाणि—२८ । २९ । ३० । ३१ । १ । मूलिल्ला चत्तारि वि जहा अप्पमत्तस्स । एक्के—देवगइपाओग्गे बंधे वोच्छिण्णे जसकित्ती एक्का बज्झति ।

एगो उदओ तीसा । विमप्पा चउरिसमसंघयणं छ संठाणा सरदुग-समइदुगेहिं चउवीसा । अण्णे भणंति—मूलिल्ला तिण्णि संघयणा छ संठाणा सरदुग-समइदुगेहिं गुणिया बावत्तरी, तिसंघयणो उवसमसेढिं पडिवज्जइ त्ति । एवं अणियट्टि-सुहुमसंपराय-उवसंतकसायाण । अपुव्वस्स संता ते चेव जे अप्पमत्तस्स ।

एयाणिं संवेहो—२८ । २९ । ३० । ३१ बंधगाण तीसोदए संतमाणा जहा अप्पमत्तसंजयस्स तहा चेव । एगविहबंधगस्स एक्को उदओ तीसा, संताणि चत्तारि वि । कह ? अट्ठावीस-एगूणतीस-तीस-एक्कतीसबंधगा वि बंधवोच्छेयं काउं एक्कविहं बंधंति अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जइमे भागे सेसे त्ति, तेण चत्तारि वि संताणि संभवंति ॥ ४८ ॥

इदाणिं अणियट्टिस्स बंधादी भण्णंति—'एगेगमट्ठ' त्ति अणियट्टिस्स एक्को बंधो, एक्को उदओ, अट्ठ संताणि । तत्थ बंधट्ठाणं जसकित्ती । उदओ तीसा । संताणि, तं०—९३ । ९२ । ८९ । ८८ । ८० । ७९ । ७६ । ७५ । मूलिल्ला चत्तारि

१ एक्कओ चा० ॥ २ संतट्ठाणाणि चा० ॥ ३ पणिण्णो चा०२ ॥ ४ बज्झति त्ति । चा०२ ॥

पिं खवगसेढीए ताव जाव तेरस नामाई खवीयाइ उवसमसेढीए वा । उवरिमाई चत्तारि वि मइकमेणं तेरिहिो तेरसनामे खीणे खवगसेढीए भवंति । इयाणि संवेहो, भेदाभावाओ न भवइ ।

सुहुमरागस्स भेयाई भण्णंति—'एगेगमट्ठ' त्ति सुहुमस्स एको बंधो, एको उदओ, अट्ठ संताणि । तहा अणियट्टिस्स तहा चेव; नवरि मूलिल्लाणि चत्तारि संताणि उवसमसेढीए चेव ।

'छउमत्थकेवलिजिणाणं एक चऊ एक चऊ अट्ठ चउ दु छक्कमुदयंस' त्ति छउमत्थग्गहणेणं उवसंतो खीणकसाओ य गहिया, छउमत्थजिणा एए । केवलिजिणाणं सजोगि अजोगीणं गहणं । अहक्कमेणं गाहापच्छिमद्धभणियाणि उदय-संताणि ।

तत्थ उवसंतकसायस्स 'एक चउ' त्ति एक उदयट्ठाणं तीसा; चत्तारि संताणि, तं०—९३ । ९२ । ८९ । ८८ । उवसमसेढीए खओ नत्थि त्ति काउं ।

खीणकसायस्स एको उदओ तीसा । एत्थ विगप्पा चउवीसं, वज्जरिसह संठाणछक्कं सरसुभ-खगतिदुगेहिं गुणिया २४ । तत्थ तित्थगरसंतकम्मिगस्स खीणकसायस्स सव्वे पसत्थ त्ति उदयविगप्पो एको चेव । चत्तारि संताणि, तं०—८० । ७९ । ७६ । ७५ । तत्थ असीती छावत्तरी य तित्थगरसंतकम्मियस्स, एगूणासीती पण्णत्तरी य अतित्थगरसंतकम्मियस्स ।

इयाणिं सजोगिकेवलिस्स—'अट्ठ चउ' त्ति अट्ठ उदया, तं०—२० । २१ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । पुव्वविवरीयाणि एयाणि; चत्तारि संताणि—८० । ७९ । ७६ । ७५ । इयाणिं संवेहो—वीस छव्वीस अट्ठावीस-एगूणतीस

---

१ वि ताव सं ॥ २ 'च तिरिहिो' पं ॥ ३ 'हिओ छ' पा१ ॥ ४ तत्थ इति पाठः स-पा१प्रत्योर्नास्ति ॥ ५ संतट्ठाणाणि पा१ ॥

तीमोदया अविरयगराम। एक्कम्मि दो दो संताणि—७९। ७५। सवे दस। एक्कवीस-सत्तावीस-एगूणतीस-तीस-एक्कती
मोदया विरयगराणं। एक्केकम्मि दो दो संताणि—असीती छावत्तरी य। सवे दस। एगूणतीसा तीसा य विरयमरा उदि
रयगराणं मामण्णं। सजोगि सजोगिस्स वीसं संताणि।

इयाणिं अजोगिकेवलिस्स—'दो छक्कट्ठ चउक्कं' ति दो उदया—८। ९। तत्थ अट्ठुदओ अविरयगरअजोगिस्स, नवो
दओ तित्थगरस्स। छ संताणि—८०। ७९। ७६। ७५। ९। ८। तत्थ अट्ठुदये तिण्णि संताणि—७९। ७५। ८। तत्थ
आदिमा दो ७९। ७५ जाव दुचरिमसमओ ताव लब्भंति। दुचरिमसमए सरीरसाहगयाण कम्माणं खए कए सेसा अट्ठ
मंतं च चरिमसमए लब्भति। नवोदए तिण्णि, तं जहा—८०। ७६। ९। आदिमा दो ८०। ७६ जाव दुचरिमसमओ,
चरिमे नव लब्भंति ॥ ४९ ॥

एवं ओघेण गुणट्ठाणेसु चउदय-संताणि भणियाणि। इयाणिं गइयादिएसु निरेसेण बंधुदय-संताणि नामस्स भण्णति—

दो छक्कऽट्ठ चउक्कं, पण नव एक्कार छक्कगं उदया।
नेरइयाइसु सन्ता, ति पंच एक्कारस चउक्कं ॥ ५० ॥

दो छक्कट्ठचउक्कं• गाहा। निरयादिसु बंधति। नेरइय-तिरिय मणुय-देवेसु जहक्कमेण दोण्णि छ अट्ठ चत्तारि बंधट्ठा

१ मामो ५९। ४॥ २ बधोका वे१। मबेका वे२॥ ३ ता। दो छक्कऽट्ठ चउक्कं मिरया चं२॥ ४ 'रि त्ति बंध चं॥

णाणि त्ति। तत्थ नेरइय• दो बंधट्ठाणाणि—२९ । ३० । तत्थ एगूणतीसा मणुय-पंचिंदियतिरिक्खपाओग्गं बंधमाणस्स, सव विगप्पा संभवंतीति। तीसं पंचिंदियतिरिक्खपाओग्गं उज्जोवसहियं बंधमाणस्स सवविगप्पा तीसं । तित्थगरसहियं मणुयगइपाओग्गं तीसं बंधमाणस्स विगप्पा अट्ठ पुच्चुत्ता।

इयाणिं तिरिक्खस्स छ बंधट्ठाणाणि, तं०—२३ । २५ । २६ । २८ । २९ । ३० । सव्वाणि वि सविगप्पाणि जहा हेट्ठओ भणियाणि तहा भाणियव्वाणि । नवरि एगूणतीस-तीसभंगेसु तित्थगराऽऽहारबंधविगप्पा ण संभवंति, तित्थगराऽऽहारगं न बंधेति त्ति ।

इयाणि मणुयस्स अट्ठ बंधट्ठाणाणि—२३ । २५ । २६ । २८ । २९ । ३० । ३१ । १ । सव्वाणि सविगप्पाणि संभवंति। कम्हा ? चउगइपाउग्ग मणुओ बंधइ त्ति ।

इयाणिं देवस्स चत्तारि बंधट्ठाणाणि, तं०—२५ । २६ । २९ । ३० । पणुवीस छवीसा बायर-पज्जत्तग-पत्तेयसंजुत्तं एगिंदियपाओग्गं बंधमाणस्स। एत्थ भंगा थिरा ऽथिर-सुभा ऽसुभ-जसा ऽजसेहिं कायव्वा अट्ठ, छवीसे आयाउज्जोएहिं य सोलस। एगूणतीसा मणुयगइ-पंचिंदियतिरिक्खपाओग्गं बंधमाणस्स सविगप्पा वत्तव्वा। तीसं उज्जोयसहियं पंचिंदियतिरियपाओग्गं बंधमाणस्स सविगप्पा वत्तव्वा। बितिया तित्थगरसहियं मणुयगइपाओग्गं तीसं बंधमाणस्स, एत्थ अट्ठ विगप्पा।

एवं नेरइगाईणं बंधट्ठाणाणि भणियाणि। इयाणिं उदयट्ठाणाणि—'पण नवेक्कारछक्का उदय' त्ति नेरइगादीणं जह कमेण उदया भण्णंति। तत्थ नेरइगस्स उदयट्ठाणाणि पंच, तं०—२१ । २५ । २७ । २८ । २९ । जहा हेट्ठा भणियं

तहा चेव ।

तिरिक्खस्स णव उदयट्ठाणाणि—२१ । २४ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । एगिंदिय विगलिंदिय पंचिंदियतिरिक्खाणं जाणि उदयट्ठाणाणि ताणि सव्वाणि तिरिक्खस्स, सव्वे तिरिक्ख त्ति काउं । तेण सव्वेसिं उदयट्ठाणाणि सवियप्पाणि भाणियव्वाणि ।

मणुस्साणं उदयट्ठाणाणि एक्कारस, तं०—२० । २१ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । ९ । ८ । समा समणुसाणं वेउव्विणाम आहारगसंजमाणं तित्थयर अतित्थयरकेवलीणं सजोगि अजोगीणं उदयट्ठाणाणि सव्वाणि मणुसोदया पुव्वं ति तम्हा देवुओ मणियविरहिया भाणियव्वाणि ।

देवस्स छ उदयट्ठाणाणि—२१ । २५ । २७ । २८ । २९ । ३० । देवओ सविगप्पाणि भणियाणि ।

'संता वि पंच एक्कारस चउक्कं' ति गइमग्गणाए णइकमेण संताणि । तत्थ णेरइयस्स तिण्णि संताणि—९२ । ८९ । ८८ । कथं ? तेणउदिसंतकम्मिओ णेरइएसु न उववज्जदि त्ति, देवगइ निरयगइपाओग्गाणि विरहियाणि वि संताणि न संभवंति त्ति ।

तिरिक्खस्स पंच संताणि, तं०—९२ । ८८ । ८६ । ८० । ७८ । कथं ? तित्थयरसंताणि तेरसनामखवियाणि य संताणि न संभवंति त्ति ।

मणुस्साणं एक्कारस संताणि, तं०—९३ । ९२ । ८९ । ८८ । ८६ । ८० । ७९ । ७८ । ७५ । ९ । ८ । मणुसगइ

---

१ २ 'वि' तं अहा—२१ । धोर ॥

संतविरहिय संत मोत्तूण सेसाणि संताणि णाणाजीवे पडुच्च संभवंति ।

देवस्स चत्तारि संताणि—९३ । ९२ । ८९ । ८८ । उवरिल्लाणि न संभवंति, देवगइआइविरहियत्ताद् ।

इदाणिं 'कइ बंधंतो वेदेति कति ?' (गा० २) त्ति एयस्स अवसरो—नेरइयस्स तिरियगइपाउग्गं एगूणतीसं बंधमाणस्स पंचे वि उदयट्ठाणाणि, एक्केक्के दो दो संताणि—९२ । ८८ । तित्थगरसंतकम्मिओ तिरियगइं न बंधइ त्ति एगूण नउती नत्थि । मणुयगइपाउग्गं एगूणतीसं बंधमाणस्स पंच वि उदयट्ठाणाणि, एक्केक्कम्मि तिण्णि संताणि, तं०—९२ । ८९ । ८८ । तित्थगरसंतकम्मिओ मिच्छद्दिट्ठी एगूणतीसं बंधइ जाव ताव सम्मत्तं न पडिवज्जइ । पडिवण्णो तीसबंधगो भवइ । तिरियगइपाओग्गं उज्जोवसहियं तीसं बंधमाणस्स पंच वि उदया, एक्केक्के दो दो संताणि—९२ । ८८ । मणुयगइपाओग्गं तित्थगरसहियं तीसं बंधमाणस्स पंचे वि उदया, एक्केक्कम्मि एक्केक्कं संतं एगूणनउती । एवं सव्वुदएसु सव्वबंधेसु य सव्वग्गेण तीसं संताणि ।

इदाणिं तिरिक्खस्स—तेवीसबंधगस्स एक्कवीसादीणि नव उदयट्ठाणाणि । आदिल्लेसु पंचसु पंच पंच संताणि, उवरिल्लेसु पंचसु चत्तारि चत्तारि संताणि अट्ठत्तरिवज्जाणि, कारणं पूर्ववत् । एवं पणुवीस-छव्वीस-एगूणतीस-तीसबंधगाणं पि । नवरि एगूणतीसं मणुयगइपाउग्गा बंधमाणस्स अट्ठत्तरिवज्जाणि चत्तारि संताणि सव्वुदएसु भाणियव्वाणि । अट्ठावीसबंधगस्स अट्ठ उदयट्ठाणाणि, तं०—२१ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । तत्थ २१ । २६ । २८ । २९ । ३०

१ च छ पं ॥ २ स्वस्तिकचिह्नमध्यपाठः सप्रती नास्ति ॥ ३ च छ पं ॥ ४ पाठे ॥

गरा चव ।

तिरिक्खस्स नव उदयट्ठाणाणि—२१ । २४ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । एगिदिय-विगलिंदिय पंचिंदियतिरियाणं जाणि उदयट्ठाणाणि ताणि सव्वाणि तिरिक्खस्स, सो तिरिक्ख त्ति काउं । तेण सव्वेसिं उदयट्ठाणाणि भणियव्वाणि भाणियव्वाणि ।

मणुयाणं उदयट्ठाणाणि एक्कारस, तं०—२० । २१ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । ९ । ८ । समाणमणुयाणं वेउव्विय आहारगसंजयाणं तित्थगर अतित्थकरकेवलीण सजोगि-अजोगीणं उदयट्ठाणाणि सव्वाणि मणुओदया दुर्वति तम्हा देवओ भणियविहिणा भाणियव्वाणि ।

देवस्स छ उदयट्ठाणाणि—२१ । २५ । २७ । २८ । २९ । ३० । देवओ सविगप्पाणि भणियाणि ।

'गता ति पंच एक्कारस चउक्कं' ति नेरइगाईणं जहक्कमेण भणाणि । तस्स नेरइयस्स तिण्णि संताणि—९२ । ८९ ।
८८ । कहं ? तेयउव्वसंतकम्मिगो नेरइएसु न उववज्जति त्ति, देवगइ निरयगइपाउग्गमविरहियाणि त्ति संताणि न संभवंति त्ति ।

तिरिक्खस्स पंच संताणि, तं०—९२ । ८८ । ८६ । ८० । ७८ । कहं ? तित्थगरसंताणि तेरसनामखीणाणि य संताणि न संभवंति त्ति ।

मणुस्साणं एक्कारस संताणि, तं०—९३ । ९२ । ८९ । ८८ । ८६ । ८० । ७९ । ७६ । ७५ । ९ । ८ । मणुयगइ

१ २ नि व अहा—२१ । चं२ ॥

संतविरहियं संत मोत्तूण सेसाणि संताणि णाम्माजीचे पडुच्च संभवंति।
संतविराहियं संत मोत्तूम सेसाणि संताणि नाम्माजीमे पडुच्च संभवंति। उवरिल्लाणि न संभवंति, देवगइमाइविरहियत्वात्।

देवस्स चत्तारि संताणि—९३।९२।८९।८८। उवरिल्लाणि न संभवंति, देयगइमाइविरहियत्वात्।

इयाणि 'कइ बंधंतो वेदेति कति ?' (गा० २) त्ति एयस्स अवसरो—नेरइयस्स तिरियगइपाउग्गं एगूणतीसं बंधमाणस्स पंच वि उदयट्ठाणाणि, एक्केक्के दो दो संताणि—९२।८८। तिरयगरसंतकम्मिओ तिरियगई न बंधइ त्ति एगूण माणस्स एवं पि उदयट्ठाणाणि, एक्केक्के दो दो संताणि—९२।८८। तिरयगरसंतकम्मिओ तिरियगई न बंधइ त्ति एगूणतीसं बंधमाणस्स पंच वि उदयट्ठाणाणि, एक्केक्कम्मि तिण्णि संताणि, मणुती नत्थि। मणुयगइपाउग्गं एगूणतीसं बंधमाणस्स पंच वि उदयट्ठाणाणि, एक्केक्कम्मि तिण्णि संताणि, नउती नत्थि। मणुयगइपाउग्गं एगूणतीसं बंधमाणस्स पंच वि उदयट्ठाणाणि, एक्केक्कम्मि तिण्णि संताणि, नउती नत्थि। तिरयगरसंतकम्मिओ मिच्छदिट्ठी एगूणतीसं बंधइ जाव ताव सम्मत्तं न पडिवज्जइ। पडिवण्णो सं०—९२।८९।८८। तिरयगरसंतकम्मिओ मिच्छदिट्ठी एगूणतीसं बंधइ जाव ताव सम्मत्तं न पडिवज्जइ। पडिवण्णो तीसबंधगो भवइ। तिरियगइपाओग्गं उज्जोवसहियं तीसं बंधमाणस्स पंच वि उदया, एक्केक्के दो दो संताणि—९२।८८। मणुयगइपाओग्गं तित्थगरसहियं तीसं बंधमाणस्स पंच वि उदया, एक्केक्कम्मि एक्केक्कं संतं एगूणनउती। एवं सव्वुदएसु सव्वबंधेसु य सव्वगेसु तीसं संताणि।

इयाणि तिरिक्खस्स—तेवीसबंधगस्स एक्कवीसाईणि नव उदयट्ठाणाणि। आदिल्लेसु पंचसु पंच पंच संताणि, उवरि ल्लेसु चउसु चत्तारि चत्तारि संताणि अट्ठचरिमाणि, कारणं पूर्ववत्। एवं पणुवीस-छव्वीस-एगूणतीस तीसबंधगाणं पि। नवरि एगूणतीसं मणुयगइपाउग्गं बंधमाणस्स अट्ठचरिमाणि चत्तारि संताणि सव्वुदएसु भाणियव्वाणि। अट्ठावीसबंधगस्स अट्ठ उदयट्ठाणाणि, तं०—२१।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१। तत्थ २१।२५।२८।२९।३०

१ ख उव० सं० धं१॥ २ त्वस्तिकचिह्नमध्यगः पाठः प्रतौ नास्ति॥ ३ ख उव० सं०॥ ४ पाठ धं१ धं२॥

सइग-वेयगसम्मद्दिट्ठीणं दुवत्थाउयाणं, वेयगसम्मद्दिट्ठी जो[1] बावीससंतकम्मिओ, अण्णो न लब्भइ। एक्कम्मि दो दो संताणि, तं०—९२ । ८८ । पणुवीस-सत्तावीसोदया वेउव्वियस्स संभवंति । सव्वत्थ दो दो संताणि । तीसेक्कतीसोदया सम्मद्दिट्ठि मिच्छद्दिट्ठीणं, एक्केक्कम्मि तिण्णि तिण्णि संताणि—९२ । ८८ । ८६ । छासीई सम्मद्दिट्ठीणं ण संभवति, देवदुगादि विरहियत्तात् । एवं सव्वबंधगेसु सत्तुदए सव्वग्गेणं दो सयाणि अट्ठारसुत्तराणि संतमेयाणं २१८ ।

इयाणिं मणुयस्स—तेवीसबंधगस्स सत्त उदयट्ठाणाणि, तं०—२१ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । पणुवीस-सत्तावीसा वेउव्वियं पडुच्च, सेसा संजओवच पि कहंठ न संभवंति । एक्केक्के चत्तारि चत्तारि संताणि तं०—९२ । ८८ । ८६ । ८० । नवरि पणुवीस-सत्तावीसोदएसु दो दो संताणि—९२ । ८८ । सेसाणि तित्थगरसंताणि, मणुयगइरहियं च न संभवइ । संताणि वि चउवीसं । एव पणुवीस-छव्वीसबंधगाणं पि । मणुयगइ-तिरियगइपाउग्गं एगूणतीस उज्जोवसहियं तीसबंधगाणं पि एवं चेव जहा तेवीसबंधगस्स । अट्ठावीसबंधगस्स सत्त उदयट्ठाणाणि, तं०—२१ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । तत्थ एक्कवीस-छव्वीसा असंजयसम्मद्दिट्ठि पडुच्च । पणुवीस-सत्तावीसा आहारगसंजयस्स वेउव्वियस्स वा । अट्ठावीस-एगूणतीसा असंजयसम्मद्दिट्ठि-वेउव्विया-ऽऽहारगाणं सामण्णा । तीसा सम्मद्दिट्ठीणं मिच्छद्दिट्ठीण य । एक्केक्कम्मि दो दो संताणि बाणउई अट्ठासीती य । आहारगसंजयस्स बाणउई चेव । तीसोदये चत्तारि संताणि—९२ । ८९ । ८८ । ८६ । तत्थ एगूणनउती निरयगइपाउग्गं अट्ठावीसं बंधमाणस्स मिच्छद्दिट्ठिस्स । सेसाण भावणा जहा ओघे । अट्ठावीसबंधगस्स संता १६।

१ जो मोहणीयबावी° चं० । २ ति मेवा चं० । ३ 'तीस-तीसबंध' चं० ॥

एगूणतीसा—देवगइपाउग्गं तित्थगरसहियं एगूणतीसं बंधमाणस्स जे अट्ठावीसबंधगस्स भणिया ते चेव सव उदया, उव एगूणतीसा—देवगइपाउग्गं तित्थगरसहियं एगूणतीसं बंधमाणस्स जे अट्ठावीसबंधगस्स भणिया ते चेव सव उदया, उव
एगूणतीसा—देवगइपाउग्गं तित्थगरसहियं एगूणतीसं बंधमाणस्स जे अट्ठावीसबंधगस्स भणिया ते चेव सव उदया, उव एगूणतीसबंधो तित्थगरनामसहिओ त्ति। संताणि उदयेसु
पमावणा तहेव। नवरि तीसोदओ वि सम्मदिट्ठिस्स चेव, जेण एगूणतीसबंधो तित्थगरनामसहिओ त्ति। संताणि उदयेसु
उरगमेण—२।२।२।२।२।२।२। तेणउती एगूणणउती य संताणि। आहारगसंजयस्स तेणउती चेव। आहा
रगसहियं तीसं बंधमाणस्स दोण्णि उदया—२९।३०। एगूणतीसा आहारगसंजओ अंतिमकाले अप्पमत्तो भवति तं
पडुच। एक्केके संत बाणउती। एक्कतीसबंधगस्स एको उदओ तीसा, एक्कं संतं तेणउइ। एगविहबंधगस्स एको उदओ तीसा,
अट्ठ संताणि, तं०—९३।९२।८९।८८।८०।७९।७६।७५। अबंधगस्स उदया दस, तं०—२०।२१।२६।
२७।२८।२९।३०।३१।९।८। वीस-छवीस अट्ठावीसोदएसु दो दो संताणि—७९।७५। एक्कवीस-सत्तावीस
एक्कतीसोदएसु दो दो संताणि—८०।७६। एगूणतीस-तीसोदएसु चत्तारि चत्तारि संताणि—८०।७९।७६।७५।
नवोदए तिण्णि—८०।७६।९। अट्ठोदए तिण्णि—७९।७५।८। एव सव्वबंधोदए पडुच संताणि १८७।

मणुसस्स भणियं। इदाणिं देवस्स—पणुवीसबंधगस्स छावि उदयट्ठाणाणि। एक्केके दो दो संताणि—९२।८८।
एवं छवीस-एगूणतीसबंधगाणं पि एवं चेव। उज्जोवसहियं तीसं बंधमाण पि एवं चेव। तित्थगररहिय तीसं बंधमाणस्स छावि
उदयट्ठाणाणि। एक्केके दो दो संताणि—९३।८९। सव्वग्गेण सट्ठि संताणि ६०॥५०॥

गई पडुच भणियं। इदाणिं इंदियं पडुच भण्णइ—

२ एवं च॥ १ अस्मिन् स्थाने भीमसयगिरिवाणस्तु १५९ पत्रास्त्याणि सपवन्ति। एतस्ता चर्णमत्वादितीयविमानस्य २२८ तमम्॥

इगि विगलिंदिय सगले, पण पंच य अट्ठ बंधठाणाणि ।
पण छक्केक्कारुदया, पण पण बारस य सन्ताणि ॥ ५१ ॥

इगि विगलिंदिय०गाहा । 'इगि विगलिंदिय सगले पण पंच य अट्ठ बंधठाणाणि ।' 'इगि' त्ति एगिंदिओ । एगिंदिय-विगलिंदिय-पंचिंदियाणं जहक्कमेणं बंधट्ठाणाणि पंच पंच अट्ठ त्ति । तत्थ एगिंदियस्स पंच बंधट्ठाणाणि, तं०—२३ । २५ । २६ । २९ । ३० । देवगइपाउग्गे पगूणतीस-तीसविगप्पे मोत्तूण सेसाणि सव्वाणि सविगप्पाणि भवंति । विगलिंदियाणं तिण्ह वि ते चेव पंच इत्था सविगप्पा । पंचिंदियाणं सव्वाणि बंधट्ठाणाणि सविगप्पाणि भाणियव्वाणि ।

इयाणि उदयट्ठाणाणि—'पण छक्केक्कारुदय' त्ति जहक्कमेणं एगिंदियादीणं उदयट्ठाणाणि पंच छ एक्कारस । तत्थ एगिंदियाणं पंच उदयट्ठाणाणि, तं जहा—२१ । २४ । २५ । २६ । २७ । सविगप्पा जहा हेट्ठओ भणिया तहा चेव । विगलिंदियाणं छ उदयट्ठाणाणि, तं०—२१ । २६ । २८ । २९ । ३० । ३१ । जहा हेट्ठओ सविगप्पाणि भणियाणि तहा चेव। पंचिंदियाण एक्कारस उदयट्ठाणाणि, तं०—२० । २१ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३ । ३१ । ९ । ८ । एगिंदिय विगलिंदियाण उदयविगप्पे मोत्तूण सेसा सव्वे पंचिंदियाण उदयविगप्पा भवंति ।

इयाणि संतट्ठाणाणि—'पण पण बारस य संताणि' त्ति एगिंदिय-विगलिंदियाणं पंच पंच संताणि—९२ । ८८ ।

१ इग त्ति चे०।

८९ । ८० । ७८ । कारणं पुव्वुत्तं । पंचिंदियाणं सत्तावि चि संताणि ।

मामण्णेणं बपुडय संताणि भणियाणि । इयाणिं 'कइ बधंतो वेयइ कवि ? कति वा पगइट्ठाणकम्मस ?' (गा० २)त्ति एयस्स अवसरो—एगिंदियस्स तेवीसं बंधमाणस्स पंच वि उदयट्ठाणाणि—२१ । २४ । २५ । २६ । २७ । आइल्लेसु चउसु पंच पंच संताणि, सत्तावीसे अट्ठुत्तरिवज्जाणि चत्तारि संताणि । एवं पणुवीस-छव्वीस एगूणतीस-तीसबंधगाणं पि । सव्वग्गं १२० । विगलिंदियाणं तेवीसादिबंधमाणाण छावि उदयट्ठाणाणि । मूलिल्लेसु दोसु पंच पंच संताणि, उवरिल्लेसु चउसु अट्ठुत्तरिवज्जाणि चत्तारि चत्तारि संताणि । कारण पुव्वुत्त । सव्वग्गं १३० । पंचिंदियाणं तेवीस बंधमाणाण छ उदयट्ठाणाणि, तं०—२१ । २६ । २८ । २९ । ३० । ३१ । पंचिंदियतिरियाण मणुयाणं उदयविगप्पा भाणियव्वा । मूलिल्लेसु दोसु पंच पंच संताणि—९२ । ८८ । ८६ । ८० । ७८, उवरिल्लेसु चउसु अट्ठुत्तरिवज्जाणि चत्तारि चत्तारि संताणि । पणुवीसबंधगस्स अट्ठ उदयट्ठाणाणि—२१ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । एएसु उदएसु जहक्कमेण संताणि—५ । २ । ५ । २ । ४ । ४ । ४ । ४ । पणुवीस-सत्तावीसा वेउव्विए देवे य पडुच्च । सेसाणि पसिद्धाणि । एव छव्वीसबंधगस्स वि । अट्ठावीसबंधगस्स अट्ठ उदयट्ठाणाणि, तं०—२१ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । एएसु उदएसु जहक्कमेणं संताणि २ । २ । २ । २ । २ । २ । ४ । २ । अत्थो हेउओ पुव्वुत्तो । एगूणतीसबंधगस्स ताणि चेव[1] उदयट्ठाणाणि । एएसु उदएसु संताणि, तं०—७ । ४ । ७ । ४ । ६ । ६ । ६ । ४ । अत्थो हेउओ पुव्वुत्तो । तीसबंधगस्स

1 'नि, तं जहा—२१ । सं१ ॥

ताणि चेव मइ उवयड्डाणाणि। तेसु जहक्कमेण संवाणि—७।४।५।४।१।६।१।४। अत्थो पुण्णुत्तो। एग-वीस पगतिसंतविगप्पे य जहा मणुयस्स संवेहो भणिओ तहा भाणियव्वं। सव्वं २०। एवं इंदिय पडुच्च संवेहो भणिओ ॥५१॥

इय कम्मपगडिठाणाणि सुट्ठु बंधुदय-सन्तकम्माण।

गइयाइएहिं अट्ठसु, चउप्पगारेण नेयाणि ॥ ५२ ॥

इय कम्मपगडि० त्ति गाहा। 'इय' त्ति भणियविहिणा कम्माणं पगइट्ठाणाणि कम्मपगइट्ठाणाणि। 'सुट्ठु' त्ति अर्द्ध उवउत्तेण करेहु। ताणि कयाणि कम्मपगइट्ठाणाणि ? भण्णति—बंधुदय-संतकम्माणं ठाणाणि। 'गइयाइएहिं' त्ति—

गइ इंदिए य काए, जोए वेए कसाय नाणे य। संजम दंसण लेसा, भव सम्मे सण्णि आहारे ॥ त्ति

एएहिं चोद्दसहिं अट्ठसु अणुओगदारेसु नेयव्वाणि। कयाणि ताणि अट्ठ नेयव्वाणि ? भण्णति—

संतपयपरूवणया दव्वपमाणं च खेत्त फुसणा य। कालंतरं च भावो अप्पाबहुगं च दाराइं ॥

तत्थ संतपयपरूवणया—एवं बंधुदय संताण संवेहो गुणट्ठाणेसु ओघेणं भणिओ, आदेसेण वि नर-इंदिए य पडुच्च मग्गणट्ठाणेसु भणिओ, तेणऽणुमाणेणं कायादिएसु वि मग्गणट्ठाणेसु भाणियव्वं। तओ दव्वपमाणादीणि सव्व वि अणुओगदाराणि भाणियव्वाणि। 'चउप्पगारेण नयाणि' त्ति पगइ-ठिति अणुभाग प्पएसपगारेण नेयव्वाणि। पगतीए बंधुदय-संते भणितु

१ च कसेणगाणं च जहा मो१ ॥ २ मं ५२६। एवं मो२ ॥ ३ एसु च खे१ ॥ ४-५ पाठौ सर्वेष्वपि मुद्रकादर्शेपुस्तकेषु ॥

तओ ठिति अणुभाग प्पएसाणं पंचुदय-संताणं ठाणाणि तेणेव विहिणा भाणियव्वाणि ॥ ५२ ॥

इदाणि उदओदीरणाणं विससनिरूवणत्थं भण्णइ । कम्हा ? उदयसमाणा उदीरण त्ति काउं ।

उदयस्सुदीरणाए, सामित्ताए ण विज्जइ विसेसो । मोत्तूण यं ईयाल, सेसाण सव्वपयडीण॥५३॥

उदयस्सुदीरणाए० गाहा । उदओ नाम कालपत्तस्स दव्वस्स अणुभवणं । उदीरणा अकालपत्ताणं दव्वाण उदए पाडणं । उदीरणा कहं ? भण्णइ—उदयावलियबाहिरिल्लठितीहिंतो कसायसहिया उसहिएणं जोगकरणेणं दलियं आकड्ढिय उदयपत्त इलियाए समं अणुभवणं ति भणिय भवइ । तेसिं उदय-उदीरणाणं सामित्तं पडुच नत्थि विसेसो । किं भणियं भवइ ? जो णाणावरणाईणं कम्माणं वेयओ सो चेव तेसिं उदीरओ त्ति भणियं भवइ । कम्हा ? जत्थ उदओ तत्थ उदीरणा, जत्थ उदी रणा तत्थ उदओ । एत्थ अतिपसत्तं लक्खणं ति, पुणो नियमणं करेति—'मोत्तूण य ईयाल' एक्कचत्तालीसं पगईओ मोत्तूण सेसाण सव्वपगईणं नत्थि विसेसो, एक्कचत्तालीसाए कम्मपगडीणं उदीरणाए विणा वि उदओ लब्भइ ॥ ५३ ॥

काणि ताणि कम्माणि ? कइ वा लब्भति ? भण्णति—

नाणंतरायदसगं, दंसणनव वेयणिज्ज मिच्छत्तं ।

सम्मत्त-लोभ-वेया ऽऽउगाणि नव नाम उच्चं च ॥ ५४ ॥

---

१ नामो न वि पे० पे१ ॥ २ य पयाले पे१ । ३ एगुपाले पे१ ॥ ३ र्च वा ० पे१ ॥

नाणंतराय दसगं० गाहा। पंचण्ह णाणावरणाणं, पंचण्हमंतराणं, उवरिल्लाणं चउण्ह दंसणावरणीयाणं, एएसिं चोद्सण्हं कम्माणं सव्वजीवाणं उदओदीरणा य ताव जाव खीणकसायद्धाए आवलिया सेस त्ति। तओ आवलियामेत्तं कालं उदए वट्टमाणाणं उदीरणा नत्थि। कहं? आवलियागयं न उदीरिज्जइ त्ति, उदयावलियाओ उवरिल्लाओ ठिईओ उदीरिज्जंति त्ति काउं। निद्दापयलाणं सरीरपज्जत्तीए पज्जत्तयाणं बितियसमयाओ आरद्धेसु उदओ भवइ उदीरणाए विणा वि, जाव इंदियपज्जत्तीए पज्जत्तउ त्ति। तओ बितियसमयप्पभिइं उदओ य उदीरणा य भवति त्ति। एस आगमो—जेसिं जम्मि समए उदओ फिट्टइ त्ति तम्मि समए उदीरणा य जुगवं फिट्टइ त्ति। दोण्ह वेदणिज्जाणं सव्वे पमत्ता जीवा वेदया उदीरगा य। अप्पमत्तसंजयस्स उदीरणा नत्थि त्ति उदओ चेव त्ति। एस आगमो—मिच्छत्तस्स पढमसम्मत्तं उप्पाएंतेण अंतरकरणं कयं, तस्स पढमट्ठितीए आवलियासेसाए उदीरणा नत्थि, उदओ चेव। वेदगसम्मत्तस्स खाइगसम्मत्तं उप्पाएंतेण मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्ताइं खवियाइं, तओ सम्मत्तं सव्वोवट्टणाए उवट्टिय अंतोमुहुत्तट्ठितीयं जायं, तओ खीयमाणं खीयमाणं आवलियामेत्तसेसं जायं, तओ पभिइं उदओ चेव, उदीरणा णत्थि। अहवा उवसमसेढिं पडिवज्जंतस्स अंतरकरणे कए पढमट्ठितीए आवलियसेसाए उदओ चेव, उदीरणा णत्थि। लोभसंजलणाए सव्वसत्ताणं उदओ य उदीरणा य ताव जाव सुहुमसंपरागद्धाए आवलियावसेस त्ति। तओ आवलियामेत्तं कालं उदओ चेव, उदीरणा णत्थि। तिण्ह वेदाण तेण तेण वेदेण सेढिं पडिवज्जंतस्स अंतरकरणे कए पढमट्ठितीए जाव आवलियासेस त्ति ताव उदओ य उदीरणा य जुगवं। तओ आवलियामेत्तं कालं उदओ चेव, उदीरणा नत्थि। चउण्हं आउगाणऽप्पऽप्पणो अंते आवलियमेत्तं कालं उदओ चेव, उदीरणा नत्थि। मणुं

य—मणुस्साउगस्स सवे अप्पमत्ता जीवा अणुदीरगा वेयगा चेव। 'नव नाम उच्चं चे'ति मणुस्सगति-पंचिंदियजाइ-तस बादर-पज्जत्त-सुभग-आदेज्ज जसकित्ति-तित्थगरनामाणं एएसिं नवण्ह कम्माणं उच्चागोयस्स य सवे सजोगिजीवा उदीरगा वेयगा य, अजोगिजीवा अणुदीरगा वेयगा चेव। सेसाणं कम्माणं उदेय उदीरणा य जुगवं आदवेंति वुमर्व फिडंति ॥५४॥

उदओदीरणाणं विसेसो भणिओ। इदाणिं गुणट्ठाणमहिकिच्च को कओ पगईओ बंधइ? को काओ न बंधति? त्ति, बंधविसेसनिरूवणत्थं भण्णइ—

तित्थगरा ऽऽहारगोविरहियाउ अज्जेइ सबपयडीओ।
मिच्छत्तवेयगो सासणो वि उगुवीससेसाओ ॥ ५५ ॥

तित्थयराहार० गाहा। 'तित्थयरा-ऽऽहारयविरहियाउ अज्जेति सबपगतीओ मिच्छत्तवेयगो' त्ति बंध पडुच्च वीसुत्तरं पग तिसयं भणियं, तं०—णाणावरणा पंच दंसणावरणा नव साता ऽसातं मिच्छत्तं सोलस कसाया नव नोकसाया चत्तारि आउ गाणि चत्तारि गतीओ पंच जातीओ पंच सरीराणि, पंच पंच बंधण-संघाया सरीरग्गहणेणं गहिया, छ संठाणा छ संघयणा तिण्णि अंगोवंगा वण्ण-गंध-रस-फासा सामण्णेण गहिया चत्तारि आणुपुवीओ अगरुलहु उवघाय पराघाय उस्सास आयाव उज्जोय विहायगइदुगं तस-थावरादिवीसं निमेण तित्थगरनाम उच्चा-नीयागोयं पंच अंतरायमिति। एयं वीसुत्तरं पगइसयं।

१ एतदर्थसाधिका गाथा त्रिष्वपि मूलसूत्रादर्शेषु वर्तते—मणुयगइ जाइ तस बायरं च पज्जत्त सुभग आएज्जं। जसकित्ती तित्थयरं नामस्स हवंति नव एया॥ २ वमोदी खं०२॥ ३ °ओ पगतीओ न खं०२॥ ४ गयविरहियाउ चे१॥ ५ याहय खं१ खं०२॥

एयाओ वीगुनराओ पगडिमयाओ तित्थमरं आहारगसरीर आहारगंगोवंग च मोत्तूण सेसाओ सत्तरसुयरं पमत्तिसय मत्थेर-बंधइ मिच्छदिट्ठी, तित्थगरा ऽऽहारगाति सम्मत्त-संजमपच्चयाति त्ति न बंधति । 'सासणो वि उगुवीससेसाउ' त्ति सासण-सम्मदिट्ठी एगूणवीससेसं-एकुत्तरं पगडिसयं बंधति । कहं ? भण्णइ—पुव्वुत्ताणि तिण्णि, मिच्छत्तपच्चयाणि सोलस, तं०—मिच्छत्त नपुंसगवेओ निरयाउगं निरयगइ एगिंदिय-बे'-ते०-चउरिंदियजाइ हुंडसंठाणं असंपत्तसेवट्टं संघयणं निरयाणुपुव्वि आयावं थावरं सुहुम अपज्जत्तं साहारणमिति । एयाणि सोलस मिच्छपच्चयनिमित्ताणि सासणम्मि मिच्छोदयाभावाओ बंधं न एंति । एया एगूणवीसं मोत्तूणं सेसा सयाओ बंधति ॥ ५५ ॥

छायालसेस मीसो, अविरयसम्मो तियालपरिसेसं ।
तेपन्न देसविरओ, विरओ सगवन्न सेसाओ ॥ ५६ ॥

छायाल० गाहा । 'छायालसेस मीसो' त्ति मीसो—सम्मामिच्छदिट्ठी छायालीसं पगडीओ मोत्तूण सेसाओ चोवत्तरिं पगडीओ बंधइ । तत्थ छायालीसा पुव्वुत्ताणि एगूणवीसं, सासणम्मि पणुवीसं वोच्छिज्जंति, तं०—थीणगिद्धितिगं अणंताणुबंधिच० इत्थिवेओ तिरियाउगं तिरियगइ मज्झिल्लाणि चत्तारि चत्तारि संठाण-संघयणाणि तिरियाणुपुव्वी उज्जोय अप-सत्थविहायगइ दूभगं दुस्सरं अणादेज्जं नीयागोयमिति । एयाणि संकिलिट्ठतरो बंधइ त्ति, सासणाओ सम्मामिच्छो विसुद्ध

१ बेइंदिय-तेइंदिय चउ खं१ घं१ ॥ २ मो च ई खं१ ॥ ३ उसा । गी१ ॥

तरो त्ति, अपव्वाणुबंधिउदयरहियत्ताओ। अन्नच—आउगं च न बंधइ त्ति, मणुस्स-देवाउगाणि वि बंधाओ फेडियाणि। एयाओ छायालीसं पगडीओ मोत्तूण सेसाणि बंधति। 'अविरयसम्मो तियालपरिसेसं' ति अविरयसम्मादिट्ठी तेयालीसं पगडीओ न बंधति, तं०—अपतरुणाओ छायालीसाओ मणुयाउगं देवाउग तित्थगरनाम च अविरयसम्मो बंधइ त्ति फेडिए सेसाणि तेयालीसं, ताओ मोत्तूण सेसाओ सत्तसत्तरिं पगडीओ बंधइ त्ति। 'तेवण्ण देसविरओ' त्ति तेवण्ण पगडीओ देसविरओ न बंधति। कओ? भण्णइ—जा असंजयसम्मादिट्ठी न बंधति ताओ तेयालीसं, असंजयसम्मादिट्ठीम्मि दस वोच्छिज्जति, तं०—अपच्चक्खाणावरणीया४ मणुयाउगं मणुस्सगई ओरालियसरीरं वज्जरिसभनारायसंघयणं ओरालियंगो वंगं मणुयाणुपुव्वी, एयाओ तेयालीससहियाओ तेवण्णं भवंति। एयाओ मोत्तूण सेसा सत्तट्ठी ता बंधति। 'विरओ सगप ण्णसेसाओ' त्ति विरओ—पमत्तसंजओ सत्तावण्ण पगडी न बंधति। कह ता? पुव्वुत्ता तेवण्ण देसविरयम्मि पच्चक्खाणावरण चउक्क वोच्छिज्जति। एयाहिं सत्तावण्णं भवंति। एए मोत्तूण सेसाओ तेवट्ठिं ताओ बंधति ॥ ५६ ॥

इगुसट्ठिमप्पमत्तो, बंधइ देवाउयस्स इयरो वि। अट्ठावन्नमपुव्वो, छप्पन्न वा वि छव्वीस ॥ ५७ ॥

इगुसट्ठिमप्पमत्तो बंधवि० त्ति। इयाणि बंधियव्वाओ पगडीओ जाओ त्ति ताओ भण्णंति—एगूणसट्ठी पगडीओ अपमत्तसंजओ बंधति। कह ता? जाओ तेवट्ठिं पमत्तसंजओ बंधइ तम्मि छ पगडीओ वोच्छिज्जंति, तं०—असायं अरति सोग अथिरं असुभं अजसकित्ती, एयाओ मोत्तूण सेसाओ सत्तावण्ण, तम्मि आहारगसरीरं आहारगअंगोवंगं च बंधति, एवं एगूणसट्ठी भवति।

१ सस सि म धं१ ॥ २ सेसा ते° धं१ ॥ ३ ह्युस वै१ ॥ ४ जगं च ह° वै१ ॥

'देवाउगस्स इयरो वि' त्ति देवाउगं अप्पमत्तसंजओ वि बंधति। एयस्स वयणेण किं भणियं भवति? आउगं पमत्तसंजओ चेव बंधति, तेण आरद्धं कयाइ अप्पमत्तभावम्मि वि होज्ज त्ति, अप्पमत्तो आउगं न आढवेति बंधिउं ति तस्सूयणत्थं 'देवाउगं इयरो वि' त्ति कयं। 'अट्ठावण्णमपुव्वो छप्पण्णं वा वि छव्वीसं' ति। एगूणसट्ठीओ देवाउगं न बंधति त्ति काउं अट्ठावण्णं अपुव्वकरणो बंधति जाव अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जइमो भागो त्ति। तस्स निद्दा-पयलाण बंधे वोच्छिण्णे छप्पण्णं सो चेव बंधति जाव अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जइमो भागो सेसो त्ति। तस्स देवगइ पंचिंदियजाइ वेउव्विय आहारग-तेया-कम्मइगसरीरं समचउरंससंठाणं वेउव्विय आहारगअंगोवंगं वण्ण गंध रस फास देवगइ आणुपुव्वी अगरुलहु उवघाय पराघायं उस्सास पसत्थविहायगइ तस बायर पज्जत्त पत्तेग थिर सुभग सुस्सर आदेज्ज निमेणं तित्थगरमिति। एयासिं तीसाए णामपयडीणं बंधे वोच्छिण्णे छव्वीसं बंधति सो चेव जाव जाव अपुव्वकरणद्धाए चरिमसमओ त्ति। एया अपुव्वकरणम्मि तिण्णि अवत्था भणिया ॥ ५७ ॥

बावीसा एगूणं, बंधइ अट्ठारस त्ति अनियट्टी।
सत्तरस सुहुमसरागो, सायममोहो सजोगि त्ति ॥ ५८ ॥

'बावीसा एगूणं बंधइ अट्ठारस त्ति अनियट्टि॰' त्ति। बावीसमाइं काऊण एगूणं बंधइ जाव जाव अट्ठारस त्ति अनियट्टी,

१ वीसं म॰ पा॰ । २ एसं ति म॰ पा॰ ।

सं०—२२ । २१ । २० । १९ । १८ । अपुव्वकरणस्स चरिमसमए हास-भय-रति-दुगुंच्छाणं बंधे वोच्छिण्णे सेसा बावीसं, ता अणियट्टी बंधति, अट्ठामगुती न बधति ताव जाव अणियट्टिअद्धाए संखेज्जा भागा गया, एगो भागो सेसो त्ति । तत्थ पुरिसवेयस्स बंधे वोच्छिण्णे एक्कवीसं बधइ, नमनउइ न बंधइ ताव जाव सेसद्धाए संखेज्जइमो भागो ठिओ त्ति । तत्थ कोह सञ्जलणाए बंधे वोच्छिण्णे वीसं बंधइ, सव न बंधइ ताव जाव सेसद्धाए संखेज्जइमो भागो ठिओ त्ति । तत्थ माणसंजलणाए बंधे वोच्छिण्णे एगूणवीसं बंधइ, एगुत्तरं सयं न बंधइ ताव जाव सेसद्धाए संखेज्जइमो भागो ठिओ त्ति । तत्थ मायासंजलणाए बंधे वोच्छिण्णे अट्ठारस बंधइ, बिउत्तरं सयं न बंधइ ताव जाव अणियट्टिअद्धाए चरिमसमओ त्ति । एया पण भेदत्था अणियट्टिम्मि भणिया । 'सत्तरस सुहुमरागो' त्ति सुहुमसंपराओ सत्तरसं कम्मपगडीओ बंधति । अणियट्टिचरिमसमए लोभसंजलणाए बंधे वोच्छिण्णे सेसा सत्तरस—पंच णाणावरण चत्तारि दंसणावरण सायावेयणिय जसकित्ति उच्चागोयं पंच अंतराइयमिति । एया सत्तरस बधति, तिउत्तरसयं न बंधति ताव जाव सुहुमसंपराइगस्स चरिमसमओ त्ति । 'सायममोहो सजोगि' त्ति सायावेयणीयं कम्मं अमोहो त्ति बंधति । केद्दूरं ? भण्णइ—जाव सजोगि त्ति । सुहुमरागस्स चरिमसमए पंच नाणावरण चत्तारि दंसणावरण जसकित्ति उच्चागोय पंचण्हं अंतराइयाण बंधे वोच्छिण्णे सातस्स बंधो ताव अत्थि जाव उवसंत-खीणकसाय-सजोगिकेवलिचरिमसमओ त्ति । कम्हा ? जोगपच्चइगं ति काउ । सेसाण कम्माणं बंधो नत्थि । अजोगिकेवलिम्मि बंधपच्चयाभावाओ सव्वेसिं पि बंधो नत्थि ॥ ५८ ॥

---

१ गा गय त्ति, एगो भा१ ॥

एसो उ बंधसामित्तोहो गइयाइएसु वि तहेव । ओहाओ साहेज्जा, जत्थ जहा पगडिसब्भावो ॥५९॥

एसो उ बंधसामित्तोघो० गाहा । जो मिच्छद्दिट्ठियाइ-सजोगिपज्जवसाणो बंधभेदो भणिओ एसो बंधसामित्तोघो वुच्चइ । 'गइयाइएसु वि तहेव' त्ति मग्गणेसु गइयाइमेसु चोद्दससु मग्गणट्ठाणेसु 'तहेव' त्ति जहा ओघे भणियं तहा 'ओघाओ साहेज्जा' ओघमणिपाओ बंधविहीओ मग्गियविहीया साहेसु भणेज्ज । 'जत्थ जहा पगइसब्भावो' त्ति गइ-इंदियाइसु जेणं पुण कारणेण जहा पगतिसब्भावो हवइ त्ति भवपच्चय-गुणपच्चएण जोगा अजोगं जाणिसु माणियव्वं ति भणियं भवइ ॥५९॥

इयाणिं संतं पडुच्च संतकम्माणि सव्वगईसु अत्थि नत्थि त्ति एमित्थमणत्थं भण्णइ—

तित्थयर देव निरयाउय च तिसु तिसु गईसु बोधव्व ।

अवसेसा पगडीओ, हवंति सव्वासु वि गईसु ॥ ६० ॥

तित्थयर देव-निरयाउ० गाहा । 'तित्थगर देवनिरयाउगं च तिसु तिसु गईसु बोद्धव्व' त्ति । तित्थगरनामं देवाउग निरयाउगमिति एते तिण्णि वि तिसु तिसु गतीसु अत्थि। निरयगति देवगति मणुयगति एयासु तित्थगरनामं अत्थि, तिरिक्खेसु तित्थगरसंतकम्मिगो न उववज्जइ त्ति काउं तिरियगतीए तित्थगरसंतकम्मं नत्थि । तिरिक्ख-मणुय-देवगतीसु देवाउगं अत्थि, नेरइगा देवाउगं न बंधंति न उववज्जंति त्ति काउं, तेण निरयगईए देवाउगं नत्थि । तिरिय-मणु-नेरइएसु एएसु

1 °च जेण पगारेण जहा च०१ ॥ 2 °गो बोधव्व च०१ ॥

ति्सु निरयाउगं अत्थि, देवा निरयाउमं न बंधंति न उववज्जंति त्ति काउं, तेण देवेसु निरयाउगं नत्थि। 'अवसेसा पगईओ भवंति सव्वासु वि गतीसु' सेसाओ सव्वपगईओ सव्वगतीसु वि संतकम्म पडुच्च अत्थि ॥ ६० ॥

इदाणि उवसमणाए अवसरो पत्तो, तं भण्णइ—

पढमकसायचउक्कं, दंसणतिग सत्तगा वि उवसंता ।
अविरयसम्मत्ताओ, जाव नियट्टि त्ति नायव्वा ॥ ६१ ॥

पढमकसायचउक्क० गाहा । पढमकसाया–अणंताणुबंधिणो[1] 'दंसणतिगं' सम्मत्त-मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्तादि ' सत्त-गा वि' त्ति एयाओ सत्त वि कम्मपयडीओ ' उवसंत' त्ति उवसामियाओ । ' अविरयसम्मत्ताओ जाव नियट्टि' त्ति अविर यसम्मदिट्ठि-संजयासंजय-पमत्त-अपमत्तसंजय अपुव्वकरणा एएसु सव्वेसु उवसंता लब्भंति । किं भणियं भवइ ? अपुव्वकरणं मोत्तूण सेसा एएसिं उवसामगाउ, अपुव्वकरणम्मि नियमा उवसंता लब्भंति ।

तत्थ उवसामणा अणंताणुबंधीणं भण्णइ—असंजयादीणं तिण्हं अन्नयरो अन्नयरे जोगे तिण्हं विसुद्धाणं लेसाणं सागा रोवजोगे य वट्टमाणो अंतोकोडाकोडीठितिसंतकम्मिओ परियत्तमाणीओ सुभपयतीओ चेव बंधति । समए समए असुभाणं कम्माणं अणुभाग अणंतगुणहाणी पकरेति, सुभाणं कम्माणं अणंतगुणवड्ढी पकरेति । ठितिबंधे वि पुण्णे पुण्णे पलिओवमसंखे

1 °भस्स सं खं१ ॥

ज्जइभागं ओसरिऊण बंधइ । करणकालाओ पुव्वं पि अंतोमुहुत्तं विसुज्झंतो अच्छदि । अच्छिऊण एत्थ तिण्णि करणाइं करेइ अंतोमुहुत्तियाइं, तं जहा—अहापवत्तकरणं अपुव्वकरणं अणियट्टिकरणं ति । चउत्थी उवसमद्धा । तत्थ अहापवत्तकरणं णाम समए समए अणंतगुणाए विसोहीए वड्ढदि, ण तत्थ ठिदिघाओ वा रसघाओ वा गुणसेढी वा गुणसंकमो वा अत्थि । तत्थ असंखेज्जलोगागासपएसमेत्ताणि विसोहिट्ठाणाणि । जे पढमसमए पडिवज्जंति तेसिं छट्ठाणपडियाणि असंखेज्जाणि ठाणाणि । तत्थ पढमसमए जहण्णिया विसोही थोवा, बिदियसमए जहण्णिया विसोही अणंतगुणा, तदियसमए जहण्णिया विसोही अणंतगुणा, एवं जाव तस्स करणस्स संखेज्जइभागो त्ति । तओ पढमसमए अहापवत्तस्स उक्कस्सियाए विसोहीए पडिवज्जस्स जा विसोही सा अणंतगुणा, तओ जत्तो जहण्णियाओ णियत्तो तओ उवरिल्लयं जहण्णयं विसोहिट्ठाणं अणंतगुणं, तओ बिदियसमए उक्कस्सिया विसोही[1] अणंतगुणा, तओ उवरिल्लं जहण्णयं ठाणं अणंतगुणं, तओ तदियसमए उक्कस्सिया विसोही अणंतगुणा । एवं जहण्णयं उक्कस्सयं च अणुयंतेण अणंतगुणाए सेढीए णेयव्वं जाव अहापवत्तकरणस्स अंतिमसमओ त्ति । तओ उक्कस्साणि ठाणाणि अणंतगुणाए सेढीए णेयव्वाणि जाव अहापवत्तकरणस्स चरिमाओ उक्कस्सियाओ त्ति । चरिमा उक्कस्सियाओ विसोहीओ चरिमसमए उक्कस्सिया विसोही अणंतगुणा । एवं अहापवत्तकरणं भणियं ।

अपुव्वकरणस्स असंखेज्जलोगागासपएसमेत्ताणि विसोहिट्ठाणाणि । तस्स पढमसमए पडिवज्जमाणाणं छट्ठाणपडियाणि असंखेज्जाणि ठाणाणि । तत्थ पढमसमए जहण्णिया जा विसोही थोवा, सा य अहापवत्तचरिमसमयचरिमट्ठाणविसोहीओ

[1] टी एवं अ प्र० ।

पि अणंतगुणा, तओ अपुव्वकरणस्स पढमसमयम्मि चेव उक्कस्सिया विसोही अणंतगुणा, तओ बिवियसमए जहण्णिया विसोही अणंतगुणा । एव जहण्णय उक्कस्सयं च सेढीए नेयव्वं जाव अपुव्वकरणस्स चरिमसमओ त्ति । अपुव्वकरणस्स चरिम समए जहण्णिया विसोही दुचरिमसमयउक्कस्सगाओ विसोहीओ अणंतगुणा, तस्सेवुक्कस्सिया विसोही अणंतगुणा । अपुव्व करणं ति किं भणियं भवइ ? अपुव्वं अपुव्वं किरियं निव्वत्तयति त्ति अपुव्वकरणं । तस्स पढमसमए ठितिघाओ रसघाओ गुण सेढी गुणसंकमो अण्णो ठितिबंधो य जुगवं पवत्तंति [त्ति] अपुव्व करणं भण्णइ । तत्थ ठितिघाओ नाम ठितिसंतकम्मस्स अग्गग्गाओ उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहत्तं जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं ठितिं छिंदितु त दलियं हेट्ठओ जाओ ठिती ओ न खंडेति तत्थ छुभति । अंतोमुहुत्तेण तं दलियं उक्किरति । तओ पुणो हेट्ठाओ पलिओवमस्स संखेज्जइभागं तेणेव कमेण छिंदति निक्खिवति य । एवं अपुव्वकरणद्धाए ठितिखंडसहस्साणि बहूणि भवाणि भवंति । तओ अपुव्वकरणद्धा समत्ता भवति । अपुव्वकरणस्स पढमसमए जं ठितिसंतकम्मं त तस्सेव चरिमसमए संखेज्जगुणहीणं जायं ।

तत्थ अणुभागघाओ णाम जं असुभपगतीणं अणुभागसंतकम्मं तस्स अणंतिमं भागं मोत्तूण अंतोमुहुत्तेण समए समए अणंता अणुभागा विणासिज्जंति । तओ पुणो सेसस्स अणंतिमं भागं मोत्तूण अंतोमुहुत्तेण अणंता भागा विणासिज्जंति । एवं पुणो पुणो एगम्मि ठितिखंडगकाले अणेगाइं अणुभागखंडगसहस्साइं जंति । एवं बहूहिं ठितिखंडेहिं अपुव्वकरणं परि समत्तं भवति ।

---

१ पत्त त्ति भ चो१ ॥

तत्थ गुणसेढी नाम कालओ अपुव्वकरणद्धाओ अणियट्टिकरणद्धाओ [१] य विसेसाहिगो गच्छो ठविज्जति । अंतोमुहुत्तपमाणमेत्तासु ठितिसु उवरिल्लाउ ठितीउ दलियं घेत्तूण उदयावलियाउ उवरिल्लीसु ठितीसु अंतोमुहुत्तप्पमाणमेत्तासु दलियं निक्खिवति । जं पढमसमए निक्खिप्पमाणं दलियं तं गुणसेढीए मूलिल्लठितीए थोवं, ततो बितियठितीए असंखेज्जगुणं, एवं जाव अंतोमुहुत्तं चरिमिया ठिति त्ति । एवं बितियसमयगहियं पढमसमयगहियाओ दलियाओ असंखेज्जगुणं नेयव्वं । बितियसमए वि निक्खिप्पमाणं एवं चेव भाणियव्वं । एवं ततियसमए वि गहण-निक्खेवाई नेयव्वाई । गुणसेढीनिक्खेवो सेसे सेसेसु समएसु । एसा गुणसेढी ।

गुणसंकमो नाम—अपुव्वकरणस्स पढमसमए जं परपगई संकामेइ अणंताणुबंधिमाईणं असुहाणं दलिय तं थोवं, बितियसमए जं परपगई संकामिज्जति तं असंखेज्जगुणं, ततियसमए असंखेज्जगुणं, एवं नेयव्वं । एसो गुणसंकमो ।

अण्णो ठितिबंधो वि अपुव्वकरणस्स पढमसमए अण्णो सुहुलओ ठितिबंधो आढविज्जति । ठितिबंधो ठितिखंडग य जुगवं आढप्पति जुगवं च निट्ठविज्जति । एए पंच अहिगारा अपुव्वकरणस्स पढमसमए जुगवं आढविज्जति । एवं अपुव्वकरणं भणियं ।

अणियट्टिकरणं नाम अण्णोण्णं नाइवट्टंति परिणामाईहिं ति अणियट्टी । किं भणियं भवइ ? भण्णइ—अणियट्टिद्धाए जे पढमसमए पडिवण्णा तेसिं सव्वेसिं परिणामो तुल्लो, बितियसमए वि जे वट्टंति तेसिं सव्वेसिं परिणामो तुल्लो, एवं

१ तालिपत्रीयप्रत्यां पाठ [illegible] ।

नेयव्वं ताव जाव चरिमसमए वि सव्वेसिं तुल्लो परिणामो। अणियट्टीकरणस्स परिणामट्ठाणाणि अंतोमुहुत्तसमयमेत्ताणि। अणियट्टिकरणस्स एक्कम्मि एक्कम्मि समए वट्टमाणाणं विगप्पो नत्थि। तस्स वि पढमसमए पुव्वुत्ता पंच अहिगारा जुगवं पवत्तंति। एत्थ अणियट्टिअद्धाए संखेज्जेसु भागेसु गएसु अणंताणुबंधीणं अंतरं करेति, हेट्ठओ आवलियामेत्तं मोत्तूणं। तओ उवरिं अंतोमुहुत्तमेत्तं ठितिं खंडइ। तत्थ उक्किरिज्जमाणं दलियं परपगतीसु बज्झमाणासु संकामेति। अंतोमुहुत्तेणं ठिति बंधगद्धाए समं अंतरं कीरमाणं कयं भवति। तओ दुसमयकए अंतरे चत्तारि वि पढमकसाए जुगवं च उवसामेति, तम्मि चेव समए पढमट्ठितिआवलियागयं दलियं थिबुगसंकमेणं वेदिज्जमाणीसु पगईसु संछुभति उवरिमठितिगयं च उवसामेति। उवसामणा णाम जहा धूली पाणिएण सित्ता कुट्टमादीहिं कोट्टिया निप्फन्ना भवति, एवं कम्मधूली वि विसोहिपाणियपरिसित्ता अणियट्टिकरणकिरियाकोट्टिया उदय-उदीरण-संकम निहत्ति-निकायणाण ण जोग्गा भवति। तं पढमसमए थोवं दलियं उवसामेति, बितियसमए असंखेज्जगुणं दलियं, तइयसमए असंखेज्जगुणं, एवं जाव अंतोमुहुत्तं कालं। एव भणता पुव्वचिणो उवसंता भवंति। एय एक्कीयमएण भणियं। अण्णेसिं आयरियाण अणंताणुबंधीणं उवसामणा नाम नत्थि, विसंजोयणा णाम अणंताणुबंधीणं भवति। ते कहं विसंजोएंति? भण्णइ—पुव्वुत्ता असंजयादओ तिन्नि वेदगसम्मद्दिट्ठिणो चउगइया—नारग-देवा अविरयसम्मद्दिट्ठी, तिरिया अविरयसम्मद्दिट्ठी देसविरया य, मणुया अविरया देसविरया विरया य। एए अहासंभवं विसोहिवेगेण परिणता अणंताणुबंधिणो विसंजोयणत्थं तिण्णि करणाइं करिंति, तं०—अहापवत्त अपु

१ छामिए तम्मि ॥

करणे अभिपडिकरणं च। करणाणं लक्खणं पुव्वुत्तं। पूर्ववत् ठितिघायादि जाव अणियट्टिकरणं पत्तो अणंताणुबंधिणो ठिति ठाइंतो ठाइंतो पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमेत्तं करेति। उव्वट्टणाविही जहा कम्मपगडीसंगहणीए उव्वलणसंकमे तहा भाणियव्वं। तं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागठितियं सजातीयासु मोहपगतीसु परिणामेति। पढमसमए थोवं परिणामेति, बितियसमए असंखेज्जगुणं, एवं जाव चरिमसमए सव्वसंकमेण असंखेज्जगुणं परिणामेति, आवलियागयं मोत्तूण। आवलियागयं थिबुक्कसंकमेणं वेदिज्जमाणीसु पगडीसु संकमेति। एवं अणंताणुबंधिणो विसंजोइया भवंति ताहे चउवीससंतकम्मिओ भवति। अणंताणुबंधीणं विसंजोयणा भणिया।

इदाणिं दंसणतिगस्स उवसामणा भण्णति—तत्थ मिच्छत्तस्स उवसामगो मिच्छद्दिट्ठी वेदगसम्मद्दिट्ठी य[1], इयरेसिं दोण्हं वेयगसम्मद्दिट्ठी चेव उवसामगो। तत्थ मिच्छद्दिट्ठिस्स मिच्छत्तउवसामणे विही जहा कम्मपगडीसंगहणीए पढमसम्मत्त उप्पाएंतस्स तहा चेव भाणियव्वा, नवरि मिच्छद्दिट्ठिस्स चेव सम्मत्तं देसविरतं सव्वविरतं वा सम्मत्तसहियं पडिवज्जमाणस्स, त पढम असंजय-देसविरय-पमत्ता-ऽपमत्तसंजयस्स वरिसपुहत्तिगं उवसंतं लब्भइ, सेढीओ य पडिवडियाणं असंजयादीणं। इयाणिं वेयगसम्मद्दिट्ठिस्स मिच्छत्तादितिगं उवसामेन्तस्स विही भण्णति—सो उवसमसेढिं पडिवज्जिउकामो पढमं अणंताणुबंधिणो विसंजोएति, तं विसंजोएन्तस्स विही भणिओ। तओ अंतोमुहुत्तेणं दंसणमोहतिगं संजमे वट्टमाणो उवसामेति, अणंताणुबंधिणो विसंजोएन्तस्स जाणि करणाणि अहापवत्तादीणि परूविताणि जाव अणियट्टिअद्धाए अन्तरकरणं करेति

1 "मिच्छद्दिट्ठी वेयगसम्मद्दिट्ठी" इतिपाठः॥

ताप पत्य वि तहा चेव भाणियव्व। अंतरकरणं करेंतो चेदगसम्मत्तस्स पढमट्ठिदिं अंतोमुहुत्तं ठवेदि, सेसाणं दोण्हं आवलिय मेत्त पढमठिदिं ठवेदा किंचूणसुदुवम्पमाणमेत्तं ठिदिं खंडेदि। पज्जमाणीय पमडीनं ठिदिबंधद्धापमाणमेत्तेण कालेण उक्किरिज्जमाणं दलियं सम्मत्तस्स पढमट्ठिदीए पक्खिवदि, सम्मत्तस्स बंधाभावाओ। एवं अंतरं कीरमाणं कयं भवदि। मिच्छत्त सम्मामिच्छत्ताणं पढमट्ठिदीओ सम्मत्तस्स पढमठिदीए थिवुगसंकमेण संकामेदि। एवं सम्मत्तस्स पढमट्ठिदीए खीणाए उव समसम्माइट्ठी भवदि। एवं तिण्णि वि उवसंताइं कुणेदि। तओ अंतोमुहुत्तेण उवसंतदंसणमोहणिज्जो चरित्तमोहं उवसामे उकामो अहापवत्तादीणि तिण्णि करणाणि करेदि। तेसिं लक्खणं पुव्वुत्त, णवरि अहापवत्तकरणं अपमत्तगुणट्ठाणे भवदि, अपुव्वकरणं अपुव्वकरणगुणट्ठाणम्मि चेव। तत्थ ट्ठिदिघादादीणि पुव्वुत्ताणि। णवरि सव्वासिं असुहपगडीणं अणन्तसमाणीण अपुव्वकरणपढमसमए चेव गुणसंकमो पवत्तदि। अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जदिमे भागे गए णिद्दा-पयलाणं बंधो वोच्छिज्जदि। तओ बहूहिं ठिदिखंडगसहस्सेहिं गएहिं अपुव्वकरणद्धाए संखेज्जा भागा गया भवंति। तत्थ परभवियाणं णामाणं तीसाए पगडीणं बंधवोच्छेदो भवदि। तओ ठिदिखंडगपुधत्ते गदे अपुव्वकरणद्धाए चरिमसमए हास-रइ भय दुगुंछाणं चउण्हं कम्माणं बंधवोच्छेदो, हास रदि-अरदि सोग भय-दुगुंछाणं च छण्हं कम्माणं उदयवोच्छेदो य, सव्वकम्माणं च अपसत्थउवसमणा णिधत्ति-णिकाचणाकरणाइं च वोच्छिज्जंति। एएसु असंजयादि-अपुव्वंतेसु सत्त कम्माणि उवसंताणि हवंति।

'वत्ताइ वय ग पवरए घोम्म अघरउ च 'पगुणीसा। एगादि दु परणीसा पगुणीसा वासरे वाव॥

---

१ मातेसा एसेतु सूक्ष्मआदर्शेनूपलम्यते॥ २ कमवी गे१॥

मणुयगत० भाए । तओ बितियसमए अणियट्टिओ जाओ । अणियट्टिम्मि वि ठितिघायादीणि करेइ । एवं ठितिसंतकम्मं थोरस्स परिहायमाणं परिहायमाणं अणियट्टिस्स पढमसमयट्ठितिसंतकम्माओ' संखेज्जगुणहीणं जायं । अणियट्टिअद्धाए संखेज्जेसु भागेसु गएसु ताहे एक्कवीसाए पगतीणं अंतरं करेइ । एत्थ अणुदयवत्त-अणियट्टिअद्धासु अणेगाई वासमाई जहा कसायपाहुडे कम्मपगडिसंगहणीए वा तहा भणई । अंतरं किच्चा नपुंसगवेदं उवसामेइ, उवसामणाविही पूर्ववत् । एवं अट्ठ उवसंताणि । तओ अंतोमुहुत्तेणं इत्थिवेयं उवसामेइ, उवसामिए नव । तओ अंतोमुहुत्तेण छण्णोकसाए उवसामेइ, एवं पण्णरस उवसंता भवंति । तम्मि चेव समए पुरिसवेयस्स बंधोदयवोच्छेओ भवति । तओ समऊणदुआवलियाहिं पुरिसवेयं उवसामेइ, उवसंते सोलस । तओ अंतोमुहुत्तेण अपच्चक्खाणावरण-पच्चक्खाणावरणकोहे दो वि जुगवं उवसामेइ, एवं अट्ठारस । तम्मि चेव समए कोहसंजलणाए बंधोदयोदीरणावोच्छेओ य । तओ समऊणदुआवलियाहिं कोहसंजलणं उवसामेइ, एगूणवीसं । तओ अंतोमुहुत्तेणं अपच्चक्खाणावरण-पच्चक्खाणावरणमाणे दो वि जुगवं उवसामेइ, उवसंते एक्कवीसं । तम्मि चेव समए माणसंजलणाए बंधोदयोदीरणावोच्छेओ य । तओ समऊणदुआवलियाहिं माणसंजलणं उवसामेति, उवसंते बावीसं । तओ अंतोमुहुत्तेणं अपच्चक्खाणावरण-पच्चक्खाणावरणमायाओ दो वि जुगवं उवसामेइ, उवसंते चउवीसं । तम्मि चेव समए मायासंजलणाए बंधोदओदीरणावोच्छेओ य । तओ सेकाले लोभवेयगो लोभवेयगद्धाए दोसु तिभागेसु बीयट्ठितीओ दलियं आणेइ पढमट्ठितिं करेति । तत्थ पढमो तिभागो अस्सकण्णकरणद्धा, तम्मि विसोहीए वड्ढमाणो अपु

१ मो अवंतरं' पा१ ॥ २ वोच्छिज्जंति । तओ स' पा१ ॥

वक्कुगाई करेइ । मायासंजलणाए बंधे वोच्छिण्णे तओ समऊणदुआवलियाई मायासंजलणं उवसामेइ, उवसंते पणुवीसं । असंकण्णकरणे बहुमाणो एवं असंकण्णकरणद्धाए कयाए तओ लोभवेयगद्धाए बिइए तिभागे वट्टमाणो लोभसंजलणाए किट्टीओ करेइ जाव अंतसमयं । किट्टीकरणद्धाए चरिमसमए अपच्चक्खाणावरण-पच्चक्खाणावरणलोभे दो वि जुगव उवसामेइ, उवसंते सत्तावीसं उवसंता भवंति । तम्मि चेव समए लोहसंजलणाए बंधवोच्छेओ बायरलोभोदयवोच्छेओ य । तओ सेकाले सुहुमसंपराइओ होइ । किट्टीकयाओ दलियाओ भावेसु पढमट्ठिइं करेइ वेयइ य ।

'सत्तावीसं सुहुमे अट्ठावीसं' पि मोहपयडीओ । उवसंतवीयराए उवसंता होंति नायव्वा ॥

सत्तावीसं सुहुमे० गाहा । सत्तगाओ आरब्भ जाव पणुवीसं ताव बायरो त्ति अनियट्टी तम्मि उवसंताइं लब्भंति । सत्तावीसं सुहुमरागम्मि उवसंताइं लब्भंति । सुहुमसंपराइगद्धा अंतोमुहुत्त, तम्मि काले सुहुमकिट्टीकय समऊणदुआवलिय बद्धं च उवसामेति । सुहुमसंपराइगस्स चरिमसमए लोभसंजलणा उवसंता भवति । तम्मि चेव समए पंचण्ह णाणावरणीयाणं चउण्ह दंसणावरणीयाणं पंचण्हं अंतराइयाणं जसकित्ति उच्चागोयस्स य बंधवोच्छेदो । तओ सेकाले उवसंतकसाओ भवति, तम्मि 'अट्ठावीसं पि मोहपगडीओ उवसंतवीयरागे उवसंता इति नायव्व' त्ति उवसंतकसायम्मि अट्ठावीसं पि मोहपगडीओ उवसंताओ भवंति । उवसंतकसाओ वीयरागो उवसंतवीयरागो, सो जहण्णेण एगं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्त काल लब्भइ । तस्स परिवडणं नियमा भवक्खएण वा अद्धाखएण वा । भवक्खओ मरंतस्स, अद्धाखओ उवसंतद्धाए पुण्णाए

१ इमा गाहा चिण्णि मूलसुत्तवित्तिसु दिसए ॥ २ सं च मो चेर ॥

परिवडति। सो जहा आरूढो तहा चेव परिवडति, जहिं उवओदीरण संघाओ ठिया तहिं तहिं परिवडतस्स ते आढवि ज्जंति, एवं जाव पमत्तसंजओ ताव परिवडति, तओ हेट्ठिल्लं अणंतरदुग पि कोइ पावइ, सासणभावं पि गच्छति कोइ। जो भवक्खएण परिवडति सस्स पढमसमए चेव सव्वकरणाइं पवत्तंति। एत्थ विसेसो—उक्कोसेण एगभवे दो वाराओ उवसम सेढिं पडिवज्जति, जो दुवे वारे उवसमसेढिं पडिवज्जइ तस्स नियमा तम्मि भवे खवगसेढी नत्थि, जो एक्कसिं उवसमसेढिं पडिवज्जइ तस्स खवगसेढी होज्ज वा। विसेसपवंचो जहा कम्मपगडिसंगहणीए ॥ ६१ ॥

एवं उवसमसेढी परूविया। इदाणिं खवगसेढी भण्णइ—

पढमकसायचउक्कं, इत्तो मिच्छत्तमीससम्मत्तं। अविरयसम्मे देसे[1], पमत्त अपमत्त खीयत्ति॥ ६२॥

पढमकसायचउक्कं० गाहा। जो खवगसेढिं पडिवज्जति सो नियमा मणूसो अट्ठवासाओ उवरिं वट्टमाणो। सो पढममेव अणंताणुबंधिणो विसंजोएइ वा खवेइ त्ति वा एगट्ठं। विसंजोयणविही पुव्वभणिया तहा चेव। एवं अणंताणुबंधिणो विसंजो एउं 'एत्तो मिच्छत्तमीससम्मत्तं' ति तओ अंतोमुहुत्तेणं दंसणमोहक्खवणत्थं तिण्णि करणाणि करेइ, करणाणं लक्खणं पुव्वुत्तं जाव अणियट्टिकरणं ताव एवं नायव्वं। अणियट्टिअद्धाए वट्टमाणो दंसणतिगस्स ठितिसंतं उव्वट्टेंतो उव्वट्टेंतो पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं करेइ, तओ मिच्छत्तदलियं सम्मामिच्छत्त-सम्मत्तेसु पक्खिवति—पढमसमए थोवं, बितिय

1 'से विरय पमत्त'ऽपमत्त य खी' बै१ बे२ ॥

समए असंखेज्जगुण, एवं जाव अंतोमुहुत्तेण कालेणं सव्वं संकामेति । चरमसमए आवलियागयं मोत्तूण सेसं सव्वसंकमणाए संकामेति, एवं मिच्छत्तं खवियं भवति । तओ अंतोमुहुत्तेणं सम्मामिच्छत्तं पि एएणेव कमेण सम्मत्ते पक्खिवति, एव सम्मा मिच्छत्तं खविय भवति । तओ सम्मत्त उव्वट्टिज्जमाणं उव्वट्टिज्जमाण अंतोमुहुत्तेणं कालेणं अंतोमुहुत्तठितीयं जायं । त कमेण वेदिज्जमाणं वेदिज्जमाण समयाहियावलियसेसं जाय, तम्मि समए उदीरणा फिट्टति । तओ उदएण चेव वेदेंतो वेदेंतो चर मसमयवेयगसम्मद्दिट्ठी जाओ । तओ सेकाले खइगसम्मद्दिट्ठी जाओ । एव दंसणखविगस्स खवणा भणिया ।

एए पुण कम्मसे को खवेति ? भण्णति—'अविरयसम्मे देसविरय-पमत्ता ऽपमत्ते य खीयति 'त्ति । असंजयसम्मद्दिट्ठीपभिति जाव अप्पमत्तसंजओ ताव एए सत्त वि कम्मसे खवेति । जइ बद्धाउगो तो एत्थ चेव ठाति । अबद्धाउगो तो अंतोमुहुत्तेण पुणो चरित्तमोहखवणनिमित्तं अहापवत्तादीणि तिण्णि करणाणि करेति । तसिं लक्खणं परिभासा य पुव्वुत्ता । अणंतरं जहा उवसामगस्स तहा चेव ठितिघायादीहिं कम्माणि खविज्जमाणाणि खविज्जमाणाणि अणियट्टिअद्धाए पलिओव मस्स असंखेज्जइभागमेत्तठितिगाणि जायाणि ।

अणियट्टियाबरे थीणगिद्धिनिग निरयतिरियनामाओ । संखेज्जइमे सेसे तप्पाओग्गाओ खीयंति ॥

अणियट्टियाबरे थीण० गाहा । अणियट्टिअद्धाए असंखेज्जेसु भागेसु गतेसु थीणगिद्धितिग निरयगति तिरियगति एगिंदिय-बे० ते०-चउरिंदियजाइ निरय तिरियाणुपुव्वीओ आयाव उज्जोव थावर सुहुम साहारणमिति एएसिं सोलसण्हं कम्माणं

---

१ सर्वास्वपि मूलसूत्रप्रतिष्वियं गाथोपलभ्यते ॥

उवसमविहिया उवट्टिज्जमाणा उवट्टिज्जमाणा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमेत्ता ठिती जाया। ततो बज्झमाणियासु गुण-संकमेण छुब्भंताणि छुब्भंताणि खीणाणि भवंति।

पत्ते दसए खवगस्स वि पच्छा चउत्थं इत्थि। तो नोकसायछक्कं छुभइ संजलणकोहम्मि॥

एसा एयस्स गाहा। अट्ठ कसाया—अपच्चक्खाणावरण-पच्चक्खाणावरणा। एए अट्ठ वि पुव्व खविउमारद्धा अंतोमुहुत्तं खवि-ज्जमाणा खविज्जमाणा गया न ताव खविया। तत्थ किर सोलस पुव्वुत्ताणि कम्माणि खविउमारद्धाणि खविज्जमाणाणि खविज्ज-माणाणि अंतरं खीणाणि भवंति। पच्छा अट्ठ कसाया उवसमविहिया अंतोमुहुत्तेणं खीयंति त्ति। एस परोवि मतं। अण्णे सुत्तादेसो। ततो अंतोमुहुत्तेणं परेणं नोकसायाणं चउण्ह संजलणाणं य अंतरकरणं करेति। अंतरकरणविही जहा कम्म-पगडीसंगहणीए। अंतरं करेतु नपुंसगवेयं खवेउमाढवेति, खवणविही उवसमणालक्खणेणं। अंतरकरणस्स उवरिमठिति संछुब्भमाणं अंतोमुहुत्तेण संछुब्भ भवति। एवं नपुंसगवेदो खीणो। ततो अंतोमुहुत्तेण इत्थिवेदो वि य एएणेव कमेण खयं गच्छति। ततो सत्त वि नोकसाए जुगवं खवेउमाढवेति। ततो पभिति छण्णोकसाया पुरिसवेदम्मि न संकमंति, कोहसं-जलणाए संकमंति। ततो खविज्जमाणा खविज्जमाणा अंतोमुहुत्तेणं 'तो नोकसायछक्कं पि छुभति संजलणकोहम्मि' त्ति

१-२ भाष्य ६ ॥ ३ पदमिदं नास्ति मूलादर्शेषु ॥

छण्णोकसाया कोहसंजलणाए संछुद्धा। तम्मि चेव समए पुरिसवेयस्स बंधोदयोदीरणावोच्छेओ, समऊणदुआवलियबद्धं मोत्तूण सेसदलियखओ य, तओ सेकाले अवेयगो।

कोहं वेदमाणस्स कोहद्धाए तिण्णि विभागा—अस्सकण्णकरणद्धा किट्टिकरणद्धा किट्टिवेयगद्ध त्ति। तत्थ अस्सकण्णकरणद्धाए वट्टमाणो अणुवाइ समए समए अपुव्वफड्डगाइं चउण्ह संजलणाणं करेति। किट्टिकरणद्धाए वट्टमाणो समए समए चउण्ह संजलणाणं बारस किट्टीओ करेति, एक्केक्कस्स कसायस्स तिण्णि तिण्णि पढमकिट्टी बितियकिट्टी ततियकिट्टि त्ति। एवं कोहेण पडिवण्णस्स। माणेण पडिवण्णो कोहे खविए उव्वलणाविहाणेणं सेसाण तिण्ह कसायाण नव किट्टीओ करेति पुव्वक्कमेणं। मायाए पडिवण्णो कोह-माणेहिं खविएहिं सेसदुगस्स छक्किट्टीओ करेति पुव्वक्कमेणं। लोभेण पडिवण्णो हेट्ठिल्ले खविए लोभस्स तिण्णि किट्टीओ करेति। एसा किट्टीकरणविही। तत्थ किट्टीवेयगद्धा—किट्टीकरणद्धाए निट्ठियाए कोहेण पडिवण्णो सेकाले पढमकिट्टीदलियं बितियठितिगयं उक्कड्डित्तु पढमठितिं करेइ वेदेइ य। पढमट्ठितिकरणं जहा कम्मपगडिसंगहणीए। तं कमेण वेदेति जाव समयाहियावलिया सेस त्ति। तम्मि समए बितियकिट्टीओ दलियं उक्कड्डित्तु पढमठितिं करेइ वेदेइ य, तं पि कमेण वेदेति जाव समयाहियावलिया सेस त्ति। तओ सेकाले कोहस्स ततियकिट्टीओ दलियं कड्डित्तु ततियकिट्टीए पढमठितिं करेति वेदेति य ताव जाव समयाहियावलिया सेस त्ति॥ ९२॥

पुरिसं कोहे कोहं, माणे माणं च छुहइ मायाए। मायं च छुहइ लोभे, लोभं सुहुमं[1] पि तो हणइ॥ ९२॥

---

१ मं च तो वे१। मं पि सो इ वे१॥

उवसमसिढिसा उक्किज्जमाणा उक्किज्जमाणा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमेत्ता ठिती जाया। तओ बज्झमाणियासु गुण-संकमेण छुब्भमाणि छुब्भंताणि खीणाणि भवंति।

[1]एत्तो हणइ कसायट्ठगं पि पच्छा नपुंसगं इत्थिं। तो नोकसायछक्कं छुभइ संजलणकोहम्मि ॥

एसा इणइ गाहा। अट्ठ कसाया—अपच्चक्खाणावरण-पच्चक्खाणावरणा। एए अट्ठ वि पुव्व खविज्जमाणा अंतोमुहुत्तं खवि ज्जमाणा खविज्जमाणा गया न ताव खविया। तस्स किर सोलस पुब्भुत्ताणि कम्माणि खविठमाणाणि खविज्जमाणाणि खविज्ज माणाणि अंतर खीणाणि भवंति। पच्छा अट्ठ कसाया उवसमविहिया अंतोमुहुत्तेणं खीयंति त्ति। एस एगेसिं मतं। अण्णे गणहरिया भणंति-सोलस कम्माणि पुव्व खविउमाढविज्जंति, तओ अंतरे पुव्वं अट्ठ कसाया खीयंति, पच्छा सोलसकम्माणि, एस सुत्तागमो। तओ अंतोमुहुत्तेण चउण्ह नोकसायाणं चउण्ह संजलणाणं य अंतरकरणं करेति। अंतरकरणविही जहा कम्म पगडीसंगहणीए। अंतरं करेत्तु नपुंसगवेयं खवेउमाढवेति, खवणविही उवसमालक्खणेणं। अंतरकरणस्स उवरिमठिति दलिय उक्किज्जमाणं उक्किज्जमाणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमेत्त जायं। तओ तं परपगईसु असंखेज्जगुणेणं संछुब्भमाणं संछुब्भमाणं अंतोमुहुत्तेण संछुद्धं भवति। एवं नपुंसगवेदो खीणो। तओ अंतोमुहुत्तेण इत्थिवेदो वि य एएणेव कमेण खयं गच्छति। तओ मण त्ति नोकसाए छुगवं खवेउमाढवेति। तओ पभिति छन्नोकसाया पुरिसवेदम्मि न संकमंति कोहसं जलणाए संकमंति। तओ खविज्जमाणा खविज्जमाणा अंतोमुहुत्तेणं 'तो नोकसायछक्कं पि छुभति संजलणकोहम्मि' त्ति

१ २ मार्ग मं ॥ १ एत्तोप्पभिति सूत्रपाठेषु कम्पते ॥

छण्णोकसाया कोहसंजलणाए संछुद्धा। तम्मि चेव समए पुरिसवेयस्स बंधोदयोदीरणवोच्छेओ, समऊणदुआवलियबद्धं मोत्तूण सेसदलियसंकमो य, तओ सेसकाले अवेयगो।

कोहं वेदमाणस्स कोहद्धाए तिण्णि विभागा—अस्सकण्णकरणद्धा किट्टिकरणद्धा किट्टिवेयणद्ध त्ति। तत्थ अस्सकण्णकरणद्धाए वट्टमाणो अणंताई समए समए अपुव्वफड्डगाई पढमं संजलणाण करेति। किट्टिकरणद्धाए वट्टमाणो समए समए चउण्हं संजलणाणं बारस किट्टीओ करेति, एक्केक्कस्स कसायस्स तिण्णि तिण्णि पढमकिट्टी बितियकिट्टी ततियकिट्टि त्ति। एव कोहेण पडिवण्णस्स। माणेण पडिवण्णो कोहे खविए उव्वलणाकमेणं सेसाणं तिण्ह कसायाणं नव किट्टीओ करेति पुव्वकमेणं। मायाए पडिवण्णो कोह-माणेहिं खविएहिं सेसदुगस्स छ किट्टीओ करेति पुव्वकमेणं। लोभेणं पडिवण्णो हेट्ठिगे खविए लोभस्स तिण्णि किट्टीओ करेति। एसा किट्टीकरणविही। तत्थ किट्टीवेयगद्धा—किट्टीकरणद्धाए निट्ठियाए कोहेण पडिवण्णो सेसकाले पढमकिट्टीदलियं बितियठितिगयं उक्कड्ढिउ पढमठितिय करेइ वेदेइ य। पढमट्ठितिकरणं जहा कम्मपगडिसंगहणीए। तं कमेण वेदेति जाव समयाहियावलिया सेस त्ति। तम्मि समए बितियकिट्टीओ दलिय उक्कड्ढिउ पढमठितिं करेइ वेदेइ य, तं पि कमेण वेदेति जाव समयाहियावलिया सेस त्ति। तओ सेसकाले कोहस्स ततियकिट्टीओ दलिय कड्ढिउ ततियकिट्टीए पढमठितिं करेति वेदति य ताव जाव समयाहियावलिया सेस त्ति॥ ६२॥

पुरिस कोहे कोहं, माणे माणं च छुहइ मायाए। मायं च छुहइ लोभे, लोभ सुहुमं [1] पि तो हणइ॥ ६२॥

१ मं व तो वे१। मं पि सो ह वे१॥

पुरिसं कोहे॰ माया। पुरिसवेदस्स बंधे वोच्छिण्णे तदो समयूणदुआवलियमेत्तेण कालेण अस्सकण्णकरणद्धाए वट्टमाणो पुरिसवेदं वेदेंतो कोहम्मि सव्वसंकमणाए संछुहदि। एवं पुरिसवेदो खीणो भवदि। 'कोहं माणे' त्ति तिण्णि वि कोहवेदगद्धासु वट्टमाणो कोहसंजलणं माणसंजलणाए य खिवंतो खिवंतो जाव तदियकिट्टिवेदगद्धाए चरिमसमओ ताव आगओ, तम्मि समए कोहसंजलणाए बंधोदओदीरणा य जुगवं फिट्टंति, संतकम्मं पि समयूणदुआवलियबद्धं मोत्तूण सव्वं माणम्मि पक्खित्तं, तदो सेकाले माणस्स पढमकिट्टीओ दलियं ओकड्डिदूण पढमट्ठिदिं करेदि वेदेदि य ताव जाव अंतोमुहुत्तं। कोहस्स बंधे वोच्छिण्णे कोहसंजलणाए दलियं ओकड्डिदि, तदो समऊणदुआवलियमेत्तेण कालेण खीयमाणं खीयमाणं माणम्मि सव्वसंकमेण संकमदि। एवं माणस्स पढमकिट्टीए पढमट्ठिदिं समयाहियावलिया सेस त्ति। तदो सेकाले माणस्स बिदियकिट्टीओ दलियं ओकड्डिदूण पढमट्ठिदिं करेदि वेदेदि य कमेण ताव जाव समयाहियावलिया सेसा त्ति। तदो सेकाले माणस्स तदियकिट्टीओ दलियं ओकड्डिदूण पढमट्ठिदिं करेदि वेदेदि य कमेण ताव जाव समयाहियावलिया सेसा त्ति। तम्मि समए माणस्स बंधोदओदीरणा य जुगवं फिट्टंति, संतकम्मं पि समयूणदुआवलियाबद्धं मोत्तूण सेसं सव्वं मायाए संछुद्धं। 'माणं च छुहदि मायाए' त्ति तदो सेकाले मायाए पढमकिट्टीओ दलियं ओकड्डिदूण पढमट्ठिदिं करेदि वेदेदि य कमेण ताव जाव अंतोमुहुत्तं कालं। माणसंजलणाए बंधे वोच्छिण्णे तदो समऊणदुआवलियमेत्तेण कालेण मायासंजलणम्मि सव्वसंकमेण माणं संछुहदि। तदो मायाए पढमकिट्टीए पढमट्ठिदीए समयाहियावलियाए सेसाए तदो सेकाले मायाए बिदियकिट्टीओ दलियं ओकड्डिदूण पढमट्ठिदिं करेदि वेदेदि य ताव जाव समयाहियावलिया सेसा त्ति। तदो सेकाले मायाए तदियकिट्टीओ

दलियं ओकड्डिउ पढमठिइं करेइ अंतोमुहुत्तमाणं वेएइ य ताव जाव समयाहियावलिया सेस त्ति । तम्मि समए मायाए बंधोदओदीरणा य जुगवं विच्छिति, संतकम्मं पि समऊणदुयावलियबद्धं मोत्तूण सेसं सव्वं लोभसंजलणम्मि पक्खित्तं । तओ सेकाले लोभस्स पढमकिट्टीओ दलिय ओकड्डिउ पढमठिइं करेइ अंतोमुहुत्तमाणमेव, तं च लोभवेयगद्धाए तिभागो वेदेइ य । मायासंजलणबंधे वोच्छिण्णे तओ समऊणदुआवलियमेत्तेणं कालेणं लोभम्मि मायासंजलणा सव्वसंकमेण संकंता भवति, 'मायं च छुभति लोभे' त्ति गयं । एव लोभसंजलणाए पढमकिट्टीओ पढमट्ठिती समयाहियआवलियसेसा जाया । तओ सेकाले लोभस्स बितियकिट्टीओ दलिय ओकड्डिउ पढमट्ठिइं करेइ वीयतिभागमेत्तं । तं वेयंतो बितियकिट्टीओ तइयकिट्टीओ य दलियं घेत्तूण सुहुमसंपराइयकिट्टीओ करेइ । तेसिं लक्खणं जहा कसायपाहुडे । एवं अंतोमुहुत्तं किट्टीओ करेति ताव जाव लोभस्स बितियकिट्टीए पढमट्ठिती समयाहियावलियसेस त्ति । तम्मि समए लोभसंजलणाए बंधवोच्छेओ बायरकसायाणं उदओदीरणावोच्छेओ अनियट्टिकालवोच्छेओ य जुगवं भवंति । तओ सेकाले सुहुमसंपराइगकिट्टीओ दलियं ओकड्डिउ पढमट्ठिइं करेइ ततियतिभागमेत्तं वेदेइ य । तओ सुहुमसंपराइगो भवइ । अतीयम्मि आवलिया छड्डियाओ ताओ सव्वत्थ वेतिज्जमाणीसु थिबुगसंकमेणं विपच्चंति । एसो चुण्णिसामिओ मयो, अओ इयाणिं भणिओ । 'लोभं सुहुमं पि तो हणति' त्ति सो सुहुमसंपराइगो लोभस्स सुहुमकिट्टिं वेदेमाणो सुहुमकिट्टीकयं दलियं समऊणदुआवलियबद्धं च समए समए खवेइ ठिइघायादीहिं । एव जाव सुहुमसंपराइगद्धाए संखेज्जा भागा गय त्ति । तओ संखेज्जइमे लोभसंजलणं सव्वोवट्टणाए उवट्टेउ सेससुहुमसंपराइगद्धाए संकमं करेइ, सा य अंतोमुहुत्तमेत्ता । तओ पभिति मोहस्स ठितिघाओ नत्थि, सेसाणं

कम्माणं ठिइघायादओ पवत्तंति चेव । ते ओवट्टियठितिं उदओदीरणाहिं वेदेंतो वेदेंतो गओ ताव जाव समयाहियावलिया सेस त्ति । तम्मि समए उदीरणा वुच्छिन्ना किट्टा । उदएण चेव वेदेति ताव जाव चरिमसमओ त्ति । तम्मि समए सुहुमसंपराइयस्स पंचण्हं णाणावरणाणं चउण्हं दंसणावरणाणं जसकित्ती उच्चागोय पंचण्हमंतराइयाण एएसिं सोलसण्ह कम्माणं बंधवोच्छेओ मोहणिज्जस्स उदय-संतवोच्छेदो य भवति । ततो सेकाले खीणकसाओ जाओ । तस्स खीणकसायस्स ठिति घायादओ पुव्ववत् । एवं खीणकसायद्धासंखेज्जइभागसेसाए संखेज्जसु भागेसु गतेसु संखेज्जइमे सेसे पंच णाणावरण छद्दंस णावरण पंचन्हमंतराइगाणं एएसिं सोलसण्हं कम्माणं ठितिसंतकम्मं ओवट्टणाए उवट्टेइ सेसखीणकसायद्धासमं करेइ । तओ पभिइं एयासिं ठिइघाओ किट्टो, सेसाण अत्थि चेव, नवरिं निद्दादुगस्स एक्केण समएण ऊणियठितिं ठवेइ । दलिय पढुम सओ उ उओ ।

'खीणकसाय दुचरिमे निद्दं पयलं च हणइ छउमत्थो । आवरणमंतराए छउमत्थो चरिमसमयम्मि ॥

खीणकसायदुचरिमे निद्दं पयलं च हणति छउमत्थो० त्ति । एवं खीणकसाओ कम्माणि तिण्णि उदएणेव सवेंतो सवेंतो गओ ताव जाव समयाहियावलिया सेस त्ति । निद्दादुगवज्जियाणं चोद्दसण्हं कम्माणं उदीरणा किट्टा । ततो आवलियामत्तं कालं उदएणेव वेदयति ताव जाव खीणकसायस्स दुचरिमसमओ त्ति । तम्मि दुचरिमसमए निद्दादुगाणि विदुगाणि अण्णहिं संकंताणि एवं निद्दादुगं खीणं उदयाभावाओ । 'आवरणमंतराए छउमत्थो चरिमसमयम्मि' त्ति एयासिं चोद्दसण्हं पग

१ गाथेयं [illegible] ॥

तओ य सेकाले आवरणविग्घरहिओ केवली भवति ।

खीणे उदए सव्वओ खीणकसायस्स चरिमसमए भवति । (आवस्सयनिज्जुत्ती १२७)

संभिन्नं पासंतो लोगमलोगं च सव्वओ सव्वं । तं नत्थि जं न पासइ, भूयं भव्वं भविस्सं च ॥

भवं संभिन्नं पासतो॰ गाहा । आउन्तेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं पुव्वकोर्डि देसूण केवली विहरिय समुग्घाय गतूण वा अपाइकम्माण खवणनिमित्त सुहुमकिरियमप्पडिवाइं झाणमब्भुवेइ, पुव्वं ताव मणजोग बायरं निरुंभइ, तओ वइओ तए वा अघाइकम्माण खवणनिमित्त सुहुमकिरियमप्पडिवाइं झाणमब्भुवेइ, पुव्वं ताव मणजोग बायरं निरुंभइ, तओ वइजोगं, तओ सुहुमं कायजोग निरुंभंतो सुहुमं, तओ कायजोग बायरं निरुंभति, तओ मणजोग सुहुमं निरुंभइ, तओ वइजोगं, तओ सुहुमं कायजोग निरुंभंतो सुहुमुस्सासो सुहुमकिरियमप्पडिवाइज्झाण समस्सियइ । तम्मि झाणम्मि वट्टमाणो आउगवज्जाणि सव्वकम्माणि उव्वट्टेति ठिति रसघाएहिं ताव जाव चरिमसमयसजोगिकेवलि त्ति । तस्स चरिमसमयसजोगिकेवलिस्स सव्वकम्माणि उव्वट्टिज्जमाणाणि उव्वट्टिज्जमाणाणि सजोगद्धाए उव्वट्टियाणि अजोगिकेवलिकालसमठितियाणि जायाणि । जेसिं कम्माण अजोगिम्मि उदओ नत्थि तेसिं ठितिं समऊणं ठवेइ, दलियं पडुच्च, न कालं । तम्मि चेव समए ओरालिय-तेया-कम्मइगसरीरसंघायणं बंधण संघाय छन्हं संठाणाण पढमसंघयण ओरालियंगोवंगं वण्ण गंध रस फास अगरु॰ उवघाय पराघाय विहग॰ २ पत्तेय थिराथिर सुभासुभ निमेणणामाण एएसिं कम्माणं उदओदीरणाणं वोच्छेओ, ऊसास-सरा देहओ निरुद्धा । तओ सेकाले अजोगिकेवली जाओ, तस्स कालो अजहन्नमणुक्कोसिओ अंतोमुहुत्तिओ । तम्मि काले वट्टमाणो उवरयकिरिय अप्पडिवाइ झाण झियाइ कम्माण खवणनिमित्त । एस सो अजोगिकेवली ठिति घायाइरहिओ उदयवंताणि ठितिक्खएण अणुभवतो खवेइ । जेसिं उदओ नत्थि ताणि ठितिक्खएणं वेयंतो वेदिज्जमाणिगासु थिबुगसंकमेण संकामेंतो वेदिज्जमाणपगतिरूवेण

वेदेंतो वेदेंतो जाव ताव जाव दुचरिमसमओ त्ति ॥ ६३ ॥

देवगइसहगयाओ, दुचरिमसमयभवियम्मि खीयंति। सविवागेयरणामा, णीयागोय पि तत्थेव ॥६४॥

देवगइसहगयाओ० गाहा। 'देवगइसहगयाओ'त्ति देवगतिणा सह एगतेणं बंधो जासिं ताओ देवगइसहगयाओ। काओ ताओ ? भण्णंति—देवगति वेउव्वि-ऽऽहारगसरीरा एएसिं चेव बंधण-संघाया वेउव्वि-ऽऽहारगसरीरअंगोवंगा देवाणुपुवी य, एयाओ देवगइसहगयाओ। 'दुचरिमसमयभवियम्मि खीयंति' त्ति दोण्णि समया सेसा भवसिद्धियत्तणस्स जस्स सो दुचरिमसमयभवसिद्धिओ तम्मि दुचरिमभवसिद्धियम्मि खीयंति, खयं जंति ति। देवगइसहगयाओ। 'सविवागेयरणामा णीयागोय पि तत्थेव' विवागो णाम उदओ, जेसिं उदओ णामकम्माणं णत्थि ते सविवागेयरनामा अनुदयनामानामित्यर्थः। के ते ? भण्णति त०—ओरालिय-तेय-कम्मइगसरीरं एतेसिं चेव बंधणा तिण्णि संघाया तिण्णि छ संठाणा छ संघयणाणि ओरालियसरीरअंगोवंगं वण्ण गंध रस फास मणुयाणुपुवी अगरुलहुग उवघाय पराघाय उस्सास पसत्था ऽपसत्थविहायगति अपज्जत्तग पत्तेय थिराथिर सुभासुभ दूभग सुस्सर दुस्सर अणादेज्ज अजसकित्ति निमेणमिति। एयाओ देवगइसहगयाहिं समं दुचरिमसमयभवियम्मि खयं गच्छंति। अण्णं च 'णीयागोयं पि तत्थेव'त्ति तत्थेव समए णीयागोय पि खयं गच्छति, उदयाभावाओ। अण्णयरवेयणीयं ति साया-ऽसायाणं अण्णयरं वेयणीयं जस्स उदओ णत्थि तं पि तत्थेव समए खयं गच्छति।

१ को ताओ ? दे° ॥ २ °रभवी° 'जह भीति.' इति पाठ ॥

सति साएण परिणम्यो सो भसायं पुर्ण खवेति, जइ असाएण अजोगित्तं परिणम्यो तो सायवेयणीयं पुर्ण खवेति ॥ ६४ ॥

अन्नयरवेयणिज्ज, मणुयाउं उच्चगोयं नाम नव । वेएइ अजोगिजिणो, उक्कोस जहन्न एक्कार ॥६५॥

अन्नयरवेयणीय० गाहा । 'अन्नयरवेयणीयं' सायं असायं वा सविपक्खेसं मणुस्साउग उच्चागोयं नामम्मि नव पगडीओ 'वेदेति' अणुभवति 'अजोगिजिणो' अजोगिकेवली उक्कोसेणं बारस पगडीओ वेदेति, जहन्नेणं एक्कारस तित्थगरवि रहियाओ चेव वेदेति ॥ ६५ ॥

पुव्वुद्दिट्ठाणि नव नामाणि तण्णिरूवणत्थं भण्णति—

मणुयगइ-जाइ तस बायर च पज्जत्त सुभगमाएज्जं । जसकित्ती तित्थयर, णामस्स हवंति णव एया ॥६६॥

मणुयगतिजाति० गाहा । गाहासिद्धो चेव अत्थो ॥ ६६ ॥

तच्चाणुपुव्विसहिया, तेरस भवसिद्धियस्स चरिमम्मि । सन्तसगमुक्कोस, जहन्नग बारस हवंति ॥६७॥

तच्चाणुपुव्वीसहिया० गाहा । तच्चाणुपुव्वी मणुयाणुपुव्वीत्यर्थः, तेण सहिता तच्चाणुपुव्विसहिता ताणि बारस तेरस भवति, भवसिद्धियस्स चरिमसमए भवंति । 'सन्तसमक्कोसं' संतकम्ममुक्कोसेणं भवति । 'जहन्नगं बारस हवंति' जहन्नेणं तित्थग

---

१ अत आरभ्य ग्रन्थपरिसमाप्तिपर्यन्तं चं१ प्रतेरेव पाठ. सं-खं१ प्रत्योः खण्डितत्वात् ॥ २ यणीयं, म चेर ॥ ३ य णाम य । चे खं१ । य नामेणं । चे खं१ ॥ ४ 'मतेन मतान्तरं दर्शयति—तच्चाणुपुव्वि " इति सतरिकाटीकायाम् ॥

रुवापरहिया ता चेव बारस चरिमसमए भवति । अण्णे आयरिया भणंति—मणुयाणुपुव्वी दुचरिमसमए चेव खविज त्ति, कम्हा ? उदयाभावाओ । तम्हा बारस सन्ताणि उक्कोसेणं, जहन्नेण एक्कारस चरिमसमए भवति ॥ ६७ ॥

मणुयगइसहगयाओ, भव-खेत्तविवाग जीववागु त्ति । वेयणियन्नयरुच्चं,च चरिमभवियस्स खीयंति॥६८॥

मणुयगइसहगयाउ० गाहा । मणुयगतिणामेण सह उदओ जेसि णामाणं ताओ मणुयगतिसहगयाओ । 'भवखेत्तविवा गजीववाग' त्ति भवविवागा खेत्तविवागा जीवविवागा य । तत्थ भवविवागा मणुयाउगं, खेत्तविवागा मणुयाणुपुव्वी, सेसा वि णव जीवविवागातवि । एयाणि एक्कारस, 'वेयणियन्नयरुच्चं च' अन्नयरं वेयणीयं उच्चागोयं वा 'चरिमभवियस्स खीय ति' त्ति एयाणि तेरस चरिमभवसिद्धियस्स खीयंति त्ति । ततो कम्मविमोक्खसमए चेव उड्डुं गच्छति आलोकान्तम् ॥६८॥

अह सुइयसयलजयसिहरमरुयणिरुवमसहावसिद्धिसुहं । अणिहणमव्वाबाहं,तिरयणसार अणुहवंति॥६९

अह सुविय० गाहा । 'अह' इति आनन्तर्ये कर्ममोक्षानन्तरमेव प्राप्नोति 'सुचियं' सुहं णिरवज्जं 'सयलं' संपुण्णं असेसं 'जगसिहरं' लोगग्गं 'अरुयं' वाहिरहियं 'णिरुवम' उवमाणं जस्स नत्थि एरिसं तारिसं ति, 'सहावसिद्धिसुह' जहा संसार सुहाणि कृत्रिमाणि न तहा णिव्विसुह, बाह्यकारणनिरपेक्षमित्यर्थः, 'अणिहणं' निहणं जस्स णत्थि तं अणिहणं अव्वाबाहं नाम अविणासित्तं । सुह संपुण्ण [लोगम्मि] वाहिरहियं णिरुवमं अणिहणं अव्वाबाहं सहावसिद्धिसुह 'तिरयणसारं अणुभवति' त्ति

१ 'खात ति । मे१ । चाणेसा । के१ । २ चे भवचरिमसमयम्मि की के१ ॥

नाण-दंसण-चरित्ताणि विरमणं होंति सारं—फलं तं अनुमवंति ॥ ६९ ॥

दुरहिगम-णिउण-परमत्थ-रुइर-बहुभंगदिट्ठिवायाओ। अत्था अणुसरियव्वा, बंधोदय-संतकम्माणं॥७०॥

दुरहिगम० गाहा। अहिगमिउं दुक्खं ति दुरहिगमो पमाण-नय निक्खेवादीहि अणुगम्मंतो तम्हा दुरहिगमो, निउणो नाम सुहुमो, परमट्ठ त्ति—सच्चं, रुचिरं—रम्यं हृदयप्रह्लादकरं, बहुभंग त्ति—बहुविगप्पं, दुरहिगमं च निउणं च परमार्थं च रुचिरं च बहुभंगं च सं दुरहिगम निउण-परमट्ठ-रुचिर-बहुभंगं। किं त? दिट्ठिवाओ, ततो दिट्ठिवायाओ 'अत्था अणुसरियव्वा बंधोदयसंतकम्माणं' ति बंधोदय-संताणं अत्था अणुसरियव्वा—विन्नेयव त्ति। एते अट्ठा दिट्ठिवाए वित्थरेण चिंतिया ततो दिट्ठिवायाओ एते साहेयव त्ति भणियं भवति ॥ ७० ॥

इदानिं आयरिओ अप्पणो पमादमात्त अप्पागमत्त च पदंसन्तो अण्णेसिं आयरियाणं अप्पसारं बहुश्रुतत्वं च प्रख्यापयन् इमं भणति—

जो जत्थ अपडिपुन्नो, अत्थो अप्पागमेण बद्धो त्ति। त खमिऊण बहुसुया, पूरेऊण परिकहिंतु ॥७१॥

---

१ अस्मात् गाथायुगलानन्तरं केषुचित् मूलमात्रादर्शेष्वियं गाथा वरिवर्त्तते—गाहग्गं सत्तरीए, चंदमहत्तरमयाणुसारीए। टिकाए नियमियाणं एगूणा होइ नउई उ ॥

जो अत्थ अपडिपुण्णो० गाहा । 'जो अत्थ' त्ति जो अत्थो कम्मोदय-संखेवु 'अपडिपुण्णो' संखो भावो 'अप्पागमेण बद्धो'त्ति आगमो–सुयं अप्पो आगमो जस्स सो तहा तेण अप्पागमेण बद्धो त्ति काउं 'तं खमिऊण बहुसुया' य मवराहं खमिऊण दोसं अवणेऊण बहुसुया दिट्ठिवायण्णू 'पूरेऊण परिकहेंतु' त्ति तं विमलं अत्थं पूरेऊण–सगलं करेसु परिकहिंतु–मणंतु त्ति ॥ ७१ ॥

सभास–चुण्णिया सित्तरी समत्ता ॥

प्रथमं परिशिष्टम् ।

अस्मिन् ग्रन्थे प्रमाणतयोद्धृतानां प्राकृतीयावतरणानामकारादिक्रमेणानुक्रमः ।

अवतरणादि	पत्र–पृष्ठी	अवतरणादि	पत्र–पृष्ठी
अट्ठग चउ चउ चउर–	१९–२	एतच्च मतान्तरेणोक्तम् (टिप्पणी)	११–१
अट्ठच्छाहिगवीसा	१७–१	एगो इगाइ कसाय–	६४–२
अट्ठ अ अट्ठग छक्कं	२९–२	खवगे सुहुमम्मि चउ–(टिप्पणी)	७–२
अट्ठट्ठी बत्तीसं	४०–१	खीणकसाय दुचरिमे	६६–२
अट्ठ य सय चोवट्ठिं	४९–२	गइ इंदिय य काय	५४–२
अणियट्टिबायरे थी–	६४–१	गाहम्मि सत्तरीए (टिप्पणी)	६९–१
इगि विगल सगल पणं–	२६–१	गोयम्मि सत्त भंगा ,,	८–१
उवरूपमइसहया– (टिप्पणी)	४५–२	चउ छस्सु दोन्नि सत्तसु	३६–१
उवरूपामा एव भङ्ग– ,,	४६–१	चउ पणुवीसा सोलस	४१–१
एगूणसट्ठचउसया–	२५–२	छ चत्तारि य पणं	२९–२

ऊष्म-ऊर्थ्मक
णिक्कु-मणुसा
णिद्दुभई ऊर्ध्वजम (टिप्पणी)
णिरियाणुपुव्वणाम
णियादिवल्लीयु य (टिप्पणी)
गदणिरिय...णा-
एम ईसिदिहम
एम पभा
ऊम य गदा (टिप्पणी)
य गद दोणि बढा-
पिंगाणे य ऊर्ध्व
मरेण चय-आईए

ग पृष्ठी	गमन गाथा
१ १	पञ्चगमणिवर
१–३	पञ्चणा पञ्चणग
२५–२	पढमणा पुण मणुसो
२७–१	पण मव नव मवगेण–
११–१	पचीस दोणि छह य
४४–१	बारसपणमट्ठसया
२१–१	बावण्णीअरसया बा–
९–१	बावण्णीअरसया बि–
९–१	बावण्णीअरसया म–
७–१	मणुसगइ जाइ तस बा– (टिप्पणी)
५–२	मयान्तरेण पुणः गया–
११–२	मयान्तरेण मसमनामि
११–२	मोगून मीमगणो

गथ-पृष्ठ
१०–१
१०–१
१५–१
१५–२
४१–१
३१–१
२१–१
११–१
११–१
५१–२
४१–२
४१–२
७–२

अवतरणादि	पत्र–पृष्ठी	अवतरणादि	पत्र–पृष्ठी
ये तु कर्मस्तवकारादयः (टिप्पणी)	७–२	सगकसिरि विगल-नर-नै–	२६–१
संज्ञा च परिभाषा च	२–१	सत्तठ्ठ नव च पनरस	१२–१
संतपयपरूवणया	५४–२	सत्तावीसं सुहुने	१३–१
संमिर्त्त पासंतो	१७–१	समयावोतावलिका– (टिप्पणी)	१६–२

द्वितीय परिशिष्टम् ।

सप्ततिकाचूर्णि-टिप्पण्यन्तर्गतानां ग्रन्थकृन्नाम्नां सूची ।

ग्रन्थकृन्नाम	पत्र–पृष्ठी	ग्रन्थकृन्नाम	पत्र–पृष्ठी
अन्ने	११,१२ २ २७–१,४९–२	चन्द्रर्षिमहत्तर (टिप्पणी)	७–२
अन्ने आयरिया	२२ १,३६ २,६४ २,६८–१	चूर्णिकार ,,	४२–१,४६–१
अन्नेसिं आयरियाणं	६१–१	चूर्णिकृत् ,,	४०–१,४३–१,४९–२
एगेसिं	६४–२	जीवविजयाः ,,	४१–१,४१–२
चंदमहत्तर (टिप्पणी)	६९–१	टीकाकार ,,	४२–१
चन्द्रर्षिपादाः ,	७–१	प्राचीनकर्मस्तवकार ,,	७–१,७–२

अवतरणानि	पत्र–पृष्ठी	अवतरणानि	पत्र–पृष्ठी
छायट्ठी चोयट्ठी	२१–१	पञ्चपगसमिपरे	१२–१
छावत्तरंचमत्ता	२१–१	पञ्चताऽपञ्चपग	१२–१
छिन्दइ पत्त-मेक–	१५–२	पढ्मगो पुण मणुओ	१९–१
छिदुगमथे छ-स्संग (टिप्पणी)	१७–१	पण नव नव नवगेग–	२५–२
छिरिसाणुगुणमत्ता	२१–१	पणीस होण्णि अह्र य	४६–१
जवोश्रिसमाणिु य (टिप्पणी)	४४–१	पारसपयसहसा	१९–१
नर-तिरिय-देव-गिरि-नर–	२१–१	बावण्णेकारसया या–	२१–१
नाइणिसुहस्स संकिलिहस्स	१–१	बावण्णेकारसया चि–	२१–१
निहाङगस्स गङ्गो	१–१	बावण्णेकारसया स–	२१–१
निराणस्स य गहा (टिप्पणी)	७–१	मणुपगइ आइ तस बा– (टिप्पणी)	५६–२
पंच नव दोण्णि अट्ठा–	५–२	मतान्तरेण पुनः पञ्चा– ”	४१–२
पंचाओ य चरमं	१२–२	मतान्तरेण महसतानि ”	४१–२
पमाईय चर माईण	११–२	मोत्तूण खीणरागं	७–२

अवतरणादि	पत्र-पृष्ठी	अवतरणादि	पत्र-पृष्ठी
से तु कर्मस्तवकारादयः (टिप्पणी)	७-२	सगरुतिरि-विगल-नर-नै-	२६-१
संज्ञा च परिमापा च	२-१	सत्तऽड्ड नव च पनरस	६२-१
संतपयपरूवणया	५४-२	सत्तावीसं सुहुमे	६३-१
संमिर्भ पासंतो	६७-१	समयप्रयोनावलिका- (टिप्पणी)	१६-२

द्वितीयं परिशिष्टम् ।

सप्ततिकाचूर्णि-टिप्पण्यन्तर्गतानां ग्रन्थकृन्नाम्नां सूची ।

ग्रन्थकृन्नाम	पत्र-पृष्ठी	ग्रन्थकृन्नाम	पत्र-पृष्ठी
अन्ने	६ १,१२ २,२७-१,४९-२	चन्द्रर्षिमहत्तर (टिप्पणी)	७-२
अन्ने आयरिया	२२ १,३६ २,६४ २,६८-१	चूर्णिकार „	४२-१,४६-१
अन्नेसिं आयरियाण	६१-१	चूर्णिकृत् „	४०-१,४३-१,४५-२
एगेसि	६४-२	जीवविजयाः „	४१-१,४१-२
चंदमहत्तर (टिप्पणी)	६९-१	टीकाकृत् „	४२-१
चन्द्रर्षिपादाः „	७-२	प्राचीनकर्मस्तवकार „	७-१,७-२

ग्रन्थकृन्नाम	पत्र–पृष्ठी	ग्रन्थकृन्नाम	पत्र–पृष्ठी
मलयगिरि (टिप्पणी)	४–१ ४१–१	यशोविजयाः (टिप्पणी)	७–२
	४५–२,४६–१	जिनधर्मसूरि ”	२७–१
मलयगिरिपाद ”	१२–२,४१–२	सप्ततिकाकार ”	७–२
मलयगिरिमहर्षयः ”	४२–१		

तृतीयं परिशिष्टम्।

सप्ततिकाचूर्णि-टिप्पनकान्तर्गतानां ग्रन्थनाम्नां सूची।

ग्रन्थनाम	पत्र–पृष्ठी	ग्रन्थनाम	पत्र–पृष्ठी
कर्मप्रकृतिचूर्णि	२–२	कम्मपयडी	१–२, २–२
कर्मप्रकृति	११–१,१२–१,१४–१	कम्मपयडिसंगहणी	११–१,१२–२,१३–२,१४–२,६५–१
	१७–१ १९–१,१९–२	कर्मप्रकृति (टिप्पणी)	६–२ २७–१
” (टिप्पणी)	१९–१,४०–१,४१–१	कसायपाहुड	१९–२ १२–२,१३–१
	४५–२ ४६–१	दिट्ठिवाय	१–२ २–२,१९–१
आगम	१७–१	पञ्चसंग्रह (टिप्पणी)	१–२

ग्रन्थनाम		पत्र-पृष्ठी	ग्रन्थनाम		पत्र-पृष्ठी
प्राचीनकर्मस्तव	(टिप्पणी)	५-२ ६-१	सप्ततिकाटीका	(टिप्पणी)	४०-१
मलयगिरीयटीका	"	१४-१ ११-२	सप्ततिकाप्रकरण	"	६-२
सतक	"	१-१,४-१ ४-२	सयग		१-१,४-१,४-२
		९-२,१७-२			५-२,९-२,१७-१
सत्तरी	"	१९-१	संतकम्म		१-१,२२-१

चतुर्थं परिशिष्टम् ।

सप्ततिकाचूर्ण्यन्तर्गतानां पारिभाषिकशब्दानामनुक्रमः ।

शब्दः	पत्र-पृष्ठी	शब्दः	पत्र-पृष्ठी
अंस	६-१	अहापवत्तकरण	५९-२
अणियट्टिकरणं	१०-२	आयसो	२७-२
अणुभागघाओ	१०-१	उदओ	२१-१,५५-१
अपुव्वकरणं	१०-१	उदयविगप्पो	३९-१

करे । ए ३ आरा जूगलना जाणवा एकलो जूगल धर्म जाणवो । ए आराने विषे । जरारोग कुरुप नहि प्रतिपूर्ण अंग उपाग विषयसूख भोगवे ते दान पुन्यना फल जाणवा ॥ ए आराने विषे ठेक थाकता चोरासि लाख पूर्व त्रण वर्षने साढा आठ महीना बाकी रह्या । तीवारे सर्वार्थसिध महाविमान थकी ते त्रीस सागरोपमनुं आउखु भोगवीने चविने । विनिता नगरी । नाभी कुलगर राजापिता । मरुदेवी मातानी कुंखे ऋषभ देवस्वामी उपना । सवानव मासे जन्म्या ॥ प्रथम ऋषभनु सुपन देखि ऋषभदेव नाम दिधु । रुषभदेवस्वामीये जूगलाधर्म निवारीने । असि मसि कसि आदि देईने ७२ बोतेर कला सिखवि । अनुकपा निमिते ॥ २० विस लाख पूर्वलगे तो कुमरपणे रह्या ॥ ६३ ॥ त्रेसठ लाख पूर्वलगे राज्य भोगव्यु । भरतने राज्य आपिने । चार हजार पुरुष सघाते सजम लिधो । एक लाख पूर्व लगे सजम पाल्यो ॥ केवल पामिने ।

देवी च्त्रियाणीनी कुखे मुको। अने त्रिसलादेवि राणीनी कुखे। पुत्रिपणे गर्भ छे ते देवानंदाजीनी कुखे मुको॥ तिवारे हरण गमेषी देवता तेहत प्रमाण करी। तेज वेलाई आव्यो। आविने भगवंतने वंदणा नमस्कार करीने कह्यु जे स्वामी रुडु जाणजो हुं तमारो गर्भ साहरु छु। तिवारे माता देवानंदाजीने अवस्वापिनी निद्रा मुकिने नाभिथि गर्भ साहरीने त्रिसलादेवीजीनी कुखे मुक्या तिहा स्वामि सर्वे थईने सवानवमासे जन्म्या। त्रिस वर्ष घरमां रह्या। एकाकीपणे सजम लिधो। सजम लेईने साढाबार वर्ष ने एक पखवाडिया सुधि। आकरा तप जप ध्यान ज्ञान करिने। स्वामि केवलज्ञान केवलदर्शन पाम्या। बहोतेर वर्षनु आउखु भोगविने। चोथा आराना ३ वर्ष ने साढा आठ महिना बाकी रह्या। तिवारे महाविरस्वामि निर्वाण पधार्‍या। ते स्वामिना छ कल्याणिक थया। तेमा॥५॥ कल्याणिक तो उतराफाल्गुणी नक्षत्र

आठखु ॥ ए आराने विषे ७ संघयण ने ६ संठाण जाणवा । ए आरानेविषे ३२ बत्रिस मासलि उतरते आरे १६ सोल पासली जाणवी । ए आरानेविषे दिन २ प्रते आहारनि इछा उपजे । तिवारे ३२ कवलनो आहार करे । धरतिनि सर साइ सारेरि ॥ उतरते आरे थोम्री जाणवि । ए आरो ठेक थाकतां पंच्योतेर वर्षने साढाआठ महिना वाकीरह्या ॥ तिवारे दशमा देवलोकथि वीस सागरोपमनु आवखू भोगविने चविने । माहणकुरु गाम नगरनेविषे । ऋषभदत्त ब्राह्मणने घेर देवानंदाजीनी कुंखे । महा विरस्वामी उपना ॥ तिहा स्वामी साढीब्यासी रात रह्या । आसिमी राते शक्रेंद्रनो आसन चल्यो । तिवारे शक्रेंद्रे उपयोग मुकीने जोयुं प्रभुने भीखाग कुले उपनादीठा अनते काले अछेरु थयु । तिवारे हरण गमेषी देवताने कह्यु । जे जाओ जइने महाविरस्वामिनो गर्भ साहरो । साहरीने खत्रीकुरु गाम नगरने विषे । सिध्धार्थराजाने घरे । त्रिसला

ते । परमअवधिज्ञान ॥ १ ॥ मनपर्यवज्ञान ॥२॥ केवलज्ञान ॥३ ॥ परिहारवि सुधचारित्र ॥ ४ ॥ सुक्ष्मसपरायचारित्र ॥ ५ ॥ जथास्यातचारित्र ॥ ६ ॥ पूला कलब्धी ॥७॥ क्षायकसमकीत ॥८॥ आहरकशरिर ॥९॥ जिनकल्पीसाधु॥१०॥ ए ॥१०॥ बोल इति चोथो आरो सपूर्ण ॥४॥ हवे चोथो आरो उतरीने पाचमो आरो बेठो । तीवारे अनता वर्ण गध रस फर्सना पजव हीणा थया । एआरो दुसमनामा एकलुं दुख जाणवुं । ए आरो २१ हजार वर्षनो जाणवो । ए आरानेविषे । उहाथनु देह मान ने १२५ वर्षनुं आउखु । उतरते आरे ॥ १ ॥ हाथनु देहमान ने २० वर्षनुं आउखुं ॥ ए आरानेविषे ॥ ६ ॥ सघयण ने । ७ सठाण जाणवा । उतरते आरे १ छेवट्ठु सघयण ने ॥ १ ॥ हुरु सठाण जाणवु । ए आरानेविषे ॥ १६ ॥ सोल पासली ॥ उतरते आरे ॥ ८ ॥ आठ पासलिजाणवि । ए आरानेविपे । दिन २ प्रते आहारनि ईछा उपजे । तीवारे शरीर प्र

मां थया । ते चवनक० ॥ १ ॥ गर्भ साहारण क० ॥ २ ॥ जन्म क० ॥ ३ ॥ दिक्षा क० ॥ ४ ॥ केवलज्ञान क० ॥ ५ ॥ ए पाचने । स्वाति नक्षत्रमा निर्वाण पधार्या ॥ ६ ॥ ए आराने विषे गति ५ जाणवि ॥ महाविरस्वामि निर्वाण पधार्या तेज वखते गौतमस्वामिने केवलज्ञान उपनु । ने ते १२ बार वर्ष केवल प्रवर्जा पालिने निर्वाण पधार्या । तेहज वेलाए सुधर्मास्वामिने केवल ज्ञान उपनु । ते ॥ ८ ॥ आठ वर्ष सुधि केवल प्रवर्जा पालिने निर्वाण पधार्या । तेहज वेलाए जबुस्वामिने केवलज्ञान उपनु ॥ ते ॥ ४४ ॥ चुमालिस वर्षसूधि केवल प्रवर्जा पालिने नीर्वाण पधार्या । महाविरस्वामि पछी । भर्तक्षेत्रमा ॥ ६४ ॥ चोसठ वर्षसुधि केवलज्ञान रह्यु । चोथा आरानो जन्मेलो होय ते पाचमा आरामा मोक्ष जाय । पाचमा आरानो जन्मेलो पांचमा आरामा मोक्ष जाय नही । जबूस्वामि मोक्ष पहोंतापछी ॥ १० ॥ दश बोल वीछेद गया

ते । परमअवधिज्ञान ॥ १ ॥ मनपर्यवज्ञान ॥२॥ केवलज्ञान ॥३ ॥ परिहारवि
सुधचारित्र ॥ ४ ॥ सुक्ष्मसपरायचारित्र ॥ ५ ॥ जथास्यातचारित्र ॥ ६ ॥ पूला
कलब्धी ॥७॥ त्तायकसमकीत ॥८॥ आहरकशरिर ॥९॥ जिनकल्पीसाधु॥१०॥
ए ॥१०॥ बोल इति चोथो आरो सपूर्ण ॥४॥ हवे चोथो आरो उतरीने पाचमो
आरो बेठो । तीवारे अनंता वर्ण गध रस फर्सना पर्जव हीणा थया । एआरो
डुसमनामा एकलुं डुख जाणवुं । ए आरो २१ हजार वर्षनो जाणवो । ए आ
रानेविषे । ७हाथनु देह मान ने १२५ वर्षनु आउखु । उतरते आरे ॥ १ ॥ हा
थनुं देहमान ने २० वर्षनु आउखु ॥ ए आरानेविषे ॥ ६ ॥ संघयण ने । ळ
सठाण जाणवा । उतरते आरे १ छेवटु संघयण ने ॥ १ ॥ हुंरू सठाण जाणवुं
। ए आरानेविषे ॥ १६ ॥ सोल पासली ॥ उतरते आरे ॥ ८ ॥ आठ पासलिजा
णवि । ए आरानेविपे । दिन २ प्रते आहारनि ईछा उपजे । तीवारे शरीर प्र

माणे आहार करे। घरतिनी सरसाइ। काइक सारेरि जाणवि। उतरते आरे कुनारना निन्नामानी गरसरखि जाणवी। हवे पाचमा आराना लक्षण कहेछे १ मोटानगर ते गाममा सरिखा थाशे १॥ गाम ते मसाणसरिखा थासे ॥ २ ॥ नला कुलनां गोरु ते दास दासीपणा करस्ये ॥ ३ ॥ प्रधान ते ला लचि थासे ॥ ४ ॥ राजा तेजमरूसरिखा थास्ये ॥ ५ ॥ नला कुलनी स्त्री ते लजारहित थास्ये ॥ ६ ॥ रूडाकुलनी स्त्रि वेस्यासरिखि थास्ये ॥ ७ ॥ पोताना पुत्र पोताने गंमे चालशे ॥ ८ ॥ शिष्य गुरुना अपवाद वोलसे ॥ ए ॥ डुर्जन लोक सुखि थास्ये ॥ ॥ १० ॥ सजन लोक दुखि थास्ये ॥ ११ ॥ डुर्निक्ष डुकाल घणा पमस्ये ॥ १२ ॥ उदर सर्पादीकनी दाढ घणी थास्ये ॥ १३ ॥ ब्राह्मण अर्थना लोन्नी थास्ये ॥ १५ ॥ हिंसाधर्मना परूपक घणा थास्ये ॥ १५ ॥ एक धर्मना घणा नेद थास्ये ॥ १६ ॥ मिथ्याति

देवता घणा पूजास्ये ॥ १७ ॥ मिथ्याति लोक घणा थास्ये ॥ १८ ॥ माणसने
देवदर्शन दुर्लभ थास्ये ॥१९॥ विद्याधरनी विद्याना प्रभाव थोडा हुस्ये ॥२०॥
गोरस दुध दहिमा सरसाइ थोडी हुस्ये ॥ २१ ॥ बलद प्रमुषना बल आउखा
थोडा हुस्ये ॥ २२ ॥ साधु साध्विने मासकल्प तथा चोमासा करवा जेवां खेत्र
थोडा हुस्ये ॥ २३ ॥ श्रावकनि ११ पडिमा ॥ साधुनी १२ पडिमा विछेद जा
स्ये ॥ २४ ॥ गुरु शिष्यने भणावसे नहि ॥ २५ ॥ शिष्य अविनित कलहका
री हुस्ये ॥ २६ ॥ अधर्मकारि जगडाकारी कलहकारी कुमाणस घणा हुस्ये सु
माणस थोडा हुस्ये ॥२७॥ आचार्य आप आपणा गछनी परपरा सामाचारि जु
दि २ प्रवर्तावसे । तथा मूढ मूर्ख जनने मोहिने मिथ्यात्व पासमा पाडस्ये ॥ उत्
सूत्र भाखस्ये । आप आपणी प्रससामा राचसे । नंदक कुबुद्धि होस्ये ॥ २८ ॥
सरल भद्रिक ॥ न्याइ प्रमाणिक माणस थोडा हुस्ये ॥ २९॥ म्लेछनाराज घणा

ढुस्ये ॥ ३० ॥ ढिंडु राजा अटपक्रधिया ने थोडा ढुस्ये ॥ ३१ ॥ मोटा कुलना रा
जा ढुस्ये ते निच काम करसे । अन्याय अधर्म कुविसनमा घणा राजसे ॥ ३२
ए ॥ ३२ ॥ लत्तण जाणवा । ए आरानेविषे धातु सर्वे विछेद जास्ये । लोढानी
धातु रहेसे चामफानी मोहरो चालस्ये । ते धनवत कहेवासे । ए आरानेविषे ॥१
एक उपवास करसे ते मास खमणसरिखो थासे । ए आरानेविषे । ज्ञान तथा सू
त्र सर्वे विछेद जास्ये । तेमा दसविकालीकना ॥ अध्ययन ॥ ४ ॥ पहेला रहेस्ये ।
ते उपरे ॥ ४ ॥ जीव एका अवतारि थास्ये । तेना नाम । डुपसह नामा साधु
॥ १ ॥ फल्गुणि नामा साध्वि ॥ २ ॥ नागील श्रावक ॥ ३ ॥ नागश्रि श्राविका
॥ ४ ॥ ते आषाढ सूद १५ पूनमने दिने शक्रेंद्रनु आसन चलसे । तिवा
रे शक्रेंद्र उपयोग मुकि जोसे जे । आज पाचमो आरो उतरीने काल
छठो आरो वेससे । तिवारे शक्रेंद्र आवसे । ते ॥ ४ ॥ जीवने कहेसे जे

काले छठो आरो बेससे । माटे आलवो पडिकमो निसलथाउ । ते ४ जीव सर्व जीवने खमाविने सथारो करस्ये । तारे सवर्तक वायरो थास्ये । तिणे करिने पहाड़ । पर्वत । गढ कोठा वाव कुवा सरोवर सर्वे वीसराल थास्ये ॥ वैताढ पर्वत १ गगा २ सिंधु ३ ऋषभकुट ४ लवणनिखाडी ए ५ वर्जिने शेष सर्व थानक त्रुटी पडस्ये ॥ ते ४ जीव समाधि प्रणामे काल करीने देवलोकमा जासे तिवारे ४ बोल विछेद जास्ये पेहले पोहरे । जैनधर्म वीछेद जास्ये ॥ १ ॥ बीजे पोहरे ॥ ३६३ ॥पाखडि मिथ्यातिनो धर्म विछेद जास्ये॥२॥ त्रीजे पोहरे राजनीती विछेदजास्ये॥३॥ चोथे पोहरे बादर अग्नि विछेद जास्ये ॥ ४ ॥ ए आरे बेसता गति ॥५॥ जाणवी उतरता ४ गतितेमोक्ष अटकी इति पाचमो आरो संपूर्ण । हवे पाचमो आरो उतरीने छठो आरो बेठो । तीवारे अनता वर्ण गध रस फर्सना पजेवहीणा थया । ए आरो २१ एकवीस हजार वर्षनो जाणवो।ए आरो दुसमदुसमनामा एकलु दु ख

माङ्ख जाणवु । ए आरे ॥ १ ॥ एक हाथनु देहमान ने ॥ २० ॥ वर्षनुं आउ
खु । उतरते आरे । मूढा हाथनी काया ने १६ सोल वर्षनु आउखुं । जाणवुं ।
ए आराने विषे १ छेवटुं सघयण ने हुंरु सठाण जाणवु । उतरते आरे पण ६
मज जाणवुं । ए आराने विपे ॥८॥ आठ पासली ॥ उतरते आरे ॥४॥ चार पा
सली जाणवी ॥ ए आराने विपे । ८ वर्पनी स्त्री गर्भ धरस्ये । ते काला कुदर्शनी
रोगीने रिसाल नखने मूवाला घणा एहवा छेकरा घणा जणसे । ते कुतरीनी प
रे परीवार भेलो फेरवस्ये । ए आराने विषे गगासिंधु नदि रहेसे ॥ तेमा ७२ बी
ल छे ॥ तेमा त्रणत्रण ॥ माल छे । तेमा मनुष्य त्रीजच पखी बीज मात्र रहेसे ॥ गं
गा सिंधुनो साढीबासठ जोजननो पोहोट छे तेमा । रथना चिला प्रमाणे पहोलु
ने गामानि धुरि बूडे एटलु उंडु पाणि रहेसे । तेहमा मछ कछ घणा थासे । ते ७२ बी
लनां मनुष्य साझे ने प्रभाते । मछ कछ काढीने वेलुमा भारसे । सूर्य घणो तपसे

टाढ घणी पडस्ये । तेणे करी सीऊ वाइ रहेसे । तेहनो आहार करस्ये । तेना हाड्का चामडा तिर्यंच चाटीने रहेस्ये मानवीना माथानि तुंबडीमा पाणीला विने पिसे । एणिपरे २१ एकविस हजार वर्ष पूरा करसे । ए आराने विषे नव काररहित समकितरहित व्रत पचखाणरहित हसे । ते एहवा छठा आराने विषे आविने अवतरसे । ते माटे एहवुं जाणिने जे जीव जिनधर्म करसे ते जीव सूखि थासे ॥ इति ६ आराना बोल संपूर्ण ॥

जनम ॥ अथ चोविस जिनातरा लिख्यते ॥ अढार कोडाकोडि सागरने आतरे ॥ पेहेला श्री आदिनाथ तिर्थंकर थया ॥ विनीता नगरीनेविषे ॥ नाभी राजा पीता । मरु देवा राणी माता ॥ हेमवर्णे ॥ वृषभ लछन । पाचसें धनुषनु देहमान । चोरासी लाख पुर्वनु आउषू ॥ वीस लाख पुर्व तो कुंवर पणे रह्या । त्रेसठ लाख पूर्वनुं राज्य पाल्यु ॥ एक लाख पुर्वनी प्रवज्र्या पाली । प्रवज्र्या लीधापछि एक हजार

रसे। केवलज्ञान उपनुं। साधु। साधवी। श्रावक। श्रावीकारूप। चतुर्विध स
घतिर्थ थापीने। द्वादसागी गणीनी पेटी आपीने॥ त्रीजा आराना। त्रण व
रसने साढाआठ महिना। ठेक थाकता बाकी रह्या॥ तिवारे महावद तेरसने
द्हाडे। दस हजार साधुसंघाते अष्टापद पर्वत उपरे स्वामी नीरवाण मोक्ष पधार्या
१॥पहेला श्रीआदीनाथ तिर्थंकर निरवाण मोक्षपोहोंतापछिपचास लाख कोडि
सागरनेआंतरे॥बीजा अजितनाथ तिर्थंकर थया। अयोध्या नगरीनेविषे। जी
तसत्रुराजा पिता॥ विजयादेवी राणी माता॥ हेमवर्णे॥ गज कहेता हस्तिनु
लंछन। साढाचारसें धनुषनु देहमान॥ बहोतेर लाष पूर्वनु आउखू॥ तेमा अ
ढारलाष पूर्व तो कुवरपणे रह्या। त्रेपन लाष पूर्वनु राज पाल्यु। एक लाष
पूर्वनीप्रवर्ज्या पाली॥ प्रवर्ज्या लीधापछि। बार वरसे केवलज्ञान उपनु। साधु
साधवी। श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध सघतिर्थ थापीने। द्वादसागी गणी

मिन

॥

नी पेटी । आपीने ॥ एक हजार साधुसघाते स्वामी निरवाण मोक्षनेविषे प
होंता॥२॥हवेबीजा अजितनाथ तिर्थंकर मोक्ष पहोंतापछि।त्रीस लाष क्रोडि साग
रने आतरे।त्रीजासम्भवनाथ तिर्थंकर थया॥सावथींनगरीनेविषे ॥ जीतार्थ राजा
पीता ॥ सेन्यादेवी राणी माता ॥ हेमवर्णे ॥ अस्व कहेता घोडानुलंछन । चारसें
धनुषनुं देहमान । साठ लाष पुर्वनु आयूष॥ पनर लाष पुर्व तो कुवरपणे रह्या ।
चुमालीस लाप पूर्वनु राज पाल्यु ॥ एक लाष पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली॥प्रवर्ज्या
लीधापछि चउद वर्से केवलज्ञान उपनुं । साधु साधवी। श्रावक श्रावीकारूप।
चतुर्विध सघतिर्थ थापीने ॥ द्वादसागी गणीनी पेटी आपीने । एक हजार
साधुसघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ ३ ॥ त्रीजा सम्भवनाथ तिर्थंकर मोक्ष
पोहोंता पछि । दस लाष क्रोडि सागरोपमने आतरे । चोथा अभीनदन ति
र्थंकर थया । विनीता नगरीनेविषे । सवर राजा पीता । सीधार्था राणी माता ।

हेमवर्णे ॥ वानरनु लछन । साढा त्रणसें धनुषनु देहमान । पचास लाख पूर्वनुं आयुष ॥ तेमा साढा बारलाष पूर्व तो कुंवरपणे रह्या । साढा छत्रीस लाष पूर्वनुं राज पाल्यु । एक लाष पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधापछि ॥ अढार वर्से केवलज्ञान उपनु । साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध सघ तिर्थ थापी ॥ द्वादसागी गणीनी पेटी आपीने ॥ एक हजार साधुसघाते स्वामी निरवाण मोक्षनेविषे पोहोंता ॥४॥ हवे चोथा अभीनदन तिर्थकर मोक्षपोहोंतापछि । नव लाष कोडि सागरने आंतरे । पांचमा सुमत्तिनाथ तिर्थकर थया । कुसलपुरी नगरीने विषे । मेघरथ राजा पिता । सुमगला देवी राणी माता । हेमवर्णे । क्रोंच पषीनुं लंछन ॥ त्रणसें धनुषनु देहमान । चालीस लाष पूर्वनु आयुष । तेमा दश लाष पूर्वतो कुंवरपणे रह्या ॥ उगणत्रीस लाष पूर्वनुराज पाल्युं । एक लाष पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली । प्रवर्ज्या लीधा पछि । वीस वर्से केवलज्ञान उपनु ।

साधुसाधवी । श्रावकश्रावीकारूप ॥ चतुर्विध संघतिर्थ थापीने । द्वादशांगी ग
णीनि पेटि आपिने एकहजार साधुसघाते स्वामी नीर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ ५॥
पाचमा सुमतिनाथतिर्थंकर निरवाण मोक्ष पोहोतापछि । नेवु हजार कोडिसाग
रने आंतरे । छठा पद्मप्रभ तिर्थंकर थया । कोसंबी नगरीनेविषे । धर राजा पिता
सुसिमा देवीराणी माता । राते वर्णे । पद्म कमलनु लंछन । अढीसो धनुषनु
देहमान । त्रिशलाख पूर्वनुं आयुष ॥ साढासात लाख पूर्व तो कुंवरपणे रह्या ।
साढीएकविस लाख पूर्वनुं राज पाल्युं ॥ एक लाख पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली । प्रव
र्ज्या लीधापछि । छठे महीने केवलज्ञान उपनु । साधु साधवी । श्रावक । श्रावी
कारूप चतुर्विध सघतिर्थ थापीने द्वादसांगीगणीनी पेटी आपीने । त्रिहुंतेर
साधु सघाते स्वामी नीवार्ण मोक्ष पधार्या ॥ ३ ॥ छठा पद्मप्रभ तिर्थंकर नि
र्वाण मोक्ष पोहोंतापछि ॥ नव हजार कोडि सागरने आंतरे । सातमा सुपार्श्व

नाथ तिर्थंकर थया ॥ वाणारसीनगरीने विषे । पइठ राजा पिता । पृथ्विदेवि राणी माता। हेमवर्णे॥साथीयानुं लछन।वसे धनुपनुं देहमान।विस लाप पूर्वनु आयूप। तेमा पाचलाप पूर्व तो कुवरपणे रह्या ॥ चउद लाष पूर्वनु राज पाळ्यु। एक लाप पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली । प्रवर्ज्या लीधापछि ॥ नव मासे केवलज्ञान उपनु ॥ साधु साधवी । श्रावक । श्राविकारूप चतुर्विध संघतिर्थथापीने ॥ शद सागीगणीनी पेटी आपीने ।पांचसें साधुसधातेस्वामी नीर्वाण मोक्षपधार्या ॥७॥ सातमा सुपार्श्वनाथतिर्थंकर मोक्ष पोहोंतापछे । नवसें क्रोडि सागरनें आतरे । आठमा चंद्रप्रभतिर्थंकर थया। चदनपुरी नगरीने विषे । महासेन राजा पिता। लषमणादेवी राणीमाता । उज्वल वर्णे । चद्रमानु लछन । दोढसो धनुष्यनु देहमान । दश लाप पुर्वनु आयूप। तेहमा अढीलाप पूर्व तो कुवरपणे रह्या । साढाछलाप पूर्वनुं राजपाळ्यु । एक लाप पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली । प्रवर्ज्या लीधा

पछि छठेमहिने केवल ज्ञान उपनु । साधु साधवी श्रावक श्रावीकारूप । चतु
र्विध सघतिर्थ थापीने । द्वादसागीगणीनी पेटी आपीने । एक हजार साधु स
घाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ ८ ॥ हवे आठमा श्रीचंद्रप्रभ तिर्थंकर
निर्वाण मोक्ष पोहोंतापछि । नेवु कोडि सागरने आतरे ॥ नवमा श्रीसुविधीनाथ
तिर्थंकर थया । काकंदी नगरीनें विषे ॥ सूग्रीव राजा पिता । रामादेवि राणी
माता । उज्वल वर्णे । मघरमछनु लंछन ॥ सो धनुष्यनु देहमान ॥ बे लाष पूर्वनु
आउषु तेमा अर्ध लाष पूर्व तो कुवरपणें रह्या । अर्ध लाष पूर्वनुं राज पा
ल्यु ॥ एक लाष पूर्वनी प्रवर्ज्या पाली । प्रवर्ज्या लीधापछि । चार महीने केव
लज्ञान उपनु साधु साधवी श्रावक । श्रावीका रूप चतुर्विध सघ तिर्थ था
पीने ॥ द्वादशागीगणीनी । पेटी आपीने । एक हजार साधु सघाते । स्वामी
निर्वाण मोक्षनेविषे पधार्या ॥ ९ ॥ हवे नवमा सुविधीनाथ तिर्थंकर निर्वाण

मोक्ष पोहोंतापछि॥ नव क्रोडिसागरने आतरे॥ दशमा श्रीसितलनाथ तिर्थंकर थया। भदलपुर नगरीने विषे॥ द्रढरथ राजा पिता। नदादेवी राणी माता॥ हेम वर्णे॥ श्रीवछ साथीयानु लंछन॥ नेवु धनुष्यनुं देहमान। एक लाष पूर्वनु आउषु। तेमा पाव्लाखपूर्वतो कुंवरपणे रह्या। अर्धे लाष पूर्वनु राज पाळ्यु॥ पालाखपूर्वनी प्रवर्ज्या पाली प्रवर्ज्या लीधा पछे।त्रण मासे केवलज्ञान उपनु। साधु साधवी। श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध संघतिर्थ थापी द्वादसागीगणीनी पेटी आपीने। एक हजार साधु सघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या॥ १० ॥ हवे दशमा सितलनाथ तिर्थंकर। निर्वाण मोक्ष पोहोंतापछि॥ एक क्रोडिसागर तेमा॥१००॥ सागर॥ छसठ लाष छविस हजार वरसने उणे आतरे॥ इग्या रमा श्रेयासनाथ तिर्थंकर थया। सिंहपुरी नगरीनेविषे। विश्नु राजा पिता॥ विश्नुदेवी राणी माता। हेम वर्णे गेंन्डनु लछन॥ एसी धनुष्यनु देहमान।

चोरासी लाप वरसनु आयूप ॥ तेमा ॥२१॥ लाष । वरस कुवरपणे रह्या ॥४२॥ लाप वरसनु राज पाल्यु ॥ २१ ॥ लाप वरसनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधा पठि वे मासे केवलज्ञान उपनु । साधु साधवी । श्रावक श्रावीका रूप चतुर्विध सघ तिर्थ थापीने॥ द्वादसागीगणीनि पेटी आपीने । एक हजार साधु सघाते निर्वाण मोक्षने विषे पोहोंता ॥११॥ हवे इग्यारमा श्रेयासनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंता पठी ॥५४॥ सागरने आतरे ॥ बारमा श्रीवासुपूज्य तिर्थंकर थया चपापुरी नगरीने विषे । वसुपुज्य राजा पिता । जयादेवी राणी माता । राते वर्णे । त्रैसानु लगन । सितेर धनुष्यनु देहमान । बोहोतेर लाष वर्सनु आउपु ॥ तेमा अढार लाप वरस तो ॥ कुवरपणे रह्या । चोपन लाष वरसनी प्रवर्ज्या पाली प्रवर्ज्या लीधा पठि ॥ एक मासे केवलज्ञान उपनु । साधु साधवी। श्रावक श्रावीका रूप चतुर्विध सघ तिर्थ थापी ॥ द्वादसागीगणीनी पेटी आ

पीने । ठसें साधु सघाते स्वामीनीर्वाण मोक्ष पधास्या ॥ १७ ॥ हवेबारमा वा सुपूज्य तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंता पछि । त्रीस सागरने आतरे ॥ तेरमा श्रीवीमलनाथ तिर्थंकर थया । कपीलपूर नगरने विषे ॥ कृतवर्म राजा पिता ॥ सामादेवि राणी माता ॥ हेम वर्णे वराहके० सुवरनु लंछन ॥ साठधनुष्यनु देहमान ॥ पनर लाप वरस तो कुवरपणें रह्या ६० लाख वर्षनु आउखु तेमा त्रीस लाष वरसनुं राज्य पाल्यु ॥ १५ ॥ लाष वरसनी प्रवर्ज्या पाली । प्रवर्ज्या लीधा पछि ॥ बे महीने केवलज्ञान उपनु । साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारूप । चतुर्विध सघतिर्थ थापीने । छपनसागी गणीनी पेटी आपीने ॥ ६०० ॥ साधु सघाते स्वामी निर्वाण मोक्ष पोहोंता ॥ १३ ॥ हवे तेरमां विमलनाथ तिर्थंकर मोक्षपोहोतापछी ए सागरने आतरे ॥ चउदमा अनंतनाथ तिर्थंकर थया ॥ अयोध्या नगरीनें विषे ॥ सघसेन राजा पिता । सुजसादेवी राणी माता । हेम वर्णे ॥ सकरानु लंछन । अने पंचास धनुष्यनुं

देहमान ॥३०॥ लाष वरसनु आयुष। तेमा साढासात लाष वरस तो कुंवरपणें रह्या। पन्नर लाष वरसनु राज पाल्यु। साढासात लाष वरसनी प्रवर्ज्या पाळी। प्रवर्ज्या लीधा पछि॥३॥महीने केवलज्ञान उपनुं॥ साधु साधवी। श्रावक श्राविकारूप चतुर्विध संघ तिर्थ थापी द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने। सातसें साधुसंघाते स्वामी नीर्वाण मोक्ष पधार्या॥ २४ ॥ हवे जउदमा अनंतनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंतापछि॥ चार सागरने आंतरे॥ पनरमा धर्मनाथ तिर्थंकर थया॥ रत्नपुरी नगरीनेवीषे॥ भानु राजा पीता॥ सुव्रतादेवी राणीमाता। हेम वर्णे॥ वज्रनु लछन। पिस्तालिस धनुष्यनुदेहमान दस लाष वर्सनुं आउषु॥ तेमा अढी लाष वर्स तो कुंवरपणे रह्या॥ साडापांच लाष वरसनु राज पाल्यु॥ एक लाष वर्सनी प्रवर्ज्या पाली॥ प्रवर्ज्या लीधा पछी बे महिने केवलज्ञान पाम्या। साधु साधवी॥ श्रावक श्रावीकारूप॥ च

तुर्विध सघतिर्थ थापीने ॥ द्वादसांगी गणीनि पेटी आपिने॥ आठसें साधु सघाते स्वामी नीर्वाण मोक्षनेविषे पधार्या ॥१५॥ हवे पन्नरमा धर्मनाथ तिर्थंकर। निर्वा ण मोक्ष पोहोतापछी ॥ त्रण सागर। तेमा पोणापल्यने उणे आंतरे॥सोलमा श्री शांतिनाथ तिर्थंकर थया॥हस्तीनागपरनगरनेविषे ॥ विश्वसेन राजा पीता ॥ अ चिरादेवी राणी माता ॥ हेम वर्णे ॥ मृगनुं लंछन ॥ चालीस धनुष्यनु देहमान। ए क लाष वर्सनु आउषुं ॥ तेमा पा लाष वर्स तो कुंवरपणे रह्या ॥ पा लाष वरसनुं राज पाल्यु ॥ पा लाख वर्षनि चक्रवर्तीनि पदवी भोगवी॥पा लाष वरसनी प्रव र्ज्यापाली॥प्रवर्ज्या लीधा पछी ॥ एक महीने केवलज्ञान उपनु। साधु साधवी श्रा वक श्रावीकारूप चतुर्विध संघतिर्थ थापीने ॥ द्वादसांगी गणीनी पेटी आपीने ॥ नवसेंसाधुसघाते स्वामी नीर्वाण मोक्षनेविषे पधार्या ॥१६॥ हवे सोलमा शांति नाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंतापछी॥ अर्ध पल्यने आंतरे ॥ सतरमा श्रीकुंथु

नाथ तिर्थंकर थया ॥ गजपुर नगरीनेवीषे ॥ सुर राजा पीता ॥ सुरादेवी राणी मा
ता ॥ हेम वर्णे ॥ छगल कहेता बोकडानु लंछन॥ पात्रीस धनुषनुं देहमान ॥ पचा
णु हजार वरसनु आउखुं ॥ तेमां पोणी चोवीस हजार वरस तो कुंवरपणे रह्या ॥
पोणीचोवीस हजार वरसनु राज पाल्यु ॥ पोणीचोवीस हजार वरस चक्रवर्त्तिनी
पदवी भोगवी ॥ पोणीचोवीस हजार वरसनी प्रवर्ज्या पाली॥ प्रवर्ज्या लिधापछि
सोल महीने केवलज्ञान उपनु ॥ साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारूप चतुर्विध स
घतिर्थ थापिने ॥ द्वादसांगीगणीनी पेटी आपिने ॥ एक हजार साधुसघाते । स्वा
मी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥१७॥ हवे सतरमा कुंथुनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष
पोहोतापछी ॥ पापल्यमांथी । एक क्रोड ने १ हजार वर्सने उणे आतरे ॥१८॥ मा
श्रीअरनाथ तिर्थंकर थया ॥ नागपुर नगरीने विषे ॥ सुदर्सण राजा पिता ॥ दे
वकीदेवी राणी माता ॥ हिम वर्णे ॥ नदावर्त साथीयानुं लंछन ॥ त्रीस धनुषनुं

देहमान ॥ चोरासी हजार वरसनु आउषु ॥ तेमा २१ हजार वरस तो कुंवर पणे रह्या ॥२१॥ हजार वर्सनु राज पाल्यु ॥ २१ ॥ हजार वर्सनी चक्रवृत्तीनी पदवी पाली ॥ २१ ॥ हजार वर्सनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लीधापछी ॥ त्रण वर्षे केवलज्ञान उपनुं ॥ साधु साधवी । श्रावक श्राविकारूप चतुर्विध सघतिर्थ थापीने । द्वादसांगीगणीनि पेटी आपिने ॥ एक हजार साधुसंघाते स्वामी ॥ नीर्वाण मोक्ष पधास्या ॥१८॥ हवे अढारमा अरनाथ तिर्थंकर निर्वाण मोक्ष पोहोंतापछी । एक कोड्ने एक हजार वरसने आंतरे॥ १९ मा मल्लीनाथ तिर्थंकर थया ॥ मिथिला नगरिनेविषे ॥ कुंभ रासा पिता ॥ प्रभावति राणी माता ॥ निले वर्णे ॥ कलसानु लछन ॥ पचविस धनुषनुं देहमान ॥ पचावन हजार वर्सनु आउषु तेमा सो वरस तो कुवरीपणे रह्या ॥ बाकी प्रवर्ज्या पालि ॥ प्रवर्ज्या लि धापछि ॥ त्रीजे पोहोरे केवल ज्ञानउपनु ॥ साधु साधवी । श्रावक श्रावीकारूप चतु

विंधसघतिर्थ थापिने द्वादसांगी गणीनी पेटी आपिने॥ पांचसें साधु॥ अने पाचसें साधवी सघाते॥स्वामी निर्वाण मोक्ष पधास्या ॥ १९ ॥ हवे ओगणीसमा मल्लि नाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंतापछी ॥५४॥ चोपन लाष वरसने आतरे॥२०॥मा मुनिसुव्रत तिर्थंकर थया ॥ राजग्रही नगरीनेविषे ॥ सुमीत्र राजा पीता ॥ पद्मावति राणी माता ॥ साम वर्णे ॥ काछबानु लछन ॥ विस धनुषनु देहमान ॥ त्रीस हजार वर्सनु आउषुं ॥ तेमा साढासात हजार वरस तो कुंवरपणें रह्या। पनर हजार वर्सनु राजपाल्युं। साढासात हजार वर्सनी प्रवर्ज्या पालि ॥ प्रवर्ज्या लिधा पछि ॥ इग्यार महीने केवलज्ञान उपनु । साधु साधवी । श्रावक श्राविकारूप चतुर्विंध ॥ सघतिर्थ थापीने । द्वादसांगीगणीनी पेटी आपिने ॥ एक हजार साधुसंघाते ॥ स्वामी निर्वाण मोक्ष पधास्या ॥२०॥ हवे वीसमा मुनिसुव्रत तिर्थंकर मोक्ष पोतापछी ६ लाप वर्सने आतरे २१ मां नमिनाथ तर्थंकर थया ॥

मथुरा नगरीनेविषे । विजय राजा पिता ॥ विपुलादेवी राणी माता ॥ हेम
वर्णे ॥ निलोत्पलकमलनुं लछन । पनर धनुषनु देहमान ॥ दस हजार वर्सनु
आउषू ॥ अढि हजार वर्स तो कुंवरपणे रह्या ॥ साढाछ हजार वर्सनुं राज
पाल्युं ॥ एक हजार वर्सनी प्रवर्ज्या पालि ॥ प्रवर्ज्या लिधापछि ॥ नव महीने
केवलज्ञान उपनु ॥ साधु साधवी० । एक हजार साधुसघाते॥स्वामी निर्वाण मो
क्षनेविषे पधार्या॥२१॥हवे एकवीसमा नमीनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंतापछी । पा
च लाष वर्सने आंतरे ॥२२॥ मा नेमनाथ तिर्थंकर थया । सोरीपुर नगरीनेविषे ।
समुद्रविजय राजा पीता ॥ सीवा देवी राणी माता॥साम वर्णे । सपनु लछन ॥
दसधनुषनु देहमान ॥ एक हजार वर्सनु आउपू ॥ तेमा त्रणसें वर्स तो कुंव
रपणे रह्या ॥ सातसें वर्सनी प्रवर्ज्या पालि ॥ प्रवर्ज्या लिधापछी । चोपन द
हाडे केवलज्ञान उपनु ॥ साधु० ॥ पाचसें ने छत्रीस साधुसघाते ॥ स्वामी नि

र्वाण मोक्ष पधार्या॥२२॥हवे बावीसमा नेमनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंतापछी ॥ पोंणीचोर्यासीहजार वर्सने आतरे ॥ २३ ॥ मा पार्श्वनाथ तिर्थंकर थया ॥ वाणारसी नगरीने विषे ॥ अश्वसेन राजा पिता ॥ वामादेवी राणी माता ॥ निले वर्णे ॥ सर्पनुं लंछन ॥ नव हाथनु देहमान ॥ सो वर्सनुं आउषू ॥ तेमा ३० वर्स तो कुंवरपणे रह्या सितेर वर्सनी प्रवर्ज्या पाली ॥ प्रवर्ज्या लिधापछि चोर्यासी दाहाडे केवलज्ञान उपनु साधु० एक हजार साधुसंघाते ॥ स्वामी निर्वाण मोक्ष पधार्या ॥ २३ ॥ हवे त्रेवीसमा श्रीपार्श्वनाथ तिर्थंकर मोक्ष पोहोंतापछी ॥ अढिसें वर्सने आतरे ॥ चोविसमा श्रीमहावीर तिर्थंकर थया ॥ पत्रीकुन्डग्राम नगरनेविषे ॥ सिध्धार्थ राजा पिता ॥ त्रिसलादेवी राणी माता ॥ हेम वर्णे ॥ सिंहनुं लछन ॥ सात हाथनु देहमान ॥ बोहोतेर वर्सनुं आउषू ॥ तेमा ॥३०॥ वर्स तो कुंवरपणे रह्या ॥ ४२ ॥ बेतालिस वर्षनी प्रवर्जा पाली ॥

प्रवर्जा लिधापछी ॥ साढाबार वर्स ने एक पपवाडे केवलज्ञान उपनु । साधु साधवी । श्रावक श्रावीका रूप चतुर्विध सघतिर्थ थापिने ॥ द्वादसागीगणीनी पेटी आपिने ॥ आसो वद अमावास्यानी रात्रे । पावापुरी नगरीनेविषे । चोथा आराना त्रणवर्स ने साढाआठ महीना बाकी रह्या ॥ त्यारे स्वामीनाथ एकाकि पणे ॥ बे दीवसनु अणासण करी ॥ स्वामी निर्वाण मोक्षनेविषे पहोता ॥ २४ ॥ ० ॥ ए प्रथम पेहला तिर्थंकर श्रीऋषभदेवस्वामी ॥ अने चोविसमा तिर्थंकर श्रीमहाविरस्वामी ॥ ए बेहू विचे । एक कोडाकोड सागरो पम ऊणेरु ॥ तेहमा ४२ बेंतालिस हजार वर्स उणानु आतरु जाणवू ॥ इति श्रीचोविस तिर्थंकरना आतरा सपूर्ण ॥

ॐ नम अथ श्रीकर्मप्रकृतिना बोल लिख्यते ॥ पहिलु ज्ञानावरणीय कर्म ते आखना पाटासमान ॥१॥ बिजुं दर्शनावरणीय कर्म ते राजाना पोलिया समान

॥२॥ त्रिजु वेदनीय कर्म ते मध तथा अफिणे खरड्या खड्गसमान ॥ ३ ॥ चउथु मोहनीय कर्म ते मदिरापान समान ॥ ४ ॥ पाचमुं आयुष कर्म ते हेडु समान ॥ ५ ॥ छठुं नाम कर्म ते चितारासमान ॥ ६ ॥ सातमु गोत्र कर्म ते कुम्भारना चाकडा समान ॥ ७ ॥ आठमु अतराय कर्म ते राजाना भण्डारीसमान ॥ ८ ॥ ज्ञानावरणीय कर्मे अनत ज्ञानगुण ढांक्योछे ॥ १ ॥ दर्शनावरणीय कर्मे अनत दर्शनगुण ढाक्योछे ॥ २ ॥ वेदनीय कर्मे अनंत अव्याबाध आत्मिक सुख रोक्युछे ॥ ३ ॥ मोहनीय कर्मे क्षायक समकित गुण रोक्योछे ॥ ४ ॥ आयुष कर्मे अक्षय स्थिति गुण रोक्योछे ॥ ५ ॥ नाम कर्मे अमूर्तिगुण रोक्योछे ॥६॥ गोत्र कर्मे अगुरु लघुगुण रोक्योछे॥ ७ ॥ अतराय कर्मे अनत आत्मिकशक्ति गुण रोक्योछे ॥८॥ ज्ञानावरणीय कर्म ते ६ प्रकारे बाधे ॥ पहिले बोले नाणप डिणीयाए ते ज्ञानीना भुण्डा बोले ॥ १ ॥ बिजे बोले नाणनिन्हवणयाए ते

ज्ञानिनो उपकार उलवे ॥ २ ॥ त्रिजे बोले नाणआसायणाए ते ज्ञानिनि आ शातना करे ॥ ३ ॥ चउथे बोले नाणअंतराएण ते । ज्ञाननि अंतराय पाडे ॥ ४ ॥ पाचमे बोले नाणपउसेणं ते । ज्ञानिउपर द्वेषकरे ॥ ५ ॥ छठे बोले नाणविसवायणाजोगेण ते । ते ज्ञानिसाथे खोटाऊधमा विखवादकरे ॥ ६ ॥ एछ प्रकारे बाधे ते ॥ पाच तथा १० प्रकारे ज्ञोगवे । ते पाच किया ते कहेछे । मतिज्ञानावरणीय ॥ १ ॥ श्रुतज्ञानावरणीय ॥ २ ॥ अवधिज्ञानावरणीय ॥ ३ ॥ मनपर्यवज्ञाना वरणीय ॥४॥ केवलज्ञानावरणीय ॥५॥ ए ॥ ५ ॥ ज्ञान प्रगट थावा दे नहि तथा १० प्रकारे ज्ञोगवे ते कहेछे सोयावरणे ॥ १ ॥ सोयविन्नाणावरणे ॥ २ ॥ नेत्तावरणे ॥ ३ ॥ नेत्तविनाणावरणे ॥ ४ ॥ घाणावरणे ॥ ५ ॥ घाणविन्नाणावरणे ॥ ६ ॥ रसावरणे ॥ ७ ॥ रसविन्नाणावरणे ॥ ८ ॥ फासावरणे ॥ ए ॥ फासविन्नाणावरणे १० ए ॥ १० ॥ प्रकारे ज्ञोगवे । हवे ज्ञानावरणी

य कर्मनि स्थिति ॥ जघ० । अंतर्मुहुर्त्तनि । उत्० । त्रिश कोमाकोमि सागरो पमनी । अने अवाधा काल करे तो । त्रिण हजार वरसनि स्थिति ॥ १ ॥ हवे दर्शनावरणीय कर्म ॥ ६ ॥ प्रकारे बाधे ते कहेछे ॥ पहिले बोले । दंशणपमिणी याए ॥ १ ॥ दशणनिएह्वणयाए ॥ २ ॥ दशण आसायणाए ॥ ३ ॥ दंशण अतराएण ॥ ४ ॥ दंशणपउसेणं ॥ ५ ॥ दशण विसवायणाजोगेण ॥ ६ ॥ ए ॥ ६ ॥ प्रकारे बाधे ते ॥ ए ॥ प्रकारे नोगवे । ते कहेछे । चक्षुदर्शनावरणीय ॥ १ ॥ अचक्षुदर्शनावरणीय ॥ २ ॥ अवधिदर्शनावरणीय ॥ ३ ॥ केवलदर्शनावरणीय ॥ ४ ॥ निद्रा ॥ ५ ॥ निद्रानिद्रा ॥ ६ ॥ प्रचला ॥ ७ ॥ प्रचलाप्रचला ॥ ८ ॥ थिणद्धिनिद्रा ॥ ए ॥ ए ॥ ए ॥ प्रकारे नोगवे ॥ दर्शनावरणीय कर्मनि स्थिति जघ० । अतर्मुहुर्त्तनि । उत्० ॥३०॥ कोमाकोमि सागरोपमनि । अनेअवाधा काल करे तो । त्रिण हजार वरसनि स्थिति ॥ २ ॥ त्रिजु वेदनीय

कर्म तेहना २ भेद ॥ सातावेदनीय ॥ १ ॥ असाता वेदनीय ॥ २ ॥ तेहमा सातावेदनीय दशप्रकारे बांधे ते कहेछे । पाणाणुकंपयाए ॥ १ ॥ भुयाणुकपयाए ॥ २ ॥ जीवाणुकपयाए ॥ ३ ॥ सत्ताणुकपयाए ॥ ४ ॥ बहुण पाणाण भुयाण जीवाण सत्ताण अडुखणयाए ॥ ५ ॥ असोयणयाए ॥६॥ अझुरणयाए ॥ ७ ॥ अतिप्पणयाए ॥ ८ ॥ अपिट्टणयाए ॥ ए ॥ अपरियावणयाए ॥१०॥ ए ॥१०॥ प्रकारे बांधे । ते ॥ ८ ॥ प्रकारे भोगवे । मणुणासद्दा ॥ १ ॥ मणुणारुवा ॥ २ ॥ मणुणागंधा ॥ ३ ॥ मणुणारसा ॥ ४ ॥ मणुणाफासा ॥ ५ ॥ मणसुहया ॥ ६ ॥ वयसुहया ॥७॥ कायसुहया ॥८॥ ए ॥८॥ प्रकारे भोगवे । हवे एहनि स्थिति । जघ० ॥ २ ॥ समयनि उत्० ॥ १५ ॥ कोडाकोड सागरोपमनि । अबाधा काल करे तो । जघ० । अंतर्मुहुर्त्तनि । उत्० । दोढ हजार वरसनी स्थिति । हवे असातावेदनीय ॥ १२ ॥ प्रकारे बांधे ते कहेछे । परडुखणयाए ॥ १ ॥

परसोयणयाए ॥ २ ॥ परझुरणयाए ॥३॥ परतिप्पणयाए ॥ ४ ॥ परपिट्टणयाए ॥५॥ परपरियावणयाए ॥६॥ बहुणं पाणाणं नुयाण जीवाण सत्ताण ऊ खणयाए ॥७॥ सोयणयाए ॥८॥ जुरणयाए ॥९॥ तिप्पणयाए ॥१०॥ पिट्टणयाए ॥११ परियावणयाए ॥ ए ॥ १२ ॥ प्रकारे बाधे ते ॥८॥ प्रकारे नोगवे । ते। अमणुणा सद्दा ॥ १ ॥ अमणुणारुवा ॥ २ ॥ अमणुणागधा ॥ ३ ॥ अमणुणारसा ॥ ४ ॥ अमणुणाफासा ॥ ५ ॥ मणऊहया ॥ ६ ॥ वयऊहया ॥ ७ ॥ कायऊहया ॥ ८ ॥ ए ॥ ८ ॥ प्रकारे नोगवे । हवे एहनि स्थिति । जघ० ॥ १ ॥ सागरना ॥ ७ ॥ नाग करिये एहवा ॥ ३ ॥ नाग एक पल्प ने असख्यातमे नाग उणानि उत्० । त्रिश कोमाकोमि सागरोपमनि । एहनो आबाधाकाल ॥ ३ ॥ हजार वरसनो ॥ ३ ॥ हवे चउथु मोहनीय कर्म ते ७ प्रकारे बाधे ॥ तिव्वकोहे ॥ १ ॥ तिव्वमाणे ॥ २ ॥ तिव्वमायाए ॥ ३ ॥ तिव्वलोहे ॥ ४ ॥ तिव्वदंसणमोहणिक्के ॥

५ ॥ तिव्वचरित्तमोहणिज्जे ॥ ६ ॥ ए ६ प्रकारे बांधे ते २८ प्रकारे जोगवे । अनंतानुवधि क्रोध ते पर्वतनि राइसमान ॥ १ ॥ अनतानुवंधि मान ते पथर ना स्तंजसमान ॥ २ ॥ अनतानुवधि माया ते वांशनि गांठसमान ॥ ३ ॥ अन तानुवंधि लोज ते किरमजना रंगसमान ॥४॥ ए ॥ ४ ॥ रे गति करे नरकनि । स्थिति करे जावजीवनि । घातकरे समकितनि ॥ ४ ॥ अप्रत्याख्यानी क्रोध ते तलावना खोटसमान ॥ १ ॥ अप्रत्याख्यानी मान ते हाम्कना स्तंज समा न ॥ २ ॥ अप्रत्याख्यानी माया ते । घेटाना शृंगसमान ॥ ३॥ अप्रत्याख्यानी लोज ते नगरनि खालना कर्दमसमान ॥ ४ ॥ ए चारे गति करे तिर्यंचनि । स्थिति करे वरस एकनि । घात करे देशव्रतनि ॥ ८ ॥ पच्चखाणावरणीय क्रोध ते वेलुनि लिटिसमान ॥ १ ॥ पच्चखाणावरणीय मान ते लाकमना स्तंजस मान ॥ २ ॥ पच्चखाणावरणीय माया ते गोमुत्रिकासमान ॥ ३ ॥ पच्चखाणावर

णीय लोन्न ते गाम्नाना खजन समान ॥ ४ ॥ ए चारे गति करे मनुष्यनि ॥ स्थिति करे च्यार मासनि। घात करे सर्व व्रतनि ॥ १२ ॥ सञ्ज्वलनो क्रोध ते पाणिनि लिटिसमान ॥ १ ॥ संज्वलनो मानते नेत्रना स्तम्नसमान ॥ २ ॥ सञ्ज्वलनो माया ते वासनि छोइ समान ॥ ३ ॥ सञ्ज्वलनो लोन्न ते । पतग तथा हलिद्रना रंगसमान ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ रे गति करे देवतानि । स्थिति करे पनर दिननि । घात करे केवलज्ञाननि ॥ १६ ॥ ए ॥१६॥ कषाय । हवे ॥ ए ॥ नो कसाय कहेछे । हाश्य ॥ १७ ॥ रति ॥ १८ ॥ अरति ॥ १९ ॥ न्नय ॥ २० ॥ शोक ॥ २१ ॥ डुगंछा ॥२२॥ स्त्रीवेद ॥२३॥ पुरुषवेद ॥ २४ ॥ नपुंसकवेद ॥२५॥ ए चारित्र मोहनीयनि ॥२५॥ प्रकृति ॥ हवे दसण मोहनीयनि ॥ ३ ॥ प्रकृति कहेछे । समकित मोहनीय ॥ १ ॥ मिथ्यात्व मोहनीय ॥ २ ॥ समामिथ्यात्व मोहनीय ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ दर्शन मोहनीयनि।

एव सर्व मिलि ॥ ७८ ॥ प्रकृति । हवे एहनि स्थिति जघ० । अतर्मुहुर्तनि । उत्० ॥ ७० ॥ कोडाकोडिसागरोपमनि । अवाधा काल करे तो । जघ० । अं तर्मुहुर्तनी । उत्० ॥ ७ ॥ हजार वरसनि छे ॥ ४ ॥ हवे पांचमुं आयुष कर्म । सोल प्रकारे बाधे । तेहमांहि । नारकिनु आयुष ॥ ४ ॥ प्रकारे बांधे । ते महा रंभयाए ॥ १ ॥ महापरिग्गहियाए ॥ २ ॥ कुणिमाहारेण ॥ ३ ॥ पंचिंदिय वहेण ॥ ४ ॥ तिर्यंचनुं आयुष ॥ ४ ॥ प्रकारे बाधे ॥ माइलयाए ॥ १ ॥ नियडिलयाए ॥ २ ॥ अलियवयणेण ॥ ३ ॥ कुडतोलेकुडमाणे ॥ ४ ॥ म नुष्यनु आयुष ॥ ४ ॥ प्रकारे बाधे । पगइभद्दयाए ॥ १ ॥ पगइविणीयाए ॥ २ ॥ साणुकोसयाए ॥ ३ ॥ अमछरियाए ॥ ४ ॥ देवतानु आयुष ॥ ४ ॥ प्रकारे बाधे । सरागसजमेणं ॥ १ ॥ सजमासजमेण ॥ २ ॥ बालतवोकमेणं ॥ ३ ॥ अकामनिजराए ॥ ४ ॥ ए १६ प्रकरे बाधे । ते ॥ ४ ॥ प्रकारे जो

गवे। नारकि ॥ १ ॥ देवतानुं आयुष जघ० ॥ १० ॥ हजार वर्ष ने अंतर्मुहु र्ते अधिकनु ॥ उत्० ॥ ३३ ॥ सागर ने पूर्वकोमिनो त्रिजो नाग अधिक ॥ मनुष्य ॥ १ ॥ तिर्यंच ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ नु आयुष जघ० । अतमुहूर्त । उ त्० ॥ ३ ॥ पल्यने। पूर्वकोमिनो त्रिजो नाग अधिक ॥ ५ ॥ हवे छठु नाम कर्म तेहना २ नेद ॥ शुननाम ॥ १ ॥ अशुननाम ॥ २ ॥ तेमा शुननाम कर्म ॥ ४ ॥ प्रकारे बांधे ॥ कायुज्जयाए ॥ १ ॥ नासुज्जयाए ॥ २ ॥ नावुज्जयाए ॥ ३ ॥ अविसंवायणाजोगेण ॥ ४ ॥ ते ॥ १४ ॥ प्रकारे नोगवे। इठासद्दा ॥१॥ इठारुवा २ इठागधा ३ इठारसा ४ इठाफासा ॥ ५ ॥ इठागइ ॥ ६ ॥ इठा ठिइ ॥ ७ ॥ इठेलावणे ॥ ८ ॥ इठाजसोकित्ती ॥ ए ॥ इठेउठाणकम्मबलवीरि यपुरिसाकारपरक्कमे ॥ १० ॥ इम्सरया ॥ ११ ॥ कतसरया ॥ १२ ॥ पिय सरया ॥ १३ ॥ मणुणसरया ॥ १४ ॥ ए ॥ १४ ॥ प्रकारे नोगवे ॥ अशुननाम

कर्म ॥ ४ ॥ प्रकारे वाधे ॥ कायअपुज्ञयाए ॥ १ ॥ न्नासापुज्ञयाए ॥२॥ न्नावा पुज्ञयाए ॥ ३ ॥ विसंवायणाजोगेणं ॥ ४ ॥ ते ॥ १४ ॥ प्रकारे न्नोगवे । अणि ठसद्दा ॥ १ ॥ अणिठरुवा ॥ २ ॥ अणिठगंधा ॥ ३ ॥ अणिठरसा ॥ ४ ॥ अणिठफासा ॥ ५ ॥ अणिठगइ ॥ ६ ॥ अणिठठिइ ॥ ७ ॥ अणिठेलावणे ॥८॥ अणिठजसोकित्ति ॥९॥ अणिठेउठाणकम्मबलवीरियपुरिसाकारपरक्कमे ॥ १० ॥ हिणसरया ॥ ११ ॥ दिणसरया ॥ १२ ॥ अणिठसरया ॥ १३ ॥ अ कंतसरया ॥ १४ ॥ ए ॥ १४ ॥ प्रकारे न्नोगवे ॥ हवे नाम कर्मनि ॥९३॥ प्रकृ ति कहेछे ॥ नरकगति ॥ १ ॥ तिर्यंचगति ॥ २ ॥ मनुष्यगति ॥३॥ देवगति ॥ ॥ ४ ॥ एकेंड्रिय जाति ॥ ५ ॥ वेइड्रियजाति ॥ ६ ॥ तेइड्रिय जाति ॥ ७ ॥ च उरिंड्रिय जाति ॥ ८ ॥ पंचेंड्रियजाति ॥ ९ ॥ उदारिकसरिर ॥ १० ॥ वैक्रेयस रिर ॥ ११ ॥ आहारकसरिर ॥ १२ ॥ तेजससरिर ॥ १३ ॥ कार्मणसरिर ॥

॥ १४ ॥ उदारिकअगोपाग ॥ १५ ॥ वैक्रेयअंगोपाग ॥ १६ ॥ आहारकअगो
उपाग ॥ १७ ॥ उदारिकबधन ॥ १८ ॥ वैक्रेयबधन ॥ १९ ॥ आहारकबधन॥
॥ २० ॥ तेजसबधन ॥ २१ ॥ कार्मणबंधन ॥ २२ ॥ उदारिकसंघातन ॥२३॥
वैक्रेयसंघातन ॥ २४ ॥ आहारकसंघातन ॥ २५ ॥ तेजससघातन ॥ २६ ॥
कार्मणसघातन ॥ २७ ॥ वज्रऋषभनाराचसंघयण ॥ २८ ॥ ऋषभनाराचसंघ
यण ॥ २९ ॥ नाराचसघयण ॥ ३० ॥ अर्द्धनाराचसघयण ॥ ३१ ॥ किलकस
घयण ॥ ३२ ॥ छेवटुसघयण ॥ ३३ ॥ समचउरस्त्रसंठाण ॥ ३४ ॥ निगोहपरि
मम्डलसठाण ॥ ३५ ॥ सादिसठाण ॥ ३६ ॥ वामनसठाण ॥ ३७ ॥ कुब्जसठाण
॥ ३८ ॥ हुम्डसठाण ॥ ३९ ॥ कालोवर्ण ॥ ४० ॥ निलोवर्ण ॥ ४१ ॥ रातोवर्ण
॥ ४२ ॥ पिलोवर्ण ॥ ४३ ॥ धोलोवर्ण ॥ ४४ ॥ सुरभिगध ॥ ४५ ॥ दुरभि
गध ॥ ४६ ॥ तिखोरस ॥ ४७ ॥ कडुवोरस ॥ ४८ ॥ कसायलोरस ॥ ४९ ॥

खाटोरस ॥ ५० ॥ मिठोरस ॥ ५१ ॥ खरखरोस्पर्श ॥ ५२ ॥ सुंहाळो फरस ॥ ५३ ॥ जारि फरस ॥ ५४ ॥ हलुवो फरस ॥५५॥ टाढो फरस ॥५६॥ उन्हो फरस ॥ ५७ ॥ चोपड्यो फरस ॥ ५८ ॥ लुखो फरस ॥ ५९ ॥ नरकानुपूर्वी ॥ ६० ॥ तिर्यंचानुपूर्वी ॥ ६१ ॥ मनुष्यानुपूर्वी ॥ ६२ ॥ देवतानुपूर्वी ॥ ६३ ॥ शुभविहायगति ॥ ६४ ॥ अशुभविहायगति ॥ ६५ ॥ ए ॥ ६५ ॥ पिंडप्रकृति थइ । पराघातनाम ॥ ६६ ॥ उस्वासनाम ॥ ६७ ॥ अगुरुलघुनाम ॥ ६८ ॥ आतापनाम ॥ ६९ ॥ उद्योतनाम ॥ ७० ॥ उपघातनाम ॥ ७१ ॥ तिर्थंकरनाम ॥ ७२ ॥ निर्माणनाम ॥ ७३ ॥ त्रशनाम ॥ ७४ ॥ वादरनाम ॥ ७५ ॥ प्रत्येक नाम ॥ ७६ ॥ पर्याप्तनाम ॥ ७७ ॥ स्थिरनाम ॥ ७८ ॥ शुभनाम ॥ ७९ ॥ सौभाग्यनाम ॥ ८० ॥ सुस्वरनाम ॥ ८१ ॥ आदेयनाम ॥ ८२ ॥ जशोकिर्तिनाम ॥ ८३ ॥ स्थावरनाम ॥ ८४ ॥ सुक्ष्मनाम ॥ ८५ ॥ साधारणनाम ॥ ८६ ॥

अप्रजाप्तनाम ॥ ८७ ॥ अस्थिरनाम ॥ ८८ ॥ अशुभनाम ॥ ८९ ॥ दौर्भाग्य नाम ॥ ९० ॥ दुस्वरनाम ॥ ९१ ॥ अनादेयनाम ॥ ९२ ॥ अजशोकिर्तिनाम ॥ ९३ ॥ ए ॥ ९३ ॥ प्रकृति थइ । तेहमा ॥ १० ॥ बधननि अधिक भेळता ॥ १०३ ॥ प्रकृति पण । ग्रथवाळा कहेछे । अथवा नामकर्मनि ॥ ४२ ॥ पण खरि । गति ॥ १ ॥ जाति ॥ २ ॥ शरिर ॥ ३ ॥ अगोपाग ॥ ४ ॥ बधन ॥५॥ सघातन ॥ ६ ॥ वर्ण ॥ ७ ॥ गध ॥ ८ ॥ रस ॥ ९ ॥ फरस ॥ १० ॥ संघयण ॥ ११ ॥ सठाण ॥ १२ ॥ आनुपूर्वी ॥ १३ ॥ विहायगति ॥ १४ ॥ ए ॥ १४ ॥ अने प्रत्येक प्रकृति ॥ ८ ॥ त्रशनो दशको ॥ १० ॥ स्थावरनो दशको ॥१०॥ एव ४२ थइ । तथा विस्तारे चउदनि ॥६५॥ तथा प्रत्येक प्रकृति ॥८॥ त्रशनो दशको ॥ १० ॥ स्थावरनो दशको ॥ १० ॥ एव विस्तारे ॥९३॥ प्रकृति थइ॥ नामकर्मनि स्थिति । जघन्य । आठ मुहुर्त्तनि । उत्० । विश कोडाकोडि सागरो

पमनि ॥ अबाधा काल ॥ २ ॥ हजार वरसनो ॥ ६ ॥ हवे गोत्रकर्मना ॥ २ ॥
भेद ॥ ऊंचगोत्र ॥ १ ॥ निचगोत्र ॥२॥ तेहमा उचगोत्र ॥ ८ ॥ प्रकारे बाधे ॥
जाइअमदेण ॥ १ ॥ कुलअमदेण ॥२॥ बलअमदेण ॥३॥ रुवअमदेणं ॥ ४ ॥
तवअमदेण ॥ ५ ॥ सुयअमदेण ॥ ६ ॥ लाभअमदेण ॥७॥ इस्सरियअमदेणं
॥ ८ ॥ ए आठ मद अणकरवे करि उचगोत्र बाधे । ते ॥ ८ ॥ प्रकारे भोगवे ॥
जाइविसिठिया ॥ १ ॥ कुलविसिठिया ॥ २ ॥ बलविसिठिया ॥ ३ ॥ रुवविसि
ठिया ॥४॥ तवविसिठिया ॥५॥ सुयविसिठिया ॥ ६ ॥ लाभविसिठिया ॥ ७ ॥
इस्सरियविसिठिया ॥ ८ ॥ ए ॥ ८ ॥ प्रकारे भोगवे ॥ १ ॥ हवे निचगोत्र ॥८॥
प्रकारे बांधे ते । जाइमएण ॥ १ ॥ कुलमएण ॥ २ ॥ जावइस्सरियमएण । ए
॥ ८ मद करवे करि निचगोत्र बाधे । ते ॥ ८ प्रकारे भोगवे जाइविहिणया जावइ
स्सरियविहिणया ॥ २ ॥ गोत्रकर्मनि स्थिति । जघ० ॥ ८ ॥ मुहुर्त्तनि ॥ उत्०।

विश कोमाकोमि सागरोपमनि ॥ अबाधा काल बे हजार वर्षनो ॥ ७ ॥ हवे ८ मु। अंतरायकर्म । पाच प्रकारे बाधे ॥ दानातराय ॥१॥ लाभातराय ॥ २ ॥ भोगातराय ॥ ३ ॥ उवभोगातराय ॥ ४ ॥ वीर्यातराय ॥ ५ ॥ ए ॥ ५ ॥ अतराय पामवे करि अतरायकर्म बाधे। ते पाच प्रकारे भोगवे दानातराय ॥ १ ॥ लाभातराय ॥ २ ॥ भोगातराय ॥ ३ ॥ उवभोगातराय ॥ ४ ॥ वीर्यातराय ॥५॥ ए ॥ ५ ॥ पामे नहि । ए । अतरायकर्मनि स्थिति ॥ जघन्य । अतर्मुहुर्त्तनि । उत् । त्रिश कोमाकोमि सागरोपमनि ॥ अबाधा काल ॥ ३ ॥ हजार वर्षनो ॥ ॥ ८ ॥ बाध्यानि ॥ ८५ ॥ प्रकृति ज्ञानावरणीयनि ॥ ६ ॥ दर्शनावरणीयनि ॥ ६ ॥ वेदनीयनि ॥ ७२ ॥ मोहनीयनि ॥ ६ ॥ आयुपनि ॥ १६ ॥ नामनि ॥ ८ गोत्रनि ॥ १६ ॥ अंतरायनि ॥ ५ ॥ एव सर्व मिलि ॥ ८५ ॥ प्रकृति बाध्यानि जाणवि ॥ भोगव्यानि ए३ प्रकृति ते ज्ञानावरणीयनि ॥ १० ॥ दर्शनावरणी

यनि ॥ ए ॥ नेन्नीयनि ॥ १६ ॥ मोहनीयनि ॥ ५ ॥ तेसम्मत्तवेयणिज्जे ॥ १ ॥ मिछत्तवेयणिज्जे ॥ २ ॥ सम्मामिछत्तवेयणिज्जे ॥३॥ कसायवेयणिज्जे ॥ ४ ॥ नो कसायवेयणिज्जे ॥ ५ ॥ ए ॥७॥ आयुपनि ॥ ४ ॥ नामनि ॥ २७ ॥ गोत्रनि ॥ ॥ १६ ॥ अतरायनि ॥ ७ ॥ ए सर्व मिली ॥ ए३ ॥ प्रकृति नोगव्यानि जाणवी ॥ अथवा ॥ १४७ ॥ प्रकारे पण नोगवे ते पाच ज्ञानावरणीयनि ॥ ५ ॥ दर्शनावरणीयनि ॥ ए ॥ वेदनीयनि ॥ २ ॥ मोहनीयनि ॥ २७ ॥ आयुपनि ॥४॥ नामकर्मनि ॥ ए३ ॥ गोत्रकर्मनि ॥२॥ अतरायनि ॥ ५ ॥ एव सर्व मिलिने ॥ ॥१४७॥ प्रकृति जाणवि। तथा वधन नामकर्मनि ॥ १० प्रकृति ग्रथातरे कहिने ते नेलवता ॥१५७॥ प्रकृति पण थाय॥ अथवा मुलप्रकृति ॥७॥ तेहनि उत्तर प्रकृति ॥ ३१ ॥ ज्ञाननरणीयनि ॥ ५ ॥ दर्शनावरणीयनि ॥ ए॥ वेदनीयनि ॥ ॥ २ ॥ मोहनीयनि ॥२॥ आयुपनि ॥ ४ ॥ नामनि ॥ २ ॥ गोत्रनि ॥ २ अत

रायनि ॥ ५ ॥ एव ॥ ३१ ॥ प्रकृति थाय तेहनो विस्तार ॥ १४८ ॥ कर्मप्रकृति जाणवि । ए बोल सिद्धांतप्रमाणे छे ॥ इति कर्मप्रकृतिना बोल समाप्त ॥

ॐनम सिद्ध ॥ सेकिंत धम्मेझाणे ४ चउविहे चउपडुयारेपन्नते ॥ तजहा ॥ आणाविजए ॥१॥ अवायविजए ॥ २ ॥ विवागविजए ॥ ३ ॥ संठाणविजए ॥४॥ धम्मस्सणझाणस्स चत्तारिलरकणा ॥ पन्नत्ता ॥ तजहा ॥ आणारुइ ॥ १ ॥ निसग्गरुइ ॥ २ ॥ सूतरुइ । उवएसरुइ ॥ ४ ॥ धम्मस्सणंझाणस्सचत्तारि ॥ आलंबणापन्नत्ता ॥ तजहा ॥ वयणा ॥ १ ॥ पुछणा ॥ २ ॥ परियट्टणा ॥ ३ ॥ धम्म कहा ॥ ४ ॥ धम्मस्सणझाणस्स ॥ चत्तारिअणुप्पेहा ॥ पन्नत्ता ॥ तजहा एगत्ताणुप्पेहा ॥ १ ॥ अणिच्चाणुप्पेहा ॥ २ ॥ असरणाणुप्पेहा ॥ ३ ॥ संसाराणुप्पेहा ॥ ४ ॥ ए सूत्र पाठ कह्यो ॥ हवे सूत्रनो अर्थ कहेछे ॥ धर्मध्याननना च्यार भेद तेमाहि पहिलो भेद तेहनो अर्थ कहीएछे ॥ आणाविजए आणा

विजए कहेता वीतरागनी आज्ञानो विचार चींतववो ॥ ते। ए वीतरागनी आज्ञा जे समकित सहित बार व्रत ॥ श्रावकनी इग्यार पडिमा ॥ पच महाव्रत । त्री खुनीवार पडिमा शुभध्यान । शुभयोग ॥ ज्ञानदर्सणचारित्र तप ॥ छकायनी रक्षा । ए। वीतरागनी आज्ञा ॥ आराधवी ॥ तिहां समय मात्रनो प्रमाद न करवो ॥ चतुर्विध तीर्थना गुणकीर्त्तन करवा ॥ ए धर्मध्याननो पेहेलो भेद कह्यो ॥ १ ॥ हवे धर्मध्याननो बीजो भेद कहीयेछे ॥ अवायविजए ॥ अवायविजए कहेता ससारमाहि जीव जेहथकि डुष पामेछे ॥ तेहनो विचार चींतववो ॥ तेहनो। ए विचार ॥ मिथ्यात्व ॥ अविरति ॥ प्रमाद ॥ कषाय ॥ असुभयोग ॥ तथा अढार पापस्थानक॥ छकायनी हिंसा। एह डुषना कारण जाणी ॥ एहवो आश्रवमार्ग॥छांडीने॥सवरमार्ग आदरवो ॥ जेहथी जीव डु ख न पामे ॥ ए धर्मध्याननो बीजो भेद कह्यो॥२॥ हवे धर्मध्याननो त्रीजो भेद कहेछे॥विवागविजए॥

विवागविजए कहेतां जीव जे सुष डुःख जोगवेछे ॥ ते स्याथकी तेहनो विचार चिं
तववो ॥ तेहनो एह विचार ॥ जीवे जेहवेरसेकरि पूर्वे ॥ जेहवा शुभाशुभ ज्ञा
नावरणीयादिक कर्म उपार्ज्याछे ॥ ते शुभाशुभ कर्मना उदयथी जीव तेहवां
सुख डुःख अनुभवेछे ॥ ते अनुभवताथका ॥ कोइ उपर राग द्वेष नाणीये ॥ स
मताभाव आणीए ॥ मन वचन कायाना शुभ योगसहित ॥ श्री जिनधर्मने
विषे प्रवर्तिये ॥ जिमनिरावाध परम सुष पामीए ॥ ए धर्मध्याननो त्रीजो भेद
कह्यो ॥ ३ ॥ हवे धर्मध्याननो चोथो भेद कहीये छीये ॥ सठाणविजए ॥ सठा
णविजए कहेता ॥ त्रण लोकना आकारनु स्वरुप चिंतवीए ॥ तेनु ए स्वरुप ॥ ए
लोक सुपइठकनेआकारे छे ॥ जीव अजीवे सपूर्ण लोक भर्योछे ॥ अस
ष्यात जोयणनी कोमकोमप्रमाणे त्रीछो लोक छे ॥ तिहा असष्याता द्वीप
समुद्र छे ॥ तथा असंष्याता वाणव्यतरना नगर छे ॥ तथा असष्याता ज्योत

षीना विमान छे । तथा असंख्याती ज्योतिषीनी राजधानी छे ॥ तीहा अढी द्वी पमांहि तिर्थंकर जघन्य २० ॥ उत्कृष्टा एकसो सितेर होय ॥ तथा केवलि जघन्य पृथक् कोडि ॥ उत्कृष्टा पृथक्क कोडि तथा साधु जघन्य पृथक् सहस्र कोडि ॥ उत्कृष्टा पृथक् सहस्र कोडि ॥ तेहने वदामि ॥ नमंसामि ॥ सक्कारेमि ॥ समाणे मि ॥ कल्लाण ॥ मंगल ॥ देवय ॥ चेइयं ॥ पज्जुवासामि ॥ तथा त्रिछ लोकमाहि ॥ असख्याता श्रावक श्राविका छे ॥ तेहना गुणग्राम करिये ॥ ते त्रिछ लोकथकी असख्यात गुणो अधिको उर्ध्वलोक छे ॥ तिहा वार देवलोक ॥ नव ग्रैवेयक पाच अनुत्तरविमान सर्व थइने ॥ चोरासी लाख सत्ताणु हजार त्रेवीस विमान छे ॥ तथा तेउपर सिद्धसिला छे ॥ तिहा सिद्धभगवत विराजेछे ॥ तेहने वंदामि ॥ जावपज्जुवासामि ॥ तेउर्ध्वलोकथी काइक विशेषेअधिक अधो लोक छे ॥ तिहां चोरासी लाष नरकावासा छे ॥ सात कोडि बहुतेर लाख भवनपतिना भवन

छे ॥ एहवा त्रिण लोकना सर्व थानक समकित सहित करणी॥विना सर्व जीवे॥ अ
नतीवार जन्म मरणेकरी फरसी मूक्याछे ॥ एम जाणी समकितसहित श्रुत
अने चारित्रधर्मनी आराधना करीये॥ जिम अजरामर पद पामीये ॥ ए धर्म
ध्याननो चोथो भेद कह्यो ॥ ४ ॥ हवे धर्मध्यानना ४ लक्षण ॥ तेमा धर्मध्या
ननु पहिलु लक्षण कहियेछे ॥ आणारुइ ॥ आणारुइ कहेतां वीत रागनी
आज्ञा अगीकार करवानी रुचि उपजे तेहने आणारुइ कहिये॥ ए धर्मध्याननु
पहेलु लक्षण कह्युं ॥ १ ॥ हवे धर्मध्याननुं बीजु लक्षण कहियेछे ॥ निसग्गरुइ॥
निसर्गरुइ कहेता ॥ जीवने स्वभावेज ॥ तथा जाति स्मरणादिक ज्ञानेकरी श्रु
तसहित चारित्रधर्म करवानी रुचि उपजे ॥ तेहने निसग्ग रुचि कहिये ॥ ए
धर्मध्याननु बीजू लक्षण कह्युं ॥ हवे धर्मध्याननु त्रीजू लक्षण कहिएछीये ॥
सुत्तरुइ ॥ सुत्तरुइ कहेता ॥ सूत्रना बे भेद ॥ अगपविठ ॥ १ ॥ अने अगबा

हिर ॥श॥ अंगपविठ ते आचारागादि १९ अंग॥तेमा॥ ११॥अग॥कालिक॥ अने वारसुं अंग दृष्टिवाद॥ ते।उत्कालिक १ अगवाहिरना २ नेद॥आवस्यक १ अने॥आवश्यक व्यतिरिक्त॥ आवश्यक ते सामायकादिक ७ अध्ययन ते उत्कालिक॥ तथा उत्तराध्ययनादिक॥ कालिकसूत्र॥ तथाउववाइप्रमुख उत्कालिक सूत्र॥ सांजलवा तथा जणवानी रुचि उपजे॥ तेहने सूत्ररुचि कहिए॥ ए ध र्मध्याननुं त्रिजुं लक्षण कह्युं॥ ३॥ हवे धर्मध्याननुं चोथुं लक्षण कहियेछे॥ उवएसरुइ॥ उवएसरुई कहेता॥ अज्ञानेकरी॥ उपार्ज्यां कर्म॥ ते ज्ञानेकरी खपावीए॥ ज्ञानेकरी नवा कर्म न वाधीए। मिथ्याते करी उपार्ज्याकर्म ते समकितेकरी खपावीए॥ समकितेकरी नवा कर्म न वाधीए॥ २॥ अविरतेकरी उपार्ज्याकर्म ते विरतेकरी खपावीए॥ विरतेकरी नवा कर्म न बांधीए॥ ३॥ प्रमादेकरी उपार्ज्याकर्म ते अप्रमादेकरी खपावीए॥ अप्रमादेकरी नवाकर्म न वा

धीए ॥ ४ ॥ कषायेकरी उपार्ज्याकर्म ते कषायने अणकरवेकरीने खपावीए । अने कषायने अणकरवे करीने नवा कर्म न बाधीए ॥ ५ ॥ असुभ योगेकरी उपार्ज्याकर्म ते सुभयोगेकरी षपावीए ॥ शुभ योगेकरी नवा कर्म न बाधीए ॥ ॥ ६ ॥ पाच इंद्रीयना स्वादरूप आश्रवेकरी उपार्ज्याकर्म ते तपरूप संवरेकरी खपावीए ॥ तपरूप सवरेकरी नवा कर्म न बाधीए ॥ तेमाटे अज्ञानादिक आश्रवमार्ग छांडीने ज्ञानादिक सवरमार्ग आदरवो ॥ एहवो तीर्थंकरनो उपदेस साभलवानी रुचि उपजे ॥ तेहने उपदेशरुचि कहीए ॥ तथा उगाढरुचि पण कहीए ए धर्मध्याननुं चोथु लक्षण कह्यु ॥ ४ ॥ हवे धर्मध्यानना च्यार आलंबन कहि एछे ॥ वायणा १ पूछणा ॥ २ ॥ परियट्टणा ॥ ३ ॥ धर्मकथा ४ हवे धर्मध्याननुं पेहेलुं आलंबन कहेछे ॥ वायणा ॥ २ ॥ ते केहने कहिए ॥ विनयसहित ॥ ज्ञान ॥ तथा निर्जराने अर्थे ॥ सूत्रना अर्थना जाण ॥ गुर्वादिक समीपे सूत्र

तथा अर्थनी वाचणी दीजीई ॥ तेहने वायणा कहिए ॥ ए धर्मध्याननु पहिलु
आलंबन कह्युं ॥ १ ॥ हवे धर्मध्याननूं बीजूं आलंबन कहिए छीए ॥ पूछणा
॥ २ ॥ पूछणा ते केहनें कहिइ ॥ अपूर्वज्ञान पामवाने अर्थे ॥ तथा जिनमत
दीपाववाने अर्थे ॥ तथा सदेह निवारवाने अर्थे ॥ तथा परनी परीक्षा लेवाने
अर्थे यथा योग्य विनयसहित गुर्वादिकने प्रश्न पूछीए ॥ तेहने पूछणा कहिए ॥
ए धर्मध्याननु बीजू आलंबन कह्यु ॥ २ ॥ हवे धर्मध्याननु त्रीजू आलंबन क
हिएछे ॥ परियट्टणा ॥ परियट्टणा ते केहने कहिए ॥ पूर्वे जे जिनभाषित सूत्र
अर्थ भण्याछे ॥ ते असखलित करवाने अर्थे ॥ तथा निर्जराने अर्थे सुद्ध उप
योगसहित सुद्ध सूत्र अर्थनी वारवार सझाय करीए तेहने परियट्टणा कहिए॥
ए धर्मध्याननूं त्रीजुं आलंबन कह्युं ॥ ३ ॥ हवे धर्मध्याननू चोथु आलंबन क
हीएछे ॥ धर्मकथा ॥ धर्मकथा ते केहने कहिए ॥ वीतरागे जे भाव जेहवा प

रुप्याछे ॥ ते भाव पोते तेहवा लहीने ग्रहीने विसेषे निश्चय करीने संका क
रवा ॥ वितिगिछारहितपणे पोतानी निर्जराने अर्थे परना उपगारने अर्थे सभा
मध्ये ते भाव तेहवा परुपीए तेहने धर्मकथा कहीए ॥ एहवी धर्मकथा कहेता
थका अने सांभलीने सद्दहताथका ॥ ते बेहु वीतरागनी आज्ञाना आराधक
होय ॥ ते धर्मकथा ॥ सवरूपीउवृक्ष सेवीए ॥ जिम मनवछित सुषपामीइ ॥
ते सवरूपीउवृक्ष वषाणी एछे ॥ ते सवरूपीउवृक्ष केहवोछे ॥ विशुद्ध समकि
तरूपी मूल छे जेहनु ॥ १ ॥ धीर्यरूप कद छे जेहनो २ विनयरूप वेदिका छे जे
हनी ॥ ३ ॥ तीर्थंकर तथा च्यार तीर्थना गुण कीर्त्तनरूप खध छे जेहनो ॥४॥
पांच महाव्रतरूप मोटी शाखाछे जेहनी ॥ ५ ॥ पचवीस भावनारूप त्वचा छे
जेहनी ॥ ६ ॥ शुभध्यानने शुभयोगरूप प्रधानपल्लवपत्र छे जेहना ॥ ७ ॥ गु
णरूप फूल छे जेहना ॥ ८ ॥ सीयलरूप सुगध वासना छे जेहनी ॥ ९ ॥ आ

अवहीत फल छे जेहना ॥ १० ॥ मोक्षरूप प्रधानवीज छे जेहनुं ॥ ११ ॥ मद रगिरीना शिखरउपरे जिम चूलिका विराजेछे तिम समकितीना हृदयमा सवर रूपिउवृक्ष वीराजेछे ॥ १२ ॥ एहवा सवररूप वृक्षनी शीतल गया जेहने परिणामे तेहना नवोनवना पाप टले ॥ अने ते परम अतुल सुख पामे इत्या दिक ४ प्रकारनी कथा अखेवणी ॥ १ ॥ विखेवणी ॥ २ ॥ संवेगणी ॥ ३ ॥ निवे गणी ॥ ४ ॥ ए च्यार कथा विस्तारपणे कहिए तेहने धर्मकथा कहीए ॥ ए धर्म ध्याननु चोथु आलंबन कह्यु ॥ ४ ॥ अखेवणी प्रमुष ४ कथानो ए विस्तार ॥ चोथे ठाणे उद्देसे २ बीजे सूत्र ५८ मा मध्येछे ॥ हवे धर्मध्याननी च्यार अणु प्पेहा कहिएछे ॥ अणुप्पेहा ते केहने कहिए ॥ जीवद्रव्य अने अजीवद्रव्य ते हनो स्वभावसरूप जाणवाने अर्थे सूत्रना अर्थ विस्तारे चींतवीए ॥ तेहने अ णुप्पेहा कहिए ॥ हवे धर्मध्याननी पहिली अणुप्पेहा कहेछे ॥ एकत्वाणुप्पेहा ते

केह्ने कहिए ॥ जीवअसख्यात प्रदेसी अरुपीसदासउपयोगी ते चैतन्यरूप
एह्वो एकमाह्रो आत्मा निश्चय नयेछे ॥ तिम सर्व आत्मा निश्चय नये एह
वा छे ॥ अने व्यवहार नये एह्वो आत्मा अनादि कालनो ते अचैतन ॥ जरू
वर्णादि २० रूपसहित पुदगलनो संयोगीथको ॥ त्रस ॥ १ ॥ अने थावर २
ए २ रूप लेइने अनेक नृत्यकार नटुयानीपरे ॥ अनेक रूप अनेक छदे प्रवर्ते
छे ॥ ते त्रसनोत्रसरूपे प्रवर्त्ततो जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्टो वे हजार सागर
ऊऊरासूधी रहे ॥ अने थावरनो थावरपणे प्रवर्त्ततो जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्टो
अनतीउत्सर्पणी ॥ अवसर्पणी कालथी ॥ खेत्रथी अनता लोक प्रमाणे ॥ अलो
कना आकास प्रदेस तेतला काल चक्र उत्सर्पणी अवसर्पणी जाणवी ॥ तेह्ना
असख्याता पुग्गल परावर्त्तनथाय ॥ अगुलने असख्यातमे भागे आकास प्र
देस आवे तेतला असख्याता पुग्गल परावर्त्तन ॥ थावरमध्ये पुग्गल लेइ खे

ल्यो ॥ एव व्यवहार नयथी जीव जाणीइं ॥ १ ॥ वलीत्रस ॥ थावरमध्ये रह्यो थको स्त्री १ पुरुष २ नपुंसक ॥३॥ ए वेदे पुज्जलने सयोगे खेल्यो ॥ प्रवर्त्यो ॥ अनेक रूप नवा लाव्यो ॥ तिहा स्त्रीपुरुषना रूप कोण कोंण रीतना लाव्यो ते कहेछे कोइक प्रस्तावइ देव देवीपणे ॥ तत्र देवीपणे भवनपत्यादिक इसान देवलोकसूधी देवी इद्रनी इद्राणी सुरूपवती अपछरा थई ॥ जघन्य १० हजार वरस उत्कृष्टा ५५ पल्योपम देवागनानेरूपे अनंतिवार ए जीव खेल्यो ॥ पुरुषमध्ये देवतापणे भवनपत्यादिकजावनवमानवग्रैवेयकसूधी महर्धिक देव ॥ महाशक्तिवत इद्रादिक लोकपाल प्रमुखपणे रूपवंत देदीपमान वछित भोग सयोग पणे प्रवर्त्यो ॥ जघन्य ॥ १० ॥ हजार वर्ष उत्कृष्टा ३१ सागरोपम एम अनतीवार भोगीहूउ ॥ शर्केंद्र एकभवमाहि ७ पल्योपमनी बाविस कोमाकोम पंचासी लाप कोम एकोत्तर हजार कोम च्यारसे अठावीस कोम सतावन लाष

चउद हजार वर्से अठ्यासी उपर पाच पल्यनी ८ एव एतली देवि जोगवी
तोहि तृप्ति न पाम्यो ॥ हवे मनुष्यमध्ये स्त्रीवेद पुरुषवेद देवकुरु उत्तरकुरु
मध्ये युगल युगलणी थयो ॥ तिहा मनोहर रूप मनवछित सुप जोगव्या १०
दसप्रकारना कल्पवृक्षना मनवछित सुप जोगव्या ॥ १० ॥ दस प्रकारना क
ल्पवृक्ष मनवछित सुप पहुचाडे स्त्रीपुरुषने क्षणमात्रनो वियोग पडे नहि ॥ ३
पल्योपम निरतर सुख विलस्या हरिवास रमकवासमध्ये २ पल्योपम हेमवय
क्षेत्र १ एरणवय क्षेत्रमध्ये १ पल्य ॥ छपन अंतरदीपामध्ये पल्योपमनो अस
ख्यातमो जाग जुगल पुरुष ॥ युगलणी स्त्री वेदपणे अनतीवार स्त्रीवेदपुरुष
वेदना रूप लेइ खेल्यो पण तृप्ति न पाम्यो ॥ वली चक्रवर्त्तिने घरे स्त्री रत्नपणे
लक्ष्मी सरिषा रूप अनतीवार स्त्रीवेद पुरुषवेदना रूप लेइ खेल्यो पण तृप्ति
न पाम्यो ॥ वासुदेव मडलीक राजा ॥ प्रधान ॥ व्यवहारीयाने घरे ॥ स्त्रीवेद ॥

मनोज्ञ सुख। वछित नोग॥ दीर्घपूर्व कोमादिकनां आउषा स्त्रीपुरुषपणे प्रवर्त्यो॥ वलि तेढिज॥ जीव मनुष्यमध्ये डुर्नागीकुल॥ दरीडी नर्त्तार स्त्री पण अल उरूप डुर्नागिणी पण ए जीव नटवापणे प्रवर्त्यो॥ तोहि मनुष्यपति स्त्री पुरुपनो अवतार पूरो नथयो॥ वली तीर्यंच पचेंडीयमध्ये जलचरादि ५ मध्ये स्त्री वेदे पुरुपवेदे प्रवर्त्यो वली ते जीव सात नरक॥ पाच एकेंडीय त्रिण विगलेंडीय तथा असङ्गी तिर्यंच मनुष्य ए नियमानपुंसकवेद अने सङ्गीतिर्यंच मनुष्य मध्ये पण नपुसक होए ते सर्वे नपुसकवेद ए जीव स्त्रीवेदे प्रवर्त्यो ते उत्कृष्टा एकसो दस पल्य अनइ प्रथक पूर्व कोमसूधी स्त्रीवेदे खेल्यो॥ जघन्य आउखा नोगव्या आश्री अतमुहुर्त्त॥ पुरुपवेदे उत्कृष्टे एथक् सो सागर जाझेरासूधी पुरुपवेदमध्ये खेल्यो जघन्य आउषा नोगव्या आश्री अंतर्मुहुर्त्त॥ नपुसक वेद उत्कृष्टो अनंता कालचक्र असंख्याता पुजल परावर्त्तनसूधी नपुसकवेदे

खेल्यो ॥ जघन्य आउषा जोगव्या आश्री अंतर्मुहुर्त्त ॥ ए जिहा गयो तहा एकलो पुद्गलने सयोगे अनेकरूप परावर्त्तन कीधा ए सर्व व्यवहारनय जीवने विषे जाणवो ॥ एवा प्रवर्त्तननो मिटावणहार तेथी जिनधर्मने विषे सुधसहणासहित सुध्धउदम पराक्रमनुं फोरववु ॥ एहविशुध्ध ॥ जिनमते करी आत्मानुं साधन थाय ॥ तिवारे सिध्धपणु पामें ॥ तत्रज एकलो निश्चय नय आत्मा जाणवो तेमाटे शुध्ध व्यवहार प्रवर्त्तवे ॥ अशुध्ध व्यवहार मिटे तिवारे सिध्ध होय एहवो माहरो एक आत्मा छे जेहनणी अपरपरिवार ते सवार्थ रूपी अने पड गसा १ मीससा २ वीससा ३ पुद्गल ते वर्ण पर्जवे करी जे जेहवे सभावे छे ॥ ते तेहवे सभावे नरहे ते पण असास्वता तेमाटे एक माहरो पोतानो आत्मा पोताना कारजनो साधक सास्वतो जाणीने पोताना आत्मानु साधन करीये ॥ ए धर्मध्याननी पेहेली अणुप्पेहा कही ॥ हवे धर्मध्याननी बीजी अणुप्पेहा

कहेछे ॥ अणी चाणुप्पेहा ॥ १ ॥ ते केहने कहिये रूपीपुग्गलने अनेकप्रकारे यतना करिइ ॥ तोहि पण अनित्य ॥ नित्य एक श्रीजिनधर्म परम सुखदायक पोताना आत्माने ॥ तेमाटे आत्मा नित्य जाणीने समकितादिक सवरेकरि पुष्टो करीये ॥ ए धर्म ध्याननी वोजी अणुप्पेहा कही ॥ २ ॥ हवे धर्मध्याननी त्रीजी अणुप्पेहा कहीयेछे ॥ असरणाणुप्पेहा ॥ असरणाणुप्पेहा ते केहने कहिये आ जवनेविषे अने परजव पहोंचता ॥ जीवने एक समकितपूर्वक जिन धर्मविना जन्म जरा ॥ मरणना ॥ डुख निवारवा वीजो कोइ सरण समर्थ नथी ॥ इम जाणी श्रीजिनधर्मनुं सरण करीये ॥ जिम परम सुख उपजे ॥ ए धर्मध्याननी त्रीजी अणुप्पेहा कही ॥ हवे धर्मध्याननी चोथी अणुप्पेहा कहियेछे ॥ ससाराणुप्पेहा ससाराणुप्पेहा ते केहने कहिये ॥ सवार्थरूप ससार समुद्रमाहे ॥ जनम जरा मरण ॥ सयोग वियोग ॥ सारीरी मानसी डुख कषा

य मिथ्यात त्रसनादिक बहुत ॥ जल कल्लोलादिकनी लहिरे करी ॥ चार गति चोवीस दम्कनेविषे परिभ्रमण करता जगत जीवने श्रीजिनधर्मरूप द्विपानो आधार छे ॥ तथा संजमरूप नावा तिहां सुधसमकितरूप निर्जामक नावानो पेम्णहार छे ॥ एहवीनावायेकरी जीव सिध्दिरूप महा नगरनेविपे पहुचें ॥ तिहां अनत अतुल ॥ विमल ॥ सिध्दना सुख जीव पामे ॥ ए धर्मध्याननी चोथी अ णुप्पेहा कही ॥ ४ ॥ एहवा धर्मध्यानना गुण जाणीने सदा धर्मध्यान ध्याइये जिमपरम सुखपामीये ॥ इति धर्मध्यान संपूर्ण ॥

ॐ नम अथ श्रीपाचबोल लिख्यते ॥ पहिलो नारकिनो द्वार ॥१॥ बिजो भवनप तिनो द्वार ॥ २ ॥ त्रिजो वाणव्यतरनो द्वार ॥ ३ ॥ चउथो ज्योतिषीनो द्वार ॥४॥ पाचमो वैमानिकनो द्वार ॥ ५ ॥ हवे पहिलो नरकनो द्वार कहेछे पहिले नाम ॥१॥ बिजे गोत्र ॥२॥ त्रिजे अर्थ ॥ ३ ॥ चोथे पिंड ॥ ४ ॥ पाचमे पोलार ॥ ५ ॥

ठे अलोक ॥ ६ ॥ सातमे आधार ॥७॥ आठमे आतरा ॥ ८ ॥ नवमे पुष्फा विकीर्ण ने आवलिकावध ॥ ए ॥ दशमे अंधकार ॥ १० ॥ इग्यारमे नारकि ने उपजवाना स्थानक ॥ ११ ॥ बारमे क्षेत्रवेदना ॥ १२ ॥ तेरमे पनर परमाधा मिना नाम ॥ १३ ॥ चउदमे जीवअजीवना परिणाम ॥ १४ ॥ पनरमे नार किने अवधिनुं देखवु ॥ १५ ॥ सोलमे सघयण ॥ १६ ॥ सतरमे कुंणजीव केइ नरके उपजे ॥१७॥ अढारमे ॥४॥ बोल कहेवाशे ॥ पहिले नाम । घमा ॥१॥ वंशा ॥२॥ शिला ॥३॥ अंजणा ॥४॥ रिठा ॥ ५ ॥ मघा ॥६॥ माघवइ ॥ ७ ॥ ए साते उंधाछत्रने आकारेछे ॥ १ ॥ बिजे गोत्र कहियेछे ॥ रत्नप्रभा ॥ १ ॥ श केरप्रभा ॥ २ ॥ वालुप्रभा ॥ ३ ॥ पंकप्रभा ॥ ४ ॥ धूमप्रभा ॥ ५ ॥ तमप्रभा ॥ ६ ॥ तमतमाप्रभा ॥७॥ रत्नप्रभा ते स्यामाटे ते सोलहजार जोजननो खर कांमछे । सोलजातिना रत्नमयछे । एकेकु रत्न हजार हजार जोजननु जाडपणे

छे ॥ वल्या कोयलाशरिखा छे। तेमांहि ८० हजार जोजननो आछवल छे ॥ अने ॥८४॥ हजार जोजननो पकवल छे ॥ इम त्रणेकाम थइने ॥ एकलाख ने एंशी हजार जोजननो पृथ्वीनो पिंम जाणवो ॥ २ ॥ त्रिजे अर्थ कहेछे ॥ रत्नप्रभा ते रत्ननो पिंम ने रत्ननि पिठिका । ते रत्न केहवाछे । श्यामवर्णा वल्या कोयला सरिखा छे ॥१॥ शर्करप्रभा ते काकरानो पिंम ने काकरानि पिठिका ते काकरा केहवाछे। लुखा निरसगोखरुना फरससरिखो फरसछे ॥ २ ॥ वालुप्रभा ते वेलुनो पिंम ने वेलुनि पिठिका ते वेलु केहविछे। उन्हि धगधगति । अग्निनिपरे जाज्वल्यमान छे ॥ ३ ॥ पंकप्रभा ते कादवनो पिंम ने कादवनि पिठिका ते कादव केहवोछे। लोहिमय परुमय ने वज्रमय काटाछे ॥ ४ ॥ धूमप्रभा ते धुमामानो पिंम ने धूमामानि पिठिका ॥ ते धूमामो केहवोछे तिखो तमतमो ने दरदरोछे॥५॥ तमप्रभा ते अंधकारनो पिंम ने अधकारनी पिठिका॥ ६ ॥ तमतमा प्रभा ते

विशेषे अधकारनो पिंड ने अधकारनि पिठिका ॥७॥३॥ चोथो पिंडने पाचमो पोलार ए वे द्वार भेला कहेछे। पहिलि नरके। एक लाख ने एशीहजार जोजननो प्रथवीनो पिंडछे। तेहमांथि। एकहजार जोजन उंचु मुकिये एकहजार जोजन निचु मुकिये विचे १ लाख ने अठोत्तेर हजार जोजननी पोलारछे ॥ ते माहिं १३ पाथडा नें ३० लाख नरकावासा छे ॥ १ ॥ बीजी नरके एक लाख नेबत्रिश हजार जोजननो प्रथवीनो पिंडछे। तेहमाथि एकहजार जोजन उंचु मुकिये॥ एकहजार जोजन निचु मुकिये विचे एकलाख ने ३० हजार जोजननि पोलारछे॥ तेमाहि ११ पाथडा ने॥ २५॥ लाख नरकावासाछे॥ २॥ त्रिजी नरके एकलाख ने अठ्याविशहजार जोजनो प्रथवी पिंडछे। तेहमाहि ॥ १॥ हजारजोजन उंचु मुकिये॥ १॥ हजारजोजन निचु मुकिये विचे एकलाख ने छविशहजार जोजननो प्रथविनो पिंडछे। तेमाहि॥ ए॥ पाथडाने॥ १५॥

लाख नरकावासाछे ॥३॥ चोथि नरके एकलाख ने ॥ २० ॥ हजार जोजनना
प्रथवीनो पिंम्ढे तेहमाथि ॥१॥ हजार जोजन उचु मुकिये ॥ १ ॥ हजार जोज
न निचु मुकिये विचे एकलाख ने १८ हजार जोजननि पोलार छे । तेमाहि
॥ ७ ॥ पाथमा ने ॥१०॥ लाख नरका वासा छे ॥४॥ पाचमि नरके एकलाख
ने अढारहजार जोजननो पृथवीनो पिंम्ढे। तेहमाथि एकहजार जोजन उचु
मुकिये एकहजार जोजन निचु मुकिये। विचे एकलाख ने १६ हजार जोज
ननि पोलार छे। तेहमाहि ॥ ५ ॥ पाथमाने ॥ ३ ॥ लाख नरकावासा छे ॥५॥
छठी नरके एकलाख ने ॥ १६ ॥ हजार जोजननो प्रथवीनो पिंम्ढे तेहमाथि ।
एकहजार जोजन उचु मुकिये एकहजार जोजन निचु मुकिये विचे ॥१॥ लाख
ने ॥ १४ ॥ हजार जोजननि पोलार छे तेहमाहि ॥ ३ ॥ पाथमा ने १ लाखमा
॥ ५ ॥ उणा नरकावासा छे ॥ ६ ॥ सातमी नरके ॥१॥ लाख ने ॥ ८ ॥ हजार

जोजननो प्रथवीनो पिंम छे तेहमाथि । साढावावनहजार जोजन उंचुं मुकिये
साढावावनहजार जोजन निचु मुकिये विचे ३ हजार जोजननो जाम्हो एक पा
थम्हो छे तेहमाहि ॥ ५ ॥ नरकावासा छे ॥ ७ ॥ ५ ॥ छठे अलोक कहेछे॥पहि
ली नरकथि ॥१२॥ ॥ जोजन जइये तिवारे त्रिछो अलोक आवे ॥ १ ॥ विजी
नरकथि ॥ १२ ॥ जोजनने ॥२॥ त्रियाभागे त्रिछो अलोक आवे ॥ २ ॥त्रिजी
नरकथि ॥१३॥ जोजनने ॥ १ ॥ त्रियाभागे त्रिछो आलोक आवे ॥३॥ चोथि
नरकथि ॥ १४ ॥ जोजने त्रिछे अलोक आवे ॥ ४ ॥ पाचमिथी ॥ १४ ॥ जो
जनने २ त्रियाभागे त्रिछो अलोक आवे ॥ ५ ॥ छठीथि ॥ १५ ॥ जोजनने १
त्रिया भागे त्रिछो अलोक आवे ॥ ६ ॥ सातमी नरके ॥ १६ ॥ जोजने त्रिछो
अलोक आवे ॥ ७ ॥ ६ ॥ सातमे आधार कहेछे । साते नरक स्याने आधारे
रहिछे २० हजार जोजननो घनोदधि जाम्हपणे छे असंख्याता जोजननो लाव

पणे पहोलपणे छे ॥ असस्यातां जोजननि परिधि छे ॥ ते थिणा घीसरिखो जा णवो ॥ असस्यातां जोजननो घनवाय छे ॥ ते विघस्या घीसरिखो जाणवो ॥ अ सस्यातां जोजननो तनुवाय छे ॥ ते तपाव्या घीसरिखो जाणवो ॥ तेहने आधारे ७ नर्क रहिछे ॥ एकेकि नरके त्रणत्रण वलाका छे असंस्यातां जोजननो आका शास्तिकाय छे । विश हजार जोजननो घनोदधि जाम्पणे छे । ते छेहडे जाता छजोजननो रह्यो ॥ पेहली नरके छजोजननो घनोदधि ॥ १ ॥ बिजी नरके छजो जनने ॥ १ ॥त्रियोभाग ॥ २ ॥ त्रिजी नरके छजोजननो ॥ २॥ त्रियाभाग॥३॥ चउथी नरके ॥ ७ ॥ जोजननो घनोदधि ॥ ४ ॥ पांचमी नरके ७ जोजनने ॥१॥ त्रियोभाग ॥ ५ ॥ छठी नरके ॥ ७ ॥ जोजनने ॥ २ ॥ त्रियाभाग ॥ ६ ॥ सा तमी नरके ॥ ८ ॥ जोजननो घनोदधि ॥ ७ ॥ असस्यातां जोजननो घनवाय छे ते छेहडेजाता साढाच्यार जोजननो रह्यो ॥ पहिलीनरके साढाच्यार जोज

ननो घनवाय छे ॥ १ ॥ बिजी नरके पोणापाच जोजननो घनवायछे ॥ २ ॥ त्रिजी नरके ॥ ५ ॥ जोजननो घनवाय छे ॥ ३ ॥ चउथी नरके सवापाच जोजननो घनवाय छे ॥ ४ ॥ पाचमी नरके साढापाच जोजननो घनवाय छे ॥ ५ ॥ छठी नरके पोणाछो जोजननो घनवायछे ॥ ६ ॥ सातमी नरके ६ जोजननो घनवायछे ॥ ७ ॥ असख्याता जोजननो तनुवायछे ते छेहडे जाता दोढ जोजननो रह्यो ॥ पहिलीनरके दोढजोजननो तनुवाय ॥ १ ॥ बिजी नरके दोढ जोजनने १ बारियो भाग ॥ २ ॥ त्रिजीनरके दोढ जोजनने बारिया २ भाग ॥ ॥ ३ ॥ चउथी नरके दोढ जोजन ने बारिया ॥ ३ ॥ भाग ॥ ४ ॥ पाचमी नरके दोढ जोजनने बारिया ॥ ४ ॥ भाग ॥ ५ ॥ छठी नरके दोढ जोजन ने बारिया ॥ ५ ॥ भाग ॥ ६ ॥ सातमी नरके २ जोजननो तनुवाय छे ॥ ७ ॥ तेहने आधारे ७ नरक रहिछे ॥ ७ ॥ आठमे आतरा कहेछे ॥ पहिली नरके ॥

॥ १३ ॥ पाथडा ने ॥ १२ ॥ आतरा छे ॥ एकेका पाथडाने ॥ ११५८३ ॥
इग्यार हजार पाचसें त्र्यासी जोजन ने ॥ १ ॥ त्रिया भागनु आतरु ॥ १ ॥
बिजी नरके ॥ ११ ॥ पाथडा ने ॥ १० ॥ आतरा छे। एकेका पाथडाने ९७००
सताणुंसें जोजननु आतरु ॥ २ ॥ त्रिजी नरके ९ पाथडा ने ॥ ८ ॥ आतरा
छे। एकेका पाथडाने ॥ १२३७५ ॥ बारहजार त्रणसें पंचोतेर जोजननु आत
रु ॥ ३ ॥ चउथी नरके ॥ ७ ॥ पाथडा ने ६ आतरा छे। एकेका पाथडा ने ॥
१६१६६ ॥ सोलहजार एकसो छासठ जोजन ने ॥ २ ॥ त्रिया भागनु आतरु
॥४॥ पाचमी नरके ॥५॥ पाथडा ने ॥४॥ आतरा एकेका पाथडाने ॥२५२५०॥
सवापचविशहजार जोजननु आतरु ॥ ५ ॥ छठी नरके ॥ ३ ॥ पाथडा ने ॥२॥
आतरा ॥ एकेका पाथडाने ॥ ५२५०० ॥ साढाबावन हजार जोजननुं आत
रु ॥६॥ सातमी नरके १ पाथडो छे ॥ आतरुं नथि ७ ॥ ८ हवे नवमे पुष्फाविकी

र्पने आवलिकाबध नरका वासा कहेठे ॥ पहिली नरके ॥ २९९५५६७ ॥ उ गणत्रीशलाख पंचाणुहजार पाचसें सडसठ पुष्पाविकीर्ण नरकावासा ठे ॥ अने ४४३३ चुमालिससें तेत्रीस पक्तिबंध नरका वासा ठे ॥ एव सर्व मिलि ने ३० लाख ॥ १ ॥ बिजी नरके ॥ २४९७३०५ ॥ चोविसलाख सताणु हजार त्रणसें पाच पुष्पाविकीर्ण नरकावासा ठे । अने २६९५ छविससें पं चाणु पंक्तिबंध नरकावासा ठे । एव सर्व मिलिने ॥२५॥ लाख ॥२॥ त्रिजी नरके ॥ १४९८५१५ ॥ चउदलाख अठाणु हजार पाचसें पंदर पुष्पाविकी र्ण नरकावासा ठे। अने १४८५ चउदससें पंच्यासी पक्तिबध नरकावासा ठे ॥ एव सर्व मिलिने ॥ १५ ॥ लाख ॥ ३ ॥ चउथी नरके ॥९९९२९३॥ नवलाख नवाणुंहजार बसेत्राणु पुष्पाविकीर्ण नरकावासा ठे । अने ७०७ सातसें सात पक्तिबंध नरकावासा ठे ॥ एव सर्व मिलिनें ॥ १० ॥ लाख

॥ ४ ॥ पाचमी नरके ॥ २९९७३५ ॥ वे लाख नवाणु हजार सातसें पा
त्रीस पुष्पाविकीर्ण नरकावासा ठे ॥ अने ॥ २६५ ॥ बसें पासठ पक्तिवंध
नरकावासा ठे ॥ एव सर्व मिलिनें ॥ ३ ॥ लाख ॥ ५ ॥ ठठि नरके ॥
९९९३२ ॥ नवाणुं हजार नवसें बत्रीस पुष्पाविकीर्ण नरकावासा ठे अने
६३ पक्तिवंध नरकावासा ठे ॥ ६ ॥ सातमी नरके ॥ ५ ॥ पक्तिवंध ठे
॥ ७ ॥ साते नरकना ॥ ८३९०३४७ ॥ त्र्यासी लाख नेवुंहजार त्रणसें
सम्तालीस पुष्पाविकीर्ण नरकावासा ठे ॥ अने साते नरकना ॥ ९६५३ ॥
नवहजार ठसें त्रेपन पक्तिवध नरकावासा ठे ॥ सर्व मिलि ८४ लाख नर
कावासा जाणवा ॥ ९ ॥ दशमे अधकार कहेठे ॥ नरकनो अंधकार ॥ १ ॥
अशुभ पुगलनो अधकार ॥ २ ॥ १० ॥ इग्यारमे नारकिने उपजवाना
स्थानक कहेठे ॥ कुंभिने आकारे ॥ १ ॥ घमाने आकारे ॥ २ ॥ पेटिने

आकारे ॥ ३ ॥ कुम्भने आकारे । एवं नाना विध विषमस्थानके उपजे ॥ ११ ॥ बारमे क्षेत्रवेदना कहेछे ॥ क्षुधा ॥ १ ॥ तृषा ॥ २ ॥ शित ॥ ३ ॥ उष्ण ॥ ४ ॥ दाह ॥ ५ ॥ ज्वर ॥ ६ ॥ भय ॥ ७ ॥ शोक ॥ ८ ॥ खरज ॥९॥ परवश ॥१०॥ ए १० प्रकारनि अनति वेदना छे ॥१२॥ तेरमे ॥१५॥ परमाधामिना नाम कहेछे ॥ अंब ॥ १ ॥ अवरिस ॥ २ ॥ शाम ॥ ३ ॥ सब ल ॥ ४ ॥ रुद्र ॥ ५ ॥ वैरुद्र ॥ ६ ॥ काल ॥ ७ ॥ महाकाल ॥ ८ ॥ असिपत्र ॥ ९ ॥ धनूष ॥ १० ॥ कुम्भ ॥ ११ ॥ वालु ॥ १२ ॥ वेतरणी ॥ १३ ॥ खरस्वर ॥ १४ ॥ महा घोष ॥ १५ ॥ १३ ॥ हवे चउदमे जीव अजीवना परिणाम कहेछे । जीव परिणामना ॥ १० ॥ भेद ते । गतिपरिणाम ॥ १ ॥ इंद्रियपरिणाम ॥ २ ॥ कसायपरिणाम ॥ ३ ॥ लेसापरिणाम ॥ ४ ॥ जोगपरिणाम ॥ ५ ॥ उपयोगपरिणाम ॥ ६ ॥ नाणपरिणाम ॥ ७ ॥ दंसण

परिणाम ॥ ८ ॥ चरित्तपरिणाम ॥ ९ ॥ वेदपरिणाम ॥ १० ॥ हवे अजीवपरिणामना १० भेद ते कहेछे ॥ बंधनपरिणाम ॥ १ ॥ गतिपरिणाम ॥ २ ॥ संठाणपरिणाम ॥ ३ ॥ भेदपरिणाम ॥ ४ ॥ वर्णपरिणाम ॥ ५ ॥ गंधपरिणाम ॥ ६ ॥ रसपरिणाम ॥ ७ ॥ फासपरिणाम ॥ ८ ॥ अगुरुलघुपरिणाम ॥ ९ ॥ शब्दपरिणाम ॥ १० ॥ १४ ॥ पनरमे अवधिज्ञाने देखवु कहेछे ॥ पहिली नरकना नारकि । जघ० । साढात्रण गाउ देखे । उत्० । च्यार गाउ देखे ॥ १ ॥ बिजीना । जघ० ॥ ३ ॥ गाउ । उत्० । साढात्रण गाउ देखे ॥ २ ॥ त्रिजीना जघ० अढिगाउ । उत्० त्रण गाउ देखे ॥ ३ ॥ चोथिना । जघ० । बे गाउ । उत्० । अढिगाउ देखे ॥ ४ ॥ पाचमीना जघ० दोढ गाउ । उत्० ॥ २ ॥ गाउ देखे ॥ ५ ॥ छठिना जघ० ॥१॥ गाउ । उत्० दोढ गाउ देखे ॥ ६ ॥ सातमीना जघ० । अर्ध गाउ ॥ उत्० ॥ १ ॥ गाउ देखे ॥ ७ ॥ १५ ॥

सोळमे सघयण कहेछे ॥ पहिली बिजी नरके छ सघयणनो धणि जाय ॥ त्रिजी नरके छेवट्ठु वर्जिने पांच सघयणनो धणि जाय ॥ चोथिये किलक॥ १ ॥ ने छेवट्ठ ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ वर्जिने ॥४॥ सघयणनो धणि जाय ॥ पाचमी नरके ॥३॥ सघयणनो धणि जाय ते । किलक ॥ १ ॥ छेवट्ठु ॥ २ ॥ अर्द्धनाराच । ए ३ वर्जिने ॥ छठी नरके । वज्रऋषभनाराच सघयण ॥१॥ ने ऋषभनाराच सघयण ॥ २ ॥ ए ॥२॥ नो धणि जाय । सातमीये ॥ १ ॥ वज्रऋषभनाराच सघयणनो धणिजाय ॥ १६ ॥ सत्तरमे कोण जीव केइ नरके उपजे ते कहेछे ॥ असज्ञीतिर्यंच पहिली नरक सुधि उपजे ॥ १ ॥ भुजपरसर्प बीजी सुधि उपजे ॥ २ ॥ खेचरतिर्यंच त्रिजी नरकसुधि उपजे ॥३॥ थलचरतिर्यंच चउथि नरकसुधि उपजे ॥ ४ ॥ उरपरतिर्यंच पाचमी नरकसुधि उपजे ॥ ५ ॥ स्त्री छठी नरकसुधि उपजे ॥ ६ ॥ सातमी नरके जलचर मछ ने संज्ञिमनुष्यनो आवि उपजे

॥ ७ ॥ १७ ॥ अढारमे अशुभ । वर्ण ॥ १ ॥ गंध ॥ २ ॥ रस ॥ ३ ॥ फरस भोगवताथका नारकि विचरे छे ॥ १८ ॥ इति नारकिनो बोल समाप्त ॥ १ ॥ हवे बिजो भवनपतिनो धार कहेछे ॥ पहिले नाम ॥ १ ॥ बिजे चिन्ह ॥ २ ॥ त्रिजे वर्ण ॥ ३ ॥ चउथे वस्त्र ॥ ४ ॥ पाचमे सामानिक ॥ ५ ॥ छठे आत्मरक्षक ॥ ६ ॥ सातमे देवांगना ॥ ७ ॥ आठमे अणिका ॥ ८ ॥ नवमे अणिकाना अधिपति ॥ ९ ॥ दशमे उद्योत ॥ १० ॥ इग्यारमे परिषदा ॥ ११ ॥ बारमे लोकपाल ॥ १२ ॥ तेरमे त्रायत्रिंशक ॥ १३ ॥ चउदमे ॥ ४ ॥ बोल ॥ १४ ॥ पहिले नाम कहेछे ॥ असुरकुमार ॥ १ ॥ नागकुमार ॥ २ ॥ सुवर्णकुमार ॥ ३ ॥ विज्जुकुमार ॥ ४ ॥ अग्निकुमार ॥ ॥ ५ ॥ द्विपकुमार ॥ ६ ॥ उदधिकुमार ॥ ७ ॥ दिशाकुमार ॥ ८ ॥ पवनकुमार ॥ ९ ॥ थणितकुमार ॥ १० ॥ १ ॥ बिजे चिन्ह कहेछे असुरकुमारने

चुमामणि मुगटनु चिन्ह ॥ १ ॥ नागकुमारने फेणनुं चिन्ह ॥ २ ॥ सुवर्ण
कुमारने गरुमनुं चिन्ह ॥ ३ ॥ विद्युत कुमारने वज्रनु चिन्ह ॥ ४ ॥ अग्नि
कुमारने कलशनुं चिन्ह ॥ ५ ॥ द्विपकुमारने सिंहनु चिन्ह ॥ ६ ॥ उदधिकु
मारने घोमानु चिन्ह ॥ ७ ॥ दिशा कुमारने गजनु चिन्ह ॥ ८ ॥ पवनकुमा
रने मगरमछनुं चिन्ह ॥ ९ ॥ थणितकुमारने सपुरटनुं चिन्ह ॥ १० ॥ २ ॥
हवे त्रिजे वर्ण कहेछे ॥ असुरकुमारनो श्यामवर्ण ॥ नागकुमार ने उदधिकु
मारनो धोलोवर्ण ॥ विद्युतकुमार अग्निकुमार ने द्विपकुमारनो रातोवर्ण ॥
सुवर्ण कुमार दिशाकुमार ने थणितकुमारनो पीलोवर्ण ॥ पवनकुमारनो नि
लोत्पलकमलसरिखो निलोवर्ण ॥ ३ ॥ हवे चउथे वस्त्र कहेछे ॥ राता नि
ला पिला धोला विविध प्रकारना ते पण सध्याना रागसरिखा जाणवा
॥ ४ ॥ हवे पाचमे सामानिक कहेछे ॥ दक्षिणदिशना चमरेंद्रने चोसठ हजार

सामानिक छे ॥१॥ उत्तरदिशाना बलेंद्रनें ॥६००००॥ सामानिक छे॥२॥ धरणें
द्रादिक ॥ १८ ॥ इंद्रने छछो हजार सामानिकछे ॥ २० ॥५॥ छठे आत्मरक्षक
ते सामानिकथि चउगुणा जाणवा ॥ ६ ॥ सातमे देवागना कहेछे ॥ चमरेंद्र
तथा बलेंद्रने पाच पाच देवीओ जाणवी॥एकेकि देवि आठ आठ हजाररूप
वैक्रेय करे ॥ धणिन्नोगववाने अर्थे धणि पण एकलो एटला रूप वैक्रेय करे॥
॥२॥ धरणेंद्रादिक १८ इंद्रने छछो देविओ जाणवि ॥ एकेकी देवी छछो हजार
रूप वैक्रेय करे धणि न्नोगववाने अर्थे धणिपण एकलो एटला रूप वैक्रेय करे
॥ ७ ॥ हवे आठमे अणिका ॥ ७ ॥ कहेछे ॥ गधर्व ॥ १ ॥ नट ॥ २ ॥ हय ॥
॥ ३ ॥ गय ॥ ४ ॥ रथ ॥ ५ ॥ सुन्नट ॥ ६ महीष ॥ ७ ॥८॥ नवमे बोले अणि
काना अधिपति एमज जाणवा ॥९॥ हवे १० मे उद्योत कहेछे ॥ देवतानो उ
द्योत ॥१॥ देवीओनो उद्योत ॥ २ ॥ आन्नरणनो उद्योत ॥३॥ शुन्न पुजलनो

उद्योत ॥ ४ ॥ ॥१०॥ हवे ११ मे त्रण परिपदा कहेछे ॥ दक्षिणदिशाना चम
रेंद्रनी ३ परिपदा । समीया ॥ १ ॥ चन्मा ॥ २ ॥ जाया ॥ ३ ॥ समीयानो ॥
॥ २४ ॥ हजारनो परिवार ॥ १ ॥ चन्मानो ॥ २८ ॥ हजारनो परिवार ॥ २ ॥
जायानो ॥ ३२ ॥ हजारनो परिवार ॥ ३ ॥ समीया तेड्याआवे ने मोकल्या
जाय तेसाथे गुफ करे ॥ १ ॥ चन्मा तेड्या आवे ने अणमोकल्याजाय तेसाथे
गुफ न करे अने करणकरावण करे ॥ २ ॥ जायाअण तेड्या आवेने अणमो
कल्या जाय एहने कामकाज दिये ॥ ३ ॥ हवे एहना नवनीकायना देवतानि
॥ ३ ॥ परिपदा तेमाहि अभ्यतरनि परिपदाना ॥ ६०००० ॥ हजार ॥१॥ म
ध्यमपरिपदाना ॥ ७०००० ॥ हजार ॥२॥ बाहिरलि परिषदाना ॥ ८०००० ॥
हजार ॥ ३ ॥ दक्षिणदिशाना चमरेंद्रनि देवी ओनी ॥३॥ परिषदा तेमाहि अ
भ्यतरनि ॥ ३५० ॥ देवीओ १ मध्यमपरिपदानी ॥ ३०० ॥ देवीओ ॥ २ ॥

वाहिरली परिषदानी ॥ २५० ॥ देवीउ ॥ ३ ॥ हवे एहना नवनीकायना देवतानि देवीश्रोनि ॥ ३ ॥ परिषदा तेमाहि अभ्यतरनि ॥ १७५ ॥ देवीउ ॥ १ ॥ मझमनि ॥ १५० ॥ देवीउ ॥ २ ॥ वाहिरलीनि ॥ १२५ ॥ देवीउ ॥ ३ ॥ ए सर्व परिवार दक्षिणदिशाना चमरेंद्रनो जाणवो ॥ इमज उत्तरदिशाना वलेंद्रनि ३ परिषदा जाणवी पण एटलो फेर ॥ पहिलीना ॥ २० ॥ हजार देवता ॥ १ ॥ विजीना ॥ २४ ॥ हजार देवता ॥ २ ॥ त्रिजीना ॥ २८ हजार देवता ॥३॥ हवे एहना नवनीकायना देवतानि ॥३॥ परिषदा ते पहिलीना ॥५०॥ हजार ॥१॥ विजीना ॥ ६० ॥ हजार ॥ २ ॥ त्रिजीना ॥ ७० ॥ हजार ॥ ३ ॥ वलेंद्रनि देवीउनी ॥ ३ ॥ परिषदा ॥ पहिलीनि ॥ ४५० ॥ देवीउ ॥ १ ॥ विजीनि ४०० देवीउ ॥२॥ त्रिजीनि ॥ ३५० ॥ देवीउ ॥३॥ हवे एहना नवनीकायना देवतानि देवीउनि ॥ ३ ॥ परिषदा ॥ पहिलीनि ॥२२५॥ देवीउ ॥१॥ विजीनि ॥२००॥

देवीउ ॥ २ ॥ त्रिजीनि ॥१७५॥ देवीउ ॥ ३ ॥ ११ ॥ वारमे लोकपाल कहेछे ।
सोम ॥ १ ॥ जम ॥ २ ॥ वरुण ॥ ३ ॥ वेसमण ॥ ४ ॥ सोमनो वारो पूर्वदिशे
॥ १ ॥ जमनो वारो दक्षिणदिशे ॥ २ ॥ वरुणनो वारो पश्चिमदिशे ॥ ३ ॥ वे
समणनो वारो उत्तरदिशे ॥४॥ सोमने वारे सुख शाता होय ॥१॥ जमने वारे
मार मरकि ने मेह घणा होय ॥२॥ वरुणने वारे गरुडवरुने रोग घणा होय॥३॥
वेसमणने वारे सुगाल सुभिक्ष ने लाभ घणा होय ॥ ४ ॥ १२ तेरमे त्रायत्रिं
शक ते ॥३३॥ ते गुरुसमान ॥१॥ प्रोहितसमान ॥२॥ पुज्यसमान ॥३॥ मित्र
समान ॥४॥ पितासमान ॥५॥ आज्ञा आराधक छे ॥ १३ ॥ चउदमे शुभ वर्ण
गध । रस।स्पर्श।भोगवताथका भवनपति विचरेछे॥१४॥२॥ हवे त्रिजो वाणव्य
तरनो द्वार कहेछे । पहिले नाम ॥१॥ बिजे चिन्ह॥२॥ त्रिजे वर्ण॥३॥ चोथे वस्त्र
॥४॥ पाचमे सामानिक ॥५॥ छठे आतमरक्षक॥६॥ सातमे देवागना॥७॥ आठमे

अणिका ॥ए॥ नवमे अणिकाना अधिपति ॥ए॥ दशमे उद्योत ॥१०॥ इग्यारमे परिषदा ॥११॥ बारमे ॥४॥ बोल ॥१२॥ पहिले नाम। कहेठे। पिशाच ॥ १ ॥ नुत ॥२॥ जक्ष ॥३॥ राक्षस ॥४॥ किंनर ॥५॥ किंपुरुष ॥६॥ महोरग ॥७॥ गंधर्व ॥ ८ ॥ आणपन्नी ॥ ए ॥ पाणपन्नी ॥ १० ॥ इसीवाइ ॥ ११ ॥ नुइवाइ ॥ १२ ॥ कंदीय ॥ १३ ॥ महाकंदीय ॥ १४ ॥ कोहंम ॥ १५ ॥ पयगदेव ॥ १६ ॥ बिजे चिन्ह कहेठे ॥ पहिलाने कलंबवृक्षनुं चिन्ह ॥ १ ॥ बिजाने शालिवृक्षनु चिन्ह ॥ २ ॥ त्रिजाने वमवृक्षनुं चिन्ह ॥ ३ ॥ चउथाने पामलिवृक्षनु चिन्ह ॥ ४ ॥ पाचमांने अशोकवृक्षनु चिन्ह ॥ ५ ॥ ठठाने चंपकवृक्षनुं चिन्ह ॥ ६ ॥ सातमाने नागवृक्षनु चिन्ह ॥ ७ ॥ आठमाने टिंबरुवृक्षनु चिन्ह ॥ ८ ॥ ए ८ दक्षिणदिशाना कह्या। एमज ॥ ८ ॥ उत्तरदिशाना जाणवा ॥ २ ॥ हवे त्रीजे वर्ण ते ॥ पहिला। त्रिजा सातमा ने आठमा ए ॥ ४ ॥ नोश्यामवर्ण ॥ बिजानो का

लोवर्ण ॥ पाचमानो निलोवर्ण ॥ चोथा ने ठठानो धोलोवर्ण ॥ ३ ॥ हवे चउथे वस्त्र कहेछे ॥ निला राता पीला ने धोला विविध प्रकारना ते पण सध्याना रागसरिखा जाणवा ॥ ४ ॥ पाचमे सामानिक ते एकेकाने च्यार च्यार हजार सामानिक देवता छे ॥ ५ ॥ छठे आत्मरक्षक ते सामानिकथी चउगुणा जाणवा ॥ ६ ॥ सातमे देवागना ते एकेकाने च्यार च्यार देवीओ छे। एकेकी देवी ॥१॥ हजार ॥ १ ॥ हजार रूप वैक्रेय करे धणि भोगववाने अर्थेधणि पण एटला रूप वैक्रेय करे ॥ ७ ॥ हवे ॥ ८ ॥ मे ॥ ७ ॥ अणिका कहेछे। गधर्व ॥१॥ नट ॥ २ ॥ हय ॥ ३ गय ॥ ४ ॥ रथ ॥ ५ ॥ पायक ॥ ६ ॥ महीप ॥ ७ ॥ ८ ॥ नवमे अणिकाना अधिपति इमज जाणवा ॥ ए ॥ हवे ॥ १० ॥ मे उद्योत कहेछे ॥ देवतानो ॥ १ ॥ देवीनो ॥ २ ॥ आभरणनो ॥ ३ ॥ शुभ पुद्गलनो ॥ ४ ॥ १० ॥ हवे ११ मे परिषदा ॥ ३ ॥ समीयाना ॥ ८ ॥ हजार देवता ॥ १ ॥ चंभाना ॥

॥ १० ॥ हजारदेवता ॥ २ ॥ जायाना ॥ १२ ॥ हजार देवता ॥ ३ ॥ आवयु जावु प्रथमनि रिते जाणवु ॥३॥ परिषदानुं ॥११॥ बारमे शुन्न वर्ण ॥ गंध ॥ रस स्पर्श नोगवताथका वाणव्यंतर विचरेछे ॥१२॥ इति वाणव्यंतरनो द्वार समाप्तं ॥ ३ ॥ हवे चउथो ज्योतिषीनो द्वार कहेछे । पहिले नाम ॥ १ ॥ बिजे वाहक ॥ २ ॥ त्रिजे वर्ण ॥ ३ ॥ चउथे वस्त्र ॥ ४ ॥ पांचमे सामानिक ॥५॥ छठे आत्म रक्षक ॥ ६ ॥ सातमे लांबपणुं ने पहोलपणु ॥७॥ आठमे उंचपणुं ने जाडपणु ॥ ८ ॥ नवमे पंक्ति ॥ ९ ॥ दशमे परिषदा ॥ १० ॥ इग्यारमे उद्योत ॥११॥ बारमे देवीउ ॥ १२ ॥ तेरमे नित्यराहु ने पर्वराहु ॥१३॥ चउदमे परिवार ॥१४॥ पनरमे अणिका ॥ १५ ॥ सोलमे अणिकाना अधिपति ॥ १६ ॥ सतरमे स घयण ॥ १७ ॥ अढारमे व्याघात ॥ १८ ॥ उगणिसमे निर्व्याघात ॥ १९ ॥ विशमे देखवुं ॥२०॥ एकविशमे चाल ॥ २१ ॥ बाविशमे तपवु ॥ २२ ॥ त्रेविशमे

उचपणु ॥ २३ ॥ चउविशमे आतरु ॥ २४ ॥ पंचविशमे ॥ ४ ॥ बोल ॥ २५ ॥
पहिले नाम ते चद्र ॥१॥ सूर्य ॥ २ ॥ ग्रह ॥ ३ ॥ नक्षत्र ॥ ४ ॥ तारा ॥५॥१॥
बिजे बोहक कहेछे ॥ चद्रमा सूर्यना विमानने सोल सोल हजार देवता उपाडेछे
तेहनो विवरो कहेछे ॥ च्यार हजार देवता सिंहनेरूपे पूर्वदिशे उपाडेछे ॥ १ ॥
च्यार हजार देवता हाथिनेरूपे दक्षिणदिशे उपाडेछे ॥२॥ च्यार हजार देवता
वृषभनेरूपे पश्चिमदिशे उपाडेछे ॥ ३ ॥ च्यार हजार देवता घोडानेरूपे उत्तर
दिशे उपाडेछे ॥४॥ एव ॥१६॥ हजार देवता चद्रमा सूर्यना विमानने उपाडेछे ॥
आठ हजार देवता ग्रहना विमानने उपाडेछे ॥ च्यार हजार देवता नक्षत्रना
विमानने उपाडेछे ॥ बे हजार देवता ताराना विमानने उपाडेछे । च्यारे दिशे
पाचसें पाचसें एणेज रूपे जाणवा ॥ राहु ने चंद्रमानिपरे जाणवु ॥ २ ॥ त्रिजे
वर्ण कहेछे ॥ ज्योतिषीना विमाननोमाहि कनकवर्ण ने बाहिरनो स्फाटिक

रत्नसमान जाणवो ॥ ३ ॥ चउथे वस्त्र पूर्वेनिपरे विविध प्रकारना जाणवा ते
पण सन्ध्याना रागसरिखा जाणवा ॥ ४ ॥ पांचमे सामानिक देवता ॥ ४ ॥ ह
जार जाणवा ॥ ५ ॥ छठे आत्मरक्षक देवता ॥ १६ ॥ हजार जाणवा ॥ ६ ॥
सातमे बोले लांबपणु ने पहोलपणु ते चन्द्रमानु विमान । एक जोजनना ६१
भाग करिये तेहवा ॥ ५६ ॥ भागनुं लांबु ने पहोलुछे ॥ १ ॥ सूर्यनुं विमान ए
कसठिया ४८ भागनुं लांबु ने पहोलु छे ॥ २ ॥ ग्रहनु विमान ॥ २ ॥ गाउनुं
लांबु ने पहोलु छे ॥ ३ ॥ नक्षत्रनुं विमान ॥ १ ॥ गाउनु लांबु ने पहोलुं छे ॥
॥ ४ ॥ तारानुं विमान अर्द्ध गाउनु लांबुं ने पहोलु छे ॥ ५ ॥ ७ ॥ आठमे उंच
पणु ने जाडपणुं । चंद्रमानु विमान एकसठिया ॥ २८ ॥ भागनुं उंचुं ने जाडु
॥ १ ॥ सूर्यनु विमान एकसठिया ॥ २४ ॥ भागनु उंचु ने जाडु छे ॥ २ ॥ ग्रह
नु विमान ॥ १ ॥ गाउनुं उंचुं ने जाडुं छे ॥ ३ ॥ नक्षत्रनुं विमान अर्द्ध गाउनु

ऊंचु ने जाफु छे ॥ ४ ॥ तारानुं विमान पा गाउनु ऊंचुं ने जाफु छे ॥ ५ ॥ ८ ॥
नवमे पंक्ति कहेछे ॥ गाशठ गाशठनि ॥ ४ ॥ पंक्ति छे ॥१३२॥ चंद्रमाने ॥१३२॥
सूर्य छे ॥ ए बेहु मिलिने ॥ २६४ ॥ हवे सर्वथि मंद गति चंद्रमानि ॥ १ ॥ तेह
थि सूर्यनि शीघ्र गति ॥ २ ॥ तेहथि ग्रहनि शीघ्र गति ॥ ३ ॥ तेहथि नक्षत्र
नि शिघ्र गति ॥ ४ ॥ तेहथि तारानि शीघ्र गति ॥ ५ ॥ सर्वथि थोडि ऋद्धि
तारानि ॥ १ ॥ तेहथि नक्षत्रनि अधिकी ऋद्धि जाणवि ॥ २ ॥ तेहथि ग्रहनि
अधिक ऋद्धि जाणवि ॥ ३ ॥ तेहथि सूर्यनि अधिक ऋधि जाणवि ॥ ४ ॥ तेह
थि चंद्रमानि अधिक ऋद्धि जाणवि ॥ ५ ॥ ए ॥ दशमे परिषदा कहेछे ॥ परि
षदा ॥ ३ ॥ इशा ॥ १ ॥ तुडिया ॥ २ ॥ पव्वा ॥ ३ ॥ पहिलीना ॥ ८ ॥ सहस्र
देवता ॥ १ ॥ बिजीना ॥ १० ॥ सहस्र देवता ॥ २ ॥ त्रिजीना ॥ १२ ॥ सहस्र
देवता ॥ ३ ॥ १० ॥ इग्यारमे उद्योत कहेछे ॥ देवतानो ॥ १ ॥ देवीनो ॥ २ ॥

आजरणनो ॥३॥ शुजपुजलनो॥४॥विमाननो ॥५॥१२॥ बारमे देवीउ कहेछे । एकेकाने च्यार च्यार देवीउ छे॥एकेकि च्यार च्यार हजार रूप वैकेय करे धणि जोगववानेअर्थे धणि पण एकलो एटला रूप वैक्रेय करे ॥ १२ ॥ तेरमे नित्य राहुने पर्वराहु कहेछे । तेनित्य राहु चन्द्रमाने केडेछे । ते अमावास्याना पखवा डीमाहिने एकेकि कला छेडतो जाय । ते पुनमने दिने॥१६॥कला सपूर्ण थाय चन्द्रमा॥ अने पुनमने पखवेथि एकेकिकला दबावतो जाय। अमावास्या ने दहा डे १ कला रहे चन्द्रमानि॥ अने परव राहु वेहुने आवे। चन्द्रमानु ग्रहण।जघ०॥६ मासे उत्० । बेतालिशमासे आवे ॥ अने सूर्यनु ग्रहण। जघ०॥ ६ ॥ मासे । उत्० । अडतालीश वर्षे। आवे । तेहमा नित्य राहुना विमान श्याम वर्णा छे। अने पर्व राहुना विमान पच वर्णछे ते नित्य राहुना २ विमान। अने पर्व रा हुना ॥ २० ॥ विमान जम्बुद्विपमां छे ॥ चन्द्रमा सूर्यना मांहला क्षेत्र फरसे तो ॥

॥५१०॥ जोजन क्षेत्र फरसे तेमाह्दि॥१८०॥जोजन जम्बुद्विपमाह्दि फरसे अने
३३० जोजन लवणसमुद्रमां फरसे। चंद्रमाना १५ मांमला छे तेमाह्दि ॥ ॥५॥
मांमला जम्बुद्विपमांह्दि करे अने १० मांमला लवणसमुद्रमा करे। मांमलेनो मा
मले आवे तो ॥१५॥ दीने आवे॥ सूर्यना १८४ मांमला छे तेमाह्दि ॥६५॥ मा
मला जम्बुद्विपमा करे। अने ११९ मांमला लवणसमुद्रमाकरे॥ मांमलेनो मा
मांमले आवे तो ७ मासे आवे॥ सूर्यने मांमले मांमले बे बे जोजननु आंतरु
चंद्रमाने मांमले मांमले ॥३५॥ जोजनने एकसठिया ॥ ३१ ॥ भाग अने एक
सठीया एक भागना ७ भाग करिये तेह्वा ॥ ४ ॥ चुरणिया भागनु आंतरु॥
॥ १३ ॥ चउदमे परिवार कहेछे॥ एक चंद्रमाने एक सूर्यनो परिवार ॥ २८ ॥
नक्षत्र ॥८८॥ ग्रह ॥ अने गसाठ हजार नवसें पचोतेर कोमाकोमि तारा छे ॥
एटलो परिवार जाणवो ॥ १४ ॥ पदरमे बोले ७ अणिका कहेछे॥ गंधर्व ॥१॥

नट ॥ २ ॥ हय ॥३॥ गय ॥४॥ रथ ॥ ५ ॥ सुजट ॥ ६ ॥ वृपन्न ॥ ७ ॥ १५ ॥
सोलमे अणिकाना अधिपति इमज जाणवा ॥ १६ ॥ सतरमे संघयण क
हेले । लये सघयणनो धणि ज्योतिषी थाय ॥ १७ ॥ अढारमे व्याघात कहेले ॥
व्याघातसहित आतरु पमे तो एक विमानथि बिजा विमानने । जघ० ॥२६६
॥ जोजननुं आतरु अने उत्० ॥ १२ ॥ हजार बसे ने ॥ ४२ ॥ जोजननु आ
तरु ॥ १८ ॥ उगणिशमे निर्व्याघात कहेले निर्व्याघात सहित आतरु पडे तो।
जघ ॥ ५०० ॥ धनुषनु ॥ उत्० । विमान विमानने ॥ २ ॥ गाउनुं आतरु ॥
॥ १९ ॥ हवे विशमे देखवु कहेले ॥ आषाढमासे कर्कसक्रातिने दहाडे ॥१८॥
मुहुर्तनो दिवश ने ॥ १२ ॥ मुहुर्तनि रात्रि ते दिवशे उगतो सूर्य ॥४७२६३॥
जोजनने सालिया ॥ २१ ॥ जाग वेगलेथि उगतो दिशे ॥ अने पोशमासे मक
रसक्रातिने दहाडे ॥ १२ ॥ मुहुर्तनो दिवश ने ॥ १८ ॥ मुहुर्तनि रात्रि ते दि

वशो उगतो सूर्य ॥ ३१८३१ ॥ जोजनने एकसठिया ॥३०॥ न्नाग वेगलेथि उ
गतो सूर्य दिशे ॥ ३० ॥ एकविशमे चाल कहेछे ॥ आषाढमासे कर्कसंक्रातिने
दहाडे। एकेक मुहूर्ते सूर्य पाच हजार त्रणसें पाच जोजनने साठिया उगण
त्रिश न्नाग चाले। आखे दिवशे थइ ने ॥९४५२६॥ जोजन ने साठिया ४२
न्नाग चाले। अने पोषमासे मकरसंक्रातिने दहाडे। एकेक मुहुर्ते सूर्य ॥५३०५
॥ जोजनने साठिया ॥ १५ ॥ न्नाग चाले। आखे दिवसे थइने ॥६३६६३॥ जो
जन चाले ॥ २१ ॥ बाविशमे तपवो कहेछे ॥ सूर्य उंचो ॥१००॥ जोजन तपेछे
॥ हेठो १८०० जोजन तपेछे। अने त्रिछो ॥ ४७२६३ ॥ जोजननेसाठिया ॥
२१ ॥ न्नाग तपेछे ॥२२॥ त्रेविशमे उंचपणु कहेछे। समन्नुतलथकि ॥ ७९० ॥
जोजन उंचा जइये तिवारे तारामंडल आवे। तिहांथि १० जोजन उंचपणे सू
र्यनुं विमान छे। तिहांथि ॥ ८० ॥ जीजन उंचपणे चन्द्रमानु विमान छे। तिहांथि

॥ ४ ॥ जोजन उंचपणे नक्षत्रना विमानछे ॥ तिहांथि ॥ ४ ॥ जोजन उंचपणे बुधनो तारो छे तिहांथि ॥ ३ ॥ जोजन उचपणे शुक्रनो तारो छे ॥ तिहांथि ॥ ३ ॥ जोजन उचपणे ब्रहस्पतिनो तारो छे । तिहांथि ॥ ३ ॥ जोजन उचपणे मंगलनो तारो छे । तिहांथि ॥३॥ जोजन उंचपणे छेहलो शनिश्चरनो तारो आवे । ए ११० जोजनमा ज्योतिष चक्र छे ॥२३॥ चउविशमे आतरु कहेछे । चंद्रमा चंद्रमाने ॥ सूर्य सूर्यने ॥१॥ लाख जोजननु आतरुं छे ॥ अने चंद्रमा सूर्यने अर्द्ध लाख जोजननु आतरु छे ॥ २४ ॥ पच्चवीशमे बोले शुभ्न वर्ण गंध रस फरस नोगवताथका ज्योतिषि विचरेछे ॥ २५ ॥ ४ ॥ हवे पाचमो वैमानिकनो द्वार कहेछे ॥ पहिले नाम ॥ १ ॥ विजे आधार ॥ २ ॥ त्रिजे वर्ण ॥ ३ ॥ चउथे वस्त्र ॥ ४ ॥ पाचमे सामानिक ॥ ५ ॥ छठे आत्मरक्षक ॥६॥ सातमे जारूपणु ॥ ७ ॥ आठमे उचपणुं ॥ ८ ॥ नवमे पुष्पाविकीर्ण विमान ॥ ए ॥ दशमे

आवलिकाबंध विमान ॥ १० ॥ इग्यारमे परिषदा ॥११॥ बारमे उद्योत ॥१२॥ तेरमे देवीउ ॥ १३ ॥ चउदमे लोकपाल ॥ १४ ॥ पनरमे त्रायत्रिंशक ॥ १५ ॥ सोलमे ॥ ७ ॥ अणिका ॥ १६ ॥ सतरमे अणिकाना अधिपति ॥ १७ ॥ अढारमे सघयण ॥ १८ ॥ ओगणीशमे अवधि देखवु ॥१९॥ विशमे ॥४॥ बोल ॥ २० ॥ पहिले नाम कहेछे । सुधर्म ॥ १ ॥ इशान ॥ २ ॥ सनतकुमार ॥ ३ ॥ माहेंद्र ॥ ४ ॥ ब्रह्मलोक ॥ ५ ॥ लांतक ॥ ६ ॥ महाशुक्र ॥ ७ ॥ सहस्रार ॥८॥ आणत ॥९॥ प्राणत ॥ १० ॥ आरण ॥ ११ ॥ अच्युत ॥ १२ ॥ नवग्रैवेयकना नाम । भद्दे ॥ १ ॥ सुभद्दे ॥ २ ॥ सुजाए ॥३॥ सुमाणसे ॥४॥ पीयदसणे ॥५॥ सुदंसणे ॥ ६ ॥ आ मोहे ॥ ७ ॥ सुपडिबद्धे ॥ ८ ॥ जसोधरे ॥ ९ ॥ पांच अनुत्तर विमानना नाम । विजय ॥ १ ॥ विजयत ॥ २ ॥ जयंत ॥ ३ ॥ अपराजित ॥ ४ ॥ सर्वार्थसिद्ध ॥ ५ ॥ मुक्तिशिलाना नाम ॥ इसीतीवा ॥ १ ॥ इसिपब्भा

रातीवा ॥ २ ॥ तणुतीवा ॥३॥ तणुतणुतीवा ॥ ४ ॥ सिद्धितीवा ॥ ५ ॥ सिद्धाल
एतिवा ॥६॥ मुत्तितिवा ॥७॥ मुत्तालएतिवा ॥८॥ लोयगेतिवा ॥९॥ लोगथुभि
एतिवा ॥१०॥ लोगपडिवोहएतिवा ॥११॥ सवपाणभुयजीवसत्तसुहावहेतिवा
॥ १२ ॥ १ ॥ बिजे आधार कहेछे। पहिला बे देवलोक घनोदधिने आधारे र
ह्याछे। त्रिजु चोथु ने पाचमु ए ॥ ३ ॥ देवलोक घनवायने आधारे रह्या छे।
छठु सातमुं ने आठमु। ए ३ देवलोक घनोदधि घनवाय वेने आधारे रह्याछे ॥
नवमाथि ते सर्वार्थसिद्धसुधि एक आकाशने आधारे प्रतिष्ठित छे ॥ २ ॥ त्रिजे
वर्ण कहेछे। पहिले बिजे देवलोके ॥ ५ ॥ वर्ण लाभे ॥ त्रिजे चउथे देवलोके ॥
॥ १ ॥ कालो वर्जिने ॥ ४ ॥ वर्ण लाभे ॥ पाचमे छठे देवलोके ॥ ३ ॥ वर्ण
लाभे ते कालो ॥ १ ॥ निलोए २ वर्ज्या। सातमे आठमे ॥ २ ॥ वर्ण लाभे
पीलो ॥ १ ॥ ने धोलो ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ नवमाथि ते सर्वार्थसिद्धलगे ॥ १ ॥

आवलिकाबध विमान ॥ १० ॥ इग्यारमे परिपदा ॥११॥ बारमे उद्योत ॥१२॥
तेरमे देवीड ॥ १३ ॥ चउदमे लोकपाल ॥ १४ ॥ पनरमे त्रायत्रिंशक ॥ १५ ॥
सोलमे ॥ ७ ॥ आणिका ॥ १६ ॥ सतरमे आणिकाना अधिपति ॥ १७ ॥ अ
ढारमे सघयण ॥ १८ ॥ ओगणीशमे अवधि देखवुं ॥१९॥ विशमे ॥४॥ वोल
॥ २० ॥ पहिले नाम कहेछे । सुधर्म ॥ १ ॥ इशान ॥ २ ॥ सनतकुमार ॥ ३ ॥
माहेंद्र ॥ ४ ॥ ब्रह्मलोक ॥ ५ ॥ लतक ॥ ६ ॥ महाशुक्र ॥ ७ ॥ सहस्रार ॥८॥
आणत ॥९॥ प्राणत ॥ १० ॥ आरण ॥ ११ ॥ अच्युत ॥ १२ ॥ नवग्रैवेयकना
नाम । भद्दे ॥ १ ॥ सुभद्दे ॥ २ ॥ सुजाए ॥३॥ सुमाणसे ॥४॥ पीयदंसणे ॥५॥
सुदसणे ॥ ६ ॥ आ मोहे ॥ ७ ॥ सुपडिबुद्धे ॥ ८ ॥ जसोधरे ॥ ९ ॥ पाच अनु
त्तर विमानना नाम । विजय ॥ १ ॥ विजयत ॥ २ ॥ जयत ॥ ३ ॥ अपराजित
॥ ४ ॥ सर्वार्थसिद्ध ॥ ५ ॥ मुक्तिशिलाना नाम ॥ इसीतीवा ॥ १ ॥ इसिपब्भा

रातीवा ॥ २ ॥ तणुतीवा ॥३॥ तणुतणुतीवा ॥ ४ ॥ सिद्धितीवा ॥ ५ ॥ सिद्धाल एतिवा ॥६॥ मुत्तितिवा ॥७॥ मुत्तालएतिवा ॥८॥ लोयग्गेतिवा ॥९॥ लोगथुभि एतिवा ॥१०॥ लोगपडिवोहएतिवा ॥११॥ सवपाणभुयजीवसत्तसुहावहेतिवा ॥ १२ ॥ १ ॥ विजे आधार कहेछे । पहिला बे देवलोक घनोदधिने आधारे रह्याछे । त्रिजु चोथु ने पाचमु ए ॥ ३ ॥ देवलोक घनवायने आधारे रह्या छे । छठु सातमु ने आठमु । ए ३ देवलोक घनोदधि घनवाय बेने आधारे रह्याछे ॥ नवमाथि ते सर्वार्थसिद्धसुधि एक आकाशने आधारे प्रतिष्ठित छे ॥ २ ॥ त्रिजे वर्ण कहेछे । पहिले विजे देवलोके ॥ ५ ॥ वर्ण लाभे ॥ त्रिजे चउथे देवलोके ॥ ॥ १ ॥ कालो वर्जिने ॥ ४ ॥ वर्ण लाभे ॥ पांचमे छठे देवलोके ॥ ३ ॥ वर्ण लाभे ते कालो ॥ १ ॥ निलोए २ वर्ज्या । सातमे आठमे ॥ २ ॥ वर्ण लाभे पीलो ॥ १ ॥ ने धोलो ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ नवमाथि ते सर्वार्थसिद्धलगे ॥ १ ॥

धोलो वर्ण लाभे ॥ ३ ॥ चउथे वस्त्र कहेछे ॥ बार देवलोकना देवताना वस्त्र विविध प्रकारना ॥ ते पण सध्याना रागसरिखा जाणवा ॥ उपरे वस्त्रनु कारण नथि ॥ ४ ॥ पांचमे सामानिक कहेछे ॥ पहिला देवलोकना देवताने ॥ ८४००० ॥ हजार सामानिकदेवता ॥ १ ॥ बिजाने ८० हजारसामानिक ॥२॥ त्रिजाने ॥ ७२ ॥ हजार सामानिक ॥ ३ ॥ चउथाने ॥ ७० ॥ हजारसामानिक ॥ ४ ॥ पांचमा ने ॥ ६० ॥ हजार सामानिक ॥ ५ ॥ छठाने ॥ ५० ॥ हजार सामानिक ॥ ६ ॥ सातमाने ॥ ४० ॥ हजार सामानिक ॥ ७ ॥ आठमाने ॥ ३० ॥ हजार सामानिक ॥ ८ ॥ नवमा दशमा ने ॥ २० ॥ हजार सामानिक ॥ ९ ॥ १० ॥ इग्यारमा बारमाने ॥ १० ॥ हजार सामानिक ॥ ११ ॥ १२ ॥ ५ ॥ छठे बोले आत्मरक्षक कहेछे । सामानिकथि चउगुणा जाणवा ॥ ६ ॥ सातमे विमानना भोंयतलियानुं जाम्पणुं कहेछे । पहिला बिजा देवलोकनु तलुं ॥२७००॥ जो

जननुं जाडु ॥ त्रिजा चउथा देवलोकनु तलुं ॥२६००॥ जोजननु जाडु ॥ पाचमा छठा देवलोकनु तलु ॥ २५००॥ जोजननु जाडु ॥ सातमा आठमा देवलोकनु तलु ॥२४००॥ जोजननुं जाडुं ॥ नवमा दशमा इग्यारमा वारमा देवलोकनु तलु ॥ २३०० ॥ जोजननु जाडु ॥ नवग्रैवेयकनुं तलु ॥ २२०० ॥ जोजननुं जाडु छे ॥ पाच अनुत्तर विमाननु तलु ॥ २१०० ॥ जोजननु जाडु छे ॥७॥ आठमे महोलनु उचपणुं कहेछे ॥ पहिला विजा देवलोकना ॥ ५००॥ जोजनना उचा महोल ॥ त्रिजा चउथा देवलोकना॥६००॥ जोजनना उंचा महोल॥ पाचमा छठा देवलोकना ॥७००॥ जोजनना उचा महोल ॥ सातमा आठमा देवलोकना ॥८००॥ जोजनना उचा महोल ॥ नवमा दशमा इग्यारमा ने वारमा देवलोकना ॥९००॥ जोजनना उचा महोल ॥ नवग्रैवेयकना ॥१०००॥ जोजनना उचा महोल ॥ पाच अनुत्तर विमानना ॥ ११०० ॥ जोजनना उचा

महोल ॥ पहिले बिजे देवलोके ॥१३॥ प्रतर छे ॥ त्रिजे चउथे देवलोके ॥१२॥
प्रतर छे ॥ पाचमे देवलोके ॥ ६ ॥ प्रतर ॥ छठे देवलोके ॥ ५ ॥ प्रतर ॥
सातमे ॥ आठमे नवमे दशमे इग्यारमे ने वारमे ए ६ देवलोके च्यार च्यार
प्रतर छे ॥ नवग्रैवेयकमा ए प्रतर । पाच अनुत्तर विमाननो ॥ १ ॥ प्रतर ॥ ए
सर्व मिलि ॥६२॥ प्रतर जाणवा ॥८॥ नवमे पुष्फाविकीर्ण विमान कहेछे ॥ ॥
८४८९१४९ ॥ चोर्यासीलाख नेव्यासीहजार एकसो उगण पचास पुष्फावि
कीर्ण विमान जाणवा ॥९॥ दशमे आवलिकावध विमान ॥७८७४॥ अठोतेर
सोने चुमोतेर जाणवा ॥१०॥ हवे ११ मे परिषदा कहेछे पहिला देव लोकना
इन्द्रने ॥३॥ परिपदा । पहिलीना १२ हजार देवता ॥ बिजीना ॥१४ हजार दे
वता ॥ त्रिजीना ॥ १६ हजार देवता ॥१॥ बिजा देवलोकना इन्द्रने ॥ ३ परिष
दा ॥ १० सहस्त्र ॥ १२ सहस्त्र ॥ १४ सहस्त्र ॥२॥ त्रीजा देवलोकना इन्द्रने ॥३

परिषदा ॥ ८ सहस्र ॥ १० सहस्र ॥१२॥३॥ चउथे देवलोके ॥ ६ सहस्र ८ स
हस्र ॥ १० सहस्र ॥४॥ पांचमे देवलोके ॥४॥ सहस्र ॥ ६ सहस्र । ने ॥ ८ ॥ स
हस्र ॥५॥ छठे देवलोके ॥२॥ सहस्र ॥४॥ सहस्र । ने ॥६॥ सहस्र ॥६॥ सातमे
देवलोके १ सहस्र ॥२॥ सहस्र ने ॥४॥ सहस्र ॥७॥ आठमे देवलोके ॥५००॥
१ सहस्र ने ॥ २ सहस्र ॥८॥ नवमे दशमे देवलोके॥२५०॥५००॥१०००॥
॥९॥ १० ॥ इग्यारमे बारमे देवलोके ॥१२५॥ २५० ॥ ५०० ॥ ११ ॥ १२ ॥११॥
बारमे उद्योत कहेछे॥देवतानो॥१॥देवीनो॥२॥आभरणनो ॥३॥ शुभपुद्गलनो
॥४॥ ने विमाननो ॥१२॥ तेरमे देवीउ कहेछे एकेका इंद्रने आठ आठ देवीउ
छे एकेकि देवी सोल सोल हजार रूप वैक्रेय करे धणि भोगववाने अर्थे धणि
पण एटला रूप वैक्रेय करे ॥ १३ ॥ चउदमे लोकपाल कहेछे ॥ एकेका इंद्रने
च्यार च्यार लोकपाल छे ॥ वारा पूर्वनिपरे जाणवा ॥ सोमने जमनुं ॥ १ ॥ प

ल्यने १ पल्यना त्रिजा नागनु आयुष अधिक जाणवु ॥ वरुणनु देशोउणा ॥ ॥ २ ॥ पल्यनु आयुप जाणवु ॥ वेशामणनु पुरा वे पल्यनु आयुष जाणवु ॥ ॥ १४ ॥ पनरमे त्रायत्रिंशक ते पूर्वनिपरे जाणवा ॥ १५ ॥ सोलमे अणिका ७ ते । गधर्व ॥१॥ नट ॥२॥ हय ॥३॥ गय ॥४॥ रथ ॥ ५ ॥ पाला ॥६॥ वृपभ ॥ ७ १६॥सत्तरमे अणिकाना अधिपति इमज जाणवा ॥१७॥ आढारमे संघयण कहेछे पहिलाथि ते चउथा देवलोकसुधि ॥ ६ ॥ सघयणनो धणी जाय ॥ पाचमे ने छठे देवलोके ॥१॥ छेवट्ठु वर्जिने पाच संघयणनो धणि उपजे ॥ सातमे आठमे देवलोके ॥ ४ ॥ सघयणनो धणि जाय ते किलकु १ ने छेवटु ए २ वर्जिने ॥ नवमे दशमे इग्यारमे ने वारमे देवलोके ॥ ३ ॥ संघयणनो धणि जाय ॥ नवग्रैवेयकमां ॥ २ ॥ सघयणनो धणि जाय ॥ पांच अनुत्तरविमानमा ॥ १ वज्र ऋषभ नाराचसघयणनो धणी उपजे ॥१८॥ उगणिशमे अवधिदेखवुं कहेछे ॥ प

हिला बिजा देवलोकना देवता निचु पहिली नरकना तलासुधि देखे ॥ उचु पोताना विमाननी ध्वजालगे देखे । त्रिछु असख्याता द्विप समुद्रलगे देखे ॥ त्रिजा । चोथा देवलोकना। देवता। निचु बिजीनरकना तलासुधि देखे उचुं त्रिछुं तेटलुज देखे ॥ पाचमा छठा देवलोकना देवता निचुं। त्रिजीनरकना तलासुधि देखे। उंचु त्रिछु तेटलुं ज देखे। सातमा आठमा देवलोकना। देवता। निचु च उथि नरकना तलासुधि देखे उंचुं त्रिछु तेटलुंज देखे। नवमा दशमा इग्यारमा ने वारमा देवलोकना देवता। निचु पाचमी नरकना तलासुधि देखे। उंचु त्रिछुं तेटलुज देखे। नवग्रैवेयकना देवता। निचुं छठि नरकना तलासुधि देखे उचु त्रिछुं तेटलुज देखे॥ च्यार अनुत्तर विमानना देवता निचु सातमि नरकना तलियासुधि देखे। उचु त्रिछु तेटलुज देखे॥ सर्वार्थसिद्ध महाविमानना देवता किंचित् उणि लोक नालि देखे॥ नारकि त्रापाने आकारे देखे॥ १॥ भवनपति पालाने आकारे

देखे ॥ २ ॥ व्यंतर ऊालरने आकारे देखे ॥ ३ ॥ ज्योतिषी पम्हाने आकारे देखे ॥ ४ ॥ वैमानिक ॥ १२ ॥ देवलोकना देवता मादलने आकारे देखे ॥ नव ग्रैवेयकनादेवता विखस्या फुलने आकारे देखे ॥ च्यार अनुत्तर विमानना देवता कुमारीना कंचुवाने आकारे देखे ॥ सर्वार्थसिद्धना देवता जवनालिने आकारे देखे ॥ १ए ॥ विशमे बोले शुन्न वर्ण गध रस स्पर्श नोगवताथका वैमानिक विचरेछे ॥ २० ॥ इति पाचमो वैमानिकनो धार समाप्त ॥ ५ ॥ इति पाच बोल समाप्तं ॥ अथ श्री २३ पदवीना बोल लिख्यते ॥ तेना नाम कहेछे ॥ प्रथम ॥ ७ ॥ एकेंद्रिय रत्न ॥ ७ ॥ पचेंद्रिय रत्न ने ॥ ए ॥ महोटि पदवी । तेहमा ॥ ७ ॥ एकेंद्रिय रत्नना नाम । चक्ररत्न ॥ १ ॥ छत्ररत्न ॥ २ ॥ चर्मरत्न ॥ ३ ॥ दम्रत्न ॥ ४ ॥ असिरत्न ॥ ५ ॥ मणिरत्न ॥ ६ ॥ कागणिरत्न ॥ ७ ॥ ए ॥ ७ ॥ एकेंद्रिय रत्नना नाम कह्या ॥ हवे ॥ ७ ॥ पचेंद्रिय रत्नना नाम कहेछे ॥ से

नापति ॥ १ ॥ गाथापति ॥ २ ॥ वार्द्धिक ॥ ३ ॥ पुरोहित ॥ ४ ॥ स्त्री ॥ ५ ॥
अश्व ॥ ६ ॥ गज ॥ ७ ए ॥ ७ ॥ पचेंद्रिय रत्नना नाम कह्या ॥ हवे ॥ए॥ महो
टि पदवीना नाम कहेछे ॥ अरिहतनि ॥ १ ॥ चक्रवर्त्तिनि ॥ २ ॥ बलदेवनि
॥ ३ ॥ वासुदेवनि ॥ ४ ॥ केवलिनि ॥ ५ ॥ साधुनि ॥ ६ ॥ श्रावकनि ॥ ७ ॥
सम्यक्दृष्टिनि ॥ ७ ॥ मरूलिक राजानि ॥ ए ॥ ए ॥ए॥ महोटि पदवी कही ॥
एव सर्वमिलि २३ पदवी ॥ हवे ॥ १४ रत्न स्यु स्यु काम करे ॥ चक्ररत्न षट्
खडसाधतामार्ग बतावे ॥ १ ॥ छत्ररत्नते ॥ ४७ ॥ कोशप्रमाणे छाया करे ॥२॥
चर्मरत्न ते नदी आदे पार उतारे ॥ ३ ॥ दडरत्न ते तमस गुफाना बार उघाडे
॥ ४ ॥ असिरत्न ते शत्रुने हणे ॥ ५ ॥ मणिरत्न ते उद्योतकरे ॥ ६ ॥ कागणि
रत्न ते ॥ ४ए ॥ माडला आलेखे । तथा तोला माप वधारे ॥ ७ ॥ सेनापति
ते देश साधे ॥७॥ गाथापति ते । धान रसवती निपजावे ॥ ए ॥ वार्द्धिक ते ।

आवास घर निपजावे ॥ १० ॥ पुरोहित ते घाव साजा करे । तथा शातिकर्म करे । विघ्न टाळे ॥ ११ ॥ स्रीरत्न ते जोगसाधन आवे ॥ १२ ॥ अश्व ने गज वेढु चढवाने काम आवे ॥ १४ ॥ हवे ॥१४॥ रत्न किहा किहा उपजे ते कहेछे चक्र ॥१॥ छत्र ॥ २ ॥ असि ॥ ३ ॥ दंड ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ आयुधशालामा उपजे ॥ चर्ममणि ने कागणि । ए ॥ ३ ॥ लक्ष्मीना भंडारमा उपजे ॥ सेनापति ॥ १ ॥ गाथापति ॥ २ ॥ वार्द्धिक ॥ ३ ॥ पुरोहित ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ पोताना नगरमां उपजे ॥ स्री विद्याधरनि श्रेणिमा उपजे ॥ अश्व ने । गज । ए ॥ २ ॥ वैताढने मुले उपजे ॥हवे॥१४॥ रत्ननी कायानुं परिमाण कहेछे ॥ चक्र छत्र ने दंड ए ॥ ३ ॥ वामप्रमाणे । वाम ते ॥४॥ हाथप्रमाणे । चर्मरत्न ते ॥२॥ हाथ प्रमाणे ॥ खड्गरत्न ते ॥ ५० ॥ अगुलनु लांबु ने ॥१६॥ अगुलनु पहोलु । ने अर्ध अगुलनुं जाडुं ॥ मणिरत्न ॥ ४ ॥ अगुलनु लांबु ने ॥ २ ॥ अगुलनु प

होलु ॥ कागणिरत्न ने छ तला । आठखुणा । वार हांशो।सोनीनि अहिरणने
संठाणे ॥ १ ॥ अंगुलनु लांबु पहोलु ने उंचुं छे ॥ सेनापति ॥ १ ॥ गाथापति
॥ २ ॥ वार्द्धिक ॥ ३ ॥ पुरोहित । ए ॥४॥ नीअवगाहना चक्रवर्तिप्रमाणे उंचि
जाणवि ॥ स्त्रीरत्न चक्रवर्त्तिथि ४ अंगुल निचि होय ॥ अश्वरत्न ॥१०८॥ अंगु
लनो लांबो । कानना मूलथि ते पुछना मूललगे । अने ॥८०॥ अंगुलनो उंचो छे।
गजरत्न चक्रवर्तिथि बमणो उंचो होय ॥ए॥ २३ ॥ पदवी ॥ जे गतिमांहिथि नि
कल्यो केटलि पदवी पामे ते कहेछे। पहिली नरकना निकल्या १६ पदवी पामे ।
ते ॥ २३ ॥ मांहिथि ॥७॥ एकेंद्रिय रत्न वर्ज्या ॥ १ ॥ बिजी नरकना निकल्या
॥ १५ ॥ पदवी पामे । पूर्वे ॥१६॥ कहि तेहमांथि ॥१॥ चक्रवर्तिनी वर्जि ॥२॥
त्रिजि नरकना निकल्या । तेर पदवी पामे ते ॥ १५ ॥ माथि बलदेव ने वासु
देव वर्ज्या ॥ ३ ॥ चउथि नरकना निकल्या ॥ १२ ॥ पदवी पामे ते । तेरमाथि

॥ १ ॥ तिर्थंकर वर्ज्यां ॥ ४ ॥ पाचमी नरकना निकल्या । इग्यार पदवी पामे। ते ॥ १७ ॥ माहिथि ॥ १ केवलि वर्ज्यां ॥ ५ ॥ छठि नरकना निकल्या दश पदवी पामे । ते । साधुजी वर्ज्यां ॥ ६ ॥ सातमी नरकना निकल्या ॥ ३ ॥ पदवी पामे ॥ अश्व ॥ १ ॥ गज ॥ २ ॥ सम्यक्त्वदृष्टि ॥३॥ ए ॥३॥ पदवी पामे ॥७॥ जवनपति । वाणव्यतर । ज्योतषी । ए ॥ ३ ॥ ना निकल्या । एकविश पदवी पामे । ते । वासुदेव ने ॥ १ ॥ तिर्थंकर ॥ ए ॥ २ ॥ वर्ज्यां ॥ प्रथवी । पाणी । वनस्पति । गर्नजमनुष्य । ने गर्नजतिर्यंच । पटलाना निकल्या ॥१ए॥ पदवी पामे । ते ॥२३॥ मांथि ॥ तिर्थंकर ॥१॥ चक्रवर्त्ति ॥२॥ वलदेव ॥ ३ ॥ वासुदेव ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ वर्ज्यां ॥ वेइंडिय । तेइंडिय । चउरेंडिय । समुर्छिमतिर्यंच ने समुर्छिममनुष्य ॥ ए ॥ ५ ॥ नानिकल्या ॥ १ƺ ॥ पदवी पामे । ते ॥ १ए ॥ माथि ॥ १ ॥ केवलि वर्ज्यां ॥ तेउवाउ । ना निकल्या ॥ए॥ पदवी पामे ते ॥ ७ ॥ एकें

ंद्रियरत्न ॥ अने हाथि १ । घोमो २ ॥ ए ॥ए॥ पदवी पामे ॥ पनरपरमाधामि ने।
पहिला किल्विषीना निकल्या ॥१७॥ पदवी पामे । ते ॥२३॥ माथि ॥४॥ उत्तम
पुरुष ने ॥ १ ॥ केवलि वर्ज्या ॥ उपला ॥ २ ॥ किल्विषीना निकल्या ॥ ११ ॥
पदवी पामे । ते ॥ १७ ॥ माथि ॥ ७ ॥ एकेंद्रिय वर्ज्या शेष ॥ ११ ॥ पामे ॥ सु
धर्म १ इशान ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ देवलोकना निकल्या ॥२३॥ पदवी पामे ॥ त्रि
जाथि ते आठमा देवलोकसुधिना तथा नव लोकांतिकना निकल्या ॥ १६ ॥ प
दवीपामे । ते ॥ २३ माथि ॥ ७ ॥ एकेंद्रियरत्न वर्ज्या । शेष ॥ १६ ॥ पामे ॥
नवमांथि नवग्रैवेयकसुधिना निकल्या चउद पदवी पामे ते ॥ १६ ॥ माथि अश्व
॥ १ ॥ ने गज ॥ २ ॥ ए ॥२॥ वर्ज्या शेष ॥ १४ पामे ॥ पांच अनुत्तर विमानना नि
कल्या ॥७॥ पदवी पामे । ते ॥ २३ ॥ माथि ॥ १४ ॥ रत्न ने ॥ १ ॥ वासुदेव
वर्ज्या । शेप ॥ ७ ॥ पामे ॥ सङ्गिमाहि ॥ १५ ॥ पदवी लाभे ते ॥ २३ ॥ माथि

॥ ७ ॥ एकेंद्रिय ने ॥ १ ॥ केवलिनी । ए ॥ ८ ॥ वर्जी ॥ शेष १५ लाभे । अस
ज्ञिमांहि ॥ ८ ॥ पदवी लाभे ते ॥ ७ ॥ एकेंद्रिय ने ॥ १ ॥ समकीतनी ॥ ८ ॥
लाभे ॥ तिर्थंकर । तथा चक्रवर्तिमां ॥ ६ ॥ पदवी लाभे ॥ तिर्थंकरनि ॥ १ ॥ च
क्रवर्तिनि ॥ २ ॥ मंडलिकनि ॥ ३ ॥ समकितनि ॥ ४ ॥ साधुनि ॥ ५ ॥ केव
लिनि । ए ॥ ६ ॥लाभे ॥ वासुदेवमा ॥ ३ ॥ पदवीलाभे । वासुदेवनी ॥ १ ॥ स
मकितनि ॥ २ ॥ मंडलिकनि ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ लाभे ॥ बलदेवमा पाच पदवी
लाभे । बलदेवनि ॥ १ ॥ मंडलिकनि ॥ २ ॥ साधुनि ॥ ३ ॥ केवलिनि ॥ ४ ॥
समकितदृष्टिनि ॥ ५ ॥ ए ॥ ५ ॥ लाभे ॥ मनुष्यमांहि । पदवी ॥ १३ ॥ लाभे ॥
नव महोटि पदवी ने । सेनापति ॥ १ ॥ गाथापति ॥ २ ॥ वार्द्धिक ॥ ३ ॥ पुरो
हित ॥ ४ ॥ एव । सर्व मिलि ॥ १३ ॥ पदवीलाभे ॥ मनुष्यणीमांहि पदवी ॥
॥ ५ ॥ लाभे ॥ समकितनि ॥ १ ॥ श्राविकानि ॥ २ ॥ साधवीनि ॥ ३ ॥ केव

लिनि ॥ ४ ॥ स्त्रीरत्ननि ॥ ५ ॥ ९ ॥ ५ ॥ इति २३ पदवीना बोल समाप्त ॥

अथ श्रीसिकणाद्वार लिख्यते

१ पहिली नर्कना निकल्या एक समये १० सिके
२ विजी नर्कना निकल्या एक० १०
३ त्रिजि नर्कना निकल्या एक० १०
४ चउथी नर्कना निकल्या एक० ४
५ भवनपतिना निकल्या एक० १०
६ भवनपतिनि देवीना निकल्याए ५
७ पृथ्वीना निकल्या ४ एक० सिके
८ पाणिना निकल्या एक० ४ सिके
९ वनस्पतिना निकल्या एक० ६
१० पचेंद्रिय तिर्यंच गर्भजना निकल्या एक० १० सिके
११ तिर्यंचणीना निकल्या एक० १०
१२ मनुष्यना निकल्या एक० १०
१३ मनुष्यणीना निकल्या एक० २०
१४ वाणव्यंतरना निकल्या एक० १० सिके
१५ वाणव्यतरनि देवीना निकल्या एक० ५ सिके

१६ ज्योतिषीना निकल्या एक० १०
१७ ज्योतिषीनी देवीना निकल्या एक० २० सिके
१८ वैमानिकना निकल्या एक० १०८ सिके
१९ वैमानिकनि देवीना निकल्या एक० २० सिके
२० स्वलिंगी सिके तो १०८ सिके
२१ अन्यलिंगी सिके तो १० सिके
२२ गृहस्थलिंगे सिके तो ४ सिके
२३ स्त्रीलिंगे २० सिके

२४ पुरुषलिंगे १०८ सिके
२५ नपुसकलिंगे १० सिके
२६ उर्ध्वलोके ४ सिके
२७ अधोलोके २० सिके
२८ त्रिगलोके १०८ सिके
२९ उत्कृष्टि अवगाहनावाला एक० २ सिके
३० जघन्य अवगाहनावाला ए० ४
३१ मझम अवगाहनावाला एक० १०८ सिके
३२ समुद्रमा २ सिके

३३ नदीप्रमुख शेषजलमा ३ सिझे
३४ तिर्थमा १०८ सिझे
३५ अतिर्थमा १० सिझे
३६ तिर्थकर २० सिझे
३७ अतिर्थकर १०८ सिझे
३८ स्वयबुध्द ४ सिझे
३९ प्रत्येक बुध्द १० सिझे
४० बुध्दबोदि १०८ सिझे
४१ एक सिध्धाते एक समये १ सिझे
४२ अनेक सिध्दा ते एक समये उत्० १०८ सिझे

४३ विजय विजय प्रते एक समये विशा विशा सिझे
४६ भद्दशालवन १ नदनवन २ सोमनसवन ३ ए ३ मा च्यार च्यार सि
४७ पंडगवनमा २ सिझे
४८ अकर्मभूमिमा १० सिझे
४९ कर्मभूमिमा १०८ सिझे
५३ पहिले १ विजे २ पाचमे ३ छठे ४ ए ४ आरे १० दश सिझे
५५ त्रिजे १ चउथे २ ए २ आरे १०८ एकसो आठ सिझे

५७ अवसर्पिणी १ उत्सर्पिणी २ ९ २ मा १०८ एकसो आठ सिझे
५८ नोउत्सर्पिणी नोअवसर्पिणीमा १०८ सिझे
५९ एकथि माम्ने ३२ लगे सिझे तो समयसुधि
६० ३३ थि माडिने ४८ सुधि सिझे तो ७ समयलगे
६१ ४९ थि माडिने ६० सुधि सिझे तो ६ समयलगे
६२ ६१ थि माडिने ७२ सुधि सिझे तो ५ समयलगे
६३ ७३ थि माडिने ८४ सुधि सिझे तो ४ समयलगे
६४ ८५ थि माडिने ९६ सुधि सिझे तो ३ समयलगे
६५ ९७ थि माडिने १०२ सुधि सिझे तो २ समयलगे
६६ १०३ थि माडिने १०८सुधि सिझे तो १ समयलगे
इति सिझणाद्वार समाप्त

अथ श्रीविरहद्वार लिख्यते ॥ समुच्चय चार गतिनो विरहकाल ॥ जघन्य ॥
॥ १ ॥ समयनो उत्कृष्टो ॥ १२ ॥ मुहुर्त्तनो ॥ हवे पहिली नरके ज० ॥ १ ॥ समय०
॥ उ० २४ मुहुर्त्तनो ॥ १ ॥ बिजी नरके ज० १ समयनो उ० ७ दिननो विरह
काल ॥ २ ॥ त्रीजी नरके ज० १ समयनो उ० १५ दिननो विरहकाल ॥ ३ ॥
चोथी नरके ज० १ समयनो उ० १ मासनो विरहकाल ॥ ४ ॥ पाचमी नरके ॥
ज० १ समयनो उ० २ मासनो विरहकाल ॥ ५ ॥ छठी नरके ज० १ समयनो
उ० ४ मासनो विरहकाल ॥ ६ ॥ सातमी नरके ज० १ समयनो उ० ६ मासनो
विरहकाल ॥ ७ ॥ उपजवानो तथा चववानो विरह पडे ॥ हवे दस भवनपती
नो ज० १ समयनो उ० २४ मुहुर्त्तनो विरहकाल ॥ पाच एकेंद्रीय अविरहिया
संख्याताने ठमे सख्याताउपजे ॥ असख्याताने ठमे असंख्याताउपजे ॥ अ
नंताने ठमे अनंताउपजे ॥ समय समयउपजे ॥ समय समयचवे ॥ त्रण विग

तेंडीयनो ज० १ समयनो ॥ उ० अंतर्मुहुर्त्तनो विरहकाल ॥ समुर्छिम तिर्यंच
पंचेंडीयनो ज० १ समयनो उ० अंतर्मुहुर्त्तनो विरहकाल ॥ गर्भज तिर्यंच
पचेंडीयनो ज० १ समयनो ॥ उ० १२ मुहुर्त्तनो विरहकाल ॥ समुर्छिम मनुष्यनो
ज० १ समयनो उ० २४ मुहुर्त्तनो विरहकाल ॥ गर्भज मनुष्यनो ज० १ सम
यनो ॥ उ० १२ मुहुर्त्तनो विरहकाल ॥ वाणव्यंतर ॥ ज्योतषी ॥ वैमानिकमां पे
हला ॥ बीजा देवलोकसुधीनो ॥ ज० १ समयनो ॥ उ० २४ मुहुर्त्तनो विरह
काल ॥ त्रिजे देवलोके ॥ ज० १ समय ॥ उ० ए दिन ने वीसमुहुर्त्तनो विरह
काल ॥ चोथे देवलोके ॥ ज० १ समय उ० १२ दिन ने १० मुहुर्त्तनो विरह
काल ॥ पांचमेदेवलोके ॥ ज० १ समय उ० साढाबावीस दिननो विरहकाल ॥
छठे देवलोके ॥ ज० १ समयनो उ० ४५ दिननो विरहकाल ॥ सातमे देवलोके
ज० १ समयनो उ० ८० दिननो विरहकाल ॥ आठमे देवलोके ज० १ सम

यनो उ १०० दिननो विरहकाल ॥ नवमे दशमे देवलोके ॥ ज० १ समयनो उ० सख्याता मासनो ॥ ज्यालगे वरसन होय ॥ इग्यारमे बारमे देवलोके ज० १ समयनो ॥ उ० संख्याता वरसनो ॥ ज्यालगें सो वरस न होय ॥ पहिली त्रिके ज० १ समयनो उ० सख्याता वर्षना सेंकमा ॥ ज्यालगे हजार वरस न होय ॥ बीजी त्रिके ज० १ समयनो ॥ उ० सख्याता वरसनाहजार ॥ ज्यालगे लाख वरस न होय ॥ त्रीजी त्रीके ज० १ समयनो ॥ उ० सख्याता लाख वरस नो ज्यालगे क्रोम वरस न होय ॥ च्यार अनुत्तर विमानमा ॥ ज० १ समयनो उ० ॥ पल्यना असंख्यातमा नागनो विरहकाल ॥ सर्वार्थसिद्धमा ज० १ समयनो उ० पल्यना सख्यातमा नागनो विरहकाल ॥ सिद्धनो विरह ज० १ समयनो उ० ६ मासनो विरहकाल ॥ च्यार गतिमा पंचेंद्रीय आश्री विरह काल ज० १ समयनो उ० १२ मुहुर्त्तनो विरहकाल ॥ सर्व इडस्थानकनो वि

रह ज० १ समयनो ऊ० ६ मासनो विरहकाल ॥ इतिश्री विरहद्वार समाप्तं ॥ अथश्री पांच देवना बोल लिख्यते ॥ पहिलु नामद्वार ॥ १ ॥ बिजु गुणद्वार ॥ २ ॥ त्रिजु उववायद्वार ॥ ३ ॥ चोथु स्थितिद्वार ॥ ४ ॥ पाचमु ऋद्धि तथा विकुवणाद्वार ॥ ५ ॥ छठुं चवणद्वार ॥ ६ ॥ सातमु सचिठणाद्वार ॥ ७ ॥ आठमु अंतरद्वार ॥ ८ ॥ नवमु अल्पबहुत्वद्वार ॥ ए ॥ ए ए द्वार ॥ पाच देव ॥ ऊपर उतारेछे ॥ हवे पहिलु नाम द्वार कहेछे ॥ नवियद्रव्यदेव ॥ १ ॥ नरदेव ॥ २ ॥ धर्मदेव ॥ ३ ॥ देवाधिदेव ॥ ४ ॥ नावदेव ॥ ५ ॥ १ ॥ हवे बिजु गुणद्वार कहेछे ॥ मनुष्य तथा तिर्यंच पंचेन्द्रिय जेहने देवतामा उपजवु छे तेहने नविय द्रव्यदेव कहिये ॥ १ ॥ चउद रत्न ॥ नव निधान ॥ जेहने होय तेहने ॥ नर देव कहिये ॥ २ ॥ साधुना सत्ताविश गुणेकरीसहित होय तेहने धर्मदेव क हिये ॥ ३ ॥ अढार दोषरहित ने बार गुणेकरिसहित होय तेहने देवाधिदेव

कहिये ॥ अढार दोष ते कहेछे ॥ अज्ञान १ क्रोध २ मद ३ मान ४ माया ५ लोभ ६ रति ७ अरति ८ निद्रा ९ शोक १० असत्य ११ चोरी १२ मछर १३ भय १४ प्राणिवध १५ प्रेम १६ क्रिमाप्रसग १७ हास्य १८ ए १८ दोषरहित ने १२ गुणेकरिसहित ॥ ते १२ गुण कहेछे ॥ जिहां जिहां भगवत उभा रहे बेसे समोसरे तिहां तिहां दश बोलसहित ते भगवंतथि बार गुणो उंचो ततकाल अशोक वृक्ष थइ आवे स्वामिने छायमो करे ॥ १ ॥ भगवत जिहां जिहां स मोसरे तिहां तिहां पांच वर्णा अचेत फुलनि वृष्टि थाय ढिंचणप्रमाणे ढगला थाय ॥ २ ॥ भगवतनि जोजनप्रमाणे वाणी विस्तरे सहुना मननो ॥ संशय हरे ॥ ३ ॥ भगवतने चोविश जोड चामर विंझाय ॥ ४ ॥ स्फटिक रत्नमय ॥ पादपीठसहित सिंहासन स्वामिने आगले थाय ॥ ५ ॥ भामंडल अबोडाने ठेकाणे तेजमंडल बिराजे दिशोदिशाना अंधकार टाले ॥ ६ ॥ आकाशे साढा

बार क्रोश गेषि वाजां वागे ॥ ७ ॥ जगततिनि उपरे [illegible] ॥

राजे ॥७॥ अनत ज्ञान अतिशय ॥ अनत [illegible] ॥

अनत वचन अतिशय ११ अनत [illegible]

पणु ॥१२॥ ए १२ गुणे करिसहित तथा [illegible] ॥

तिशय आदि देइने अनंतगुणेकरिसहित [illegible] ॥

भावदेव ते ॥ भवनपति ॥ १ ॥ वाणव्यंतर ॥ २ ॥ ज्योतिषी ॥ ३ ॥ वैमानिक

॥ ४ ॥ए ४ जातिना देवताने भागे [illegible] ॥ ५ ॥ ५ ॥

हवे त्रिर्छ उववायद्वार कहेछे ॥ [illegible]

लीया ॥ सर्वार्थसिद्ध ३ ए ३ [illegible] ॥

नरदेवमां ४ जातिना देवता ने पहिली नर्क ॥ [illegible] ॥

धर्मदेवमां छठी सातमी नर्क। तेउ । वाउ [illegible]

शेष सर्व ठामना आवि उपजे ॥ ३ ॥ देवाधिदेवमा । पहिली । बिजी । त्रिजी नर्क । किल्विषी वर्जिने वैमानिक देवनाआवि उपजे ४॥ भावदेवमा तिर्यंच पचें द्रिय १ ने॥ सञ्ज्ञिमनुष्य ए २ ठामना आवि उपजे ॥५॥३॥ हवे चोथु स्थिति द्वार कहेछे भवियद्रव्यदेवनि जघ० अंत० ॥ उत्० ३ पल्यनि ॥१॥ नरदेवनि जघ० सातसें वर्षनि उत्०॥ चोरासी लाख पूर्वनि ॥२॥ धर्मदेवनि जघ० अं त०।उत्० देशे उणी पूर्वकोडिनि ॥ ३ ॥ देवाधिदेवनि जघ० बहुतेर वर्षनि ॥ उत्० ८४ लाख पूर्वनि॥४॥ भावदेवनि जघ० दश हजार वर्षनि ॥उत्० ३३ सा गरनि ॥ ५ ॥ ॥ ४ ॥ हवे पांचमु ऋद्धि तथा विकुवणाद्वार कहेछे ॥ भवियद्रव्य देवमा जेहने वैक्रेय लब्धि उपनि होय तेहने॥नरदेवने तो होयज॥धर्मदेवमा जेहने होय तेहने॥भावदेवने तो होयज॥ए ४ वैक्रेय रूप करे तो ज० ॥१॥२ ॥ ३ उ० सख्याता करे शक्तितो असख्याता रूपकरवानि छे पण करे नहि॥ दे

वाधिदेवनिशक्ति घणि वे पण करे नहि ॥ ५ ॥ हवे छठु चवणद्वार कहेछे भवि
यद्रव्यदेव चविदेवता थाय १ नरदेव चवि नर्कजाय ॥ २ ॥ धर्मदेव चवी वैमा
निक तथा मोक्षमा जाय ॥ ३ ॥ देवाधिदेव तो मुक्ति जाय ॥ ४ ॥ भावदेव च
विने ॥ प्रथ्वी ॥ पाणी वनस्पति बादरमा ने गर्भजमनुष्य तिर्यंचमा जाय ६
हवे सातमु संचिठणाद्वार कहेछे॥संचिठणा ते स्यु ते देवनो देवपणे रहे तो के
टलो काल रहे ते ॥ भविय द्रव्यदेवनि संचिठणा जघ० अंत० उत्० ३ पल्यो
पमनि १ नरदेवनि जघ० सातसें वर्षनि उत्० ८४ लाख पूर्वनि २ धर्मदेवनि
जघ० १ समयनि॥उत्० देशो उणी पूर्व क्रोडिनि ॥ ३ ॥ देवाधिदेवनि जघ० व
हुतेर वर्षनि उत्० ८४ लाख पूर्वनि ४ भावदेवनि जघ० दश हजार वर्षनि ॥
उत्० ३३ सागरोपमनि ५ ॥७॥ हवे आठमु अंतरद्वार कहेछे भवियद्रव्यदेवनु
आंतरुं पडे तो जघ० दश हजार वर्षने अंतर्मुहूर्त अधिक ॥ उत्० अनंता का

लनुं आतरु पमे। १ ॥ नरदेवनु जघ० १ सागरझाझेरु। उत्० अर्द्ध पुग्गल परावर्त्तन देशे उणु २ ॥ धर्मदेवनु जघ० २ पल्यझाझेरुं ॥ उत्० अर्द्ध पुग्गल परावर्त्तन देशे उणु ३ ॥ देवाधिदेवनु आतरु नथि ॥ ४ ॥ भावदेवनु जघ० अंत० ॥ उत्० अनता कालनु ॥ ५ ॥ हवे नवमु अल्पबहुत्व द्वार कहेछे ॥ सर्वथि थोमा नरदेव १ ते हथि देवाधिदेव सख्यात गुणा २ तेहथि धर्म देव सख्यात गुणा ॥ ३ ॥ तेहथि नवियद्रव्यदेव ॥ असख्यातगुणा ॥ ४ ॥ तेहथि भावदेव असंख्यात गुणा ॥ ५ ॥ ए ॥ इति पाच देवना बोल सपूर्ण॥

अथ दिसाणुवाइ लिख्यते॥समुचय जीव॥सर्वथि थोमा पश्चिम दिशे जेम्नणि पश्चिम दिशे गौतमद्विप छे तथा चद्रमा सूर्यना द्विपछे तेथि पाणि थोमुछे। तेमाटे निल फुल पण थोमिछे। तेणे करि जीव थोमा छे॥ १ ॥ तेहथि पूर्व दिशे विशेषाधिया जेमाटे गौतमद्विप नथी ॥ २ ॥ तेहथि दक्षिण दिशे विशेषाधिया जेमाटे चंद्रमा सूर्यना

द्विप पण नथि ॥ ३ ॥ तेहथि उत्तर दिशे विशेषाहिया जेहभणि उत्तर दिशे संख्या
तमे द्विपे संख्याति जोजन कोमा कोम्निं मानसरोवर छे तीहां पाणी घणु छे
तेहथी निलफुलना जीव घणा छे तेमाटे ॥ ४ ॥ १ ॥ पृथवीकायना जीव सर्वथि
थोमा दक्षिण दिशे जेभणि दक्षिणदिशे ॥४॥ कोम्निने ६ लाख भवनपतिना भवन
छे। तिहा पोलार घणि छे तेथि पृथवी थोमि छे ॥ २ ॥ तेहथि उत्तर दिशे विशेषाहिया
जे भणि भवनपतिना भवन थोमा छे ॥ ३ ॥ कोमि गशाठ लाख भवन छे तेथि
पोलार थोमि छे ते भणि पृथ्वी घणि छे ॥ २ ॥ तेहथि पूर्व दिशे विशेषाहिया
जेभणिभवन तो नथि पण चंद्रमा सूर्यना द्विप छे तेभणि पृथवी घणि छे ॥ ३ ॥
तेहथि पश्चिम दिशे विशेषाहिया जेभणि गौतमद्विप छे ते माटे पृथवी घणि छे
॥ ४ ॥ २ ॥ इमज अपकाय ॥ १ वनस्पतिकाय ॥ २ ॥ त्रशकाय ॥ ३ ॥ बेइं
द्रिय ॥ ४ ॥ तेइंद्रिय ॥ ५ ॥ चउरिंद्रिय ॥ ६ ॥ तिर्यंच पंचेंद्रिय ॥ ७ ॥ ए ॥ ७ ॥

समुच्चय जीवनिपरे जाणवा ॥ ए ॥ तेउकाय ॥ १ ॥ मनुष्य २ सिद्ध ॥ ३ ॥ ए
॥ ३ ॥ सर्वथि थोमा दक्षिण उत्तर दिशे॥जेभणि दक्षिण उत्तरे क्षेत्र नाह्ना छे
तेथि । ए ॥ ३ ॥ थोमा ॥ २ ॥ तेह्थि पूर्वे दिशे सख्यात गुणा । जेभणि क्षेत्र
मह्होटा छे तेमाटे ॥ ३ ॥ तेह्थि पश्चिम दिशे विशेषाह्यिा । जेभणि पश्चिम
दिशे अधो गाम विजय छे तिहा जीव घणा छे तेमाटे ॥ ४ ॥ १२ ॥ वाउकाया
जीव सर्वथि थोमा । पूर्वे दिशे जेभणि भुमि घणि नकोर छे तेमाटे वाउकाया
थोमा छे ॥ १ ॥ तेह्थि पश्चिम दिशे विशेषाह्यिा जेभणि विजय उमी छे तेमाटे
॥ २ ॥ तेह्थि उत्तर दिशे विशेषाह्यिा जेभणि भवनानि पोलार छे तेमाटे ॥३॥
तेह्थि दक्षिण दिशे विशेषाह्यिा जेभणि भवन ने नरकावासा घणा छे
तेभणि पोलार घणि छे तेमाटे वाउकाया घणा छे ॥ ४ ॥ १३ ॥ नारकि सर्वथि
थोमा । पूर्वे १ पश्चिम २ ने उत्तर दिशे । जेभणि तिहा पुष्पावकीर्ण नरका

वासा थोमा छे।अने वलि सख्याति जोजनना छे॥तेमाटे नारकि थोमा छे॥३॥ तेहथि दक्षिण दिशे असरख्यात गुणा जेभणि कृष्णपखी नारकि दक्षिण दिशाना उपजण हार घणा छे तेमाटे॥४॥ ए समुच्चय नारकि आश्रि कह्युं।इम प्रत्येक प्रत्येक नरके त्रिण दिशाना नारकि थोमा ते पूर्व १ पश्चिम २ ने उत्तरना॥ तेहथकि दक्षिण दिशाना असंख्यात गुणा अधिक छे॥ सातमी नरकना ३ दिशाना नारकि थकि दक्षिण दिशाना नारकि असख्यात गुणा। सातमी नरकना दक्षिण दिशाना नारकिथकि छठि नरकना ३ दिशाना नारकि असख्यात गुणा।तेथकि छठी नरकना दक्षिण दिशाना नारकि असख्यात गुणा। एणि परे पहिलि नरकसुधि जाणवु॥ १४ ॥ भवनपति देवता सर्वेथि थोमा पूर्व। पश्चिम दिशे २ तेहथि उत्तर दिशे असख्यात गुणा अधिक जेभणि भवन घणा छे तेमाटे ॥ ३ ॥ तेहथि दक्षिण दिशे असरख्यात गुणा। भवन बहुलाछे तेमाटे॥ ४ ॥

॥ १५ ॥ वाणव्यतर देवता सर्वथि थोमा पूर्वदिशे जेमणि जुमि घणि कठिन
ठे तेमाटे ॥ १ ॥ तेहथि पश्चिम दिशे विशेषाहिया । व्यतरना नगर घणा ठे
तेमाटे ॥ २ ॥ तेहथि उत्तर दिशे विशेषाहिया ॥ ३ ॥ तेहथि दक्षिण दिशे वि
शेषाहिया तिहां कृष्णपक्षि घणा ठे तेमाटे ॥ ४ ॥ १६ ॥ ज्योतिषी देवता स
र्वथि थोमा । पूर्व पश्चिम दिशे जेमणि पूर्व पश्चिम दिशे चंद्रमा सूर्यना द्विपा
ठे तिहां ज्योतिषी थोडा रहेठे तेमाटे ॥ २ ॥ तेहथि दक्षिण दिशे विशेषाहिया
जेमणि दक्षिण दिशे कृष्णपक्षी घणा ठे ॥ ३ ॥ तेहथि उत्तर दिशे विशेषाहिया
जेमणि उत्तर दिशे मानसरोवर ठे ॥ तिहां मगादिक घणाठे ॥ ते मठ ज्योति
षिना विमान ढुकडा देखिने जातिस्मरणज्ञान उपजे तेहथि व्रतादि पमि वर्जे ।
ते नियाणु करिने ज्योतिषीमा उपजे तेमाटे ज्योतिषी उत्तर दिशे घणा ॥ ४ ॥
॥ १७ ॥ सुधर्म ॥ १ इशान ॥ २ ॥ सनतकुमार ॥ ३ ॥ माहेंद्र ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥

वासा थोम्रा छे।अने वलि सख्याति जोजनना छे॥तेमाटे नारकि थोम्रा छे॥३॥ तेहथि दक्षिण दिशे असख्यात गुणा जेभणि कृष्णपखी नारकि दक्षिण दिशाना उपजण हार घणा छे तेमाटे॥४॥ ए समुच्चय नारकि आश्रि कह्यु।इम प्रत्येक प्रत्येक नरके त्रिण दिशाना नारकि थोम्रा ते पूर्व १ पश्चिम २ ने उत्तरना॥ तेहथकि दक्षिण दिशाना असंख्यात गुणा अधिक छे॥ सातमी नरकना ३ दिशाना नारकि थकि दक्षिण दिशाना नारकि असख्यात गुणा। सातमी नरकना दक्षिण दिशाना नारकिथकि छठि नरकना ३ दिशाना नारकि असख्यात गुणा।तेथकि छठी नरकना दक्षिण दिशाना नारकि असंख्यात गुणा। एणि परे पहिलि नरकसुधि जाणवु॥ १४॥ भवनपति देवता सर्वथि थोम्रा पूर्व। पश्चिम दिशे २ तेहथि उत्तर दिशे असख्यात गुणा अधिक जेभणि भवन घणा छे तेमाटे ॥ ३॥ तेहथि दक्षिण दिशे असख्यात गुणा। भवन बहुलाछे तेमाटे॥ ४॥

विचारिये छिये ॥ जम्बुद्विप ॥ १ लाख जोजननो लांबो ने पहोलो छे । ते वाटलो तेलना पुडलाने आकारे छे १ वाटलोरथनापइडानेआकारेछे २ वाटलो कमलनीकर्णिकानेआकारेछे ३ वाटलोपूर्णचन्द्रमानेआकारेछे ४ ॥ तेहनि परिधि ॥ ३ लाख १६ हजार २२७ जोजन ३ कोश १२८ धनूष ने साडातेर अंगुल झाझेरानि छे ॥ हवे जम्बुद्विप १० द्वारेकरि वखाणेछे ॥ गाथा । खंडा १ जोयण २ वासा ३ ॥ पव्वय ४ कुडाय ५ तिछ ६ सेढिउ ७ ॥ विजय ८ दह ए सलिलाउ १० ॥ पिंडएहोइसघहणी ॥ १ ॥ ए दश द्वार छे॥तेहमा प्रथम खंडाद्वार कहेछे । जम्बुद्विपना भरतसारिखा ॥१ए०॥ खांडुवा छे ॥ ते किम ॥ भरतक्षेत्रनु ॥१ खांडवु ॥ चुलहिमवत पर्वतना २ खांडवा ॥ हेमवय क्षेत्रना ॥४॥ खांडुवा महाहिमवत पर्वतना ८ खांडवा ॥ हरिवास क्षेत्रना १६ खांडवा ॥ निषढ पर्वतना ३२ खांडवा ॥ महाविदेह क्षेत्रना ६४ खांडवा ॥ निलवत पर्वतना ३२

खाडवा ॥ रमक्वास क्षेत्रना १६ खाडवा ॥ रूपि पर्वतना ८ खाडवा ॥ एरण
वय क्षेत्रना ४ खांडवा ॥ शिखरि पर्वतना २ खाडवा ॥ ऐरवत क्षेत्रनुं १ खाडवु
एव सर्वे मिलिने विखंन पहोलपणे ॥ दक्षिण उत्तरे थइने । भरत जेवडा पहो
लपणे १९० खांडवा थाय ॥ इति पहिलो खडाद्वार समास ॥ १ ॥ हवे बिजो
जोयणद्वार कहेछे ॥ जोयण कहेता जबुद्विपना । च्यारे हांशो जोजन जोजनना
खंड करिये तिवारे सातसें नेवु कोडि छपनलाख चोराणु हजार एकसो ने प
चास चउरसा थाय । उपरे १ कोश पनरसे पनर धनुष वधे। उपर ६० अंगुल
वधे ॥ २ ॥ इति बिजो जोयणद्वार समास ॥ हवे त्रिजो वासाद्वार कहेछे। वासा
कहेता जबुद्विपनेविषे ॥ ७ ॥ क्षेत्र ते ॥ भरत ॥ १ ॥ हेमवय ॥ २ ॥ हरिवास
॥ ३ ॥ महाविदेह ॥ ४ ॥ रमक्वास ॥ ५ ॥ एरणवय ॥ ६ ॥ ऐरवत ॥ ७ ॥ ए
॥ ७ क्षेत्र ॥ तथा एक महाविदेहना ४ भाग गणिये तो पूर्व महाविदेह ॥ १ ॥

पश्चिममहाविदेह ॥ ८ ॥ देवकुरु ॥ ९ ॥ उत्तरकुरु ॥१०॥ एव ॥ ६ ॥ ने ॥ ४ ॥ भेलता ॥ १० ॥ क्षेत्र थाय ॥ तेहनुं विखंभपणुं ॥ १ ॥ बाहा ॥२॥ जीवा ॥३॥ धनुपपिठ ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ कहेछे ॥ भरतक्षेत्रना २ भेद ॥ दक्षिणभरत ॥ १ ॥ उत्तरभरत ॥ २ ॥ दक्षिणभरतनुं विखंभपणु ॥ २३८ ॥ जोजन ने ॥ ३ ॥ कलानु । एहनि बाहा नथि । तेहनि जीवा ॥ ९७४८ ॥ जोजन ने ॥ १२ ॥ कला तेहनि धनुपपिठ ॥ ९७६६ ॥ जोजन ने १ कला झाझेरि ॥ १ ॥ हवे उत्तरभरतनु विखंभपणु ॥ २३८ ॥ जोजन ने ३ कलानु । तेहनि बाहा ॥१८९२॥ जोजन ने साढिसात कलानि । तेहनि जीवा ॥ १४४७१ ॥ जोजन ने ॥६॥ कला माठेरि । तेहनि धनूपपिठ ॥ १४५२८ ॥ जोजन ने ॥ ११ ॥ कलानि एव इरवत क्षेत्रजाणवु ॥ २ ॥ १ ॥ हिमवय १ हिरणवय २ ए २ क्षेत्रनु पहोलपणु २१०५ जोजन ने ॥ ५ कलानु॥ तेहनि बाहा ॥ ६७५५ ॥ जोजन ने ३ कला

तेहनि जीवा ॥ ३७६७४ ॥ जोजन ने १६ कला॥तेहनि धनूषपिठ ॥३८७४०
जोजन ने ॥ १० ॥ कला ४ हरिवास ॥ १ रमकवास ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ क्षे
त्रनु विखम्नपणु ॥ ८४२१ ॥ जोजन ने ॥ १ ॥ कला ॥ तेहनि बाहा ॥१३३६१
जोजन ने ॥ ६ ॥ कला ॥ तेहनि जीवा ॥ ७३९०१ ॥ जोजन ने ॥ १७ ॥ कला
तेहनि धनूषपिठ ॥ ८४०१६ ॥ जोजन ने ॥ ४ ॥ कला ॥ ६ ॥ महाविदेह क्षे
त्रनु विखम्नपणुं ॥ ३३६८४ ॥ जोजन ने ॥ ४ ॥ कला ॥ तेहनि बाहा ॥
॥ ३३७६७ ॥ जोजन ने ॥ ७ ॥ कला ॥ तेहनि जीवा ॥ १ ॥ लाख जोजननि॥
तेहनि धनूषपिठ ॥ १५८११३ ॥ जोजन ने ॥ १६ ॥ कला झाझेरि ॥ ७ ॥ देव
कुरु उत्तरकुरु ए २ क्षेत्रनुं विखम्नपणुं ॥११८४२॥ जोजन ने २ कलानुं ।तेहनि
बाहा नथि । तेहनि जीवा ॥ ५३००० ॥ जोजननि ॥ तेहनि ॥ धनूषपिठ ॥
॥ ६०४१८ ॥ जोजन ने १२ कला ॥ ए ॥ इति त्रिजो वासाधार समाप्त ॥ ३ ॥

ह्वे ॥ ४ ॥ चोथो पव्वयद्वार कहेछे ॥ पव्वय क० जम्बुद्विपनेविषे ॥ २६ए ॥ पर्वत
छे । तेकिम ॥ ६ ॥ वर्षधर पर्वत ॥ १ मेरु ॥ चित्त १ ने विचित्त ॥ २ ॥ जमक
॥ २ ॥ २०० ॥ कचनगिरि ॥ ४ ॥ गजदता ॥ १६ ॥ वखारा ॥ ३४ ॥
लावा वैताढ ॥ ४ ॥ वाटला वैताढ ॥ एव सर्व मिलिने ॥ २६ए ॥ पर्वत छे।
तेह्नु उचपणु । उरू पणु । विखम्नपणु वाह्ा । जीवा धनूपपिठ । कहेछे । चुलह्मि
वंत १ ने शिखरि २ ए ॥ २ ॥ पर्वत सो सो जोजनना उचा छे ॥ अने पचवीस पच
वीश जोजनना धरतीमा उम्डाछे । तेमनुं पहोलपणु ॥ १०५२ ॥ जोजन ने १२
कलानु ॥ तेमनि बाह्ा ॥५३५०॥ जोजन ने ॥ १५ ॥ कला ॥ तेमनि जीवा
॥ २४ए३२ ॥ जोजन ने अर्द्ध कला माठेरि ॥ तेमनि धनूपपिठ ॥ २५२३० ॥
जोजन ने ॥ ४ ॥ कला ॥ २ ॥ महाह्मिवत नेरुपि । ए ॥ २ ॥ पर्वत वसे वसे
जोजनना उचा ॥ अने । पचाश पंचाश जोजनना धरतीमा उडा छे । तेमनुं वि

खंजपणुं ॥ ४२१० ॥ जोजन ने १० कलानुं ॥ तेमनि बाहा ॥ ए२७६ ॥ जो
जन ने ॥ ए ॥ कला ॥ तेमनि जीवा ॥ ५३ए३१ ॥ जोजन ने ६ कला ऊफेरि
तेमनि धनूपपिठ ॥ ५७२ए३ ॥ जोजन ने १० कला ॥ ४ ॥ निषढ ॥ १ ॥
निलवत ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ पर्वत च्यारसो च्यारसो ॥ जोजनना उचा ढे ।
अने सो सो जोजनना धरतीमा ऊंमा ढे ॥ तेमनु विखंजपणुं ॥ १६७४२॥ जो
जन ने ॥ २ ॥ कलानु । तेमनि बाहा ॥ २०१६५ ॥ जोजन ने ॥ २ ॥ कला
तेमनि जीवा ॥ ए४१५६ ॥ जोजन ने ॥ २ ॥ कला । तेमनि धनूषपिठ ॥
॥ १२४३४६ ॥ जोजन ने ए कला ॥ ए ॥ ६ ॥ पर्वत थया ॥ ६ ॥ मेरुपर्वत
॥ १ ॥ लाख जोजननो ढे तेमांहि ॥१॥ हजार जोजननो धरतीमाहि ऊमो ढे।
तेहमाहि प्रथम २५० जोजन पृथ्वीमय ढे ॥ २५० ॥ जोजन पाषाणमय ढे
॥२५०॥ जोजन वज्र हीरामय ढे ॥२५०॥ जोजन शर्कर पृथ्वीमय ढे ॥ एव

॥ १ ॥ हजार जोजननो ऊंचो छे। ए प्रथम कांड ॥ ते उपरे नवाणु हजार जोजननो मेरु उंचो छे। तेहमांहि । पोणा सोल हजार जोजन अंकरत्नमय छे॥ पोणा सोल हजार जोजन स्फटिकरत्नमय छे । पोणा सोल हजार जोजन पिला सुवर्णमय छे॥ पोणा सोल हजार जोजन रूपामय छे।ए ६३ हजार जोजननो बिजो कांड॥ तेउपरे त्रिजो कांड । छत्रिश हजार जोजननो जांबुनद राता सुवर्णमय छे॥ एव सर्व मिलिने ॥ १ ॥ लाख जोजननो मेरु पर्वत छे॥ ते मूले १००९० जोजन ने एक जोजनना ११ भाग करिये तेहवा १० भाग। एटलो धरतीने मूले पहोलो छे॥ दश हजार जोजननो । धरतीने समभूतले लांबो पहोलो छे ॥ धरतीथकि इग्यार हजार जोजन उंचा जाइये ॥ तिहां नव हजार जोजननो लांबोने पहोलो छे। इम इग्यार इग्यार हजारे १ हजार घटतां शिखरे १ हजार जोजननो लांबो पहोलो छे तेहनी त्रिगुणि झाझेरि प

रिधि ठे। मेरुने ॥ ४ ॥ वन ठे ॥ भद्रशाल वन ॥ १ ॥ नंदनवन ॥ २ ॥ सोम
नसवन ॥ ३ ॥ पण्डगवन ॥ ४ ॥ भद्रशालवन ते। मेरुने चउपखेर धरतीउपरे
ठे। ते पूर्व पश्चिमे बाविश बाविश हजार जोजननुं लांबु ठे। अने अढिसो अ
ढिसो जोजननु उत्तर दक्षिणे पहोलु ठे। तेहने एक पद्मवरवेदिका ठे॥एक वन
खंड सघले चउपखेर विंटिठे ॥ मेरु पर्वतथकि पूर्व दिशे ॥५०॥ जोजन वनमा
जाय। तिहां ॥१॥ सिद्धायतन ठे।ते ५० जोजननुं लांबु ने ॥ २५ ॥ जोजननुं
पहोलु ठे। अने ॥ ३६ ॥ जोजननुं उंचु ठे। अनेक स्तंभ ठे। ते सिद्धायतनने
३ बारणा ठे ॥ पूर्वे ॥ १ ॥ दक्षिणे ॥ २ ॥ उत्तरे ॥३॥ तेहना दरवाजा ॥ आठ
आठ जोजनना उंचा ठे। ने ॥ ४ ॥ जोजनना पहोला ठे ॥ ते सिद्धायतनना
घणुं मध्य दिशा विभागनेविषे एक मणिमय पिठिका ठे। ते ॥ ८ ॥ जोजननि
लांबिने पहोली ठे ॥४॥ जोजननि जाडपणे ठे। सर्व रत्नमय ठे। ते उपरे ॥१॥

देवछदो कह्यो ॥ ते ॥ ८ ॥ जोजननो लांबोने पहोलो छे । अने ॥ ८ ॥ जोज
ननो ऊंफेरो उचो छे । तिहां जीनप्रतिमा छे तेहनो वर्णव देवछदो जाव धूपना
कडुछा छे । एक कह्यु तिम च्यारे दिशे ॥४॥ सिद्धायतन छे ॥ एमज जाणवा ॥
च्यारे दिशे । मेरुपर्वतसुं ॥५०॥ जोजन इशान कुणे वनमे जाय तिहां ॥४॥ वा
वडिउ छे॥मेरुपर्वतसुं ॥५०॥ जोजन अग्नि कुणे वनमे जाय तिहां॥४॥वावडिउ
छे ॥ मेरुपर्वतसु ॥ ५० ॥ जोजन नैरुत कुणे वनमे जाय तिहां ॥ ४ ॥ वावडिउ
छे मेरुपर्वतसु ५० जोजन वायव्य कुणे वनमा जाय तिहां ॥ ४ ॥ वावडिउ छे ॥
ते एकेकि वावडि ॥ ५० ॥ जोजननि लांबि । अने २५ जोजननि पहोलि छे ।
अने दश दश जोजननि उंडियो छे ॥ तेमांहि च्यारे । दिशे तोरणसहित छे ।
ते वावडियोना नाम ॥ पद्मा ॥ १ ॥ पद्मप्रभा ॥ २ ॥ कुमुदा ॥ ३ ॥ कुमुदप्रभा
॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ वावडियो मध्ये ॥ २ ॥ शक्रेंद्रनाने ॥ २ ॥ इशानेंद्रना महोल

छे ॥ ते च्यारे पाचसो पांचसो जोजनना ऊंचा छे । अने। अढिसो अढिसो जो
जनना लांबा ने पहोला छे । उचाशिखरबंध जाणवा । भद्रशाल वनमा ॥ए॥
कुट छे॥भद्रशालवनथकि पाचसें जोजन मेरुउपरे जइये । तिहां नंदनवन आवे।
ते नंदनवन ॥ ५०० ॥ जोजन चक्रवाल विखंभपणे फिरतो वाटलो वलयाने
आकारे छे ॥ ते मेरुपर्वतने ढुकडु छे ॥ जिहां घणा देवता देवागना हास्यरति
खेलेछे ॥ तिहां पण ॥ ४ ॥ सिध्धायतन छे ॥ १६ ॥ वावडि छे ॥ ४ ॥ महोल
छे । पूर्वनिपरे ॥ए॥ कुट छे ॥ वलि नदनवनथकि । साढाबासठ हजार जोजन
उचा जइये । तिहां सोमनसवन आवे ॥ ते ॥ ५०० ॥ जोजन चक्रवाल विखभ
पणे फिरतो वाटलो वलयाने आकारे छे ॥ मेरुने विंटि रह्युंछे ॥ ४ ॥ सिध्धाय
तन छे ॥ १६ ॥ वावडि छे ॥ ४ ॥ महोल छे ॥ तिहाथकि ॥ ३६ ॥ हजार जो
जन मेरुने शिखरे जइये तिहां पंडगवन आवे ते ॥ ४ए४ ॥ जोजन चक्रवाल

विखजपणे फिरतो वाटलो वलयाने आकारे ठे ॥ मेरुनि चुलिकाने विंटि र ह्युठे ॥ पम्गवननेविषे ॥ १ ॥ चुलिकाठे ॥ ते ४० जोजननि उंचि ठे ॥ १२ ॥ जोजननि मूले पहोलि ठे । अने ४ जोजननि मथाले पहोलि ठे । आठ जोजननि विचमे पहोलि ठे। गायना पुछने आकारे ठे॥सर्व वैरुलि रत्नमयठे॥तेहने एक पद्मवर वेदिका ठे॥ उपर घणि समोरमणिक भूमिका ठे । ते चुलिका उपरे १ सिध्धायतन ठे ॥ ते १ कोशनु लांबु ने । अर्ध कोशनु पहोलु ठे अने देशे उणु कोश उंचुं ठे । अनेकस्तंभा ठे जावधुपना कडुछ ठे ॥ ते पम्गवनमां ॥४॥ सिध्धायतन ठे ॥ १६ ॥ वावडि ठे ॥ ४ ॥ महोल ठे । पूर्वनिपरे जाणवुं। पम्गवनमा ॥ ४ ॥ अभिपेकशिला ठे । तेहना नाम ॥ पंडु शिला ॥ १ ॥ पंडु कबलशिला ॥ २ ॥ रक्त शिला ॥ ३ ॥ रक्तकवलशिला ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ शिला कहि ते । अर्द्ध चंडमा ने आकारे ठे ॥ पूर्व पश्चिमनि शिला । उत्तर दक्षिणे पा

चसो पाचसो जोजननी लावि ठे ॥ अने पूर्व पश्चिमे अढिसो अढिसो जोजननि पहोलि ठे ॥ उत्तर दक्षिणनि शिला ते पूर्व पश्चिमे पाचसो पाचसो जोजननि लावि ठे ॥ अने उत्तर दक्षिणे अढिसो जोजननि पहोलि ठे ॥ ४ ॥ जोजननि जाडपणे ठे। सर्व कनकमय ठे। ए ४ ने त्रिण दिशे पावस्थिया ठे ॥ पूर्व पश्चिमनि शिलाउपरे वे वे सिंहासन ठे। अने उत्तर दक्षिणनि शिलाउपरे एकेकुं सिंहासन ठे ॥ ते पाचसो पांचसो धनूषना लावा ने पहोला ठे ॥ अने २५० धनूषना उचा ठे। तिहां तिर्थंकर देवनो जन्म महोछव करेठे। जंबुद्विपमध्ये जघन्य २ तिर्थंकरनो। ने उत्० ४ तिर्थंकरनो जन्ममहोछव करेठे ॥ मेरुना १६ नाम कहेठे ॥ मदर ॥ १ ॥ मेरु ॥ २ ॥ मनोरम ॥ ३ ॥ सुदर्शन ॥ ४ ॥ स्वयप्रभ ॥ ५ ॥ गिरिराज ॥ ६ ॥ रत्नोच्चय ॥ ७ ॥ तिलकोपम ॥ ८ ॥ लोकमध्य ॥ ए ॥ लोकनाभि ॥ १० ॥ रत्न ॥ ११ ॥ सूर्यावर्त ॥ १२ ॥ सूर्यावरण

॥ १३ ॥ उत्तम ॥ १४ ॥ दिशादि ॥ १५ ॥ अवतंश ॥ १६ ॥ ए १६ नाम कह्या ॥ ७ चित्त ॥ १ विचित्त ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ पर्वत देवकुरु क्षेत्रमा छे ॥ निषढपर्वतथकि उत्तरे ॥ ८३४ ॥ जोजन ने एक जोजनना ॥ ७ ॥ भाग करिये तेहवा ४ भाग जइये तिहा सीतोदा नदीने पूर्व पश्चिमने काठे छे ॥ २ ॥ जमक ॥ २ ॥ पर्वत उत्तरकुरु क्षेत्रमा छे ॥ निलवतपर्वतथकि दक्षिणे ॥ ॥ ८३४ ॥ जोजन ने १ जोजनना ७ भाग करिये तेहवा ॥ ४ ॥ भाग जइये । तिहा सिता नदीने पूर्व पश्चिमने काठे छे ॥ चित्त १ विचित्त ॥ २ ॥ जमक ॥ ३ ॥ ए ४ ॥ पर्वत १ हजार जोजनना उंचा छे ॥ अने अढिसो जोजनना धरती माहि उंडा छे ॥ एक हजार जोजनना मूळे लांबा पहोळा छे ॥ साढासातसें जोजनना विचमा लांबा पहोळा छे । उपरे पांचसो जोजनना लांबा पहोळा छे। तेहनी त्रिगुणी झाझेरि परिधि छे ॥ ११ ॥ वसे कंचन गिरि

पर्वत ते सिता सितोदा नदीनि विचे। पाच पांच ड्ह छे। एव १०॥ एकेक ड्ह पासे एकेकि कोरे दश दश पर्वत छे॥ इम बिजी पासे पण दश दश पर्वत छे। एव ॥१०॥ ड्हने वेह्नुकाठे मिलिने। विश विश पर्वत छे दशने काठे। बसे कचन गिरि पर्वत थाया।ते सो सो जोजनना ऊंचा छे।पचविश पचविश जोजनना धरती माहि ऊंडाछे॥ मूले सो जोजनना लाबा ने पहोला छे॥ विचे पोणोसो जोजनना लावा ने पहोला छे। उपरे पंचाश जोजनना लाबा ने पहोला छे। तेमनि त्रिगुणी ऊाझेरि परिधि छे॥ २११ ॥ हवे ॥ ४ ॥ गजदता कहेछे। गधमादन ॥ १ ॥ मालवत ॥ २ ॥ विज्जुप्रन ॥ ३ ॥ सोमनसप्रन ॥ ४ ॥ निपढथकि वे निलवतथकि वे गजदता निकलिने मेरु पासे च्यारे आविने अडकि रह्याछे। ते ३०२०९ जोजन ने ६ कलाना लाबा छे॥ निपढ ने निलवत ने अन्ता च्यारसो च्यारसो जोजनना ऊचा छे। अने सो सो जोजनना धरतीमा ऊडाछे।

कलेवर कचरो पमे तेहने त्रिणवार नमाफि उगलि नाखे ते कारणे उमगजला कहिये । तिहांथि २ जोजन आघा जइये तिहा निमगजला नदी ढे । ते ३ जोजनना पहोटमा ढे तेहमांहि हाथि घोमा मनुष्य बलदनु कलेवर अनेरु पुजल पमे तेने त्रिणवार नमाम्निे हेठे वेसामे तेकारणे निमगजला कहिये ॥ शेष ॥ ३२ ॥दिर्घ वैताढ महाविदेह चेत्रमांहि ढे। ते पण ए सरिखा ढे । पण वाहा जीवा धनुपपिठ नथि । पल्यंगने आकारे ढे ॥ ॥ ॥ हवे ॥ ४ ॥ वाटला वैताढ कहेढे । सदावइ ॥ १ ॥ वियमावइ ॥ २ ॥ गघावइ ॥ ३ ॥ मालवंत । ए ॥ ४ ॥ वाटला वैताढ जुगलियाना चेत्रमा ढे । ते ॥ १ ॥ हजार जोजनना उचा ढे ॥ २५० ॥ जोजनना धरतीमाहि उमा ढे । मूले ॥ १ ॥ हजार जोजनना लांबा ने पहोला ढे । धानना कोठारने आकारे ढे ॥ तेमनि ॥३१६२॥ जोजन ऊऊरानि परिधि ढे स्वेत वर्णे ढे ॥ एवं सर्व मिलिने ॥ २६ए ॥ पर्वत

जनना पहोला छे। वखारापर्वत घोमाना खधने आकारे छे ॥ ७३१ ॥ चउ
त्रिश लावा वैताढ छे ॥ तेमाहि ॥ १ ॥ भरतनो वैताढ ॥ १ इरवतनो वैताढ।
अने ३७ विजयना॥३७॥एवं॥३४॥वैताढ।ते पचविश पचविश जोजनना उचा छे।
अने सवाछो जोजनना धरतीमाहि उमा छे। पचाश पंचाश जोजनना पहोला
छे। तेमनि वाहा ४७७ जोजन ने १६ कला झाझेरि छे। तेमनि जीवा १०७२०
जोजन ने १२ कलानि। तेमनि धनूषपिठ १०७४३ जोजन ने १५ कला।
एकेके वैताढे वे वे गुफा छे। तिमिसगुफा १ खंडप्रपातगुफा ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥
गुफाउ। पंचाश पचाश जोजननि लाबिउ छे। अने १२ जोजननी पहोलिउ
छे। अने आठ जोजननि उचिउ छे। तेमाहि वे वे नदी छे। तेहना नाम उमग
जला ॥ १ ॥ निमगजला ॥ २ ॥ एकविंश जोजन जइये तिहा उमगजला नदी
आवे। ते त्रिण जोजनना पहोटमां छे। तेहमाहि हाथि घोमा वलद मनुष्यनुं

ते ॥ १ ॥ भरतनो ॥ १ इरवतनो । अने ॥ ३२॥ विजयना ॥ ३२॥ एव ॥३४॥
अने भद्रशाल वनना ॥ ८ ॥ देवकुरुना ॥८॥ उतरकुरुना ॥ ८ ॥ एव सर्व
मिलिने ॥ ५८ ॥ कुट भूमीउपरना थया ॥ एव सर्व मिलिने ॥ ५२५ ॥ कुट
थया। इति ५ मो कुटद्वार समाप्त ॥ ५॥ हवे ६ ठो तिर्थद्वार कहेछे॥ तिछक० ।
जंबुद्विपमध्ये ॥ १०२ ॥ तिर्थ छे। ते किम ॥ ३२ ॥ विजय ॥ १ ॥ भरत ॥१॥
इरवत। एव ॥ ३४ ॥ ठेकाणा छे । एकेकामे त्रिण त्रिण तिर्थ छे। मागध ॥१॥
वरदाम ॥ २ ॥ प्रभास ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ ते अग्निकुणे ॥ १ ॥ नैरुत कुणे ॥२॥
वायव्यकुणे ॥ ३ ॥ एव ॥ ३४ ॥ त्रि १०२ तिर्थ थाय ॥ इति ६ठो तिर्थद्वार स
मास ॥ ६ ॥ हवे ७ मो श्रेणिद्वार कहेछे ॥ सेढिउ क० । जंबुद्विप माहि १३६
श्रेणियो छे। ते वैताढ्य पर्वतउपरे दश दश जोजन ऊंचा चढिये। तिहा १ द
क्षिणे ने ॥ १ ॥ उत्तरे बे विद्याधरनि श्रेणियो छे तेमाहि भरतना वैताढउपरे

ति ॥ ४ ॥ चोथो पर्वतद्वार समाप्त ॥ ४ ॥ हवे ५ मो कुटद्वार ॥ कहेछे।
जंबुद्विपमाहि ॥ ५७५ ॥ कुट छे ॥ तेमाहि ॥ ४६७ ॥ कुट पर्वत उपरे
रो कहेछे ॥ ३४ ॥ दिर्घ वैताढ । निषढ ॥ १ ॥ निलवंत ॥ २ ॥
मेरु ॥ व ॥ ३७ ॥ पर्वत ॥ अने । विद्युप्रभ ॥ १ ॥ ने मालवंत ॥ ७ ॥ ए ॥
॥ २ ॥ गजदंता । ए ३९ पर्वत उपरे नव नव कुट छे ॥ ३९ ॥ ने नवे गुणता ॥
३५१ ॥ कुट थाय । चुलहिमवत ने शिखरि ए २ पर्वतउपरे इग्यार इग्यार
छे ॥ एवं ॥ २२ ॥ महाहिमवत ने रूपि । ए ॥ २ ॥ पर्वतउपरे आठ आठ
कुट छे । एव १६ कुट । सोल वखारा पर्वत उपरे च्यार च्यार कुट छे । एव ॥
॥ ६४ ॥ कुट । सोमनस ॥ १ ॥ ने गधमादन ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ गजदंताउपरे
सात सात कुट छे । एव ॥ १४ ॥ कुट ॥ एवं सर्व मलिने ॥ ४६७ ॥ कुट पर्वतउ
परना थया । अने शेष ५८ कुट भूमि उपरना छे ते कहेछे ॥ ३४ ॥ ऋषभकुट

॥ ५ ॥ मंगला ॥ ६ ॥ पुखला ॥ ७ ॥ पुखलावती ॥ ८ ॥ ए ॥ ८ ॥ विज
यसिता महानदी ने उत्तर दिशे पूर्व महाविदेहने विषे श्रीमेरुपर्वतथि मा
ंडिने सितामूखवनसुधिप्रथमखाम्डुजाणवु ॥ १ ॥ वछे ॥ ए ॥ सुवछे १० महा
वछे ॥ ११ ॥ वछगावइ ॥ १२ ॥ रमे ॥ १३ ॥ रमक ॥ १४ ॥ रमणिक ॥ १५ ॥
मंगलावइ ॥ १६ ॥ ए ॥ ८ ॥ विजयसितानदीने दक्षिण पासे सितामूखवनथि
माडिने मेरुसुधि मायजण वखारापर्वतसुधि विजु खाडवु जाणवुं ॥ २ ॥ पद्मे
॥ १७ ॥ सुपद्मे ॥ १८ ॥ महापद्मे ॥ १ए ॥ पद्मगवाइ ॥ २० ॥ संखे ॥ २१ ॥
कुसुदे ॥ २२ ॥ नलीणे ॥२३॥ नलीणावती ॥२४॥ ए ८ विजयसितोदानदीने
दक्षिणने कांठे विद्युप्रभ गजदता पछि। अकावति वखारापर्वतथि ते सितोदामू
खवनसुधि त्रिजुं खाडवु जाणवुं ॥ ३ ॥ वप्पे ॥ २५ ॥ सुवप्पे ॥ २६ ॥ महावप्पे
॥ २७ ॥ वप्पगाइ ॥ २८ ॥ वग्गु ॥ २ए ॥ सुवग्गु ॥ ३० ॥ गधिले ॥ ३१ ॥ ग

गगन वल्लभादिक ॥ ५० ॥ नगर दक्षिणनि श्रेणिये छे । अने रथ चक्रवाला
दिक ६० नगर उत्तरनि श्रेणिये छे । इमज इरवतना वैताढउपरे ६० नगर द
क्षिणनि श्रेणिये छे । अने ५० नगर उत्तरनि श्रेणिये छे । महाविदेहना ३२ वै
ताढ उपरे दक्षिण उत्तरनि श्रेणिये पचावन पचावन नगर छे । सर्व मिलिने
३७४० नगर विद्याधरनि श्रेणिये छे । एवं ३४ ङ ६८ विद्याधरनि श्रेणि । वलि
विद्याधरनि श्रेणिथी १० जोजन उचा चढिये तिहां आभियोगिया देवतानि
॥ २ ॥ श्रेणि आवे । दक्षिणे १ ने १ उत्तरे । एव ३४ ङ ६८ श्रेणि आभियो
गिया देवतानि छे॥ एव सर्व मिलिने ॥ ६८ ॥ विद्याधरनि ने ॥ ६८ ॥ देवतानि
एव ॥ १३६ ॥ श्रेणियो छे । इति ७ मो श्रेणिद्वार समाप्त ॥ ७ ॥ हवे ८ मो वि
जयद्वार कहेछे । विजय क० जम्बुद्विपमाहि ॥ ३४ ॥ विजयरूप स्थानक छे । ते
हना नाम । कछे ॥ १ ॥ सुकछे ॥ २ ॥ महाकछे ॥ ३ ॥ कछगावइ ॥ ४ ॥ आवर्त्ता

॥ ५ ॥ मगला ॥ ६ ॥ पुखला ॥ ७ ॥ पुखलावती ॥ ८ ॥ ए ॥ ८ ॥ विजयसिता महानदी ने उत्तर दिशे पूर्व महाविदेहने विषे श्रीमेरुपर्वतथि माङिने सितामूखवनसुधिप्रथमखाम्ब्रुंजाणवु ॥ १ ॥ वछे ॥ ए ॥ सुवछे १० महावछे ॥ ११ ॥ वछगावइ ॥ १२ ॥ रमे ॥ १३ ॥ रमक ॥ १४ ॥ रमणिक ॥ १५ ॥ मगलावइ ॥ १६ ॥ ए ॥ ८ ॥ विजयसितानदीने दक्षिण पासे सितामूखवनथि मांङिने मेरुसुधि मायजण वखारापर्वतसुधि विजुं खाडवु जाणवु ॥ २ ॥ पह्मे ॥ १७ ॥ सुपह्मे ॥ १८ ॥ महापह्मे ॥ १ए ॥ पह्मगवाइ ॥ २० ॥ संखे ॥ २१ ॥ कुसुदे ॥ २२ ॥ नलीणे ॥२३॥ नलीणावती ॥२४॥ ए ८ विजयसितोदानदीने दक्षिणने कांठे विद्युप्रज गजदता पछि। अकावति वखारापर्वतथि ते सितोदामूखवनसुधि त्रिजुं खाडवु जाणवुं ॥ ३ ॥ वप्पे ॥ २५ ॥ सुवप्पे ॥ २६ ॥ महावप्पे ॥ २७ ॥ वप्पगाइ ॥ २८ ॥ वग्गु ॥ २ए ॥ सुवग्गु ॥ ३० ॥ गधिले ॥ ३१ ॥ ग

धिलावइ ॥ ३२ ॥ ए ८ विजय ते सितोदामुखवनथि मांभिने । सितोदा नदीने
कांठे देव वखारा पर्वतसुधि चोथु खांम्डु जाणवुं ॥४॥ ए ॥ ३२ ॥ विजयमहा
विदेह क्षेत्रमां छे ते सघलि विजय ॥ १६५ए२ ॥ जोजन ने २ कलानि उत्तर
दक्षिणे लांबि छे । अने २२१३ जोजन माठेरानि पूर्वपश्चिमे पहोलियो छे
॥ १ ॥ भरत ॥ १ ॥ इरवत । एव ॥ ३४ ॥ तिहां ॥ ३२ ॥ विजयनि । एक भर
तनि । एक इरवतनि । ए ॥ ३४ ॥ राजधानी छे ॥ ३४ ॥ तिमिसगुफा ॥ ३४ ॥
खंडप्रपातगुफा ॥ ३४ ॥ कृतमालदेवता ॥ ३४ ॥ नटमालदेवता ३४ रुषभकुट
एटला वाना शास्वता छे । इति ८ मो विजयद्वार समाप्त ॥ ८ ॥ हवे ए मो द्रह
द्वार कहेछे ॥ द्रह क० । जबुद्विपमा ॥१६॥ द्रह छे । तेहना नाम । पद्मद्रह॥१॥
महापद्मद्रह ॥२॥ पुंडरिक द्रह ॥ ३ ॥ महापुंडरिकद्रह ॥४॥ तिगिछ द्रह ॥५॥
केशरिद्रह ॥६॥ ए ॥६॥ द्रह रुपधर पर्वतना ॥ हवे ५ द्रह देवकुरुने विषे छे ।

निपढद्रह ॥ १ ॥ देवकुरुद्रह ॥ २ ॥ सूर्यद्रह ॥ ३ ॥ सुलसद्रह ॥ ४ ॥ विद्युत्प्र
नद्रह ॥ ५ ॥ ए ॥ ५ ॥ द्रह देवकुरु क्षेत्रमा सितोदा नदीनि विचे छे । इमज
उत्तरकुरु क्षेत्रने विषे सितानदीने मध्य नागे ॥ ५ ॥ द्रह छे तेहना नाम । नि
लवतद्रह ॥ १ ॥ उत्तरकुरुद्रह ॥ २ ॥ चंद्रद्रह ॥ ३ ॥ एरावतद्रह ॥४॥ माल्य
वतद्रह ॥५॥ एव १० ने ॥ ६ उपरला एव १६ द्रह थया ॥ हवे १ पद्म अने पुं
मरिकद्रह २ ए द्रह ॥ १ ॥ हजार जोजनना लांबा ॥ अने ५०० जोजनना
पहोला छे ॥ १० ॥ जोजनना धरतीमाहि उंडा छे । ए प्रमाणेज देवकुरु उत्तर
कुरुना १० द्रह जाणवा ॥ एकेका द्रहमाहि ॥ १२०५०१२० ॥ कमल छे । स
घला रत्नमय छे । पद्मद्रह मध्ये १ महोटुं कमल छे ते श्रीदेवीनु छे ॥ अने
१०८ कमल श्रीदेवीना नडारना छे ॥ ४ कमल महत्तरिकाना छे ॥ ७ ॥ कमल
अणिकाना छे ॥१६॥ हजार कमल आत्मरक्षक देवना छे ॥४॥ हजार कमल

सामानिक देवना छे ॥ ८ ॥ हजार कमल माहिलीपरिषदाना छे ॥ १० ॥ हजार कमल विचलि परिषदाना छे ॥ १२ ॥ हजार कमल वाहिरली परिषदाना छे। हवे ३ कोट कमलना छे ॥ ३२ ॥ लाख कमल पहिला कोटना छे ॥ ४० ॥ लाख कमल विचला कोटना छे ॥ ४८ ॥ लाख कमल बाहिरला कोटना छे। एव सर्व मिलिने १२०५०१२० कमल थया ॥ तेहमाहि महोटु कमल ॥ १ ॥ जोजनतु लाबु ने पहोलु छे। अर्द्ध जोजनतु जाडु छे ॥१०॥ जोजनतु पाणिमाहि ऊंडु छे ॥ २ कोश पाणिथकि ऊंचु छे ॥ १० जोजन ऊकेरुं सर्वांगे परुप्यु। ते कमलतु वज्र रत्नमय मूल छे। रिष्ट रत्नमय कद छे। वैरुलि रत्नमय निलवरणा बाहिर ला पानरा छे। जबुनद राता रत्न सुवर्णमयमाहिला पानरा छे॥तपाव्या सोनामय केशरा छे। नाना प्रकारना मणिमय जे ऊपरे पाखम्यिो छे। सोनानि कर्णिका छे। बे कोशनि कर्णिका लाबि ने पहोली छे॥ एक कोशनो जाडपणे मोटो छे तेऊपर

घणु रमणिक छे। घणुंज मध्य देश भागे श्रीदेवीनु घर छे। ते १ कोशनु लांबु ने अर्ध कोशनु पहोलुं छे॥ अने देशो उणुं कोश उच्चु छे अनेक स्तम्भा छे घणास्योसुव र्णकरि ते जोवा योग्य छे॥ ते भुवनने ३ बारणा छे॥ पूर्वे॥१॥ दक्षिणे॥२॥ उत्तरे॥३॥ ते बारणा॥ ५०० धनुषना उंचाछे। अढिसे धनुषना पहोला छे। ते भुवनमे एक मणिपिठिका छे। ते ५०० धनूषनि लांबि ने पहोलि छे॥ २५०॥ धनूपनी उची छे। ते मणिपिठिका उपरे १ देवसेजा रहेवानो पल्यग छे॥ हवे महापद्मद्रह॥१॥ महापुन्डरिकद्रह। ए॥२॥ द्रह॥ एकेको॥२॥ हजार जो जनो लांबो ने १ हजार जोजननो पहोलो छे। अने १० जोजननो धरती माहि उन्डो छे॥ महापद्मद्रहमा ह्रीदेवी रहेछे॥ महापुन्डरिकद्रहमा बुध्दि देवी र हेछे॥ एहना कमल श्रीदेवीनिपरे जाणवा। पण कमलनु मान बमणु जाणवु। ते माहि महोटु कमल॥२॥ जोजननु लांबु ने पहोलु छे॥ अने १ जोजननु जाडु

छे ॥ हवेतिगिछद्रह ॥ १ ॥ केशरिद्रह ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ द्रह एकेको ॥ ४ ॥ ह
जार जोजननो लांबोने ॥ २ ॥ हजार जोजननो पहोलो छे ॥ १० ॥ जोजननो
धरतीमांहि ऊंडो छे ॥ तिगिछद्रहमां धृतिदेवी रहेछे । केशरिद्रहमा कीर्त्तिदेवी
रहेछे । एहनु महोटुं कमल ॥ ४ ॥ जोजननुं लांबु ने पहोलुं छे। अने २ जोजननुं
जाडुं छे। कमल श्रीदेविनिपरे जाणवा। इम सोले द्रहना ॥१२०५०१२० कमल
ने १६ गुणा करतां शाश्वता कमल ॥ १९२८०१९२० ॥ कमल थाय अने
५ द्रह देव कुरुमे ॥५॥ उत्तर कुरुमे ए १० द्रह धरती उपरे छे तेहने नामे देवता
नानाम छे। एक पल्यनु आयुष छे। अने चुलहिमवत पर्वत उपरे पद्मद्रह छे
तिहा श्रीदेवीनो वास छे। शिखरिपर्वत उपरे पुंडरिकद्रह छे ॥ तिहा लक्ष्मी
देवीनो वास छे महाहिमवत पर्वत उपरे महापद्मद्रह छे ॥ तिहा ह्रिदेवीनो
वास छे । रूपिपर्वत उपरे । महापुंडरिक द्रह छे तिहा बुद्धिदेवीनो वास

छे। निषढपर्वत उपरे तिगिछ द्रह छे तिहां धृतिदेवीनो वास छे निलवंतपर्वत उपरे केशरि द्रह छे। तिहा कीर्त्तिदेवीनो वास छे ए ६ देवीयो भवन पतिनी जा तिनि जाणवि। तेहनु आयुष १ पल्यनु छे इति ए मो द्रहद्वार समाप्त॥ ए॥ हवे दशमे सलिला द्वार कहेछे॥ सलिलाउ क० जंबुद्विप मध्ये॥ १४५६०ए०॥ नदियो छे तेमाहि पद्मद्रहने पूर्वदिशिने तोरणेथि गगा निकलि॥ ५००॥ जोजन पूर्व साहमि गइ। तिहा गगा वर्तन कुट छे तिहां अफलाणी। तिहाथि दक्षिण दिशे चालि ते॥ ५२३ जोजन ने ३ कला दक्षिण दिशे पर्वतउपरे गइ। तिहा महोटा घडाना मूखमाथि पाणि पडे तिम मोतिना हारसरिखुं महामगरमछना मुखने आकारे परनालि जीभीकामांथि काइक। अधिक १०० जोजन उचेथि पाणि पडेछे। ते जीभीका अर्द्ध जोजननि लांबि छे। अने सवाछ जोजननि पहोलि छे॥ प्रनालि मगरमछना मुख विकस्या तेहने संगणेछे सर्व वज्र

मय छे। आगो तेजवत छे॥ तेमांदिथि पाणि पमेछे॥ तिहा १ महोटो गगाप्र पात नामा कुरु छे। ते कुंम॥ ६० ॥ जोजननो लावो ने पहोलो छे॥ १० ॥ जोजननो उंमो छे। ते कुमनि रूपामय उपकठपालि छे। वज्र पाषाणमय तलो छे। सुखे माहि उत्तरिये। नाना मणि रत्नेकरि वाध्योछे कांठो जेहनो॥ वज्रमय तलो छे। सुवर्णनो मध्य भाग छे। रूपानि वेलु छे। गम्भिर शितल जल छे। अने कमलने पानमे गयुं छे। घणा उत्पल कमल छे। कुमुद नलीन पुण्डरिक शतपत्र सहस्रपत्र कमलघणा छे। गगा कुडने ३ वारणा छे। त्रिण दिशे पावडिया छे। पूर्व दिशे॥ १ ॥ दक्षिण दिशे॥ २ ॥ पश्चिम दिशे॥ ३ ॥ पावडियानो वर्णव जिम पाषाण तेहनो उपरलो भाग रिष्ट रत्नमय छे। वैरुलिरत्नमय स्तम्भा छे। सोना रुपाना पाटिया छे। लोहिताक्ष रत्नमय खिला छे। वज्रमयसाधो जडि छे। मणिना आलवन पकडवाने॥ पावडिया आगले प्रत्येक प्रत्येक तोरण छे।

तेमणि सुवर्ण मुक्ताफल हारे करि शोभेछे । ते गगाप्रपातकुंमनिविचे ॥ १ ॥ ग
गा द्विपनामा द्विपो कह्यो ते ८ जोजननो लांबो ने पहोलो छे ॥ २ ॥ कोश पा
णिथकि ऊंचो छे । सर्व वज्र रत्नमय छे । गगाद्विपने उपरे घणुं रमणिक छे । ते
उपर १ गगादेवीनु भवन कह्यु । ते १ कोशनु लांबु ने । अर्द्ध कोशनु पहोलु
छे अने देशे उणुं कोश उंचु छे । अनेक स्तंभा छे तेहनो वर्णव श्रीदेवीनि परे
जाणवो । गगानो शास्वतो नाम छे । ते गगाप्रपातकुंमना दक्षिण दिशाना बार
णाथि गगा नदी निकलिने । उत्तर भरतमध्ये वहेतियकि ७ हजार नदीसाथे
खंमप्रपात गुफाने । वेताढ पर्वतने हेठे थइने ॥ दक्षिणार्द्ध भरतमाहि वहेति
थिजी ७ हजार नदी भलतियकि सर्व ॥ १४ ॥ हजार नदीने परिवारे जगतीने
भेदिने पूर्वना लवणसमुद्रमाहि भलि इमज सिंधु पण पश्चिम दिशे जाणवि ।
सलिलाउ क० । जम्बुद्विपमाहि १४५६०९० नदियो छे । तेहनो विवरो कहेछे ॥

गगा ॥ १ ॥सिंधु ॥ २ ॥ रत्ता ॥ ३ ॥ रतवइ ॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ नदीयो मूल थकि निकलता सवाछे जोजननि पहोलित। अने। अर्द्धगाउनि उन्मियो छे। छे हडे समुद्रमा जलता साढाबासठ जोजननि पहोलि अने अढि जोजननि उं न्मियो छे। एकेकिनो चउद चउद हजार नदियोनो परिवार जाणवो ॥ सर्व मि लिने ॥ १४ ॥ चोकु ॥ ५६००० ॥ हजार नदियो थइ ॥ हवे रोहिया १ रोहि तसा २ ए २ नदि हेमवय क्षेत्रमा छे। अने सुवर्णकुला १ ने रूपकुला ॥ ए ॥ ॥ २ ॥ नदीयो हिरणवय क्षेत्रमा छे एवं ४ नदी निकलता साढाबार जोजननि पहोलि अने १ गाउनि उंन्मियो छे ॥ छेहडे समुद्रमा जलता ॥ सवासो जोज ननि पहोलि अने अढि जोजननी उन्मियो छे। एकेकिनो अठाविश अठाविश हजार नदीयोनो परिवार जाणवो सर्व मिलिने। एक लाख ने १२ हजार न दीयो थइ ॥ हवे हरिकता ॥ १ ॥ हरिसलिला ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ नदीयो हरि

वास क्षेत्रमा छे। अने नरकंता ॥१॥ नारिकता२ ए॥२ नदीयो रमकवास क्षेत्रमा छे॥ ए ४नदीयो मूले निकलतां पचविश पचविश जोजनानि पहोलियो छेअने ॥ २ गाउनि उंमियो छे। छेहडे समुद्रमां जलता। अढिसो अढिसो जोजनानि पहोलियो छे। अने पाच पाच जोजनानि उंमियो छे॥ एकेकि नदीनो परिवार छपन हजार छपन हजार नदीयोनो जाणवो। एव ४ थइने ॥२॥ लाख ने २४ हजार नदीयो थइ॥ सिता ॥ १ ॥ सीतोदा ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ नदीयो महाविदेह क्षेत्रमां छे। ते मूले ॥५०॥ पंचास पंचास जोजनानि पहोलियो छे। च्यार च्यार गाउनि उंडियो छे॥ छेहडे समुद्रमां जलता। पाचसो पाचसो जोजनानि पहोलियो छे। दश दश जोजनानि उंमियो छे॥ एकेकिनो पांच लाख ने बत्रिश हजारनो परिवार छे॥एवं२नो परिवार १० लाख ने ६४ हजार नदियोनो जाणवो॥ महाविदेह क्षेत्रनि १६ विजयमा। गगा॥ १ सिंधु॥ २॥ छे। ते॥

॥ १६ ॥ ३ वत्रिश थइ। अने १६ विजयमा। रत्ता ॥१॥ रत्तवइ ॥ २ ॥ ठे ते पण
॥ १६॥ ३ ॥ ३२ ॥ थइ एव महाविदेह क्षेत्रमा ६४ नदीयो ठे ॥ ६४ ॥ नु प
होलपणुं भरतनि गगानि परे जाणवु । ते एकेकिनो चउद चउद हजार नदी
योनो परिवार जाणवो चोसठ ने १४ हजारे गुणाता ८ लाख ने ए६ हजार न
दीयो थाय। अने देवकुरुनि ८४ हजार अने उत्तर कुरुनि ८४ हजार। एव १
लाख ने ६८ हजार अने ८ लाख ने ए६ हजार माहि भेलविये एटले ॥ १०
लाख ने ६४ हजार थाय एटलो परिवार सीता सीतोदानो जाणवो अने शेप
१२ नदीयोनो परिवार ३ लाख ने ए२ हजार एव सर्वमिलिने १४ लाख ५६
हजार नदीयो थाय। अने ए० महोटी नदीयो जाणवी हवे ॥ १२ ॥ अतर न
दीयो महाविदेहक्षेत्रमा ठे ते ॥८॥ विजयनु ॥ १ ॥ खाम्बु तेमाहि ॥३॥ नदीयो॥
पूर्व महाविदेहने उत्तर ने खाम्बे ॥ ३॥ अने दक्षिणने खांडवे ॥३ ए ६॥ इमज

पश्चिममहाविदेहने उत्तर खाडवे ॥ ३ अने दक्षिणने खाडवे ॥ ३ एव १२ अंतर नदीयो छे ते एकेकि सवासो सवासो जोजननि पहोलियो छे । अने अढि अढि जोजननि उंडियो छे ॥ १६५९२ ॥ जोजन ने २ कलानि लाबियो छे ॥ ते १२ अंतर नदीना नाम कहेछे ॥ गाहावइ ॥ १ ॥ दहावइ ॥ २ ॥ पकावइ ॥ ३ ॥ ततजला ॥ ४ ॥ मतजला ॥ ५ ॥ उमतजला ॥ ६ ॥ खिरोदा ॥ ७ ॥ सिंहसोया ॥ ८ ॥ अतोवाहिणी ॥ ९ ॥ उमिमालिनी ॥ १० ॥ फेणमालीनी ॥ ॥ ११ ॥ गभीरमालिनी ॥ १२ ॥ एव सर्व थइ महोटि नदीयो ॥ १४ ॥ ६४ ॥ ॥१२॥ थइने ९० नदीयो थइ । एहनो परिवार सर्व नदीयो थइने ॥१४५६०९० नदीयो थाय ॥ इति १० मो सलिलाद्वार सक्षेपथि समाप्त ॥ १०॥ इति खडा जोयण समाप्तं ॥

ॐनम सिध्द श्री अथ संजयाधि
स्यते ॥ गाथा पन्नवणा १ वेय २
रागे३ ॥ कप्प ४ चरित ५ पम्सि
वणा ६ नाणे ७ ॥ तिछेय ८ लिंगे
९ शरीरे १०॥ खेत ११ काल १२
गइ १३ ठिइ १४ सजम १५ नि
कासे १६ ॥ १ ॥ जोग १७ वउगे
१८ कसाए १९ ॥ लेशा २० प
रिणाम २१ वध २२ वेदेय २३ ॥
कम्मोदीरणा २४ उव सपजह्णा
२५ ॥ सन्नाय २६ आहारे २७
॥ २ ॥ नव २८ आगरिसे २९
कालं ३० तरेय ३१ ॥ समुघाय
३२ खेत ३३ फुसणाय ३४ ॥ ना
वेय ३५ परिमाणे ३६ खलु ॥ अ
पाबहुत्त ३७ संजयाण ॥ ३ ॥ इति
गाथा त्रण सपूर्ण ॥

१ पन्न० ॥ सामायक चारित्रना वे
नेद । एक थोमा कालनु ते प्रथम
जिनेश्वरने तथा चर्मजिनेश्वरने
वारे ॥१॥ अने वीजु घणाकालनु
ते वावीस जिनने वारे । तथा महा

विदेह पेत्रे २ ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनी
यना वे प्रकार । एक अतीचार
सहित ने पच महाव्रत आ
रोपीए । बीजुं अतीचाररहित ने
पच महाव्रत आरोपीए २ । परि
हार विसुधचारित्रना वे प्रकार ।
एक तप करवा पेठो ॥ १ ॥ अने
बीजो परिहार विसुधचारित्र सेवी
ने नीकल्यो ते २ ॥ ३ ॥ सूक्ष्म सप
राय चारित्रना वे प्रकार । एक उप
समश्रेणीथी पम्तो॥१॥ बीजो क्षप

क श्रेणीए चडतो ॥२॥ ४ ॥ यथा
ख्यातचारित्रना बे प्रकार। एक छद
मस्थ ॥ १ ॥ बीजो केवलीनो ॥२॥
२ सामायक॥२॥ छेदोपस्थापनीय २
सवेदी।ने अवेदी जो अवेदी हायेतो।
उपसमवेदीनेपीणवेदिहुवे। अने स
वेदी होय तो। त्रिणेवेदमा हुवे। अने
परिहार विसुधसवेदी होय पण
अवेदीन होय। सवेदी होय तो।
पुरुष ॥ १ ॥ पुरुषनपुसक । ए वे
वेदमेहुवे । सूक्ष्मसंपराय १ अने

जथाख्यात ए ॥१॥ अवेदी होय
उपसमनेपीणवेदीहोय

३ आगला ॥ ४ ॥ चारित्रसरागी ।
अने जथाख्यातवीतरागी ते उप
समनेपीणरागी होय ॥

४ स्थीतीकल्प ॥१॥ अस्थीतीकल्प
॥ २ ॥ जिनकल्प ॥ ३ ॥ थिवर
कल्प ॥ ४ ॥ कल्पातीत ॥५॥ तेमा
स्थीतीकल्पमा ॥५॥ चारीत्र लाभे
अने अस्थीतीकल्पमा ३ चारीत्र
लाभे सामायक ॥ १ ॥ सूक्ष्मस

पराय ॥ २ ॥ जथाख्यात । ए
॥३॥ लाभे ॥ जिनकल्प अने थिव
रकल्प ए ॥२॥ मा आगल्या ॥३॥
चा० लाभे ॥ कल्पातीतमा ॥ ३ ॥
चारीत्रलाभे सा० ॥ सु० जथा
ख्यात । ए । ३ लाभे ॥

५ पुलाक ॥ १ ॥ बकुस ॥ २ ॥ प्रति
सेवणा ॥ ३ ॥ कषायकुसील ॥४॥
निर्ग्रंथ ॥ ५ ॥ स्नातक ॥६॥ तेमा ।
पुलाक ॥ १ ॥ बकुस ॥ २ ॥ प्रति
सेवणा ॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ मा बे चा

रित्र लाभे । सामा ॥ १ ॥ छेदो० । ५ ७ चारीत्र लाभे । कपायकुषी लमा आगला ॥ ४ ॥ चारीत्र लाभे । निर्ग्रंथमाने स्नातकमा । एकजथाख्यात चारीत्र लाभे ॥

६ हवे प्रतिसेवणाद्वार कहेछे । प्रति सेवीमा आगला ॥ ७ ॥ चारित्र लाभे तेमा पण मुल गुण ॥ उत्तर गुण प्रतिसेवीमा वे आगल्या चा रित्र लाभे । अने अप्रतिसेवी मां तो ॥ ५ ॥ चारित्र लाभे ॥

७ हवे ज्ञानद्वार कहेछे । आगला ॥ ४ ॥ चारित्रमा ॥ ७ ॥ ज्ञान ॥ ३ ॥ ज्ञान । तथा ॥ ४ ॥ ज्ञान लाभे । जथाख्यातमा ज्ञान ॥५॥ भजना । अज्ञान एके चारित्रमा लाभे नही । हवे केटलु भणे । सामा० ॥ १ ॥ छेदो० ७ । सूक्ष्म० ३ । जथाख्यात ८ । ए ॥ ४ ॥ चा रित्रजघन्य ॥ ८ ॥ प्रवचनमाता । भणे । उत् ॥१४॥ पूर्व पुराभणे । परिहारवीसुधनवमा पूर्वनी । त्रि

जिन्ग्राचारवत्तुनणे । उ० । देशे उणा ॥ १० ॥ पुर्वनणे ॥

८ हवे तीर्थद्वार कहेछे ॥ तीर्थमा पाच चारित्र लाभे । अने अतीर्थमां ॥ ३ ॥ चारित्र लाभे । ते सामा० ॥ १ ॥ सुक्ष्मसंपराय ॥ ४ ॥ जथाख्यात । ए ॥ ३ ॥ चारित्र लाभे । तिर्थंकर प्रत्येकबुधमा ॥ ३ ॥ चारीत्र लाभे । सामा० । सुक्ष्म० । जथाख्यात । ए ॥ ३ ॥ चारीत्र लाभे ।

९ हवे लिंगद्वार कहेछे । द्रव्यलिंग आश्री सलिंगमा ॥ ५ ॥ चारित्र लाभे । अन्यलिंग ग्रहलिंगमा । परिहारवीसुध वरजीने ॥ ४ ॥ चारित्र लाभे । अने भावलिंग आश्री । सलिंगमा ॥ ५ ॥ चारित्र लाभे । अन्यलिंग ग्रहलिंगमा एके चारित्र लाभे नही ॥

१० हवे सरीरद्वार कहेछे । सामा० । छेदो० । ए २ मा ॥ ३ ॥ सरीर ॥ ४ ॥ सरीर तथा ॥ ५ ॥ सरीर

लाने । पाछला ॥ ३ ॥ चारीत्रमा ॥३॥ सरीर लाने । उदारीक ॥१॥ तेजस ॥ २ ॥ कार्मण ॥ ३ ॥

११ हवे खेत्रद्वार कहेछे । कर्मभूमीमा जनम आश्रीछतआश्री ॥५॥ चारित्र लाने । अकर्मभूमीमा एके चारित्र न लाने ॥ साहारण आश्रीकर्मभूमीमा अकर्मभूमीमा परीहारवीसुधवरजीने ॥ ४ ॥ चारीत्र लाने ॥

१२ हवे कालद्वार कहेछे । अवसर्पिणी उत्सर्पिणी ए २ मा ॥ ५ ॥ चारित्रलाने । नोअवसर्पिणीनो उत्सर्पिणीमा । छेदोप० । परिहार० । ए ॥ २ ॥ वरजीने ॥ ३ ॥ चारित्र लाने ॥

तेमा अवसर्पिणीमा जनम आश्री ॥ १ ॥ २ ॥ आरामां एके चारित्र न लाने ॥ ३ ॥ ४ ॥ आरामा ॥ ५ ॥ चारित्र लाने । पाचमा आरामा ॥२॥ चारित्र लाने । सामा० ॥ १ ॥ छेदो० ॥ २ ॥ ए ॥२॥ चा

त्र जाने । व्हेआरे एके नजाने
॥ हवे वतआश्री ॥ १ ॥ २ ॥ आ
रामा एके चारित्र न जाने ॥ ३ ॥
॥ ४ ॥ ५ ॥ आरामा ॥ ५॥ चारि
त्र जाने ॥ वहा आरामा । एके
चारित्र जाने नही । सहार
ण आश्रीपरिहारवीसुध वरजीने
॥ ४ ॥ चारित्र जाने । हवे चढता
कालमा । जनमआश्री ॥ १ ॥
आरे एके चारित्र न जाने ॥ २ ॥
॥ ३ ॥ ४॥ आरामा ॥५॥ चारित्र

जाने ॥ ५ ॥६॥ आरामा एके चा
रित्र जाने नही । हवे हतआश्री
॥ १ ॥ २ ॥ आरामा एके चारित्र
न जाने ॥ ३ ॥४॥ आरामा ॥५॥
चारित्र जाने ॥५॥ ६ ॥ आरामा
एके चारित्र न जाने । हवे साहा
रण आश्री परिहारवीसुधवरजीने
॥४॥ चारित्र जाने । नोहत्सर्पिणी
नोअवसर्पिणीमाजनमहतआश्री
॥ ६ ॥ जुगलीयाना खेत्रमा एके
चारित्र न जाने पंच महाविदेह

खेत्रमा । छेदो० । परिहारविसुध
वरजीने ॥३॥ चारित्र लाभे । हवे
साहारण आश्री परिहार वीसुध
वरजीने६अकर्मभूमि१महाविदेह
एवछेत्रमा ॥४॥ चारित्र लाभे ॥
१३ हवे गतिद्वार कहेछे । नरक ॥ १ ॥
तिर्यंच ॥२॥ मनुष्य । ए ॥३॥ ग
तिमा न जाय।१ देवगतिमा जाय।
तेमा । सामा० । छेदो० । ए २ आ
राधिकआश्री । जघन्य । पहेले
देवलोके उत्० । अनुत्तरविमाने

जाय । परिहारवीसुध । जघन्य०
॥१॥ देवलोकेजाय। अने। उत्०।
आठमे देवलोके जाय । सूक्ष्मस
पराय ॥ १ ॥ जथाख्यात ॥ २ ॥
ए ॥ २ ॥ ज० । उ० । अनुत्तर वि
माने जाय। अने जथाख्यातवालो
मोक्ष पण जाय । हवे आराधिक
पाच पदवी पामे । ईद्रनी ॥ १ ॥
सामानीकनी ॥२॥ त्रायत्रिंसकनी
॥ ३ ॥ लोकपालनी ॥ ४॥ अहमें
द्रनी ॥ ५ ॥ ए ॥५॥ पदवी पामे।

तेमा । सामा० नेछेदो० । ए ॥३॥
पाच पदवी पामे । परिहारविसुध
१ अहमेंद्रनी वरजीने ॥४॥ पदवी
पामे। सूक्ष्मसंपरायने जथाख्यात।
ए ॥३॥ १ अहमेंद्रनीपदवी पामे।
हवे विराधिक आश्री पाचे चारि
त्रवाला ज०। नवनपतीमा जाय।
उ० । पहीले देवलोके । जाय ।
पदवी पांचमाहेली एके न पामे॥
१४ हवे स्थितिद्वार कहेछे । आवता
नवआश्री। आगला ॥ ३ ॥ चा
रित्रनी । ज० बे पल्यनी । उ०॥
॥ ३३ ॥ सागरनी । अने परि
हारवीसुधनी । ज० बे पल्यनी
उ० ॥ १८ ॥ सागरनी ॥ सूक्ष्म
सपराय । जथाख्यात । ए २ चा
रित्रनी । जघन्य० उतकृष्टी ॥३३
सागरनी ॥
१५ हवे सजमठाणद्वार कहेछे । आग
ला॥३॥ चारित्रना असख्याता था
नक। सूक्ष्मसंपरायना असख्याता
थानक एक अतर्मु० मांहि अने

जथास्यातनु एकज स्थानक ॥ हवे अल्पबहुत्व। सर्वथी थोडा। जथास्यातना ॥ १ ॥ तेथी सूक्ष्म सपरायना असख्यातगुणा ॥ २ ॥ तेथी परिहारवीसुधना असख्यातगुणा ॥ ३ ॥ तेथी । सामा०। नेछेदोप० । माहोमाहि तुल्य ने असख्यातगुणा ॥ ४ ॥

१६ हवे निकासद्वार कहेछे । पाचे चारित्रना अनतापर्यव जाणवा। सामायक । सामायक । छेदो प० । परिहारवीसुध साथे छगा णवडिया । उपला ॥ २ ॥ थी अनंतगुणहीण ॥ १ ॥ छेदोप स्था० । सामायक० छेदो० । परिहारवीसुधसाथे छगण वडि या । उपला ॥ २ ॥ थी अन तगुणहीण ॥ २ ॥ हवे परिहारवी सुध। सामा० छेदोप०। परिहार वीसुधसाथे छगाणवडिया। उपला २ थी अनतगुणहीण ॥ ३ ॥ हवे सुक्ष्मसपराय । सामायक। छेदो

प०। परिहारवीसुधथि अनतगुण
अधिक। पणनो तुल्य०। सूक्ष्मस
पराय। सूक्ष्मसपरायसाथे छगण
वमीयो। जो हीणो होय तो। अ
नतगुणहीणो। जो अधिको होय
तो अनंतगुण अधिक। अने
तुल्य पण होय। अने जथाख्या
तथि अनंतगुणहीण। अने जथा
ख्यात आगला ॥ ४ ॥ थी अनं
तगुण अधिक ॥ जथाख्यात जथा
ख्यातसाथे तुल्य ॥ हवे अल्पव

तुल्य। सर्वथी थोडा। सामायक।
छेदोपस्थापनीकना ज०। पर्यव मा
होमादि तुल्य। तेथी परिहारवीसु
धना। ज० पर्यव। अनंतगुणा।
तेथी परिहारवीसुधना। उ०। पर्यव
अनतगुणा तेथी सामायक० छेदो
पस्थापनियना उत्०। पर्यव अन
तगुणा अने माहोमादितुल्य। तेथि
सूक्ष्मसपरायना। ज० पर्यव अन
तगुणा। तेथी सूक्ष्मसपरायना
उ०। पर्यव। अनतगुणा। तेथी

जथाख्यातना । ज० । उ० । पर्यव
अनतगुणा ने माहोमाहितुल्य
१७ हवे जोगद्वार कहेछे । पाचे चारित्र
सजोगीमा तेमन जोग ॥१॥ वचन
जोग ॥२॥ कायजोग ॥३॥ मा आ
गल्या चारित्र ॥ ४ ॥ लाभे अने
अजोगीमा एक जथाख्यात लाभे॥
१८ हवे उपयोगद्वार कहेछे । सागार
उपयोगमा पाचे चारित्र लाभे ।
अणागार उपयोगमा । सूक्ष्मसप
राय वरजीने ॥४॥ चारित्र लाभे॥

१९ हवे कसायद्वार कहेछे । आगला
॥ ४ ॥ चारित्र सकसाई । एक छे
हलो अकसाई । आगला ॥ ३ ॥
चारित्रमा । सजलनो । क्रोध ॥१॥
मान ॥ २ ॥ माया ॥ ३ ॥ लोभ
॥ ४ ॥ ए ॥ ४ ॥ लाभे । अने सू
क्ष्मसपरायमा । १ सजलनोलोभ
लाभे । अने जथाख्यात । उपस
मने ॥ १ ॥ खिणकसाई होय
२० हवे लेशाद्वार कहेछे । सलेसीमा
पाचे चारित्र लाभे । अलेसीमा

एक छेहलो । सामा० ॥ छेदोप स्थापनीयमा लेसा ॥ ६ ॥ लाभे। परिहारवीसुक्ष्मा पाछली ॥ ३ ॥ लेसा लाभे उपला ॥ ७ ॥ मा १ सुकल लेसालाभे

७१ हवे परिणामद्वार कहेछे। वर्द्धमान परिणाममा पाचे चारित्र लाभे। हायमान परिणाममा आगला ॥४॥ चारित्र लाभे अवस्थित परिणाम मा ॥ १ ॥ सूक्ष्मसंपराय वरजीने ॥४॥ चारित्र लाभे तेमा आगला ॥४॥ नी जघन्य छद्मी ॥१॥ समो॥ उत०॥ अतर्मुहू०। अने जथाख्या तनी ॥ ज० उ० वृद्धि। अतर्मु०। हवे हायमानमा आगला ॥ ४ ॥ नी ज० ॥१॥ समो। उ० अतर्मु०। हवे अवस्थितमा आगला ॥ ३ ॥ नी। ज० ॥१॥ समो। उ० ॥ ७ ॥ सम० ॥ जथाख्यातनी। ज० ॥ १ ॥ समो। उतकृष्टी। देशो उणी। पूर्व कोम्नी ॥

७२ हवे बंधद्वार कहेछे। आगला॥३॥

चारित्र ॥ ७ ॥ कर्म । तथा ॥ ८ ॥
कर्म बांधे ॥ ७ ॥ बांधे तो आउषू
वरजीने । सूक्ष्मसपराय ॥६॥ कर्म
बांधे । आउषू मोहनी वरजीनोज
थाख्यात एक सातावेदनीय बांधे ।
अथवा अबन्धपण होय ॥

२३ वेदद्वार कहेछे आगला ॥ ४ ॥ चा
रित्र आठे कर्मवेदे ॥ अने जथा
ख्यात सात कर्मवेदे । मोहनीय वर
जीने । तथा ॥ ४ ॥ वेदे तो । वेद
नी ॥१॥ आयु ॥ २ ॥ नाम ॥३॥
गोत्र० ए ४ वेदे

२४ हवे उदीरणाद्वार कहेछे । आग
ला ॥ ३ ॥ चारित्र आठ कर्मनी
उदीरणा करे ॥ ७ ॥ नी करे तो
आउषूं वरजीने ॥६॥ नी करे तो
वेदनी वरजीने । सूक्ष्मसपराय
॥६॥ कर्मनी उदीरणा करे । आ
उषू ॥ १ ॥ मोहनी वरजीने ।
॥५॥ नी करे तो । आउषू मोह
नी । वेदनी वरजीने । जथाख्यात

॥ ५ ॥ नी उदीरणा करे । तथा
॥ ७ ॥ नी करे तो । नाम ॥ १ ॥
गोत्र । ए ॥७॥ नी उदीरणा करे ॥
७५ हवे उवसपजहणाद्वार कहेछे । सा
मायक चारित्रवालो चढे तो ।
छेदो० । सूक्ष्मसंपरायपणु पामे ।
अने पमेतो असजति० ने श्रावक
पणु पामे ॥ १ ॥ छेदो० । चढे तो ।
परिहा । ० । सूक्ष्म० पणुं पामे ।
पमे तो सामा० । असजती० ने
श्रावकपणु पामे । परिहा० चढे
नही । ने पमे तो । छेदो० । अस
जतीपणुं पामे । सूक्ष्मसप० चढे
तो जथाख्यातपणु पामे । पमेतो ।
सामा० । छेदो० । असजमपणु
पामे ॥जथाख्यात चढे तो मोक्षमा
जाय । पमे तो । सूक्ष्म० । असज
मपणु पामे ॥
७६ हवे सन्नाद्वार कहेछे । सनावउता
मा । आगल्या ॥ ३ ॥ चारित्र
जाणे । अने नोसनावउतामा ।
पाचे चारित्र जाणे ॥

२७ हवे आहारद्वार कहेछे । पांचे चा
रित्र आहारकमा लाभे । एक ज
थाख्यात अणाहारकमा पण होय
२८ हवे भवद्वार कहेछे । सामा० ।
छेदो० । ज० ॥ १ ॥ भव ॥ उत्कृ
ष्टा ॥ ८ ॥ भवकरे । वाकी ॥ ३ ॥
चारित्रवाला ज० १ भव । उ०
॥ ३ ॥ भव करे ॥
२९ हवे आकर्षद्वार कहेछे । एक भव
आश्री सामायक ॥ जघन्य ॥ १ ॥
वारआवे उत्० प्रत्येकसें ॥९००॥

वारआवे ॥ १ ॥ छेदो ॥ ० ॥ ज०
॥ १ ॥ उत्० वीसपहुत्त ॥१२०॥
॥ २ ॥ परिहार० । ज० ॥ १ ॥
उत्० ॥ ३ ॥ ३ ॥ सूक्ष्म० । ज० १
उ० ॥ ४ ॥ ४ ॥ जथाख्यात । ज०
॥ १ ॥ उ० ॥ २ ॥ ५ ॥ हवे घणा
भवआश्री सामा० । ज० ॥ २ ॥
वारआवे उ० प्रत्येक हजारवार
आवे ॥ १ ॥ छेदो० ज० ॥ २ ॥
उत्० ॥९६०॥२॥ परिहा० ज० २
उ० ॥ ७ ॥३॥ सूक्ष्म० । ज०॥२॥

उ० ॥ ए ॥ ४ ॥ जथाख्यात । ज०
॥ १ ॥ उ० ॥ ५ ॥ ५ ॥
३० हवे स्थितीद्वार कहेछे । एक वचन
आश्री । सामा० छेदो० । ज० ॥ १ ॥
समय । उ० । देशे उणी पूर्व कोरू
नी । परिहा० । ज० ॥ १ ॥ समो
उ० ॥ २ए ॥ वरस उणी पूर्व कोरू
सूक्ष्म० । ज० ॥ १ ॥ समो । उ० ।
अंतर्मु० जथाख्यातज० ॥ १ ॥
समो । उ० । देशे उणी पूर्व कोरू ।
घणा जवआश्री । सामायकनि ।

ज० उ० । सवधाकाल । छेदोप० ।
ज० ॥ २५० ॥ वरस । उ० ५०
लाख कोरू सागर । परिहा० । ज०
॥ २०० ॥ वरस । उ० देशे उणी
॥ २ ॥ पूर्व कोरू । सूक्ष्म० । ज०
१ समो । उ० । अंतर्मु० । जथा
ख्यातज० । उ० । सवश्काल ॥
३१ हवे अंतरद्वार कहेछे । एक वचन
आश्री । पाचे चारित्रनु । ज० ॥
अंतर्मु० । उ० । अर्द्ध पुदगल देशे
उणुआतरु पके । बहुवचनआश्री

सामा० ज० । उ० । अतर नथि
॥ १ ॥ छेदो० । ज० ॥ ६३००० ॥
वर्सउ० ॥ १८ कोमा कोम सागर
नु । २॥ परिहा० । ज० ॥ ८४०००॥
वर्स । उ० ॥ १८ ॥ कोमा कोम सा
गरनुं ॥ ३ ॥ सूक्षम जघन्य सम१
उ० । ६ मासनु ॥ ४ ॥ जथाख्या
तनु । ज० । उ० । आतरु नथी ॥५॥
३२ हवे समुद्घातद्वार कहेछे । सा
मा । ० । छेदो० । ए ॥२॥ मा ६ स
मुद्घातलाभे । परिहार० ॥ ३ ॥
समुद्घातपहेली । लाभे । सूक्ष्म० ।
समुद्घात नथी । जथाख्यातमा
॥ १ ॥ केवल समुद्घात लाभे ॥
३३ हवे खेत्रद्वार कहेछे । लोकने स
ख्यातमे भागे । के असंख्यातमे
भागे । के घणे सख्यातमे भागे ।
ते घणे असंख्यातमे भागे के सर्व
लोकने विषे । उत्तर । लोकना अ
सख्यातमां भागमा तो । पाचे चा
रित्र लाभे । अने एक थजाख्यात
असख्यातमे भागे । घणे असख्या

तमे जाणे । ने सर्व लोकने विषे
लाभे ॥
३४ हवे फरसनाद्वार खेत्रद्वारनीपरे
जाणवो ॥
३५ हवे भावद्वार कहेछे । सामा० ।
छेदो० । परिहा० । सूक्ष्म० ए ॥४॥
मां । भाव १ षउपसम लाभे ।
जथाख्यातमा ॥ २ ॥ भाव लाभे ।
उपसम । ने षायक ए ॥२॥ लाभे ॥
३६ हवे परिमाणद्वार कहेछे । हवे पडि
वजमाणआश्री जो होय तो । सा

मा० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ० प्रत्येक
हजार । छेदो० । परीहार० । ज०
॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उत्० । प्रत्येकसें ।
सूक्ष्मसपराय । ज० ॥ १ ॥ २॥३॥
उ० ॥ १६२ ॥ ते ॥१०८॥ षपका॥
॥ ५४ ॥ उपस । ० । जथाख्यात ।
ज० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ० ॥१६२॥
ते ॥ १०८ ॥ षपक० ॥ ५४ ॥ उप
स० । पूर्वपडिवजमाणआश्री जो
होयतो । सामा । ज० । प्रत्येक ह
जार कोड । उत्० । प्रत्येक हजार

कोम्र। छेदो० । प्रत्येकसे कोम्र । उ० प्रत्येकसे कोम्र ॥ परिहारवी सुध। ज० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उत्०। प्रथक हजार। सूक्ष्म० ज० ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ० । प्रत्येकसें ॥ ज थाख्यात। ज०। प्रत्येक कोम्र। उ० प्रत्येक कोम्र

३७ अल्पबहुत्वद्वार कहेछे । सर्वेथी थोमा सूक्ष्मसपराय ॥ १ ॥ तेथी परिहा० संपेजगुणा तेथी जथा ख्यात० सपेजगुणा ॥ ३ ॥ तेथी छेदो० संषेजगुणा ॥ ४ ॥ तेथी सामा० । संषेजगुणा जाने ॥ ५ ॥

इति सजयाना बोल सपूर्ण ॥

॥ ॐ नम ॥ अथ नियठा लिख्यते

॥ गाथा॥ पन्नवणा १ वेय २ रागे ३ ॥ कप्प ४ चरित्त ५ पमिसेवणा ६ नाणे ७ ॥ तीछेय ८ ॥ लिंगे ९ सरीरे १० ॥ खेत्त ११ काल १२ गइ १३ ठीइ १४ संजम १५ नि कासे १६ ॥ १ ॥ जोगु १७ वउगे १८ कसाए १९। लेसा २० परी

णाम २१ बध २२ वेदेय २३ । क
म्मोदीरणा२४उवसपजहणा २५।
सन्नाय २६ आहारे २७ ॥ २ ॥
नव २८ आगरीसे २९ काल ३०
तरेय ३१ ॥ समुग्घाय ३२ खेत
३३ फुसणाय ३४ ॥ भावेय ३५ प
रीमाणे ३६ खलु । अप्पाबहुच्च
३७ नीयठाणं ३ ॥ ए ३ गाथा
१ द्वे १ पन्नवणा द्वार । पुलाक
॥ १ ॥ वकुस ॥ २ ॥ प्रति सेवणा
॥ ३ ॥ कपायकुसील ॥ ४ ॥ नी

यंठो ५ सनातक ६ ॥ पुलाक ते
सद्भुसा धाननापुलानीपरे ॥ १ ॥
वकुस ते सद्भुसा धाननीपरे ॥ २ ॥
प्रतीसेवना ते मसल्याधाननीपरे
३ कपायकुसील ते । उपण्याधान
नीपरे ॥ ४ ॥ नीयठो ते कणकीस
दितचोषानीपरे ॥ ५ ॥ सनातकते
अणीसुध चोषानीपरे ॥ ६ ॥ पु
लाकना वे भेद । लवधीपुलाक ते
चक्रवर्तिनी सेन्याचूरण करण स
की सपन्न ते लवधीपुलाक ॥ १ ॥

प्रतिसेवणापुलाक ते। मुलगुण उ
तरगुणमा दोष लगाडे। मुल गुण
ते पाच आश्रवमांहेलो अनेरो
दोष लगाडे ते। उतर गुण दोष ते
दश पचपाणमा दोष लगाडे ते पु
लाकना पाचभेद ज्ञान पु० ॥१॥
दर्शनपुलाक ॥२॥ चारित्रपुलाक
३ लिंगपु० ॥४॥ यथासूक्ष्मपुला
क ॥ ५ ॥ ते पुलाक ज्ञानादि अ
तीचार सेववेकरी संजमसाररहि
त करे तेने पुलाक कहीये ॥ १ ॥

वकुस ते सरीर वकुस ते सरीरनी
सुश्रूषा विभूषा करे ते ॥ १ ॥ उप
करण वकुस ते ऊजलता उपक
रण करे। उपकरणादि अधिक स
ग्रहे वस्त्रपात्रादि प्रक्षालनादि
॥ २ ॥ वकुस ते आभोगवकुस
॥ १ ॥ अणाभोगवकुस ॥ २ ॥
सवुडवकुस ॥ ३ ॥ असवुडवकुस
॥ ४ ॥ जथासूक्ष्मवकुस ॥ ५ ॥
जाणीने दोष लगाडे ते आभो
गवकुस ॥ १ ॥ अणजाणे दोष ल

गाडे ते । अणाभोग बकुस ॥ २॥
लनो दोष लगाडे ते संवृत्तबकुस
॥ ३ ॥ प्रगट दोष लगाडे ते अस
वुडबकुस ४ यथा सुषमतेकिंचित्
दोष लगाडे ते अहासुहुम बकु
स ॥ ५ ॥ सातिचार नीरतीचार
वेहु भेला सरखा धानतीपरे । सं
जमनेकाबरुंकरे ते बकुस ॥ २ ॥
प्रतिसेवनाकुसीलना ५ भेद ॥ ज्ञा
नप्रतिसेवना ॥ १ ॥ दर्शणप्रतिसे
वना ॥२॥ चारित्रप्रतिसेवना ॥३॥

लिंगप्रतिसेवना ४ जथासूक्ष्मप्रति
सेवना ॥५॥ इत्यादि वस्य अने
पिंडविसुध्यादि । सुमतीभावना त
पपडीमा । अभीग्रहित॥उतरगुण।
एटले मुलगुण उतर गुण विराध
ता सर्वज्ञनी आज्ञाथी । न्यूनाधि
क प्रवर्त्ते । तेप्रतिसेवना ज्ञानादि
५ जाणवा ॥ ३ ॥ कषायकुसील
ते । संजल ना कषायने उदये करी
कुठित भेदने सीलस्वभाव कषाय
उदय थाय । अप्रशस्तपणु थाय ।

तेमाटे कषायकुसील । दोष लगा
ड्वासरीपा॥ निमित्तवासी परिणा
म थाय । पण प्रवर्त्तनवाहज्यमा
दोष न लगाके ते कषायकुसील
ना ५ नेद । ज्ञानकपायकुसील
१ दर्सनकपायकुसील ॥ २ ॥ चा
रित्रकपायकुसील ३ लिंगकपाय
कुसील ॥ ४ ॥ यथासूक्ष्मकपायकु
सील ॥ ५ ॥ हवे नियठो ते मोह
नी कर्मथी नीकल्यो सपूर्ण ग्रथर
हित ॥ उपसमीत ॥ १ ॥ यथानि

मंजक्षायकनाविक २ कषायवर
जित वीतरागावस्थायेवर्त्ति ते ॥ मु
नीनो प्रथम समय ते पढमसमय
नियठो ॥ १ ॥ अपढमसमय ते
वीजासमयादिके वर्त्ते । ते अपढम
समय नियठो ॥ २ ॥ ते गुणस्था
नकने पर्यंतवर्तिसमयनो ते चरम
समय नीयठो ॥ ३ ॥ ते गुणठाणा
ना छेहला समयथी पूर्वलासमय
वर्ति ते अचरमसमय नीयठो॥४॥
यथासुक्ष्म ते गुणठाणाना सर्व सम

यवर्ती ते। अहासुहूमनीयठो॥५॥
अने स्नातक ते घातिकर्ममलपणा
लवाथी टालवाथी परमपवित्र ना
ह्यानीपरे उज्वल परीणामी रूपा
तीत ध्यानी॥ते स्नातक पचनामवि
प्याता॥अठवीते जोगनीरुध्यामाटे
अठवी ॥ १ ॥ असवल ते निरती
चार कावरासरहित तेमाटे अस
वल ॥ २ ॥ घनघातिकर्म क्षय
कर्या ते माटे अकर्मांस॥ ३ ॥सं
सुध्नाणदसणधरे । अरहाजीण

केवली ते। सम्यक सुध निर्दोप
ज्ञानदर्सनना धरणहार॥ अरहा
जीणे ते रहस्यठानीवात नही ते
राग द्वेषना जीतनार माटे केवली
कहीये ॥ ४ ॥ अपरीसावी ते नवा
कर्म आवेनही तेमाटे अपरीसावी
सर्व योगना रुंधवाथी ५ ॥ ६ ॥
ए नामनी प्रज्ञापनापरुपणाद्वार
किंचित् निरुपण
२ वेदद्वार। आगला ४ सवेदी ने ठ
परला २ अवेदी ॥ तेमा पुलाक।

स्त्रिवेदमा नही । पुरुष ॥१॥ पुरुष नपुसक ॥२॥ ए २ मा होय । बकुस ने प्रतिसेवना । ए ३ वेदमा होय। कपायकुसील सवेदी होयतो त्रिणे वेदमा होय । अने अवेदी होयतो उपसमने पीणवेदमा होय । निग्रंथ उपसमने षीणवेदमा होय स्नातक षीणवेदमा होय । ए द्वा०॥२॥

३ रागद्वार आगला ४ नीयठा । सरागी अने नीग्रथ ने स्नातक षीणरागी होय ॥ एद्वार ॥ ३ ॥

४ कल्पद्वार ॥ स्थितिकल्प ॥१॥ अस्थितिकल्प ॥२॥ जिनकल्प ॥३॥ थिवरकल्प॥४॥ कल्पातीत ५ तेमा थितिकल्प अथितिकल्पमा छए नीयठा । लाभे ॥ जिनकल्पमाही बीजो॥त्रिजो चोथो ए३ नियठा लाभे थिवरकल्पमा आगला ४ नीयठा लाभे । कल्पातीतमा उपरला ३ नीयठा लाभे ॥ ए द्वार ॥ ४ ॥

५ चारित्रद्वार । सामायक ॥ १ ॥ छेदोपस्थापनीय ॥२॥ ए २ मा आ

गल्या ४ नियठा लाभे । परीहार विसुद्ध ॥ १ ॥ सुक्ष्मसपराय ॥२॥ ए २ मा कषायकुसिलनीयठो ला भे । जथाख्यात चारीत्रमां उपर ला २ नीयठा लाभे । ए द्वार॥५॥
६ प्रतिसेवीद्वार । आगला ३ नीयठा प्रतिसेवी॥उपरला ३ नियठा । अ प्रतिसेवी । तेमा पुलाक मूलगुण उत्तरगुणमा दोष लगाडे । बकुस उत्तरगुणमा दोष लगाडे । प्रतिसे वना मूलगुण उत्तरगुणमा दोष लगाडे । उपरला ३ नीयठा दोष न लगाडे ए द्वार ॥ ६ ॥
७ नाणद्वार आगला ३ नीयठामा ज्ञान २ तथा ३ अने चोथा पाच मां नीयठामा । २ ॥ ज्ञान ॥३॥ तथा ४ ॥ स्नातकमां १ केवल ज्ञान । हवे पुलाक भणे तो जघ न्य नवमा पूर्वनी त्रीजी आचार वस्तु सुधी । उत्त० नव पूर्व पूरा भणे ॥ १ ॥ बकुस ने प्रतिसेवना भणे तो ज० ८ प्रवचनमाता ।

उत्० १० पूर्व पुरा नणे ॥ कषायकु
सीलने नीयंठो ज० ८ प्रव० उ०
१४ पूर्व पूरा नणे ॥ स्नातक तो
श्रुतथी अधिक छे । सर्वज्ञ छे

८ तिथद्वार । तिर्थ ॥१॥ अतिर्थ ॥२॥
तिर्थंकर ॥ ३ ॥ प्रत्येक बुद्ध ॥ ४ ॥
तिहां तिर्थे छए नीयठा लाभे । वा
कि ३ मा छपला ३ नीयठा लाभे।
ए द्वार ८ मो ॥

ए लिंगद्वार द्रव्यथी । सर्लिंग । अन्य
लिंग ॥ ग्रह लिंग । ए ३ लिंगमा
छ ए नीयंठा लाभे ॥ अने भाव थी
अन्यलिंग ग्रहलिंगमा एके न
लाभे ने सर्लिंगमा छए लाभे ॥
ए द्वार ए मो ॥

१० सरीरद्वार ॥ पुलाकमा ३ शरीर
लाभे॥ बकुस ने प्रतिसेवना । ए २
मा ३ सरीर लाभे ॥ उदारीक ॥१॥
तेजस ॥ २ ॥ कार्मण ए ३ लाभे ।
तथा ४ लाभे तो वैक्रेय वधु॥ अने
कपाय कुसीलमा सरीर ॥३॥४॥
॥ ५ ॥ लाभे । अने निग्रथ ने स्ना

तकमा सरीर ३ लाभे उदारीक ते जसकार्मण ॥ एद्वार १० ॥

११ पेत्रद्वार । जन्मआश्री कर्मभूमिमा छए नीयठा लाभे । अकर्मभूमीमा एके न लाभे । छतआश्री पण छए लाभे । साहारणआश्री पुलाक वरजीने ५ नीयठा लाभे । कर्मभूमी अकर्मभूमी वेहुमा लाभे ए द्वार ११ मो ॥

१२ कालद्वार समुचेअवसार्पिणी ॥ उत्सार्पिणीनोअवसर्पिणीनोउत्सर्पिणीमा ६ नीयठा लाभे । तेमा अवसर्पिणी उत्तरतो काल तेमा ६ आरा तिहा जन्मआश्री पहीला ने बीजा आरामा एके न लाभे । त्रीजा ने चोथा आरामा ६ नीयठा लाभे ॥ पाचमा आरामा ६ नीयठा लाभे । बीजो । त्रीजो । चोथो ए नीयठा ३ लाभे । छठा आरामा एके नही । हवे छतआश्री पहिला । बीजा आरामा एके नही त्रीजा चोथा पाचमा आरामा छए

नीयठा लाभे । ठठा आरामा एके
न लाभे । हवे साहारणआश्री पु
लाक वरजीने ५ नीयठा ठए आ
रामा लाभे । हवे चम्ता कालमा
जन्मआश्री पहिले आरे एके
नही बीजे त्रीजे चोथे आरे ६ नी
यठा लाभे । पाचमे ठठे आरे एके
नही । हवे ठतआश्री पहिले बी
जे आरे एके नही । त्रीजे चोथे
आरे ६ नीयठा लाभे । पाचमे ठठे
आरे एके नही । हवे साहारणआ

श्री । पुलाक वरजीने ठए आरा
मा ५ नियठा लाभे । हवे नोउत्स
र्प्पिणीनोअवशर्प्पिणी काल । ते
हेमवय ॥ १ ॥ एरणवय ॥ २ ॥ ह
रीवास ॥ ३ ॥ रमकवास ॥ ४ ॥
देवकुरु ५ उत्तरकुरु ॥ ६ ॥ ए ६
षेत्रमा जन्मठतआश्री एके नही ।
अने साहारणआश्री पुलाक वर
जीने ५ नीयठालाभे पाच महावी
देह षेत्रमा ॥ जन्मठतआश्री ठए
नीयठा लाभे । साहारणआश्री

तकमा सरीर ३ लाभे उदारीक ते
जसकार्मण ॥ एद्वार १० ॥
११ येत्रद्वार । जन्मआश्री कर्मभूमि
मा ठए नीयठा लाभे । अकर्मभू
मीमा एके न लाभे । ठतआश्री
पण ठए लाभे । साहारणआश्री
पुलाक वरजीने ५ नीयठा लाभे ।
कर्मभूमी अकर्मभूमी वेहुमा लाभे
ए द्वार ११ मो ॥
१२ कालद्वार समुचेअवसार्प्पिणी ॥
उत्सार्प्पिणीनोअवसर्प्पिणीनोउत्स
प्पिणीमा ६ नीयठा लाभे । तेमा
अवसार्प्पिणी उत्तरतो काल तेमा
६ आरा तिहा जन्मआश्री पही
ला ने बीजा आरामा एके न ला
भे । त्रीजा ने चोथा आरामा ६
नीयठा लाभे ॥ पाचमा आरामा ६
नीयठा लाभे । बीजो । त्रीजो ।
चोथो ए नीयठा ३ लाभे । ठठा आ
रामा एके नही । हवे ठतआश्री
पहिला । बीजा आरामा एके नही
त्रीजा चोथा पाचमा आरामा ठए

वीराधक आगला ५ नीयंठा ज०
जवनपतिमा जाय उ० पहीले दे
वलोके जाय। पदवी ५ माहेली
एके न पामे। ए १३

१४ थितिद्वार देवतामां जाए तिहा
थितिकेतलीपामे।पुलाकज०प्रत्ये
कपल्यनी।उ०। १८ सागरनी पामे।
वकुस ने प्रतिसेवना ज० प्रत्येक
पल्यनी उ० २२ सागरनी पामे।
कपायकुसील ज० प्रत्येक पल्यनी
उ० ३३ सागरनी पामे॥ निग्रथ
ज० उ० ३३ सागरनी पामे। स्ना
तक मोक्ष जाय ए द्वार १४

१५ सजमस्थानद्वार। आगला ४ नी
यठाना असस्याता सजमस्थान
कतेपरिणामना थानक छेअने नि
ग्रंथ ने स्नातकनु एकेकु थानक छे।
हवे अल्प बहुत्व ॥पहिले बोले स
र्वथी थोका निग्रथ ने स्नातकना था
नक बेहू माहोमाही तुल्य॥१॥तेथी
बीजे बोले पुलाकना थानक। असं
ख्यातगुणा॥२॥तेथी त्रीजे बोले ब

पुलाक वरजीने ५ नीयठा जाने ॥
ए द्वार १२ मो ॥ ॥

१३ गतिद्वार । आगला ५ नीयठा आराधिक एक वीमानीकदेवनी गतिमा जाय । स्नातक मोक्ष जाए । तेमा पुलाक ज० पहिले देवलोके जाए उ० । आठमे देवलोके जाय । बकुस ने प्रतिसेवना ज० पहिले देवलोके जाय । उ० । बारमे देवलोके जाए । कषायकुसील ज० पहेले देवलोके जाए । उ० अनुत्तर विमानमा जाय ॥ नियठो ज उ० अनुत्तरविमानमा जाय ॥ स्नातकमोक्षमा जाय । आराधिकपदवी पाचपामे ॥ इन्द्रनी ॥ १ ॥ सामानीकनी २ त्रायत्रिंसकनी ॥ ३ ॥ लोकपालनी ॥ ४ ॥ अहमेंद्रनी ॥ ५ ॥ ए ५ मांहेली । आगला ३ नीयठा पदवी ४ पामे । एक अहमेंद्रनी नही । कषायकुसील पदवी ५ पामे । नीग्रथ एकपदवी अहमेंद्रनी पामे । स्नातकमोक्ष जाय । हवे

नतगुणहीणो ॥ ४ ॥ हवे निग्रंथ
ने स्नातक। आगला च्यारथी अ
नंतगुण अधिक। ने माहोमाही
तुल्य ॥ ६ ॥ हवे अल्प बहूलद्वार
पहिले बोले। सर्वथी थोमा पुला
क ने कषायकुसीलना जघन्य प
र्जव माहोमाही तुल्य १ तेथी बीजे
बोले पुलाकना उत्कृष्टा पर्जव अ
नतगुणा ॥ २ ॥ तेथी त्रीजे बोले
बकुस ने प्रतिसेवनाना। जघन्य
पर्जव माहोमाही तुल्य ने अनत

गुणा ॥ ३ ॥ तेथी चोथे बोले बकु
सना ॥ उत्कृष्टा पर्जव अनंतगुणा
॥ ४ ॥ तेथी पाचमे बोले प्रतिसे
वनाना उ० पर्जव अनतगुणा॥५॥
तेथी छठे बोले कषायकुसीलना
पर्जव उ० अनंतगुणा ६ तेथी नि
ग्रंथ ने स्नातकना मांहोमांही तुल्य
पर्यव ने अनतगुणा ॥ ७ ॥ हवे
छठाणवडियातेसु हीणो होयके अ
धिको होय। जो हीणो होय तो
अनतभाग ॥१॥ असंख्यातभाग

कुसना थानक असस्यातगुणा
॥ ३ ॥ तेथी चोथे वोले प्रतिसेव
नाना थानक । असस्यातगुणा
॥ ४ ॥ तेथी पाचमे वोले । कषाय
कुसीलना थानक असस्यातगुणा
॥ ५ ॥ ए द्वार १५ मो ॥
१६ निकासद्वार ते पर्यवद्वार एकेका नि
यठाना अनतापर्यव छे पुलाक। पु
लाकसाथे छठाणवडियो । पुलाक
वकुसप्रति सेवनाथी॥ अनतगुण
हीणो कषायकुसीलसाथे छठाणव

डीयोऊपरलावेथी अनत गुण
हीणो॥१॥हवे वकुसपुलाकथी अ
नतगुण अधिक वकुसप्रतिसेवना॥
कषाय कुसीलसाथे छठाणवडीयोऊ
परलावेथी अनतगुण हीणो २ हवे
प्रतिसेवना। पुलाकथी अनतगुण
अधिक वकुसप्रतिसेवना कषायकु
सीलसाथे छठाणवडियो । ऊपर
लावेथी अनंतगुण हीणो ॥ ३ ॥
हवे कषायकुसील आगला ४ सा
थे छठाणवडियो ऊपरलावेथी अ

अने जो ३ होय। तो क्रोध वरजी
ने बे होयतो मान वरजीने। ने
एक होयतो माया वरजीने तेमा
क्रोध मान मायानी भजना लोभ
नी नीयमा होय ॥ ४ ॥ निग्रंथ
उपसम तथा पीणकषाइ होय।
स्नातकषीणकषाइ होय ॥ ए द्वार
१ए मो थयो

२० लेस्याद्वार। आगला ३ नियठा
मा उपरली ३ लेस्या होय। कषा
यकुसीलमा ६ लेसा होय ने नि
ग्रंथने सुक्कलेस्या। स्नातकमा परम
सुक्कलेस्या अने अलेसी पण हो
य ॥ ए द्वार २० मो थयो ॥

२१ परिणामद्वार। ठए नीयठामा वर्द्ध
मान परिणाम होय तो। आगला
४ मा ॥ जघन्य १ समो उ० अंतर
मुहूर्त्त। उपला २ ना जघन्य उत्कृ
ष्ट अंतरमुहूर्त्त। हवे हायमान प
रिणाम। आगला ४ ना। ज०
एक समो। उ०। अंत० उपला २
ना हायमान परीणाम होय नही।

॥ २ ॥ संख्यातभाग ३ संख्यात
गुण ॥ ४ ॥ असंख्यातगुण ॥५॥
अनंतगुणहीण ॥ ६ ॥ हवे अधि
क होय तो । अनंतभाग ॥ १ ॥
असंख्यातभाग ॥ २ ॥ संख्यात
भाग ॥ ३ ॥ संख्यातगुण ॥ ४ ॥
असंख्यातगुण ॥ ५ ॥ अनंतगुण
अधिक ॥ ६ ॥ ए षटगुण हानी
वृद्धि जाणवी । ए द्वार १६ मो ।
१७ जोगद्वार आगला ५ नीयठा ।
सयोगी होय तो ३ जोग होय । ने
छठो स्नातक सयोगी होय तो ३
जोग होय ॥ अजोगी होय तो
जोग एके नही । ए १७ मो
१८ उपयोगद्वार । छए नीयठामा सा
कार उपयोग ने अणाकार उपयो
ग बेहूं लाभे । ए द्वार १८ मो
१९ कषायद्वार । आगली ३ चोकडी
मां एके नीयठो न लाभे । हवे स
ज्वलनी १ चोकडीआगला त्रण
नीयठामा होय । अने कषायकु
सीलमा सज्वलना च्यारे होय ।

उदीरणा करे आउपू १ वेदनी ७ वरजीने। नकुस ने प्रतिसेवना आ ७ कर्मनी उदीरणा करे। अने जो ७ नी करे तो आउपूं वरजीने ६ नीकरे तो। आउपू वेदनी वरजी ने। कपायकुसील ८ कर्मनी उदी रणाकरे ७ नी करे तो । आउपू वरजीने ६ नी करे तो आयुप वे दनी वरजीने ५ नी करे तो मोह नी आउपू वेदनी वरजीने। अने नीग्रंथ आउपू वेदनी मोहनी ए ३ वरजीने। पाच कर्मनी उदीरणा करे। तथा नाम गोत्र २ नी उदी रणा करे। स्नातक नाम गोत्रनी उदीरणा करे। तथा न करे पण एके कर्मनी उदीरणा २४

२५ उवसपजहणाद्वार । पुलाक चढे तो। कपायकुशीलपणु पामे। अ ने जो पडे तो असजतिपणु पामे ॥ १ ॥ वकुस चढे तो प्रतिसेवना ने कपायकुसीलपणु पामे ॥ अने जो पडे तो असजति ने श्रावकप

हवे अवस्थितपरिणाम आगला ४ ना ज० १ समो उ० ७ समा । निग्रथ ज० १ समो उ० अंत० स्नातकना ज० अंतरमु० उ० देसे उणी पूर्वकोरु ए द्वार ॥ ७१ ॥

७२ बंधद्वार । पुलाक ७ कर्म बाधे । आउषू वरजीने ॥ वकुस ने प्रतिसेवना ७ । ८ कर्म बांधे ७ बाधे तो आउषू वरजीने कषायकुसील ६ ॥ ७ ॥ ८ कर्म बाधे । ७ कर्म बाधे तो आउषूं वरजीने ६ कर्म बाधे तो आयुप तथा मोहनी वरजीने॥ निग्रथ १ साता वेदनी कर्म बाधे। स्नातक १ सातावेदनी बाधे ने स्नातक अबंधक पण होय ॥ ए द्वार ७२ मो ।

७३ वेदद्वार ॥ आगला ४ आठे कर्म वेदे॥निग्रथ मोहनीकर्म वरजीने७ कर्मवेदे । स्नातक ४ कर्मवेदे । वे० आ० ना० गो० ए ४ वेदे॥ ए द्वार ७३ मो

७४ उदीरणाद्वार । पुलाक ६ कर्मनी

उ० ३ नवकरे ॥ बकुस ॥ १ ॥ प्रतिसेवना ॥ २ ॥ कषायकुसील ॥ ॥ ३ ॥ ९ ॥ ३ ॥ ज० ॥ १ ॥ नव उ० ८ नव । निर्ग्रंथज० ॥ १ ॥ नव ॥ उ० ३ नव करे ॥ स्नातक मोक्षमा जाय । ए द्वार २८ मो ॥

२९ आकर्षद्वार । आकर्ष १ नवे पुलाकज० १ वार ॥ उ० ३ वार आवे । बकुस प्रतिसेवना ॥ कषायकुसील ॥ ज० ॥१॥ उ० प्रत्येक सो९०० वार आवे॥निग्रथ०ज०१ उ० २ वार आवे । स्नातक० ज० उ १ वार आवे । हवे घणा नव आश्री ॥ पुलाक० ज० २ वार उ० ७ वार आवे । बकुस० ॥ १ ॥ प्रतिसेवना ॥ २ ॥ कषायकुसील० ॥३॥ज० २ उ० प्रत्येक ७२०० हजार वार आवे॥निग्रथ०ज०२उ० ५ वार आवे । स्नातकने पुनर्नव छे नही । ए द्वार २९ मो ॥

३० स्थितिद्वार । स्थिति १ नवआश्री । पुलाकनीज० अंत० । उ

णु पामे ॥ २ ॥ प्रतिसेवना चढे तो
कषायकुसीलपणु पामे अने जो
पडे तो वकुस० ॥१॥ असजति०
॥ २ ॥ श्रावक पणु ३ ॥ पामे ३
कषायकुशील चढे तो नीग्रंथपणुं
पामे । अने जो पडे तो । पुलाक
॥ १ ॥ वकुस २ प्रतिसेवना ॥३॥
असजति ४ श्रावक ५ ए ५ थाय
॥ ४ ॥ निग्रथ चढे तो स्नातकपणु
पामे । अने जो पडे तो कषायकु
सीलपणुं पामे । असजति पण था

य ॥ ५ ॥ स्नातक मोक्ष जाय । प
ण पडवु नथी ए २५ ॥

२६ संज्ञाद्वार । वीजो १ त्रीजो २ ॥
चोथो ३ ॥ ए ३ नीयठा सनावउ
तामा होय । नोसनाउतामा ६ नी
यठा लाभे । ए द्वार २६ मो ॥

२७ आहारद्वार । आगला ५ नियठा
आहारक होय । छठो नीयठो स्ना
तक आहारक ने अणाहारक पण
होय ॥ ए द्वार २७ मो थयो ॥

२८ नवद्वार । पुलाक ज १ नवकरे ॥

उ० ३ नवकरे ॥ वकुस ॥ १ ॥ प्र
तिसेवना ॥ २ ॥ कषायकुसील ॥
॥ ३ ॥ ए ॥ ३ ॥ ज० ॥ १ ॥ नव
उ० ८ नव । निर्ग्रंथज० ॥ १ ॥
नव ॥ उ० ३ नव करे॥ स्नातक
मोक्षमा जाय । ए द्वार २८ मो ॥
२९ आकर्षद्वार । आकर्ष १ नवे
पुलाकज० १ वार ॥ उ० ३ वार
आवे । वकुस प्रतिसेवना ॥ कषा
यकुसील ॥ ज० ॥१॥ उ० प्रत्येक
सोए०० वार आवे॥निग्रथ०ज०१

उ० २ वार आवे । स्नातक० ज०
उ १ वार आवे । ह्वे घणा नव
आश्री ॥ पुलाक० ज० २ वार
उ० ७ वार आवे । वकुस० ॥ १ ॥
प्रतिसेवना ॥ २ ॥ कपायकुसील०
॥३॥ज० २ उ० प्रत्येक ७२०० ह
जार वार आवे॥निग्रथ०ज०२उ०
५ वार आवे । स्नातकने पुनर्नव
छे नही । ए द्वार २९ मो ॥
३० स्थितिद्वार । स्थिति १ नवआ
श्री । पुलाकनीज० अत० । उ

तृ० अ०। वकुस प्रतिसेवना कपा
यकुसीलनी ज० १ समोउ० देसे
उणी पूर्व कोम निग्रथनी। ज० १
समो। उ० १ अतमु०। स्नातक
नी ज० १ ग्रत। उ० देशे उणी
पूर्व कोरू। हवे घणा जवआश्री।
पुलाक ने निग्रथनी। ज० १ समो
उ० १ अत० वाकीने सवद्याकाल
ए द्वार ३० मो॥
३१ अंतरद्वार। अतर एक जीवआश्री
आगला५ नियठाने। ज० अत०।

उ०। अर्द्धपुद्गल देसे उणु आतरु
पडे। स्नातकने आतरु नथी। हवे
घणा जीवआश्री। पुलाकने ज०
१ समो॥ उ० सख्याता वरसनु।
निग्रथने ज० १ समो। उ० ६मा
सनु शेप वाकिने आतरु नथी।
ए द्वार ३१ मो थयो
३२ समुद्घातद्वार। समुद्घात पुला
कमा त्रण वेदनी कपाय मारणा
तिक ए॥ ३ लाभे॥ वकुस ने प्र
तिसेवनामा पाच समुदघात। वे

हनी १ कषाय २ मारणांतिकमा ॥ ३ ॥वैक्रेय ॥ ४ ॥ तैजस ॥ ५ ॥ ए ५ कषायकुशीलमा ६ समुद्घात । केवल वरजीने । निग्रंथमा समुद्घात नथी । स्नातकमा ॥ १ ॥ केवलसमुद्घात लाभे । ए द्वार ३२ मो ॥

३३ क्षेत्रद्वार । ते लोकने संख्यातमे भागे होय के असंख्यातमे भागे के घणे संख्यातमे भागे के घणे असंख्यातमे भागे के सर्व लोकमा होय तेहनो उत्तर ॥ आगला ५ नियंठा लोकने असंख्यातमे भागे होय शेष ४ बोले न होय।स्ना तक लोकने असंख्यातमे भागे घणे असंख्यातमे भागे ने सर्व लोकमा होय ए द्वार ३३ मो ॥

३४ फरसनाद्वार । ते फरसनाद्वार पण क्षेत्रद्वारनीपरे कहेवो इमज फरसे ॥ ए द्वार ३४ मो ॥

३५ भावद्वार ॥ आगला ४ नियंठा । क्षयोपसमभावे होय । निर्ग्रंथ उ

पशामने १ चायक २ भावे होय।
स्नातक १ चायकभावे होय ए द्वार
३६ पडिवज्जमाण ते परिमाण द्वार।
पडिवज्जमाण तेनवीनथाताहोय
ते वर्तमान आश्री एक समे जो
होय तो। पुलाक वकुस प्रतिसेव
ना ज० होय तो ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥
उ० प्रत्येक सो। कषायकुशील।
ज० होय तो ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ०
प्रत्येक हजार ॥ नियंथ ज० होय
तो ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ० ॥१६२॥

तेमा ॥ १०८ ॥ चपकश्रेणीना अ
ने ५४ उपसम श्रेणीना स्नातक
ज० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ उ० १०८
हवे पुवपडिवज्जमानआश्रीपुला
क होय तो। ज० ॥ १ ॥ २ ॥३॥
उ०। प्रत्येक हजार ॥ वकुस ने
प्रतिसेवना होय तो ज० प्रत्येकसें
कोड़ ॥ उ० प्रत्येकसें कोड़। कषा
यकुसील होय तो। ज० प्रत्येक
हजार कोड़। उ० प्रत्येक हजार
कोड़। निर्ग्रंथ ज० ॥ १ ॥ २ ॥३॥

उ० प्रत्येकसें ॥ स्नातक । ज० प्रत्येक कोरु उत्कृष्टा प्रत्येक कोरु होय ए द्वार ३६ मो

३७ हवे अल्प बहूत्व द्वार । सर्वथी थोरा निर्ग्रंथ १ तेथी पुलाक सस्यातगुणा ॥ २ ॥ तेथी स्नातक सस्यातगुणा ॥ ३ ॥ तेथी बकुस संस्यातगुणा ॥ ४ ॥ तेथी प्रतिसेवना सस्यातगुणा ॥ ५ ॥ तेथी कषायकुसील संस्यातगुणा ॥६॥ ए छ नियंठनो अधिकार । सूत्र श्रीभगवतिशतक २५ मे उद्देशो छठे छे ॥

॥ इति श्रीनियठ बोल समाप्त ॥

अथ श्रीषट्द्रव्यनो विचार संक्षेप मात्र लिख्यते ॥ परिणाम जीवमुत्त ॥ सपएसाएगखेत्तकिरियाय ॥ निच्चकारणकत्ता ॥ सव्वगयमियरेहिंअप्पवेसा ॥ १ ॥ ए गाथा । हवे पदनो अर्थ कहेछे । शिष्य आत्मार्थी पचाग नम्रता करि पुछे

छे जे । स्वामिन् । षट्द्रव्यमा परिणामि द्रव्य केटला । अने अपरिणामि द्रव्य
केटला । गुरु कहेछे ॥ हे आयुष्मन् शिष्य निश्चय नये षट्द्रव्य । पोत पोताने
स्वभावे स्वरूपे पोत पोताना गुणपर्यायनि परिणतिरूपे छस्वभावपरिणामि ।
अने व्यवहार नये ॥ एक जीव ॥ १ ॥ ने पुद्गल ॥ २ ॥ ए ॥ २ ॥ विभावपरि
णामि । शेष ॥ ४ ॥ द्रव्य । अपरिणामि ॥ १ ॥ हवे छ द्रव्यमे ॥ एक जीवास्ति
काय । जीवद्रव्य चैतन्य । शेष ॥ ५ ॥ जड । अजीवद्रव्य ॥२॥ हवे छ द्रव्यमे
मूर्तिरूपी । एक पुद्गलद्रव्य ॥ शेष ॥ ५ ॥ अमूर्ति अरूपीद्रव्य ॥ ३ ॥ छ द्र
व्यमें एक काल द्रव्य । अप्रदेशी । एक समयिकज द्रव्यमाटे ॥ शेष ॥ ५ ॥ स
प्रदेशी ॥ धर्म । अधर्म । असख्यातप्रदेशी ॥ आकाश लोकालोकप्रमाणे छे
माटे अनंतप्रदेशी ॥ पुद्गलद्रव्य । एकपरमाणु यावत् अनताणुक खंधमाटे ।
अनतप्रदेशी । एक जीवात्मा असख्यातप्रदेशी ॥ ४ ॥ छ द्रव्य निश्चय नये

एक । ठये द्रव्य अनेक । धर्म० अधर्म० । द्रव्यथि एक । गुणपर्याय प्रदेशथि
अनेक । गुण अनता । पर्याय अनंता । प्रदेश असरव्याता ॥ आकाशना प्रदे
श पण अनंता । कालद्रव्य । वर्त्तना लक्षणे एक ॥ गुण पर्याय समयथि अने
क । गुण अनता । पर्याय अनंता । समय अनता । ते किम ॥ एक आवलिका
ना चोथा असंख्यातप्रमाणे समय थाय । एम यावत् दश कोडाकोडि सागरो
पमे ॥ एक उत्सर्पिणी ॥ दश कोडा कोडि सागरोपमे ॥ एक अवसर्पिणी ।
विश कोडा कोडि सागरोपमनो । एक कालचक्र थाय ॥ ते एक कालचक्रना अ
सख्याता असख्यातभेदे समय थाय ॥ एहवे अनता भेद कालचक्रे एक पु
द्गल परावर्त्तन थाय ॥ एहवो अनंता पुद्गलपरावर्त्तननो अतीतकाल गयो ।
वर्त्तमानकाल एक समयज ॥ अनंत पुद्गलपरावर्त्तननो । आगमियोकाल आ
वस्ये । एम त्रिणकालना समय अनंता ॥ हवे पुद्गलद्रव्य ॥ पुरणगलन स्व

जावे एक ॥ गुणपर्याय प्रदेशथि अनेक ॥ गुणअनंता ॥ पर्याय अनंता ॥ प्रदे
श अनंता ॥ अनंता परमाणुया । अनंता द्विप्रदेशीया ॥ अनंता त्रिप्रदेशीया॥
अनंता चउप्रदेशीया । अनंता पंचप्रदेशीया । इमयावत् । अनंता संख्यातप्र
देशीया ॥ अनंता असंख्यात प्रदेशीया अनंता अनंत प्रदेशीया खंधछे ते मा
टे । एक अनंत प्रदेशीया खंधमा । अनंता अनंत प्रदेशीया प्रदेश छे माटे पु
द्गल अनंत प्रदेशी छे । जीवास्तिकाय चैतन्य लक्षण । द्रव्यथि एक छे । गुणप
र्याय प्रदेशथि अनेक ॥ गुण अनंता ॥ पर्याय अनंता ॥ प्रदेश एक जीवना॥
असंख्याता एहवा आत्मद्रव्य छे ॥ अने व्यवहार नये ॥ धर्म० । अधर्म० ।
आकाश० । ए त्रिणे । एक । अने । काल । पुद्गल ॥ जीव । ए ॥ ३ ॥ द्रव्यअ
नेक छे । सकलनु भिन्नभिन्न प्रवर्त्तन अवस्थापणुछे माटे अनंत ॥ ५ ॥ छद्रव्य
मे क्षेत्र आधार पात्रसमान ते एक आकाशद्रव्य ॥ क्षेत्र । शेष ॥ ५ ॥ द्रव्य

त्रेत्री । आध्येय रहेवायोग्य वस्तुमाटे ॥ ६ ॥ छ द्रव्य निश्चय स्वरूपे पोत पोतानि क्रियारूपे तो षट् द्रव्य सक्रिय चलणसहायरूप क्रिया ॥ स्थिरसहाय ॥ अवकाश । आश्रयरूप । वर्त्तना प्रावर्त्तना रूप पुरणगलन हानि वृद्धि रूप उपयोग चैतन्य रूप क्रिया ए सक्रिय ॥ अने व्यवहार नये गमनागमन पररूप चलणक्रिया आश्रि पुद्गल जीव । ए ॥ २ ॥ सक्रिय । शेष ॥४॥ द्रव्य । अक्रिय ॥ ७ ॥ छ द्रव्यमें निश्चय नये छए नित्य । छए । अनित्य ॥ ते किम । धर्मना । अधर्मना । च्यार गुण । पर्यायमा । खंधलोकप्रमाणे नित्य छे । अने देश प्रदेश ॥ अगुरु लघु । ए ॥ ३ ॥ पर्याय अनित्य छे ॥ आकाशमा ॥ ४ ॥ गुण लोकालोकप्रमाणे ॥ खध । नित्य । देश प्रदेश अगरु लघु अनित्य । कालद्रव्यना ॥ ४ ॥ गुण नित्य ॥ ४ ॥ पर्याय । अनित्य । पुद्गलद्रव्यना ॥ ४ ॥ गुण नित्य ॥ ४ ॥ पर्यायअनित्य ॥ जीवद्रव्यना ॥ ४ ॥ गुण ॥ ३ ॥ पर्याय । नित्य ।

अगुरु लघुपर्याय अनित्य ॥ ८ ॥ ठ द्रव्यमा एक जीव कारण ठे। एटले जीव ने पचेद्रव्य कारणरूप ठे॥ जीव तो कारणी ठे॥ पाज द्रव्य अकारणी ठे॥ए॥ ठ द्रव्यमा। स्वरूप। चलणस्वभाव। स्थिरस्वभाव। अवकाशदान। नवीन। पुराणस्वभाव। पुरणगलनस्वभाव॥ उपयोग लक्षण। चैतन्य स्वभाव ठए स्वभावना कर्ता ठे॥ अने व्यवहार नये। एक जीवद्रव्य परभावरूपनो कर्ता ठे। शेप॥ ५॥ द्रव्यअकर्ता ॥१०॥ ठए। द्रव्यमें सर्वव्यापी एक आकाशद्रव्य। शेष॥ ५॥ द्रव्य। असर्वगत लोक मात्र व्यापी माटे॥ ११ ॥हवे इयर अप्पवेशाके०। यद्यपि ठए द्रव्य। एक क्षेत्रमें स्थिर निरनिपेरे। एकठा मिलि रह्याठे। तोहि पण एक बिजामे कोइ कोइमे नखे नहि ए द्रव्यनो विचार॥ हवे धर्मास्ति काय ते केहने कहिये॥ धर्म ते चलणस्वभावरूप॥ गतिमान् पुरुषवत्॥ अस्तिके० त्रणकालमां ठे॥ कायके० असख्य प्रदेशनो समुह॥

तेने धर्मास्ति कायद्रव्य कहिये ॥ तेना ४ गुण ॥ अरूप ॥ १ ॥ अचेतन्य ॥ २ ॥
अक्रिय ॥ ३ ॥ चलणसहाय ॥ ४ ॥ तेना पर्याय पण ४ ॥ स्कंध ॥ १ ॥ देश ॥ २ ॥
प्रदेश ॥ ३ ॥ अगुरुलघु ॥ ४ ॥ १ ॥ इम अ कहेता नहि धर्मके० चलणस्वभाव
एतावता प्रतिपक्ष ते स्थिरस्वभाव ॥ स्थितिमान् पुरुषवत् ॥ अस्तिके० । त्र
एकालमा छे ॥ कायके० असंख्य प्रदेशनो समूह ॥ तेने अधर्मास्ति कायद्रव्य
कहिये ॥ तेना ४ गुण ॥ अरूपि ॥ १ ॥ अचैतन्य ॥ २ ॥ अक्रिय ॥ ३ ॥ स्थिरसहाय
॥ ४ ॥ तेना पर्यायपण ४ ॥ ते पूर्ववत् ॥ २ ॥ आके० सर्व दिशे ॥ काशके० प्र
काश अवगाह आश्रय दानरूप ॥ भित्तिमा खितिकावत् ॥ अस्तिके० त्रण
कालमा छे ॥ कायके० अनंत प्रदेशनो समूह ॥ तेने आकाशास्तिकाय द्रव्य क
हिये ॥ तेना ४ गुण ॥ अरूपि ॥ १ ॥ अचैतन्य ॥ २ ॥ अक्रिय ॥ ३ ॥ अवकाशदान
॥ ४ ॥ तेना पर्याय ४ ॥ पूर्ववत् ॥ ३ ॥ जीवने पुद्गल निकलनाकरे तेने काल

कहिये ॥ तेना ४ गुण ॥ अरूपि ॥ १ ॥ अचैतन्य ॥ २ ॥ अक्रिय ॥ ३ ॥ वर्त्तनालक्षण ॥ ४ ॥ तेना पर्याय ४ ॥ अतित ॥ १ ॥ अनागत ॥ २ ॥ वर्तमान ॥ ३ ॥ अगुरुलघु ॥४॥४॥ समये समये पुरायगलायहानि वृद्धिरूप स्वभाव॥ अस्तिके० त्रण कालमा छे ॥ कायके० वेथिमाहि अनंत प्रदेशानो समूह ॥ तेने पुद्गलास्तिकाय द्रव्य कहिये ॥ तेना ४ गुण ॥ रूपि ॥१॥ अचैतन्य ॥२॥ सक्रिय ॥३॥ पुरण गलण ॥४॥ तेना पर्याय ४ ॥ स्कध ॥१॥ देश ॥२॥ प्रदेश ॥ ३ ॥ अगुरु लघु ॥४॥ तथा विजापण पर्याय ४ ॥ वर्ण ॥१॥ गध ॥२॥ रस ॥३॥स्पर्श ॥ ४ ॥ ५ ॥ द्रव्य प्राणभाव प्राणेकरि जीवेते जीव ॥ अस्तिके० त्रण कालमा छे ॥ कायके० असख्य प्रदेशानो समूह ॥ तेने जीवास्तिकायद्रव्य कहिये ॥ तेना ४ गुण ॥ केवल ज्ञान ॥१॥ केवल दर्शन ॥२॥ स्वरूप रमण। स्थिरता चरण ॥३॥ लायक अनतशक्ति ॥४॥ तेना पर्याय ४ ॥ अव्याबाध ॥ १ ॥ अना

वगाह ॥ २ ॥ अमूर्ति ॥ ३ ॥ अगुरुलघु ॥ ४ ॥ ६ ॥ एम पुद्गलनो विचार ॥ एक परमाणुमा ५ वर्णमाहिलो १ वर्ण ॥ बे गधमाहिलो १ गध ॥ पाच रस माहिलो १ रस ॥ ८ स्पर्शमाहिला २ स्पर्श ॥ बे परमाणुमिले त्यारे द्विप्रदेशी खध थाय ॥ तेमा २ वर्ण ॥ २ गध ॥ २ रस ॥ ४ स्पर्श ॥ त्रण परमाणुमिले त्यारे त्रिप्रदेशी खध थाय ॥ तेमा त्रण वर्ण ॥ २ गध ॥ ३ रस ॥ ४ स्पर्श ते ॥ शित ॥ १ ॥ उष्म । निध ॥ ३ ॥ लुख ॥ ४ ॥ च्यार परमाणु मिले त्यारे चतुप्रदेशी खध थाय ॥ तेमा ४ वर्ण ॥ २ गध ॥ ४ रस ॥ ४ स्पर्श ॥ पचपरमाणु मिले त्यारे पचप्रदेशी खध थाय ॥ तेमा ५ वर्ण ॥ २ गंध ॥५ रस ॥४ स्पर्श ॥ एम ७ सात आठ यावत् सख्यात असख्यात अनतप्रदेशी खधमा यावत् चउथे अनते ॥ अभव्यजीवथि अनतगुण अधिक ॥ सिद्ध ने अनंतनेभागे उगपरमाणुमिले त्यारे उदारिकग्रहणयोग्यवर्गणाथाय लेवायोग्य ॥ इम अनंत

गुण अधिक वर्गणामिले अग्रहणयोग्य वैक्रेयनिवर्गणाथाय ॥ एम अनतगुणे वैक्रेयग्रहणयोग्य वर्गणाथाय ॥ एम आहारकवर्गणा ॥ तैजसवर्गणा ॥ भाषाव र्गणा ॥५॥ श्वासोश्वासवर्गणा॥६॥मनोवर्गणा ॥७॥ न कार्मण वर्गणा ॥८॥ ए ८ व र्गणा माहि ॥ पहिलीथी बिजी वर्गणाअनतगुणी ॥ बीजीथि त्रिजी अनतगुणी॥ एम आठे वर्गणाजाणवी ॥ तेमा औदारिक ॥ १ ॥ वैक्रेय ॥२॥ आहारक ॥३॥ तेजस ॥ ४ ॥ ए ४ मा ५ वर्ण ॥ २ गध ॥ ५ रस ॥ ८ स्पर्श ॥ अने भाषा ॥ ॥ १ उश्वास॥२॥मनो ॥३॥ कार्मण ॥ ४ ए ४ वर्गणामा ५ वर्ण २ गध ॥५ रस ॥ ४ स्पर्श ए ४ वर्गणा अगुरुलघुजाणवी ॥ हवे षट्द्रव्यमा आठ २ पक्षक ह्याठे ॥ नित्य ॥१॥ अनित्य ॥२॥ एक ॥३॥ अनेक ॥४॥ सत् ॥५॥ असत्॥६॥ वक्तव्य ॥ ७ ॥ अवक्तव्य ॥८॥ धर्म अधर्मादि षट्द्रव्यमा॥ नित्य॥ अनित्य॥ एक॥ अनेक॥ ए ४ पक्षतो पूर्वेकह्या ॥ तिमज सत् ते ६ द्रव्य पोतपोताना

द्रव्य ॥ क्षेत्र ॥ काल ॥ भावरूपे छताछे ॥ तेमा धर्मास्तिकायनो स्वद्रव्य ॥ चलणसहायगुण ॥ १ ॥ अधर्मास्तिकायनो स्वद्रव्यस्थिरसहायगुण ॥ आकाश० स्वद्रव्यअवकाशदानगुण ॥ ३ काल० स्वद्रव्यवर्तनालक्षणगुण ॥ ४ ॥ पुद्गल० स्वद्रव्यपूरणगलनगुण ॥ ५ ॥ जीवास्तिकायस्वद्रव्य उपयोग लक्षण गुण ॥ ६ ॥ एम छ द्रव्यनोस्वक्षेत्र ॥ धर्म० अधर्म० स्वक्षेत्र असंख्यातप्रदेशी ॥ २ ॥ आकाश० स्वक्षेत्र अनंतप्रदेशी ॥ ३ ॥ कालनो स्वक्षेत्र एकसमय॥४॥ पुद्गलनो स्वक्षेत्र एकपरमाणु एहवाअनंता ॥ ५ ॥ जीवनो स्वक्षेत्र असंख्यप्रदेशी ॥ ६ ॥ एम छ द्रव्यनोकाल ॥ पोतपोतानाअगुरुलघुनि समयसमयनि प्रणत्तिफिरेछे ॥ ते छ द्रव्यनो स्वकाल ॥ छ द्रव्यनोस्वभाव ते छएद्रव्यमां पोतपोताना ४ बोल पोतपोतामाजछे अनेबिजाद्रव्यना ४ बोल तेमानथि ॥ जिमधर्मास्ति कायमा पोताना द्रव्यक्षेत्र काल भाव ४ बोलछे ॥ बीजा ५ द्रव्य

गुण अधिकवर्गणामिले अग्रहणयोग्य वैक्रेयनिवर्गणाथाय ॥ एम अनंतगुणे
वैक्रेयग्रहणयोग्य वर्गणाथाय ॥ एम आहारकवर्गणा ॥ तैजसवर्गणा ॥ भाषाव
र्गणा ॥५॥ श्वासोश्वासवर्गणा॥६॥मनोवर्गणा ॥७॥ न कार्मण वर्गणा ॥८॥ ए ८ व
र्गणा माहि ॥ पहिलीथी बिजी वर्गणाअनंतगुणी ॥ बीजीथि त्रिजी अनंतगुणी॥
एम आठे वर्गणाजाणवी ॥ तेमा ऊदारिक ॥ १ ॥ वैक्रेय ॥२॥ आहारक ॥३॥
तेजस ॥ ४ ॥ ए ४ मा ५ वर्ण ॥ २ गध ॥ ५ रस ॥ ८ स्पर्श ॥ अने भाषा ॥
॥ १ उश्वास॥२॥मनो ॥३॥ कार्मण ॥ ४ ए ४ वर्गणामा ५ वर्ण २ गध ॥५ रस
॥ ४ स्पर्श ए ४ वर्गणा अगुरुलघुजाणवी ॥ हवे षट्द्रव्यमा आठ २ पक्षक
ह्याछे ॥ नित्य ॥१॥ अनित्य ॥२॥ एक ॥३॥ अनेक ॥४॥ सत् ॥५॥ असत्॥६॥
वक्तव्य ॥ ७ ॥ अवक्तव्य ॥८॥ धर्म अधर्मादि षट्द्रव्यमा ॥ नित्य ॥ अनित्य ॥
एक ॥ अनेक ॥ ए ४ पक्षतो पूर्वेकह्या ॥ तिमज सत् ते ६ द्रव्य पोतपोताना

द्रव्य ॥ क्षेत्र ॥ काल ॥ भावरूपे छताछे ॥ तेमा धर्मास्तिकायनो स्वद्रव्य ॥ च
लणसहायगुण ॥ १ ॥ अधर्मास्तिकायनो स्वद्रव्यस्थिरसहायगुण ॥ आका
श० स्वद्रव्यअवकाशदानगुण ॥ ३ काल० स्वद्रव्यवर्तनालक्षणगुण ॥ ४ ॥
पुद्गल० स्वद्रव्यपूरणगलनगुण ॥ ५ ॥ जीवास्तिकायस्वद्रव्य उपयोग लक्षण
गुण ॥ ६ ॥ एम छ द्रव्यनोस्वक्षेत्र ॥ धर्म० अधर्म० स्वक्षेत्र असख्यातप्रदेशी
॥ २ ॥ आकाश० स्वक्षेत्र अनतप्रदेशी ॥ ३ ॥ कालनो स्वक्षेत्र एकसमय॥४॥
पुद्गलनो स्वक्षेत्र एकपरमाणु एहवाअनता ॥ ५॥ जीवनो स्वक्षेत्र असख्यप्र
देशी ॥ ६ ॥ एम छ द्रव्यनोकाल ॥ पोतपोतानाअगुरुलघुनि समयसमयनि
प्रणतिफिरेछे ॥ ते छ द्रव्यनो स्वकाल ॥ छ द्रव्यनोस्वभाव ते छएद्रव्यमा पो
तपोताना ४ बोल पोतपोतामाजछे अनेबिजाद्रव्यना ४ बोल तेमानथि ॥ जि
मधर्मास्ति कायमा पोताना द्रव्यक्षेत्र काल भाव ४ बोलछे ॥ बीजा ५ द्रव्य

नानथि ॥ एम ७ एद्रव्यमा पोतपोताना ४ बोलछे ॥ बिजा ५ नानथि ॥ एम
स्वन्नाव एसत्पत्तकह्यो ॥ अने असत् ते अछताद्रव्य क्षेत्रकालन्नाव परद्रव्य
ना अछतारूपे तो असत्छे ॥ जिमधर्म० द्रव्य अधर्मादि ५ परद्रव्यना द्रव्यत्ते
त्रकाल न्नावे असतके० अछतोछे ॥ एम ७ एद्रव्यमां जाणवुं ॥ हवे ७ द्रव्यमा
वक्तव्यते वचनसुं कहिवायोग्य एहवा अनतास्वन्नाव एक एकद्रव्यमा छे ॥ अने
अवक्तव्यके० वचनसु कह्याजायनहि केवलज्ञानेजणाय एहवाअनताधर्मस्वन्ना
व एकएकद्रव्यमा रह्याछे ॥ एम अनतागुणपर्याय पण कहेवा ॥ हवे सर्वपदार्थ
केवलियेदिठा तेने अनतमेन्नागे अन्निलाप्यवाक वर्गणायोग्य ॥ अनन्निला
प्यने अनतमे न्नागे ते अन्निलाप्य ॥ ते वलिअन्निलाप्यने अनतमे न्नागे व
क्तव्य कह्या ॥ तेने अनतमेन्नागे गणधरमहाराजे सूत्रगुंथ्याछे ॥ तेहथि अस
ख्यातमे न्नागे हमणा आगमरह्याछे ॥ ए ८ पक्ष ॥ वलिनित्य अनित्य पक्षथि

उपनि चउभंगीकहेछे ॥ अनादि अनंत ते जेनिआदिनेअतनथि ते प्रथमभा
गो ॥ १ ॥ जेनि आदिनथि ने अंतछे ते अनादिसात बिजोभागो ॥ २ ॥ जेनि
आदिछे ने अतपणछे ते सादिसातत्रिजोभागो ॥ ३ ॥ जेनि आदिछे पण अत
नथि ते सादिअनंतचउथोभागो ॥ ४ ॥ हवे धर्मास्तिकायमा ४ गुण अनादि
सातभांगोनथिज ॥ पर्याय ४ खंध ॥ १ ॥ देश ॥ २ ॥ प्रदेश ॥३॥ अगुरुलघु
॥ ४ ॥ ए ४ सादिसातत्रिजेभागेछे सिद्धनाजीवमा धर्मास्तिकाय ना प्रदेशसा
दि अनत चउथेभागेछे ॥ एमज अधर्म द्रव्यमां ॥ आकाशमा पण एरिते जा
णवु पणएटलो विशेष खंध अनादि अनत पहिले भागे जाणवो ॥ कालद्रव्य
मा गुण ४ अनादि अनादि अनतछे पहिलेभागे ॥ अने पर्यायमा अतीतका
ल अनादिसात बिजेभागेछे ॥ वर्तमानकाल सादिसातत्रिजे भांगेछे ॥ अनागत
काल सादिअनत चउथे भागेछे ॥ पुद्गल द्रव्यमां ४ गुण अनादि अनंत प्रथम

भागेछे ॥ जीव पुद्गलनो संबध अभव्य जीवने अनादि अनत प्रथम भागेछे ॥
अने पुद्गल खधथि ते सादिसांतत्रिजेभागेछे ॥ जघन्य १ समय उत्कृष्टो अस
ख्यकाल ते माटेसादिसातभागो ॥ सादि अनत भागो पुद्गलमा नथि ॥ अने
भव्यजीवने पुद्गलनो सबध अनादि सातचउथेभागेछे ॥ जीवद्रव्यमा गुण ४
अनादि अनत प्रथमभागेछे ॥ जीवने कर्मनो सजोग ॥ भव्यजीवने अनादि
सातजेकारणे क्विारेककर्मथि छुटसे ॥ नरकतिर्यचना भवकरवा ते सादिसात
त्रीजेभागेजाणवा ॥ अने जिवमा सिद्धपणु प्रक्टे ते सादिअनत चउथेभांगे जा
णवुं ॥ इम षट्द्रव्यनो विचार लेशमात्र लिख्योछे ॥ अथ आत्मद्रव्यनो विचा
र ॥ आत्मा ३ ॥ एकबहिरात्मा ॥ १ ॥ बीजोअतरात्मा ॥ २ ॥ त्रिजोपरमा
त्मा ॥ ३ ॥ तेमा बहिरात्माते ॥ धन ॥ स्वजन ॥ शरिर ॥ कर्म ॥ सर्व परवस्तु
पुद्गलिक माहरि अनेहुंपण एहनो एहवी परिणामनि लोल्यतापणे ॥ अज्ञा

न मोह मिथ्यात्वे परिणम्यो ॥ तेने बहिरात्मा कहिये ॥ उक्तं ॥ पुद्गलसुखरातोर
हे ॥ जाणेएहनिधान ॥ तसलाभेलोभ्योरहे ॥ सोबहिरात्मअभिधान ॥ १ ॥
पुद्गल विषय विलासद्रव्य कुटुंबादिमा रातो ने रातो तल्लाीनपरिणामे ॥ म
गरहे एहपुद्गलमनोज्ञ मिलेथके जाणेजे एहउपरात बिजुंकोइ निधाननथि ॥
ते पुद्गलना लाभमाज लोभिरहे ॥ तेनुं नाम बहिरात्मा ॥ तेपहिला गुणठा
णाथि त्रिजागुणठाणा सुधिजाणवो ॥ १ ॥ हवे बीजा अतरात्मानुं लक्षणकहे
छे ॥ उक्तं ॥ पुद्गल खलसंगीपरे ॥ सेवे अवसर देख ॥ तनुंअशक्तज्युं लकडी ॥
ज्ञान भेद पदविलेख ॥ १ ॥ पुद्गलनो संबंध खल निच दुर्जन मनुष्यनि संग
ति सरिखो जाणे ॥ पण अणचाल्ये पुद्गलनो संगकरे ॥ जीम शरिरे असमर्थ
लाकडिराखे ते लाजतोथको ॥ पण समर्थाइ थे राखेनहि ॥ तिम परिणामथि
ज्ञानसम्यक्त्वेकरि पुद्गलीकवस्तुजीववस्तुनो भेदकरि ॥ अतरगपरिणामथि ॥

उदासी परिणामे ॥ आत्मीकवस्तु न्यारि उलखिने ॥ तेनु ध्यान करणरुचिवा
लाने ॥ अंतरात्मपदप्रकटे ॥ ते चउथे गुणठाणेथि मांडिने १२ मागुणठाणा
सुधि जाणवो ॥ २ ॥ हवे त्रीजा परमात्मानु लक्षण कहेछे ॥ दुहो ॥ प्यारो आ
पस्वरूपमे ॥ न्यारो पुद्गल खेल ॥ सो परमात्मा जाणिये ॥ नहि जसजव को
मेल ॥१॥ आत्मस्वरूपने विषेमग्न॥ दुहो ॥ समता रमता उर्ध्वता ॥ ज्ञायकता
सुख भास ॥ वेदकता चैतन्यता ॥ ए सब जीवविलास ॥ १ ॥ एटला बोल प्र
गटथयाछे ॥ शुद्धप्रणतिये अने पुद्गलना खेलथि न्यारो ॥ दुहो ॥ तनता मन
ता वचनता ॥ जडता जडसमेल ॥ लघुता गुरुता गमनता ॥ ए अजीव के खे
ल ॥ १ ॥ ए सर्व परवस्तु मात्र कर्म चेतनाथि न्यारो रहे जेहने पुनरपि भवा
दि सर्वमेलरहित ते परमात्मा तेरमे चउदमे गुणठाणे तथा सिद्धने परमात्मा
कहिये ॥ ३ ॥ तेमा द्रव्यात्मा असंख्यात प्रदेशी ॥ बहिरात्मानि प्रणतिये परि

णम्योते वहिरात्मा ॥ एमज अंतरात्मा परमात्म पण कहिये १ एमज कषा यात्माते निश्चयव्यवहारे सर्वरिते बहिरात्माज कहिये ॥ २ ॥ योगात्मा निश्चयनये तो वहिरात्मा ॥ व्यवहारनये शुध्द योगते अंतरात्मा ॥ अशुध्द योगतेबहिरात्मा ॥ ३ ॥ उपयोगआत्मातेमा ज्ञानात्माना उपयोगमा ४ ज्ञानअतरात्मा ॥ केवलज्ञानपरमात्मा ॥ दर्शनआत्मामा ३ दर्शननो उपयोग शुध्द प्रणतिये अतरात्मा ॥ अशुध्दप्रणतिये वहिरात्मा ॥ केवलदर्शननो उपयोग ते परमात्मा ॥ ३ ॥ अज्ञाननो उपयोग ते बहिरात्मा ॥ ४ ॥ ज्ञानात्मामा ४ ज्ञान अंतरात्मा ॥ केवल ज्ञान परमात्मा ॥ ५ दर्शन आत्मामा ३ दर्शन शुध्दप्रणतिये अतरात्मा ॥ अशुध्द प्रणतिये बहिरात्मा ॥ केवल दर्शन ते परमात्मा ॥ ६ ॥ चारित्र आत्मामां ॥ ५ चारित्र क्षयोपशमनि परिणतिये अतरात्मा ॥ अने जथाख्यातचारित्र क्षायक केवली चारित्रनि परिणति

नि अपेक्षाये ॥ परमात्मा ॥ ७ वीर्यात्मामा ॥ बालवीर्यनि परिणति ते ॥ बहि
रात्मा ॥ बाल पन्डित वीर्यनी श्रावकनि शुध्परिणति ते अंतरात्मा ॥ अशुध्द
परिणति ते बहिरात्मा ॥ पंन्डित वीर्यक्षयोपशमपरिणतिनि अपेक्षाये छदमस्त
नुं पन्डित वीर्य अतरात्मा अने क्षायक केवली पन्डित वीर्यनि परिणतिनि अपे
क्षाये परमात्मा ॥ ८ ॥ ए आठ आत्मानो लेशमात्र अधिकारकह्यो ॥ हवे षट्
द्रव्य ॥ आत्मबोधनोविचार लेशमात्र निरुपण ॥ पण विस्तार रुचिये ॥ सात
नय चारप्रमाण चारनिक्षेप ॥ षट् उपक्रम नवअनुगम ॥ ओघनिष्पन ॥ नाम
निष्पन ॥ सूत्रालापकनिष्पन ॥ निक्षेपनिर्युक्ति ॥ स्याद्वादि ॥ असख्यप्रदेशी॥
अनंत नयात्मक वाणी सिध्धांतनि ॥ विस्ताररुचिनो वर्णव करतापारनपामिइ
पण सारभूत एतलुंजे असंख्यप्रदेशी अनत केवल ज्ञान ॥ अनंत केवल द
र्शन ॥ अनत स्वरुपस्थीरता रमण ॥ अनत क्षायकशक्ति ॥ अनत परमक्षमा

अनत परम मार्दव ॥ परमार्यव । परम सतोष । परम समता ॥ पर्म शीतली दसा॥ परम शाति ॥ परम दाति । पर्म चायक सम्यक्त ॥ परम चायक नाव ॥ परम शुध्द परिणामिक नावमयि ॥ शुध्द सत्तानि रासि । निरुपदि ॥ स्वतत्री । इछारोध निरासंसी ॥ नाह मम ॥ अरागी अद्वेषी अमोहि अविकारी ॥ सहजानंदि स्वरुपविलासी ॥ स्वरुपमोक्षकर्ता ॥ स्वरुपमोक्षनोक्ता ॥ स्वरुपतत्वरमणीय ॥ तत्वानंदि । तत्वविश्रामि ॥ स्वरुपस्थायि ॥ तत्वविलासी तत्वानुनवी ॥ अछेद अनेद ॥ अप्रतिहत अविनासी ॥ अजरअमर ॥ नि कलकी ॥ अगम्य अल क्ष अकल अगोचर अगाध ॥ सच्चिदानद पूर्णानद पूर्णब्रह्म ॥ आत्मद्रव्य अनतगुणी ॥ अनतपरयायमयि ॥ अनंतशुध्दात्मधर्ममयि ॥ आत्मसत्तानि स हहणाप्ररुपणास्पर्शनाकरवी ॥ एहवी शुध्दसत्ता ॥ केवल ज्ञानादि ॥ आत्मद्रव्य ने न माने ॥ तेहनी साध्य शुन्यसाधना ॥ क्रियापण जीम घृत अथवा

लुणविना रसवति न सोभे ॥ तिम सत्तायें केवलज्ञान न माने ॥ ते जीवपूर्व तेटली क्रीया करे ॥ द्रव्यज्ञाननो अभ्यासकरे ॥ पण जो केवलज्ञानज सत्ताएनथी ॥ ने वीजाद्रव्यतो जम्छे । तिवारे सुंप्रगट थसे ते माटे शुद्ध सत्ताप्रगटकरवी ॥ तेज कारज विनातो करणी सर्वेशुभाश्रव पुन्यफलनी दाताछे ॥ तेतो परभावछे अनत वारजीवेपाम्या ॥ तेपाम्यानु सु आश्चर्यछे ॥ ते माटे आचाराग नदीमोक्ष मार्गाध्ययन भगवति पन्नवणा अ नुयोगद्वारादि दशवैकालिक आठमाध्ययनादि ॥ सकल आगमनीशाखे ॥ आत्मार्थि मोक्षार्थि निर्जरार्थिनेतो, ॥ एकातहित ॥ पार्श्वमणीचिंतामणी रस कुंपि अमृत रस कुभ ॥ चित्रावेली कल्पवेली तथातरु ॥ सीद्धमत्रथी अधिक अनोपम ॥ सारसर्वज्ञाननुं तत्वएजे केवलज्ञान सत्ताए मानिने ॥शक्तिप्रमाणे शुद्ध व्यवहार क्रियाकरीने शुद्ध सत्ता प्रगटकरवि ॥ ए सर्वे सद्दहणाथी ॥ को

मिभेयुक्तिवालामीले ॥ सद्दहणासत्तानाप्रतिपत्ती ॥ पणनचलवुं ॥ फरीफरीने
जीवने आत्मद्रव्यनी शुद्ध केवलसत्तानी श्रद्धाथावी महादुर्लभछे ॥ ते माटे ज्ञा
नामृतमालीली ॥ सकलजंतुनीरक्षाकरी गुणीनागुणग्रामकरी ॥ आत्मानी निं
दाकरी ॥ सकलजीवने उपगारबुद्धिचिंतवी ॥ सर्व इर्ष्या कोइजीवना अवर्ण वा
दमात्रनो निषेधकरी ॥ सकल उपगारी पुरुषनो क्षणक्षण उपगारस्मरी ॥ स
रल स्वभावी उदासी भावेरहिने ॥ पूर्वे अनतजीव सत्तानेवर्या वरेछे ॥ आगमी
येकालेवरस्ये ॥ घणुंसुंकहिइ ॥ ए विचारणातो पोताना जीवने हाथछे॥ ए सिखा
मण प्रमाणकरे ॥ तेहनासकल कार्य सिद्धथाय ॥ इति षट्द्रव्य वीचार संपूर्ण॥
अथ रूपि अरूपीना बोल लिख्यते ॥ गाथा ॥ कम्मठ पावठाणाय ॥ मनवय
जोगाय कम्मदेहा॥एसाचउफासा ॥ घनतनवाय घनोदही ॥ १ ॥ उरालाय
चउदेहा ॥ पुग्गलथ्थिकाय दव्वलेसा ॥ तहकाय जोगोय ॥ नायव्वा अठ

फासा ॥ २ ॥ धम्मा धम्मागासा ॥ जीव अद्धापावठाणा वत्तिय ॥ दिठिपज्जुव
णा ॥ उवज्ञगभावलेसाय ॥ ३ ॥ उग्गहासन्नाबुद्धि ॥ चउचउ एगेगसठीय ॥
एए सव्वन्नणीया ॥ अरु वितथ्थनायवा ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ कर्म ॥ ८ ॥ पाप ॥१८॥
मनजोग ॥ १ ॥ वचनजोग ॥ १ ॥ कार्मणशरिर ॥ १ ॥ ए ॥ २९ ॥ बोलमां ४
स्पर्श लाभे ॥ १ ॥ घनवाय ॥ १ ॥ तनवाय ॥ १ ॥ घनोदधि ॥ १ ॥ उदारिक
॥ १ ॥ वैक्रेय ॥ १ ॥ आहारक ॥ १ ॥ तेजस । ए ॥ ४ ॥ सरिर ॥ पुद्गलास्ति
काय ॥ १ ॥ द्रव्यलेशा ॥ ६ ॥ कायजोग ॥ १ ॥ ए ॥ १५ ॥ बोलमा ॥ ८ ॥
स्पर्श लाभे ॥ २ ॥ ए ४४ बोलरूपिना जाणवा ॥ धर्मास्तिकाय ॥ १ ॥ अधर्मा
स्तिकाय ॥ १ ॥ आकाशास्तिकाय ॥ १ ॥ जीव ॥ १ ॥ काल ॥ १ ॥ अढार
पापनि निवृत्ति ॥ १८ ॥ दृष्टि ॥ ३ ॥ उगण ॥ १ ॥ कर्म ॥ १ ॥ बल ॥ १ ॥
वीर्य ॥ १ ॥ पुरुपाकारप्राक्रम ॥ १ ॥ उपयोग ॥ १२ ॥ भावलेश्या ॥ ६ ॥ अ

वग्रह ॥ १ ॥ इहा ॥ १ अवाय ॥ १ ॥ धारणा ॥ १ ॥ सज्ञा ॥ ४ ॥ उत्पातकि ॥ १ ॥ विणयकि ॥ १ ॥ कर्मकि ॥ १ ॥ पारिणामिकि॥ए ॥४॥ बुद्धि।ए॥६१॥ बोल अरूपीना जाणवा ॥ इति रूपी अरूपीना बोल समाप्त ॥ ॥ ॥

॥ॐनम ॥ अथ भव्य जीवना सुख बोधने अर्थे ३ प्रकारना अंगुल तथा ३ प्रकारना पल्योपमनुमान सूत्र अनुयोगद्वारथि लीखियेछे॥तेमा प्रथम ३ प्रकारना अंगुलना नाम ॥ आत्मअंगुल ॥ १ ॥ उत्सेधांगुल ॥ २ ॥ प्रमाणांगुल ॥ ३ ॥ हवे आत्मअंगुलनु मान कहेछे ॥ भरतादि १५ क्षेत्रछे॥तिहा जे काले जे आरे जे मनुष्य होय ॥ ते मनुष्यनुं ते काले ते आराने विषे पोतपोताने १२ अंगुले १ मुखथाय ॥ अने ए मुखे एक पुरुषनु उंचपणानु मान थाय ॥ एटले १२ नवा अठोत्तरसो १०८ आत्मअंगुलनो पुरुष उंचो होय ॥ ते पुरुषने प्रमाणोपेत कहिये ॥ १ ॥ हवे मान युक्त पुरुष ते केहने कहिये ॥ पुरुष प्र

माणे उम्जिलनिकुम्भि होय ॥ तेने जलेकरि परिपूर्ण नरिये ॥ तेमांहि पुरुष
वेशे ॥ तिवारे एक डोण प्रमाणे जल कुंम्भादिथि बाहिर निकले ॥ तथा
एक डोण प्रमाण जले करि कुंम्भिणि होय ते कुम्भादि ते पुरुष वेशे तिवारे
परिपूर्ण जलेनराय ॥ तिवारे ते मानोपेत पुरुष कहिये ॥ हवे डोण ते केवडो
होय ते कहेछे ॥ बेअसलीये १ पसली थाय ॥ बेपसलीये १ सइथाय ॥
च्यारसइये १ कुडवथाय ॥ च्यारकुडवे १ पाथोथाय ॥ च्यारपाथे १ आढो
थाय ॥ च्यारआढे १ डोण थाय ॥ ए डोणनु मान कह्यु ॥ ए रीते मानो पेत
पुरुष कहिये ॥ २ ॥ हवे उन्मान युक्त पुरुषकेहने कहिये ॥ जे पुरुष तोल्यो
थको अर्द्ध नार थाय तेने उन्मानयुक्त पुरुप कहिये ॥ अर्द्धनारनुं मान
कहेछे ॥ एक हजारने पचाशपले अर्द्धनार थाय ॥ ए अर्द्धनारनु मान कह्यु
॥ ३ ॥ हवे ए ॥ ३ ॥ प्रमाण मान उन्मान युक्त लक्षणसाथियादिक ॥ व्यज

न मसीतलादिक ॥ गुण ते क्षमा दानादिक सहित जे पुरुष होय ते उत्तम पुरुष जाणवो ॥ हवे उत्तम पुरुष १०८ आत्मअंगुलनो उंचो होय ॥ १ ॥ मध्यम पुरुष १०४ आत्म अंगुलनो उंचो होय ॥ २ ॥ अधम पुरुष ९६ आत्म अंगुलनो उंचो होय ॥ ३ ॥ हवे जे पुरुष १०८ आत्म अंगुलथि न्युनाधिक होय ॥ स्वरआदेयवचन १ सत्वधीर्य ॥ २ ॥ सारतेरूपादि ॥ ए ३ गुणे वर्जित होयते परनोदास किंकर थाय ॥ एहवा ६ आत्मअंगुले १ पगना मध्यभागनु पहोल पणुं थाय ॥ बेपगे १ विहथि।वेंत थाय ॥ बेविहथि। वेंते। ए १ हाथ थाय ॥ बेहाथे १ कुक्षिथाय ॥ बेकुक्षिये अथवा ४ हाथे १ धनुष थाय ॥ बेहजार धनुषे १ गाउथाय ॥ च्यारगाउ ए १ जोजन थाय ॥ जे काले जे आरे जे मनुष्यनु आत्मअंगुल होय ते आत्मअंगुले ते ते वखतना ॥ नगर ॥ गाम ॥ वन ॥ कुवा ॥ तलाव ॥ वाव ॥ गढ ॥ पोल ॥ कोठा ॥

यान ॥ रथ ॥ गाडादिक ७३ बोलनामानमव्याछे ॥ १ ॥ हवे उत्सेधागुलनुं
मान कहेछे ॥ अनता सुक्ष्मपरमाणुआनेलाकरिये ॥ तिवारे १ व्यवहारिपर
माणु थाय ॥ तथा जालीनेविषे रह्या सूर्यना किरण तेमा रहिजे रजउडती
देखायछे ॥ ते रजनो अनतमो भाग तेने व्यवहारिपरमाणु कहिये ॥ अन्य
मति रजनातेत्रिशमाभागने परमाणु कहेछे ॥ ते व्यवहारि परमाणु ॥ शस्त्रे
करि तरवारनी तथा छरपलानिधारायेकरि पण छेदाय भेदाय नहि ॥ अग्नि
माहि सोंसरो निकलिजाय पण बलेनहि ॥ दाझेनहि ॥ तथा पुष्कर सवर्त्त
महामेहमांहि चाल्योजाय पण पलडेभिजाय नहि ॥ तथा गगामहानदीनो
प्रवाह उचोचुलहिमवत पर्वतथिपडेछे ते प्रवाहसाहमो चाल्योजाय पण
खलायनहि ॥ घातपामेनहि ॥ तथा पाणिना आवर्त्तन तथा बिंदुयामाहि रहे
पण तिहासम्गिलिने पाणि नथइजाय ॥ ते अतितिखे शस्त्रे करिने देवतानी

शक्तिये छेदता भेदता एकखम्नो बिजोखंडन थाय ॥ तेने तत्वज्ञात। ५१
माणु कहेछे ॥ एहवा अनंता व्यवहारि परमाणु एकठा मिलेतिवारे १ उष्ण
सन्नियो थाय ॥ आठ उष्णसन्नियें १ सणसन्नियो थाय ॥ आठ सणसन्नियें १
उर्ध्वरेणुथाय ॥ आठउर्ध्वरेणुये १ त्रशरेणुते बेंद्रीयादिक त्रशजीवने चालता रज
उम्हतेथाय ॥ आठत्रशरेणुये १ रथरेणुते रथादिकहिंडता रजउडेतेथाय ॥ आठ
रथरेणुए १ देवकुरु उत्तरकुरुना जुगलीयामनुष्यना वालाग्रनुं जाम्पणुं
थाय ॥ आठदेव कुरु उत्तर कुरुनावालाग्रे १ हरिवास रमकवासक्षेत्रना जुग
लियाना वालाग्रनु जाडपणुथाय ॥ आठहरिवास रमकवासना वालाग्रे १ हे
मवय एरणवयक्षेत्रनाजुगलियाना वालाग्रनुं जाडपणुंथाय ॥ आठहेमवयएर
णवयना वालाग्रे १ पूर्वपश्चिम महाविदेहना मनुष्यनावालाग्रनु जाम्पणुंथाय ॥
आठ पूर्वपश्चिम महाविदेहनावालाग्रे १ भरत इरवतना मनुष्यनावालाग्रनु

जाडपणुथाय ॥ एहवा ८ वालाग्रे १ लिखथाय ॥ आठलिखे १ जुथाय ॥
आठजुये १ जवमध्यथाय ॥ आठजवमधे १ अंगुलथाय ॥ ठअंगुले १ पग
थाय ॥ १२ अंगुले १ वेतथाय ॥ २४ अंगुले १ हाथथाय ॥ ४८ अंगुले १
कुक्षिथाय ॥ ए६ अंगुले १ धनूषथाय ॥ २ हजारधनूषे १ गाउथाय ॥ ४
गाउए १ जोजनथाय ॥ एउत्सेधांगुले २४ दंम्कनी अवघेणामवीठे ॥ हवे प्र
माणांगुलनुमानकहेठे॥भरतादिक चक्रवतीनुं कागणिरत्नहोय॥ते ८ सोनइया
भारनेतोलेठे ॥ सोनइयानुं तोलकहेठे ॥ ४ मधुरत्रिफले ॥ १ स्वेतसरसवथा
य ॥ १६ सरसवे १ अरूदथाय ॥ २ अरूदे १ गुंजाथाय ॥ ५ गुंजाये १ मासो
थाय ॥ १६ मासे १ सोनइयोथाय ॥ एहवा ८ सोनइयाभारनु कागणिरत्न
होय ॥ तेनेठ तला ॥ ८ खुणा ॥ १२ हांशठे ॥ सोनीनी अदिरणने संठाणेठे ॥
ते कागणिरत्ननी एकेकीहांश उत्सेधांगुलनि पहोलिठे ॥ अने जे उत्सेधांगुल

ते समण जगवत महावीरनुं अर्द्धअंगुलथाय ॥ तेने हजारगुणुकरिये॥तिवारे १ प्रमाणांगुलथाय ॥ एटले महावीरस्वामीना पाचसे आत्मअंगुले १ प्रमा णांगुलथाय ॥ एहवा ६ प्रमाणांगुले १ पगथाय ॥ १२ अंगुले १ वेतथाय ॥ २४ अंगुले १ हाथथाय ॥ ४८ अंगुले १ कुक्षिथाय ॥ ए६ अंगुले १ धनूष थाय ॥ २ हजारधनूषे १ गाउथाय ॥ ४ गाउये १ जोजनथाय ॥ ए प्रमाणा गुले। पृथ्वी ॥ पर्वत ॥ विमान ॥ नरकावासा ॥ द्विप ॥ समुद्र ॥ नरक ॥ देव लोक ॥ लोक ॥ अलोक ॥ शास्वती जमीनरत्न प्रभादिक २८ बोलनु तथा द्विपसमुद्रादि ॥ २८ बोलनु ॥ लांबपणुं ॥ पहोलपणु ॥ उंचपणु ॥ ऊरूपणु ॥ परिधिप्रमुखनामानमव्याडे ॥३॥ए३ प्रकारना अंगुलकह्याते प्रत्येक२ना त्रण नेद ॥ श्रेणिअंगुल ॥ १ ॥ प्रतरांगुल ॥ २ ॥ घनांगुल ॥ ३ ॥ तीहा असत्क टपनाये श्रेणिते असख्याता जोजनकोमाकोडि प्रमाणेलावी ॥ अने एक आ

बादर ॥ २ ॥ हवे प्रथम बादर उधारपल्योपमनु स्वरूप कहेछे ॥ एक जोज
ननो उत्सेधांगुले लांबोपहोलोने उंचोपहवो १ पालोकल्पिये ॥ तेनि त्रिगुणी
झाझेरी परिधिहोय ॥ ते पालोदेवकुरु उत्तरकुरुना जुगलीयानामस्तकना
केश ते एक दिनथिमांडिने ७ दिननाउग्यावालाग्रेकरि भरिये ॥ ते एहवोगसी
भरियेके ॥ अग्निमांहि बलेनहि ॥ वायरेकरीतेमांथी १ रजउडेनहि ॥ सडेनहि
पोलारना अभावथि ॥ विध्वंशेनहि ॥ दुर्गंधथायनहि ॥ चक्रवर्तीनुं सैन्य उपर
चाले तो पण नमेझोलेनहि ॥ गंगानदीनो प्रवाह उपरचाले तो पण पाणि
मांहि भेदायनहि ॥ एहवोगसीने पालोभरिये ॥ पछिते पालामाथि समये स
मये एक एक वालाग्रकाढिये ॥ इमकाढता जेटलेकालेपालोगलोथाय ॥ बाकी
एक रजरहेनहि ॥ तेटला कालने बादर उधार पल्योपमकहिये ॥ ते पल्यो
पम संख्यात समयनो जाणवो ॥ एहवा दशकोडाकोडि पल्योपमे १ बादर

उध्दार सागरोपमथाय ॥ ए सागरोपमनुं काइ प्रयोजनथि ॥ केवल प्ररूपणा मात्रछे ॥ ए वादर उध्दार पल्योपम ॥ १ हवे सुक्ष्म उध्दार पल्योपमनु मान कहेछे ॥ जीम एक जोजननो पालो कल्पिये ते पूर्ववत् ॥ ते पालामाहि देव कुरु उत्तर कुरुना जुगलीयानामाथाना केश ते एकदीनना जावसात दीनना उग्यावालाग्रलेइये ॥ ते एकेका वालाग्रना असंख्याता खंडकरिये ॥ ते खंड केवलज्ञानादृष्टनाथाय ॥ चक्षु इंद्रियनि अवघेणाथि असंख्यातमे भागे अने ना हना सुक्ष्म वनस्पतिना जीवना शरिरनी अवघेणाथि असंख्यात गुणामहोटा॥ अने जेवडु एक वादर पृथ्वी कायना जीवनु शरिर तेवडा ते वालाग्रना खंड नाहनाथाय ॥ ते वालाग्रनाखंड अग्निये वलेनहि ॥ वायरेउडेनहि पूर्ववत् ॥ पछिते वालाग्रनेखंडे करिने ते पालोठासी भरिये पूर्ववत् पछी ते पालामां हिथि ॥ समये समये एकेकोवालाग्रनोखंड काढिये ॥ इम काढता जेटले काले

ते पालोखालीथाय ॥ तेटला कालने सुक्ष्म उध्दार पल्योपम कहिये ॥ ए प
ल्योपम असंख्याता समयनोथाय एहवा दश कोडाकोडि पल्योपमे १ सुक्ष्म
उध्दार सागरोपमथाय ॥ ए सागरोपमे द्विप समुद्रनुं मान मव्युछे ॥ अढि
उध्दार सागरोपमना जेटला समयथाय तेटला द्विपसमुद्र त्रिछ लोकमांछे ॥
जंबुद्विप १ एकलाष जोजननोलांबोने पहोलो इम छम बमणो लवण समुद्र
बेलाख जोजननो ॥ धातकिखंड ४ लाखजोजननो ॥ इमछम बमणा असं
ख्याता द्विप समुद्र जाणवा ॥ ए सुक्ष्म उध्दार पल्योपम ॥ २ ॥ १ ॥ हवे अ
ध्दापल्योपमनु स्वरूप कहेछे तेना २ भेद ॥ बादर ॥ १ ॥ सुक्ष्म ॥ २ ॥ तेमा
बादर अध्दापल्योपम केहने कहिये ॥ एक जोजननो लांबोपहोलोने उंचो
रेहाशोसरिषो पूर्ववत् पालोकलपीये पछी पूर्ववत् देवकुरु उत्तरकुरुना जुग
लीया मनुष्यना वालाग्रेकरी पालोछसी भरिये ॥ पछी सोसोवर्षे एकेकोवाला

ग्रकाढिये ॥ इम काढता जेटले काले ते पालोगलोथाय ॥ तेटला कालने बादर ग्रध्धापल्योपम कहिये ॥ ए पल्यसंख्याताकोडिवर्षेथाय ॥ एहवा दश कोडाकोडि बादर ग्रध्धापल्योपमे १ बादर ग्रध्धासागरोपमथाय ॥ ए सागरोपमनुं काइ प्रयोजननथि ॥ केवलप्ररूपणामात्रछे ॥ २ ॥ १ ॥ हवे सुक्ष्म ग्रध्धापल्योपमनुं स्वरूप कहेछे ॥ एक जोजननो लांबो पहोलोने उंडोपालो पूर्ववत् कल्पिये ॥ तेहमा पूर्ववत् देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्रना जुगलीयानावालाग्रना ग्रसंख्याता खंडकरिभरिये ॥ पछी ते पालामाथि सोसोवर्षे एकेकिरज काढिये ॥ जेटले काले ते पालोखालिथाय ॥ तेटला कालने सुक्ष्म ग्रध्धापल्योपम कहिये ॥ एहवा दश कोडाकोडि पल्योपमे १ सुक्ष्म ग्रध्धासागरोपमथाय ए सागरोपमे ॥ नारकी ॥ तिर्यंच ॥ मनुष्य ॥ देवता ॥ ए ४ गतिना आयुष मव्याछे ॥ २ ॥ २ ॥ हवे क्षेत्रपल्योपम कहेछे ॥ क्षेत्रपल्योपमना २ भेद ॥

वादर ॥ १ ॥ सुक्ष्म ॥ २ ॥ तेमा वादर चेत्रपल्योपम केहने कहिये ॥ एक जो जननो लांबोपहोलोने ऊंचो पूर्ववत् पालोकलपिये ॥ तेमा पूर्ववत देवकुरु उत्तरकुरु चेत्रना जुगलीयाना माथाना वालाग्रेभरिये ॥ पछी ते पालामाहिला वालाग्रनें फरस्या आकाश प्रदेशने समये समये अपहरता जेटले काले ते पालोखालिथाय ॥ तेटला कालने ॥ वादर चेत्र पल्योपम कहिये ॥ ए पालोखालिथाता असस्यांति अवसर्पिणी उत्सर्पिणी वहिजाय ॥ एहवा दश कोडाकोडि पल्योपमे १ वादर चेत्र सागरोपमथाय ॥ ए सागरोपमनो काइ प्रयोजननथि ॥ केवलप्ररूपणामात्रछे ॥ तथा मतातरेजीव द्रव्यना परिणाम मव्याछे ॥ ३ ॥ १ ॥ हवे सुक्ष्म चेत्रपल्योपमनु स्वरूप कहेछे ॥ एक जोजन नोलांवो पहोलोनेउंचो पूर्ववत् पालोकलपिये ॥ तेमाही पूर्ववत् देवकुरु उत्तर कुरु चेत्रना जुगलियानावालाग्रना असण्याता खंड करिभरिये ॥ पछि ते

पालामांदिलावालाग्रने फरस्या आकाश प्रदेश तथा अण फरस्या आका
श प्रदेशछे ते फरस्या अणफरस्या आकाश प्रदेशने समये समये अप
हरिये ॥ जेटले काले पालोखालिथाय ॥ तेटला कालने १ सुक्ष्म क्षेत्र पल्यो
पम कहिये ॥ एहवा दशकोडाकोडि सुक्ष्म क्षेत्र पल्योपमे १ सुक्ष्म क्षेत्र साग
रोपमथाय ॥ ए सागरोपमे द्रष्टिवाद सूत्रना भाव मल्याछे ॥३॥२॥ए २ प्रकारना
अंगुलतथा ३ प्रकारना पल्योपमनु मानकह्यु ॥ इति प्रमाणबोध समाप्त ॥
अथ सिद्धांतना मूल श्लोकनुं मान तथा बीजा टीका चूर्णिभाष्यनु मान
लिख्युं छे ॥ आचारांगमूलश्लोक ॥ २५०० ॥ आचा० निर्युक्ति ॥ ४५० ॥
आचा० चूर्णि ॥ ८३०० ॥ आचा० वृत्ति० ॥ १२००० ॥ १ ॥ सूयगडांगमूल
॥ २१०० ॥ तेनि निर्युक्ति ॥ २५० ॥ तेनि चूर्णि ॥ १०००० ॥ तेनि वृत्ति
॥ १२८५० ॥ २ ॥ ठाणांगसूत्रमूल ॥ ३७७० ॥ तेनि वृत्ति ॥ १५२५० ॥ ३ ॥

समवायांगमूल ॥ १६६७ ॥ तेनि वृत्ति ॥ ३७७६ ॥ तेनि चूर्णि ॥ ४०० ॥ ४ ॥
भगवतीसूत्रमूल ॥ १५७७२ ॥ तेनि चूर्णि ॥ ४००० ॥ तेनि वृत्ति ॥ १८६१६ ॥
॥ ५ ॥ ज्ञाताधर्मकथामूल ॥ ५५०० ॥ तेनि वृत्ति ॥ ४२५२ ॥ ६ ॥ उपासक
दशामूल ॥ ८१२ ॥ अंतगडदशामूल ॥ ७९० ॥ अनुत्तरोववाइमूल ॥ १९२ ॥
ए ३ सूत्रनि वृत्ति ॥ १३०० ॥ ९ ॥ प्रश्नव्याकरणमूल ॥ १२५० ॥ तेनि वृत्ति
॥ ४६०० ॥ १० ॥ विपाकमूल ॥ १२१६ ॥ तेनिवृत्ति ॥ ९०० ॥ ११ ॥ ए ११
अंगनुं मान कह्युं ॥ हवे १२ उपांगनुं मान कहेछे ॥ उववाइमूल ॥ ११६७ ॥ तेनि
वृत्ति ॥ ३१२५ ॥ १ ॥ रायपसेणीमूल ॥ २०७८ ॥ तेनि वृत्ति ॥ ३७०० ॥ २ ॥
जिवाभिगममूल ॥ ४७०० ॥ तेनि चूर्णि ॥ १५०० ॥ तेनि लघुवृत्ति ॥ १००० ॥
तेनि मलयवृत्ति ॥ १३००० ॥ ३ ॥ पन्नवणामूल ॥ ७७८५ ॥ तेनि लघुवृत्ति
॥ ३७२८ ॥ तेनि वृहद्वृत्ति ॥ १६००० ॥ ४ ॥ जम्बुद्विपप्रज्ञप्तिमूल ॥ ४१४६ ॥

तेनि चूर्णि ॥ १८६० ॥ तेनि वृत्ति ॥ १२००० ॥ ५ ॥ चंद्रप्रज्ञप्तिमूल ॥२२००॥
तेनि वृत्ति ॥ ९४०० ॥६॥ सूर्यप्रज्ञप्तिमूल ॥२३००॥ तेनि लघुवृत्ति ॥१०००॥
तेनि वृहद्वृत्ति ॥ ९१३० ॥ ७ ॥ निरयावलिका ॥ ८ ॥ कप्पिया ॥ ९ ॥ पु
प्फिया ॥ १० ॥ पुप्फचूलिया ॥ ११ ॥ विण्हिदसा ॥ १२ ॥ ए ५ नि मूल
संख्या ॥ ११०९ ॥ ए ५ निवृत्ति ॥ १८०९ ॥ १२ ॥ ए १२ उपांगनुं मान कह्यूं ॥
हवे ४ छेदनु मान कहेछे ॥ व्यवहारमूल ॥ ६०० ॥ तेनु भाष्य ॥ ६००० ॥
तेनि चूर्णि ॥ १०३६१ ॥ तेनि वृत्ति ॥ ३३६२५ ॥ १ ॥ बृहत्कल्पमूल ॥४७३
तेनु लघु भाष्य ॥ ८००० ॥ तेनु वृहद्भाष्य ॥ १३००० ॥ तेनि चूर्णि ॥ १४०००
तेनि वृत्ति ॥ ४२००० ॥ २ ॥ निशिथमूल ॥ ८१५ ॥ तेनुं भाष्य ॥ ७४०० ॥
तेनु वृहद्भाष्य ॥ १२००० ॥ तेनि चूर्णि ॥ २८००० ॥ ३ ॥ दशाश्रुतस्कंधमूल
॥ १८३० ॥ तेनि निर्युक्ति ॥ १६८ ॥ तेनि चूर्णि ॥ २२४५ ॥ तेनि वृत्ति ब्रह्म

कृत ॥ २५०० ॥ ४ ॥ ए ४ छेदनुं मान कह्युं ॥ पचकल्पमूल ॥ ११३३ ॥ तेनुं भाष्य ॥ ३१२५ ॥ तेनि चूर्णि ॥ ३१३१ ॥ १ ॥ जीतकल्पमूल ॥ २०५ ॥ तेनुं भाष्य ॥ ३१२५ ॥ तेनि चूर्णि ॥ १००० ॥ तेनि वृत्ति ॥ १७०० ॥ तेनुं टिपण ॥१२००॥२॥ केटलाक ए २ ने छेदसूत्र कहेछे पण ए २ नुं नाम नंदीसूत्रमा नथि ॥ एव ६ छेद ॥ हवे ४ मूलसूत्रनुं मान कहेछे ॥ उत्तराध्ययनमूल ॥ २०००॥ तेनि निर्युक्ति ॥ ७०० ॥ तेनि चूर्णि ॥ ६००० ॥ तेनि लघुवृत्ति ॥ १२००० ॥ तेनि बृहद्वृत्ति ॥ १८००० ॥ १ ॥ दशविकालिकमूल ॥ ७०० ॥ तेनि निर्युक्ति ॥ ४५० ॥ तेनि लघुवृत्ति ॥ ३५०० ॥ तेनि चूर्णि ॥ ७०० ॥ तेनि बृहद्वृत्ति ॥ ७००० ॥ २ ॥ नदीमूल ॥ ७०० ॥ तेनि चूर्णि ॥ २००० ॥ तेनि लघुवृत्ति ॥ २३१२ ॥ तेनि बृहद्वृत्ति ॥ ७३५३ ॥ ३ ॥ अनुयोगद्वारमूल ॥ १८९९ ॥ तेनि चूर्णि ॥ ३००५ ॥ तेनि लघुवृत्ति ॥ ३५०० ॥ तेनि बृहद्वृत्ति ॥ ७००० ॥

॥ ४ ॥ ए ४ मूलसूत्रनु मान कह्यु ॥ पाक्षिकसूत्रमूल ॥ ३०० ॥ तेनि वृत्ति
॥ ३००० ॥ १ ॥ पिंमनिर्युक्तिमूल ॥ ७०० ॥ तेनि लघुवृत्ति ॥ ४००० ॥ तेनि
बृहद्वृत्ति ॥ ७००० ॥ उघनिर्युक्तिमूल ॥ १४०० ॥ तेनुं भाष्य ॥ ३०० ॥
तेनि चुर्णि ॥ ए००० ॥ तेनि वृत्ति ॥ ७००० ॥ आवश्यकमूल ॥ १०० ॥ तेनि
निर्युक्ति ॥ ३००० ॥ तेनि चुर्णि ॥ १८००० ॥ तेनुं टिपण ॥ ४६०० ॥ तेनि बृ
हद्वृत्ति ॥ २२००० ॥ तिलकवृत्ति ॥ १२००० ॥ विशेषावस्यकमूल ॥५०००॥
तेनि लघुवृत्ति ॥ १४००० ॥ तेनि बृहद्वृत्ति ॥ २८००० ॥ पर्युषणाकल्प ॥
॥ १२६० ॥ तेनि चुर्णि ॥ ७०० ॥ तेनि निर्युक्ति ॥ ६७५० ॥ तेनु टिपण ॥
॥ ७०० ॥ तेनि सदेहवि० ॥ ३०५१ ॥ महानिशिथमूल ॥ लघुवाचना ॥
॥ ३५०० ॥ मध्यमवाचना ॥ ४२०० ॥ बृहद्वाचना ॥ ४५०० ॥ चउसरणपइ
नो मूलगाथा ६३ ॥ तेनि अवचुरि ॥ २२५ ॥ आउरपच्चखाणमूल ॥ ७० ॥

वृत्ति ॥ ९०० ॥ भत्तपच्चखाणमूल ॥ १७२ ॥ संथारकसुत्त ॥ १२२ ट ॥ तंडुल वेयालियमूल ॥ ४०० ॥ चंदावेधकमूल ॥ १७३ ॥ देवेंद्रस्तवमूल ॥ ३०३ ॥ गणिविद्यामूल ॥ ८५ ॥ महापच्चखाणमूल ॥ १४३ ॥ वीरस्तवमूल ॥ ४५ ॥ अजीवकल्पमूल ॥ ४५ ॥ गछाचारमूल ॥ १३८ ॥ मरणविधिमूल ॥ ६५९ ॥ सिद्धप्राभृतमूल ॥ १२१ ॥ तिथोगालियमूल ॥ १२५३ ॥ आराधनपताका ॥ ९९३ ॥ दीवसागर पन्नत्तिसगहणीमूल ॥२२३॥ ज्योतिष्करंडक ॥ १८५० ॥ अंगविद्या ॥ ९००० ॥ ऋषिभाषित सूत्र अध्ययन ४५ मूल ॥ ६०० ॥ इति सूत्रादिश्लोकसंख्या ॥ अथनंदी सूत्रमा ७२ सूत्रना नाम कह्याछे ते सूत्र ३ प्रकारना छे ॥ कालिक ॥१॥ उत्कालिक ॥ २ ॥ तद्व्यतिरिक्त ॥ ३ ॥ ए ३ भेद॥ तेमा प्रथम कालिक सूत्रना नाम कहेछे ॥ आचारंग ॥ १ ॥ सुयगडांग ॥ २ ॥ ठाणांग ॥ ३ ॥ समवायंग ॥ ४ ॥ भगवती ॥ ५ ॥ ज्ञाता ॥ ६ ॥ उपासकदशा

॥ ७ अतगडदशा ॥ ८ ॥ अनुत्तरोववाइ ॥ ९ ॥ प्रश्नव्याकरण ॥ १० ॥ वि
पाक ॥ ११ ॥ उत्तराध्ययन ॥ १२ ॥ दशाकल्प ॥ १३ ॥ ववहार ॥ १४ ॥ नि
शिथ ॥ १५ ॥ महानिशिथ ॥ १६ ॥ ऋषिभाषित ॥ १७ ॥ जंबुद्विपप्रज्ञप्ति ॥
॥ १८ ॥ द्विपसागरप्रज्ञप्ति ॥ १९ ॥ चंद्रप्रज्ञप्ति ॥ २० ॥ खुड्डियाविमाणप
विभत्ति ॥ २१ ॥ महल्लियाविमाणपविभत्ति ॥ २२ ॥ अंगचूलिया ॥ २३ ॥
वग्गचूलिया ॥ २४ ॥ विवाहचूलिया ॥ २५ ॥ अरुणोववाए ॥ २६ ॥ वरुणोव
वाए ॥ २७ ॥ गरुडोववाए ॥ २८ ॥ धरणोववाए ॥ २९ ॥ वेसमणोववाए ॥
॥ ३० ॥ वेलंधरोववाए ॥ ३१ ॥ देविंदोववाए ॥ ३२ ॥ उठाणसुए ॥ ३३ ॥
समुठाणसुए ॥ ३४ ॥ नागपरियावलियाउ ॥ ३५ ॥ निरयावलियाउ ॥ ३६ ॥
कप्पियाउ ॥ ३७ ॥ कप्पवडंसियाउ ॥ ३८ ॥ पुप्फियाउ ॥ ३९ ॥ पुप्फचूलियाउ
॥ ४० ॥ विण्हिदसाउ ॥ ४१ ॥ ए ४१ कालिक सूत्र रात्रि तथा दिवशने पहि

ले तथा ठेले पहोरे वाचवा जणवा सझायकरवीशेष ४ पहोर सझाय नकर वि हवे उत्कालिक सूत्रना नाम कहेछे ॥ दशविकालिक ॥ १ ॥ कप्पियाकप्पिय ॥ २ ॥ चूलकप्पसुयं ॥ ३ ॥ महाकप्पसुयं ॥ ४ ॥ उववाइय ॥ ५ ॥ रायपसेणि॥ ॥ ६ ॥ जिवाभिगम ॥ ७ ॥ पणवणा ॥ ८ ॥ महापणवणा ॥ ९ ॥ पम्मायपमाय ॥ १० ॥ नदी ॥ ११ ॥ अनुयोगद्वार ॥ १२ ॥ देवेंद्रस्तव ॥ १३ ॥ तंडुलवेयालिय ॥ १४ ॥ चंदगविझयं ॥ १५ ॥ सूरप्रज्ञप्ति ॥ १६ ॥ पोरिसीमंडल ॥ १७ ॥ मन्डलप्रवेश ॥ १८ ॥ विद्याचारणविणिछ्ज ॥ १९ गणिविद्या ॥ २० ॥ झाणविभत्ति ॥ २१ ॥ मरणविभत्ति ॥ २२ ॥ आयविसोहि ॥२३॥ वियरायसुय ॥ २४ ॥ सलेहणासूत्र ॥ २५ ॥ विहारकप्पो ॥ २६ ॥ चरणवीसोहि ॥ २७ ॥ आउरपच्चखाण ॥ २८ ॥ महापच्चखाण ॥ २९ दृष्टिवाद सूत्र ॥ ३० ॥ ए ३० उत्कालिक सूत्र ते ४ अकाल तथा असझाय वर्जिने

आठे पहोर वाचवानणवा सझाय करवी ॥ एक आवस्यक तद्यतिरिक्तवेथि न्यारुं ए ७२ सूत्रना नाम कह्या आज वर्त्तमानकाले केटला सूत्र नथि ते निविगत ॥ पाक्षिक सूत्रमा उत्कालिक २८ ॥ ने कालिक ३६ सूत्र कह्याछे ॥ तेमा १५ उत्कालिकने ॥ २१ कालिक सूत्र हमणा नथि ॥ उत्कालिक १५ ना नाम ॥ कप्पिया कप्पियं ॥ १ ॥ चुलकप्पसुय ॥२॥ महाकप्पसुय ॥ ३ ॥ महापन्नवणा ॥ ४ ॥ पमायपमायं ॥ ५ ॥ पोरसिमन्डल ॥ ६ ॥ मंडलपवेसो ॥ ७ ॥ विद्याचारणविणिछ्ड ॥ ८ ॥ झाणविभत्ति ॥ ए ॥ मरणविभत्ति ॥ १० ॥ आयवीसोही ॥११॥ सलेहणासुय ॥१२॥ वियरायसुय॥१३॥ विहारकप्पो ॥१४॥ चरणविहि ॥१५॥ ए १५ नथि ॥ हवे कालिक २१ ना नाम कहेछे ॥ खुडिया विमाण विभत्ति ॥ १ ॥ महल्लियाविमाणविभत्ति ॥ २ ॥ अंगचूलिया ॥ ३ वगचूलिया ॥ ४ ॥ विवाहचूलिया ॥ ५ ॥ अरुणोववाए ॥ ६ ॥ वरुणोववा

ए ॥ ७ ॥ गरुलोववाए ॥ ८ ॥ धरणोववाए ॥ ए ॥ वेसमणोववाए ॥ १० ॥ वेलंधरोववाए ॥ ११ ॥ देविंदोववाए ॥ १२ ॥ उठाणसुए ॥ १३ ॥ समुठाणसुए ॥ १४ ॥ नागपरियावलियाणं ॥ १५ ॥ कप्पियाकप्पियाणं ॥ १६ ॥ आसिविसन्नावणाणं ॥ १७ ॥ दिठिविसन्नावणाणं ॥१८॥ चारणन्नावणाण ॥ १ए ॥ महासुमिणन्नावणाण ॥ २० ॥ तेयग्गिनिसग्गाणं ॥ २१ ॥ ए २१ नथि ॥ अगप्रविष्टमा १ दृष्टिवाद सूत्र ते पण नथि ॥ सर्वेमिलिने ३६ सूत्र हालनाकालमा नथि पाक्षिक सूत्रनिवृत्तिमां उत्कालिक २८ सूत्रना नाम नि व्याख्याना अंतमा कह्युंछे के ए २८ अध्ययन यथार्थ कह्यावलिए उपलक्षण मात्र छे स्यामाटे के हालमा एटला उत्कालिक नथि ॥ वलीएज सूत्र निवृत्तिमा कालिक ३६ सूत्रकह्या छे तेना नामनि व्याख्याने अते कह्युं छे के ए ३६ अध्ययनउपलक्षण (उजखावारूप) भूत छे स्यामाटे के हालमा ए

टला कालिकसूत्र नथि ॥ आ सूत्रनि टिकाउपरथि पूर्वे कह्या ते सूत्र हालमा नथि एम सिद्ध थाय छे ॥ हालमा ए ३६ माहिलाकेटलाक ए नामना सूत्र वर्त्ते छे ते आधुनिककृत जणाय छे विशेष तो ज्ञानि जाणे अथ पूर्वे कह्या जे सिद्धांत ते ३२ असज्झाय टालिने वाचवा जणवा ते ३२ असज्झायनुं स्वरूप लिख्यते ॥ ठाणांग ठाणे १० मे ॥ दस विहे अंतलिख्ख ए असज्झाइए ॥ आकाशने आश्रिने १० असज्झाय उपजे छे तेना नाम ॥ उक्कावाए ते तारो खरे तथा ते प्रकारे रेखासहित अनेक प्रकाशसहित तेहनु पडवु ते उल्कापात ॥ अथवा उल्का के० ज्वालारहित अग्नि तेनु पात के० आकाशथि पडवुं तेउल्कापात तेहमा थोडुं होय तो किंचित्काल खमवु निरंतर तथा कोई मोटो तारो खरे तो १ पहोर लगे असज्झाय ॥ रात्रिने अंते तारो खरे तो सूर्य उदय थाय तिहांसुधि असज्झाय गणवि ॥ १ ॥ दिसिदाहे के० दिशाउने विषे मोटि लाय

सरिखो उद्योतने रक्तता तेनिअस० जिहांसुधि होय तिहां लगि ॥ २ ॥ ग
ज्जिए के० अकाले गाजनि अस० ॥ ३ ॥ विज्जुए के० अकाले विजलि नि
अस० ॥ ४ ॥ निग्घाए के० अकाले कडाकानिअस०॥ ५ ॥ अकालते आर्द्रा
नक्षत्रथि मांडिने हस्तनक्षत्र उत्तरयासुधि काल ते उपरात शेषनक्षत्रे गाज
विजवरसाद जेटलीवार होय तेटलीवारसुधि अकाल जाणवो ॥ जुवएके०
शुक्लपक्षना वालाचंद्रमानि तेचंद्रना उदयथि ते अस्तसुधि जाणवि ॥ ६ ॥ ज
क्खालित्तएके० आकाशनेविषे भूतादिकनो चालो थाय जेटली वारसुधि चा
लो होय तेटली वारसुधि अस० ॥ ७ ॥ धुमियाएके० दिवश उग्या पछि जेट
लिवार धुम्र वर्षे तेटली वारसुधि अस० ॥ ८ ॥ महियाएके० रात्रिनेविषे जा
कलवर्षे ते मेघरवो तेनी अस० ॥ ए ॥ रजोग्घाएके० घणो वायरोउजे आ
काशे धूलि चढे दिशा धुंधली लागे ते रजोद्घात जीहां लगे रहे तिहांसुधि

असo ॥ १० ॥ हवे १० उदारिकने आश्रिने असजाय कहेछे ॥ ठाणागठाणे १० मे ॥ दसविहे उरालिए असजाइए ॥ तेमा प्रथम ॥ अठि केo हाडका नि असजाय ॥ १ ॥ मसे केo मासनि असo ॥ २ ॥ सोणिएकेo रुधिरनि असo ॥ ३ ॥ असुइसामंते केo अशुचि विष्ठानजीकमा पडि होय तेनि असo ॥ ४ ॥ सुसाण सामंते केo मशाणनजीक होय तेनि असo ॥ ५ ॥ चदोवराएकेo चंद्रमानुं ग्रहण थाय तेनि असo ॥ ६ ॥ सुरोवराएकेo सूर्यनु ग्रहण थाय तेनि असo ॥ ७ ॥ ए २ असजाय ग्रहण थयाथि मांडिने मुक्त थया पछी वे घडिसुधि जाणवी ॥ पडणे केo मोटो अधिकारि राजा प्रमुखनो मरण थाय तेनिअसo ते आखो दिवश एकअसo ॥८॥ रायवुग्गहेकेo राजा राजाने माहोमाहि लडाइ सग्राम थातो होय पोताना नगरनि समिपमा ते न

मिटे तिहासुधि असस० ॥ ९ ॥ उवसयस्स अतो उरालियसरिरगे के० उपा
श्रयमाहि उदारिकपचेंद्रियनु शरिर जेटलीवार पड्युंहोय तेटलिवार असस०
॥ १० ॥ ए १० उदारिक आश्री कहि ॥ सर्व मिली २० थइ ॥ आषाढशुद्ध
पुर्णिमानि असस० ॥ १ ॥ आषाढवद १ नि असस० ॥ २ ॥ भाद्रवाशुद्ध पुर्णि
मानि असस० ॥ ३ ॥ भाद्रवावद १ नि असस० ॥ ४ ॥ कार्त्तिकशुद्ध पुर्णिमानि
असस० ॥ ५ ॥ कार्त्तिकवद १ नि असस० ॥ ६ ॥ चैत्रशुद्ध पुर्णिमानि असस०
॥ ७ ॥ चैत्रवद १ नि असस० ॥ ८ ॥ प्रभातनि २ घडिसुधि असस० ॥ ९ ॥
मध्यान्हनि २ घडि असस० ॥ १० ॥ सध्यासमयनि २ घडि असस० ॥ ११ ॥
मध्यरात्रिनि २ घडिसुधि असस० ॥ १२ ॥ ए १२ असझायठाणागसूत्रने
चउथे ठाणे तथा छेद सूत्रमा कहिछे ॥ सर्व मिलि विशने बार बत्रिश असझाय

थइ ॥ ३२ ॥ ए ३२ असज्झाय टालि सिद्धांतनि वाचता भणता सज्झायकरता
आशातना लागे नहि ॥ इति ३२ असज्झायसमाप्त ॥ इतिसिद्धांतमानसमाप्त ॥

॥इतिश्री प्रकरणसंग्रहं संपूर्ण॥

॥ श्लोकः ॥ वंदे सद्गुरुवर्यमेनमधुना लाधाजिसञ्ज्ञं मुदा ।
सद्विद्यार्णवमार्यशीलसरसं सौजन्यरत्नाकरम् ॥
यत्पादार्चनतो जडोप्यलमहो जातोस्मि विद्याबुधो ।
तर्तुं शक्तिधरोहमुत्तमपुरश्चंजाग्निधानो मुनि ॥ १ ॥

आ पुस्तक पण्डितराज पूज्यश्री ५ देवजीस्वामीना शिष्य लाधाजीस्वामिपासे

शुद्ध करावी

श्रावक भगवान्दास केवलदासे

मुंबइमां निर्णयसागर छापखानामा छपावी प्रसिद्ध कर्युं

आवृत्ति त्रीजी

संवत् १९५२

किंमत १ रुपयो